जल-पाँजि

एक मैथिली उपन्यास

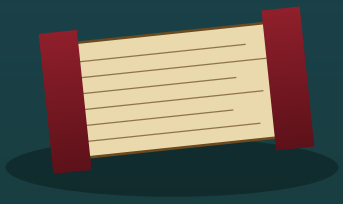

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह प्रकाशन

जल-पाँजि

जल-पाँजि

एक मैथिली उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुर

जल-पाँजि- गजेन्द्र ठाकुर

© गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीत ठाकुर, २०१३/ २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित।

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

मुद्रित आकार: ६ × ९ इंच

अनुक्रम

अध्याय १ — कुसहा 1
अध्याय २ — पोथीक गट्ठर 6
अध्याय ३ — पँजीकारक विधि 12
अध्याय ४ — कोसी — १ 18
अध्याय ५ — तीन नाम 20
अध्याय ६ — मोहनक फोन 27
अध्याय ७ — कैम्प 37
अध्याय ८ — मेटाओल पाँति 44
अध्याय ९ — धरती हिलल 54
अध्याय १० — साक्षी एक: पुरोहित 60
अध्याय ११ — साक्षी दुइ: भौजी 67
अध्याय १२ — कोसी — २ 77
अध्याय १३ — साक्षी तीन: हरवाह 79
अध्याय १४ — साक्षी चारि: पँजीकार 87
अध्याय १५ — जे लिखल नहि गेल 93
अध्याय १६ — १९३४क बाढ़ि 100
अध्याय १७ — सन्धि 107
अध्याय १८ — नक्शा 117
अध्याय १९ — कोसी — ३ 127
अध्याय २० — भीतरका गाम 129
अध्याय २१ — दुइ मिथिला 140
अध्याय २२ — विवाह 147
अध्याय २३ — अकाल १९६६ 151
अध्याय २४ — इन्जीनियर बाबू 155

अध्याय २५ — चुप्पी 161
अध्याय २६ — कोसी — ४ 164
अध्याय २७ — अनुराधाक स्वर-सन्देश एक 166
अध्याय २८ — देह आ जाति 170
अध्याय २९ — स्वर-सन्देश दुइ 173
अध्याय ३० — हड्डी 176
अध्याय ३१ — मोहनक स्वीकार 178
अध्याय ३२ — जकर नाम नहि 183
अध्याय ३३ — मस्कट 187
अध्याय ३४ — कोसी — ५ 192
अध्याय ३५ — हम सभ 195
अध्याय ३६ — गाम जे खाली भेल 201
अध्याय ३७ — स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच 206
अध्याय ३८ — पँजीकारक ग्राहक 210
अध्याय ३९ — कोसी — ६ 216
अध्याय ४० — काठमाण्डू आ मधेस 219
अध्याय ४१ — घुरब 226
अध्याय ४२ — तीन पीढ़ी एक कोठली 235
अध्याय ४३ — कोसी — ७ 244
अध्याय ४४ — प्रति-पाँजि 247
अध्याय ४५ — जे बाँचल 253
अध्याय ४६ — नाम लिखब 260
अध्याय ४७ — मृत्यु आ पोथी 261
अध्याय ४८ — कोसी — ८ 266

अध्याय १ — कुसहा

१८ अगस्त २००८, सोम

हमर दैनिकीमे १८ अगस्त २००८ क पहिल लेख ६ बजि ४० मिनट पर अछि। ई लेख बाढ़ि विषयक नहि अछि। लिखल अछि—“दूध आधा सेर घटि आयल। कारण नहि कहल गेल।” ओकर नीचाँ ७ बजि १० मिनट पर—“पूर्वक कोठलीक देबालमे सीलन बढ़ल।” एहि दुइ पाँतिक बीच कोसीक नाम नहि अछि। तखन धरि हमर घरमे जे जल छल, से घड़ामे छल, लोटामे छल, चुल्हिक सोझाँ राखल पीतल बाल्टिमे छल, आ पछिला रातिक बरखासँ अँगनामे चारि ठाम छोट-छोट गह्वरमे छल।

हम दैनिकी अनेक वर्षसँ लिखैत आएल छी। तिथि, नक्षत्र, आगन्तुकक नाम, पाँजि देखबाक प्रयोजन, देल दक्षिणा, नहि देल दक्षिणा, कर्ज, बीमार लोक, औषधि, डाकसँ आयल पत्र, रेलगाड़ीक बिलम्ब—सभ बात पृथक-पृथक पाँतिमे। घटनाक अर्थ लिखब हमर काज नहि। अर्थ बदलैत रहैत अछि; पाँति रहि जाइत अछि।

८ बजि ५ मिनट पर पहिल फोन आयल। फोन मोहनक नहि छल। बिरपुर दिसक एक परिचित लिपिक छल, जे हमरा “काका” कहैत छल यद्यपि ओकर वंशसँ हमर कोनो कुटुम्बी सम्बन्ध नहि। ओ पुछलक, “रेडियो खोलने छी?” हम कहलियैक, “नहि।” ओ कहल, “ऊपर दशा नीक नहि अछि।” हम पुछलियैक, “ऊपर कतय?” ओ उत्तर देबाक बदला दोसर ककरो नाम लऽ कऽ कहलक जे रातिसँ फोन चलि रहल अछि। सम्पर्क टूटि गेल।

हम रेडियो नहि खोललहुँ। पहिने ओकर बात दैनिकीमे लिखलहुँ—“८:०५, बिरपुरक लिपिक, ‘ऊपर दशा नीक नहि’।” उद्धरण-चिह्न लगेलहुँ, किएक तँ ओकर शब्द ओकरे रहय। अपन शब्द ओकर मुँहमे देब पाँजि-काजमे दोष मानल जाइत अछि।

८ बजि २३ मिनट पर दोसर फोन। एहि बेर मोहन छल। आवाज पछिला फोनसँ स्पष्ट। ओ पुछलक, “बाबूजी, घरमे सभ छथि?” हम कहलियैक, “छथि।” ओ फेर पुछलक, “ऊँच ठामक कागज सभ कतय अछि?” हम कहलियैक, “जे कागज ऊँच राखबाक अछि, सभ ऊँचहि अछि।” ओ चुप रहल। हम पुछलियैक, “अहाँ कतय छी?” ओ कहल, “दफ्तरमे।” ई उत्तर पर्याप्त नहि छल। जल संसाधन विभागक ‘दफ्तर’ एकटा कोठली नहि, अनेक ठामक नाम छल। हम फेर नहि पुछलहुँ।

ओ कहल, “बारहम किलोमीटरक ओहि पार कटान तेज अछि।” हम पुछलियैक, “कतेक दिनसँ?” ओ कहल, “किछु दिनसँ।” हम पुछलियैक, “एहि बातक लिखित लेखा अछि?” फेर चुप्पी। फोनमे चुप्पी कागजक रिक्त स्थान जकाँ नहि होइत अछि। कागजक रिक्ति नापल जा सकैत अछि। फोनक चुप्पीमे दोसर दिस साँस सुनाइत रहैत अछि।

हम कहलियैक, “जँ लिखित लेखा अछि तँ तिथि होयत।” ओ तखन कहलक, “पाँच अगस्तसँ कटानक सूचना चलि रहल छल।” हम दैनिकीमे लिखलहुँ—“८:२३, मोहन—१२.९ किमी लग कटान; सूचना ५ अगस्तसँ।” हम ओकरा नहि कहलियैक जे लिखि रहल छी। ओकरा ई बात पहिनहिसँ ज्ञात छल जे हम सभ बात लिखैत छी।

९ बजि लगैत-लगैत तीन फोन आरो आयल। पहिल फोनमे कहल गेल जे मजूर थोड़ छथि। दोसरमे कहल गेल जे सामग्री पहुँचबामे बाधा अछि। तेसरमे कहल गेल जे ऊपरसँ निर्देश आएत। “ऊपर” फेर आयल। एहि शब्दक कोनो स्थिर भूगोल नहि छल। एक लोक लेल ऊपर कटमण्डू छल, दोसर लेल पटना, तेसर लेल मुख्य अभियन्ताक दफ्तर, चारिम लेल मंत्रीक कोठली। नदीक ऊपर पृथक छल। दफ्तरक ऊपर पृथक।

हम सभ फोनक समय लिखलहुँ। ९:०७—मजूर। ९:१९—बोल्डर। ९:३६—निर्देश प्रतीक्षित। नाम सभ नहि लिखलहुँ, किएक तँ तीनूमे फोन करनिहार अपन नाम पहिने कहने छल आ हमरा चिन्हाइत छल; मुदा दैनिकीमे नाम नहि लिखनाइ पछाति हमरा खटकल। नाम रहितय तँ कथनक भार व्यक्ति पर रहैत। पद मात्र रहल तँ भार दफ्तर पर चलि गेल।

१० बजि १२ मिनट पर डाकिया नहि आयल। ईहो लिखल गेल। सोमक दिन ओ प्रायः साढ़े दस धरि अबैत छल। १० बजि ३७ मिनट पर बिजली गेल। १० बजि ४१ मिनट पर घरक पाछाँ बाँसक झुरमुटसँ एक बेर एहन आवाज आयल जेना मोट रस्सी तनिकऽ एकाएक ढील भऽ गेल हो। हम बाहर गेलहुँ। बाँस ठाढ़ छल। आकाश धूसर छल। हवा पूब-दक्खिनसँ छल। कोनो असामान्य वस्तु आँखि पड़ल नहि।

११ बजि ०२ मिनट पर मोहन फेर फोन केलक। एहि बेर ओकर आवाजमे लोकक आवाज मिलल छल। कियो कागज माँगि रहल छल, कियो गाड़ी। ओ हमरा कहलक, “पुरान पाँजि नीचाँ नहि राखू।” हम कहलियैक, “नीचाँ नहि अछि।” ओ कहलक, “बाबूजी, सुनू—” आ तखन दोसर दिस कियो ओकरा बजेलक। फोन कटि गेल।

“सुनू”क पछाति की छल, से हम नहि लिखि सकलहुँ। दैनिकीमे लिखल अछि—“११:०२ मोहन। वाक्य अपूर्ण।” पाँजिमे अपूर्ण वाक्य दुर्लभ अछि। जन्मक नाम नहि भेटल तँ रिक्त छोड़ल जाइत अछि; विवाहक सम्बन्ध संदिग्ध रहल तँ चिह्न देल जाइत अछि; मुदा वाक्य आरम्भ कऽ अधरमे छोड़बाक प्रथा नहि।

११ बजि ४८ मिनट पर रेडियो खोललहुँ। समाचारमे सामान्य बाढ़ि-स्थिति, वर्षा, नदीक जलस्तर, जिला-प्रशासनक तैयारीक उल्लेख छल। कुसहा शब्द एक बेर आयल कि नहि, एखन निश्चित नहि कहि सकैत छी। हमर दैनिकीमे “कुसहा” पहिल बेर १२ बजि १६ मिनट पर लिखल अछि। ओकर सोझाँ मात्र एतेक—“कुसहा। पूर्वी तटबन्ध। क्षति?” प्रश्नचिह्न हमर अछि।

१२ बजि ३२ मिनट पर घरक उत्तर दिस बाट पर मोटरसाइकिल अत्यन्त बेगें गेल। पाँच मिनटमे दोसर। फेर जीप। गाड़ी सभ गामक भीतर नहि घुसल; मुख्य बाट दिसे गेल। हमरा ओहि समय बुझाइत छल जे जँ अधिकारी सभ एक दिस जा रहल छथि तँ घटनाक केन्द्र गामसँ दूर अछि। दूरी सुरक्षा नहि होइत अछि, ई बात कागज पहिने नहि सिखबैत।

१ बजि ०३ मिनट पर फोन आयल—अनजान संख्या। पुरुष-स्वर। ओ रामानुग्रह मिश्र पँजीकारक घर अछि कि नहि, से पुछलक। हम “हँ” कहलहुँ। ओ पुछलक, “पुरान नक्शा अछि?” हम कहलियैक, “ककर?” ओ कहलक, “पुरान धारक।” हम कहलियैक, “हम नक्शा नहि राखैत छी, पाँजि राखैत छी।” ओ कहलक, “गामक पुरान नाम?” हम पुछलियैक, “कोन गाम?” तखन सम्पर्क टूटि गेल।

दैनिकीमे एहि फोनक नीचाँ हम पाँच गामक नाम लिखने छी। किएक लिखलहुँ, याद नहि। सम्भवतः अपरिचित लोकक प्रश्नक उत्तर अपन लेल देबाक चेष्टा छल। पाँचूमे सँ दुइ गाम एखन सरकारी नक्शामे ओहि नामसँ नहि अछि। एक गामक नाम पाँजिमे तीन रूपमे भेटैत अछि। नदी, राज्य आ वंश—तीनू नाम बदलैत अछि, मुदा एकहि ढङ्गे नहि।

१ बजि २७ मिनट पर मोहनक तेसर फोन आयल। ओ कहल, “बाबूजी, कटि गेल।” हम पुछलियैक, “की?” ओ कहलक, “बान्ह।” हम फेर पुछलियैक, “कतेक?” ओ कहलक, “एखन कियो निश्चित नहि कहि रहल अछि।” पाछाँसँ एक आवाज आयल—“बारह दशमलव एकसँ बारह दशमलव नौ...” फेर शब्द अस्पष्ट। मोहन कहलक, “फोन राखैत छी।”

हम लिखलहुँ—“१:२७—कटान/टूटन। १२.१–१२.९ किमी बीच। परिमाण अनिश्चित।” एहि लेखमे ‘बाढ़ि’ शब्द नहि अछि।

१ बजि ४५ मिनट पर एक पुरान परिचित अभियन्ता फोन केलक। ओ सेवानिवृत्त भऽ चुकल छल। समाचार सुनि कऽ हमरा पुछलक, “तोहर लग १९६३ क सर्वे सूची अछि?” हम कहलियैक, “अछि।” ओ कहलक, “देख, पुरान धार कोन-कोन गाम छुबैत छल।” हम पुछलियैक, “किएक?” ओ कहलक, “एखन नहि। पछाति।” ओ फोन राखि देलक।

हम १९६३ क सूची निकाललहुँ। कागज पीयर पड़ि गेल छल। तहक ठाम भुरभुरा। नाम पढ़लहुँ—एक, दुइ, तीन, चारि। पाँचम नाम पर रुकलहुँ। ओहि नामक एक परिवारक पाँजि हमर घरमे छल। छैठम नाम। सातम। आठम। हम सूची फेर तह कऽ राखि देलहुँ। दैनिकीमे लिखलहुँ—“पुरान धारक सूची देखल। टिप्पणी एखन नहि।”

२ बजि १० मिनट पर मस्जिदक लाउडस्पीकरसँ किछु घोषणा भेल; हवा विपरीत दिशामे छल, शब्द सम्पूर्ण नहि बुझायल। २ बजि १८ मिनट पर मन्दिर दिस घंटा निरन्तर बाजल। ई आरतीक समय नहि छल। २ बजि २५ मिनट पर पड़ोसी आयलाह। हुनका हाथमे एक प्लास्टिक थैला छल। ओ कहलाह जे आवश्यक कागज ऊपर राखि दिअ। हम हुनका कहलियनि जे सभ ऊपर अछि। ओ पुछलनि, “कतेक पानि आएत?” हम कहलियनि, “हमरा लग जल-माप नहि अछि।” ओ फेर पुछलनि, “संकट अछि?” हम कहलियनि, “ई प्रश्नक उत्तर हमरा दफ्तर नहि दैत अछि।”

हुनका हमर उत्तर रूख लगलनि। सम्भवतः छल। पँजीकारक काज भविष्यवाणी नहि। हमर पोथीमे जे जन्म भेल, से जन्मक पछाति लिखल; जे विवाह भेल, से विवाहक पछाति; जे मृत्यु भेल, से मृत्यु प्रमाणित भेलाक पछाति। आब सभ लोक हमरा सँ आगाँक पाँति पढ़य चाहैत छलाह।

२ बजि ४२ मिनट पर फोनक जाल लगभग बन्द भऽ गेल। फोन लगैत नहि छल। जखन लगैत, आवाज टूटैत। ओहि टूटल आवाजसभमे तीन शब्द बेराबेरी सुनायल—“बिरपुर”, “निकसू”, “झट”। शब्दसभ पृथक-पृथक मुँहसँ आबि रहल छल। हम दैनिकीमे केवल लिखलहुँ—“लोक बाहर जाएबाक बात कहि रहल अछि।”

३ बजि ०५ मिनट पर हम पहिल बेर घरक पोथीसँ पृथक कागजसभ एक ठाम कयलहुँ—भूमिक कागज, बैंकक पासबुक, राशन-कार्ड, मोहनक विद्यालय प्रमाणपत्रक पुरान प्रति, अनुराधाक जन्म-अभिलेखक नकल, दूटा बीमा-पत्र, एकटा मटमैला लिफाफा जकर भीतर फुलझरी नामक कोनो स्त्रीक उल्लेख नहि छल। एहि अन्तिम बातक ज्ञान हमरा ओहि दिन नहि छल; ई हम दीर्घ काल पछाति बुझलहुँ।

३ बजि २२ मिनट पर बाटक आवाज बदलि गेल। पहिने गाड़ी एक-एक कऽ जाइत छल। आब लोकक पयर, साइकिलक घंटी, नेनाक कानब, गोरू-महीसक घण्टी, ट्रैक्टरक घरघराहट एक संग। हम दरबज्जा धरि गेलहुँ। लोक पश्चिम दिस जा रहल छल। कियो हमरा रोकि कऽ किछु नहि कहलक। कियो कहलक—“चलू।” कियो नाम नहि लेल।

हम घरक भीतर घुरलहुँ। उत्तर कोठलीक आलमारी खोललहुँ। ऊपरक खण्डमे पाँजि छल। लाल कपड़ा, पीयर कपड़ा, अखबारमे लपेटल दूटा गट्ठर, ताड़पत्रक पेटी, पछिला वर्षक लेख। हम क्रम बदललहुँ नहि। केवल आलमारीक नीचाँ राखल तीन पोथी उठाकऽ ऊपर कयलहुँ। दैनिकीमे लिखलहुँ—“३:३५—नीचाँक तीन पोथी ऊपर।”

४ बजि लगैत-लगैत फोन फेर आयल। एहि बेर मोहन नहि। जल संसाधन विभागक एक सहायक कर्मचारी, जे हमरा नामसँ चिन्हैत नहि छल। ओ पुछलक, “मिश्रजी?” हम कहलहुँ, “हँ।” ओ कहलक, “मोहन बाबू कहलनि जे अहाँ घर छोड़ि दिअ।” हम पुछलियैक, “ओ कतय छथि?” ओ कहलक, “राहतक व्यवस्था दिस गेल छथि।” हम पुछलियैक, “ओ स्वयं फोन किएक नहि कयलनि?” उत्तर नहि आयल। पाछाँ कोनो कागज पलटबाक आवाज आयल। ओ कहलक, “सूची बनि रहल अछि।”

“कोन सूची?” हम पुछलियैक। ओ कहलक, “जिनका हटेबाक अछि।”

हम फोन राखि कऽ दैनिकीमे लिखलहुँ—“४:०२—सूची बनि रहल अछि।” एहि पाँतिक पछाति लगभग एक अँगुर खाली ठाम अछि। हमरा दैनिकीमे एहन खाली ठाम साधारणतः नहि भेटत। सम्भवतः ओहि बेर हाथ रुकि गेल छल। सम्भवतः ऐनक खोलने रही। निश्चित नहि।

४ बजि २० मिनट पर हम दरबज्जाक साँकल जाँचलहुँ। ४ बजि २३ मिनट पर पछिला कोठलीक खिड़की बन्द कयलहुँ। ४ बजि २७ मिनट पर तुलसी चौड़ाक लग राखल पीतल लोटा

भीतर अनलहुँ। ४ बजि ३१ मिनट पर पोथीक आलमारीक चाबी धोतीक गाँठमे बान्हलहुँ। ४ बजि ३४ मिनट पर दैनिकी बन्द कयलहुँ।

ओहि दिनक अन्तिम लेख, जे साँझ पड़बाक पहिने लिखल गेल, एतबे अछि—“आदेश स्पष्ट नहि। लोक निकलि रहल अछि। पोथी सुरक्षित मानल।”

“सुरक्षित” शब्द पर पछाति हम लाल स्याहीसँ एक रेखा खींचने छी। शब्द काटल नहि अछि। काटल शब्द प्रमाण नष्ट करैत अछि।

अध्याय २ — पोथीक गट्ठर

१९ अगस्त २००८

१९ अगस्तक बिहान हमर दैनिकीमे समय लिखल नहि अछि। राति कोन पहर निदायलहुँ, से लिखल नहि गेल। पहिल पाँति मात्र एतेक अछि—“घर छोड़ल नहि। पोथी ऊपर। लोकक आवागमन जारी।” एहि पाँतिक नीचाँ चारि अँगुर खाली ठाम अछि। ओकर पछाति लिखल अछि—“एक गट्ठर आयल।”

गट्ठर अननिहारक नाम भोला सहनी छल। ओकरा हम पहिनहुँ चिन्हैत रही, मुदा पाँजिक ग्राहकक रूपमे नहि। ओकर बाबू एक बेर विवाहक सम्बन्ध पुछय आयल छलाह; ओहि लेखमे “सहनी” लिखल अछि, मूल-ग्रामक कोनो प्रविष्टि नहि। भोला नाव चलबैत छल। ओहि दिन नाव कोन धारसँ, कोन बाट होइत, कतेक बेर रोकाइत हमर दरबज्जा धरि पहुँचल, से ओ पहिले नहि कहलक। दरबज्जा पर आबि केवल पुछलक—“रामानुग्रह बाबू, ई अहाँक काजक वस्तु होयत?”

ओकर दुनू हाथमे जूटक एक भीजल बोरा छल। बोरा भीतर बाँसक दुइ पतली फट्टीक बीच लाल कपड़ामे बान्हल गट्ठर। लाल कपड़ा मूल रंगमे लाल छल कि जलमे रंगल ककरो आन कपड़ा, से तत्काल कहब कठिन। कपड़ाक गाँठमे कारी सूत छल। सूत फूलि गेल छल। गाँठ खोलबाक पहिने हम भोला सँ पुछलियैक, “कतय भेटल?” ओ कहलक, “जतय काल्हि घर छल।”

हम पुछलियैक, “गामक नाम?” ओ गामक एक नाम कहलक। हम दोसर उच्चारण दोहरौलहुँ। ओ कहलक, “हँ, वएह।” एहि गामक नाम हमरा १९६३ क सूचीमे पढ़ल आठ नाममे

सँ एक छल। राति हम सूची फेर नहि खोलने रही। भोला नाम कहलक, आ हमरा कागजक पाँति मोन पड़ल।

हम ओकरा भीतर बजेलहुँ। ओ देहरी पर चप्पल खोललक। ओकर धोतीक नीचला भागसँ जल टपकि रहल छल। हम एक पुरान टाट बिछेलहुँ। बोरा टाट पर राखल गेल। भोला बैसल नहि। ओ कहल, “हमरा घुरऽ पड़त।” हम पुछलियैक, “ककर घरसँ उठेलहुँ?” ओ उत्तर देलक, “घर नहि छल।” फेर जोड़लक, “छप्परक बाँस अटकल छल, ओहि लग।”

गट्ठर खोलबाक पहिने हम दैनिकी अनलहुँ। तिथि लिखलहुँ। “भोला सहनी द्वारा एक अज्ञात पाँजि-गट्ठर प्राप्त।” “अज्ञात” लिखलाक पछाति ओकरा काटल नहि; किएक तँ गट्ठरक स्वामी तखन धरि प्रमाणित नहि छल। जे वस्तु हाथमे अछि, ओकर विषयमे अनुमान लिखनाइ अभिलेख नहि, कथा होइत अछि। हमरा कथा लिखबाक अभ्यास नहि छल।

गाँठ खोलल गेल। भीजल कपड़ा पृथक कयल गेल। भीतर ताड़पत्र, हस्तनिर्मित कागज, कपड़ाक पट्टी, सूतक डोरी, दूटा पातल काठ, एक छोट कपड़ा-थैली, आ कागजक अनेक तह छल। जलक कारण सभ वस्तु एक-दोसरसँ सटल। हम बल लगा कऽ पृथक नहि कयलहुँ। पहिने जे देखाइत छल, ओकर सूची बनौलहुँ।

एक जूटक बोरा; दूटा बाँसक फट्टी; एक लाल भीजल कपड़ा; एक कारी सूत; तीन पीयर डोरी; ताड़पत्रक सत्ताइस पात; हस्तनिर्मित कागजक चवालीस पन्ना; मशीनक कागजक एगारह पन्ना; नील स्याहीक सात फैलाव; कारी स्याहीक तेरह अक्षर-समूह; लाल स्याहीक तीन गोल चिह्न; दूटा पेंसिलक खोंच; एक टूटल काँचक निब; एक पीतल क्लिप; चारि जंग लागल आलपिन; एक सूखल तुलसीदल; दू धानक भूसी; एक करिया तिल; कपड़ाक छोट थैली; थैलीमे पाँच कौड़ी; एक छेदल तामाक सिक्का; दू अधकटल टिकट; एक विवाह-तिथि लिखल पुर्जा; एक जन्म-अभिलेख; एक मृत्युक तिथि; तीन गामक नाम; एक मूलक नाम; एक अस्पष्ट अधिकार; एक अधलिखल गोत्र; एक पात जकर बामा कोन खायल; एक पात जकर मध्य भाग गलल; दू पन्ना पर अँगूठाक धब्बा; पाँच पन्ना पर कीचड़; सात पन्ना पर बालूक महीन तह; एक पन्ना पर तेलक पुरान वलय; दू पन्नाक बीच सटल ककरो केश; एक कागजक किनार पर धागाक गाँठ; एक पातमे छेद; तीन पन्नामे जलक सीधा चिन्ह; एक पन्ना पूर्ण रिक्त; एक पन्ना पर केवल “श्री”; एक पन्ना पर “सम्बन्ध”; एक पन्ना पर तिथि बिना नाम; एक पन्ना पर नाम बिना तिथि; आ सभसँ नीचाँ एक मोट तह, जे तखन नहि खोलल गेल।

सूची एक बेर लिखि कऽ हम फेर गनलहुँ। सत्ताइस ताड़पत्र कहब निश्चित नहि छल, किएक तँ तीन ठाम दू-दू पात एतेक सटल छल जे पृथक कयने बिना संख्या बढ़ि सकैत छल। तेँ सत्ताइसक सोझाँ प्रश्नचिह्न देलहुँ। चवालीस हस्तनिर्मित पन्नामे सेहो पाँच पन्नाक जोड़ी सटल छल। गिनती वस्तुक अवस्था बतबैत अछि, सत्यक अन्तिम संख्या नहि। भीजल गट्ठरमे संख्या सेहो सूखबाक प्रतीक्षा करैत अछि।

हम एक पुरान तराजू मँगेलहुँ। गट्ठरक सभ वस्तु पृथक कयलाक पछाति फेर एकठाम नहि तौलल जा सकैत छल, तेँ केवल भीजल कपड़ा, बाँसक फट्टी आ जूटक बोरा तौलल गेल। बाटक संख्या दैनिकीमे अछि, मुदा ओकर उपयोग पछाति कोनो ठाम नहि भेल। एहन अनेक बात जीवन भरि लिखल जाइत अछि जकर फेर कखनो आवश्यकता नहि पड़ैत। आवश्यकता नहि पड़नाइ लिखल बात कैँ व्यर्थ नहि बनबैत अछि। अभिलेखक काज भविष्यक इच्छा बुझब नहि, वर्तमानक अवस्था रोकि राखब अछि।

लाल कपड़ाक एक कोन पर सूतक भीतर किछु कठोर लगल। हम गाँठ नहि काटलहुँ। अँगुरीसँ टटोललाक पछाति बुझायल जे भीतर कागजक अत्यन्त छोट मोड़ अछि। गीला सूत खोलब उचित नहि छल। ओकरा पृथक राखि “कपड़ाक गाँठ—भीतर कागज सम्भावित” लिखलहुँ। “पत्र” नहि लिखलहुँ, “पुर्जा” नहि लिखलहुँ। वस्तु जतेक कहैत अछि, लिखित लेखा ओतबे कहय।

कपड़ा-थैलीक पाँच कौड़ीमे दूटा अखण्ड, तीनटा किनारसँ टूटल छल। तामाक सिक्काक छेद गोल नहि, चौकोर छल। टिकट पर अंकक आधा भाग बचल, डाकघरक नाम नहि। विवाह-तिथिवला पुर्जामे वरक नाम पढ़ाइत छल, कन्याक नामक ऊपर स्याही पसरल। हम नाम नहि उतारलहुँ। एक अक्षर भूलसँ उतारल गेल तँ पछाति वंश बदलि सकैत अछि। सूखल तुलसीदल सूची बनबैत काल टूटि दू भाग भऽ गेल; दैनिकीमे पहिने “एक” लिखल छल, पछाति “दू टुकड़ा, मूलतः एक” जोड़लहुँ।

भीजल वस्तु सभक अपन-अपन समय छल। जूटक बोरा धूप सहि सकैत छल; पाँजि नहि। बाँसक फट्टी हवा सहि सकैत छल; स्याहीवला कागज पर तेज हवा उचित नहि। काठ पृथक राखलहुँ, बोरा अँगनाक छाँहमे, कपड़ा रस्सी पर नहि टाँगलहुँ—ओकर भार गाँठ फाड़ि सकैत छल। कागज समतल रखल, पातक नीचाँ कपड़ा बदलल, आ जे पन्ना अपने पृथक नहि भेल ओकरा हाथ नहि देल। एहि सभमे गति कम छल। बाहर लोक झट-झट चलि रहल छल; भीतर हमर काज धीमा छल।

सूची समाप्त कऽ हम घड़ी देखलहुँ। ९ बजि १७ मिनट। भोला एखन धरि ठाढ़ छल। हम ओकरा बैसबाक लेल फेर कहलियैक। ओ बैसल, मुदा देहरीसँ बेसी भीतर नहि। ओकर आँखि गट्ठर पर छल। हम पुछलियैक, “अहाँ एकरा खोलने छलहुँ?” ओ कहल, “नहि।” “कियो आन?” “हमरा देखाइत नहि।” “जतय भेटल, ओतय कियो छल?” ओ कहल, “लोक छल, मुदा सभ अपन-अपन वस्तु देखैत छल।”

“अपन-अपन वस्तु” लिखबाक योग्य वाक्य छल। हम दैनिकीमे लिखलहुँ। जल उतरबाक पहिने लोक घर नहि, वस्तु खोजैत अछि—ई निष्कर्ष हम नहि लिखलहुँ। निष्कर्ष बिना प्रमाणक होइत। भोला जे कहलक, से पर्याप्त छल।

हम ताड़पत्रक पहिल पात उठेबाक चेष्टा कयलहुँ। पात दोसर पातसँ सटल छल। नख लगबैतहि सतहक एक अति सूक्ष्म परत उठय लगल। हम हाथ रोकलहुँ। एक पीतल थारी मँगेलहुँ, ओकरा उलटि कऽ ओहि पर कपड़ाक पट्टी पसारलहुँ, आ सभसँ ऊपरक पातकेँ जतेक सम्भव छल, ओतबे सहारा देलहुँ। ओहि समय हमरा लग अभिलेख-संरक्षणक कोनो आधुनिक साधन नहि छल। पँजीकारक घरमे पोथी बचेबाक उपाय अनुभवसँ चलैत छल—छाँह, हवा, सूखल कपड़ा, नीमक पात, धुँआ सँ दूरी, चूहा सँ रक्षा, आ अधीर हाथ सँ बचाव।

भोला पुछलक, “बाँचत?” हम कहलियैक, “कागज?” ओ कहलक, “ई सभ।” हम उत्तर देलियैक, “जे अक्षर बचल अछि, ओकरा पहिने बचाउ।” ओ फेर किछु नहि पुछलक।

गट्ठरक बाहरी कपड़ा पर कोनो नाम नहि छल। बाँसक फट्टीक एक दिस चाकूसँ खोंचल तीन रेखा छल। दोसर फट्टी पर आधा अक्षर जकाँ किछु। हम ओकर माटि नहि हटेलहुँ। भीजल वस्तुसँ माटि हटेनाइ ओकर पहिल नाश होइत अछि। कीचड़ सुखय देल जाए; तखन झाड़ल जा सकैत अछि। जलक समय धैर्य सेहो उपकरण होइत अछि।

१० बजि ०५ मिनट पर भोला उठल। हम पुछलियैक, “ई गट्ठर हमरा लग किएक अनलहुँ?” ओ कहल, “गाममे कहल गेल जे पुरान लिखल वस्तु पँजीकार देखताह।” “कियो कहल?” ओ दू नाम कहलक। पहिल नाम हमरा परिचित नहि। दोसर नाम परिचित छल, मुदा ओकर घर ओहि गाममे नहि, सात कोस दूर छल। हम दुनू नाम लिखलहुँ। पछाति जाँचबाक लेल नाम लिखल जाइत अछि; विश्वास करबाक लेल नहि।

भोला जाइत काल कहलक, “जँ ककरो नाम भेटय तँ जनायब।” एहि वाक्यमे “ककरो” के अछि, से स्पष्ट नहि छल। ओ अपन घरक लोकक नाम खोजि रहल छल कि गामक, हम नहि

पुछलहुँ। प्रश्न कखनो-कखनो उत्तरक सीमा घटा दैत अछि। जे लोक वस्तु पहुँचा रहल अछि, ओकरा ओहि बेर गवाही देबाक भार देनाइ उचित नहि।

ओ गेलाक पछाति हम गट्ठरक लेल उत्तर कोठलीमे पृथक ठाम बनौलहुँ। पुरान पीढ़ा पर दूटा ईंट रखलहुँ। ईंट पर बाँसक सपाट चचरी। चचरी पर सूखल धोतीक कपड़ा। ओकर ऊपर पात आ कागज पृथक-पृथक, जतेक पृथक हो सकल। खिड़की खोलल, मुदा सीधा हवा नहि। धूप भीतर नहि आबय, ताहि लेल आधा परदा राखल।

११ बजि १० मिनट पर पहिल पन्नाक एक कोन उठल। स्याही फूलि कऽ अक्षरक चारूकात महीन नील छाया बनौने छल। मुदा मध्यक पाँति पढ़ल जा सकैत छल। पहिल शब्द “श्री” नहि, एक नाम छल। नामक आगाँ “ग्राम” लिखल छल। ओकर पछाति जे अक्षर छल, से जलमे बहि आधा रहि गेल। हम आवर्धक काँच अनलहुँ। काँचक भीतर अक्षर पैघ भेल, स्पष्ट नहि। पैघ भेल अस्पष्टता स्पष्टता नहि होइत अछि।

हम पन्ना छोड़ि दोसर पात दिस गेलहुँ। ताड़पत्र पर लेखनीक खरोंच स्याहीसँ बेसी टिकाऊ छल। सतह भीजल छल, मुदा अक्षरक दबाव कतहु-कतहु बचल। प्रकाश कातसँ देलाक पछाति रेखा देखाइत छल। हम पढ़लहुँ—एक मूल, एक ग्राम, एक पुरुषक नाम, ओकर पिताक नाम। चारिम शब्दक पछाति पात गलल। वंश ओतहि रुकल जकाँ देखायल। हम तत्काल ओकर अर्थ नहि निकाललहुँ। जल-क्षतिमे पाँति रुकैत अछि।

दोपहर धरि हम किछु नहि खएलहुँ। ई बात दैनिकीमे लिखल नहि अछि। दैनिकीमे १२ बजि ४८ मिनट पर लिखल अछि—“कुल वस्तु प्राथमिक रूपेँ पृथक। अक्षर-पठन आरम्भ नहि मानल जाए।” ई वाक्य हम दू बेर रेखांकित कयने छी। पठन आ देखनाइ पृथक काज अछि। आँखिक सोझाँ जे पड़ल, से पढ़ल नहि मानल जा सकैत।

१ बजि २० मिनट पर मोहनक फोन आयल। हम ओकरा गट्ठरक बात कहलियैक। ओ पहिने चुप रहल, फेर पुछलक, “कतयक?” हम गामक नाम कहलियैक। दोसर दिस फेर चुप्पी। हम पुछलियैक, “अहाँ एहि गामकेँ चिन्हैत छी?” ओ कहलक, “नाम सुनने छी।” ओकर उत्तर छोट छल। हम गट्ठरमे भेटल १९६३ क सूचीसँ मेलक बात नहि कहलियैक। ओ सेहो हमरा सँ तटबन्धक बात नहि कहलक। पिता-पुत्रक बीच ओहि दिन दुइटा पृथक अभिलेख बनैत छल, दुनूमे किछु जानि-बुझि कऽ छोड़ल जा रहल छल। एहि निष्कर्षकेँ हम ओहि दिन दैनिकीमे नहि लिखने रही; ई पछातिक बुझाइ अछि।

दुपहरक पछाति एक-एक पन्नाक नीचे सूखल कागज बदलैत रहलहुँ। भीजल कागजक गन्ध कोठलीमे भरल छल—माटि, पुरान स्याही, कपड़ा, फफूँदक आरम्भिक गन्ध। हम गन्ध नहि लिखलहुँ; पाँजिमे गन्ध लिखबाक कोनो खण्ड नहि। मुदा ओहि गन्धकेँ एखनहु पृथक चिन्हि सकैत छी।

३ बजि ०६ मिनट पर मोट तहक बाहरी पात कने पृथक भेल। भीतर लाल स्याहीक एक पतली सीधी पाँति छल। पाँतिक ऊपर दू नाम, नीचाँ एक तिथि, कातमे छोट चिह्न। नाम एखन पूर्ण पढ़ाइत नहि छल। हम कागज फेर बन्द नहि कयलहुँ; खोलल सेहो नहि। जे अवस्था अपने बनल, ओहिमे छोड़ि देलहुँ।

४ बजि ११ मिनट पर दैनिकीमे दिनक अन्तिम लम्बा विवरण लिखलहुँ—“गट्ठरक स्वामित्व अप्रमाणित। सम्भावित पाँजि-सामग्री। जल-क्षति गम्भीर। बलपूर्वक पृथक्करण निषिद्ध। क्रमांक देब एखन स्थगित। मूल-ग्राम-पठन पछाति।” ओकर नीचाँ लिखलहुँ—“भोला सहनीकेँ प्राप्तिक साक्षी मानल जाए।”

“साक्षी” शब्द लिखिते हम रुकलहुँ। पँजीमे साक्षी प्रायः विवाह, सम्बन्ध, विवाद वा संशयक ठाम अबैत अछि। एतय साक्षी एक गट्ठरक आगमनक छल। तखन धरि हमरा ज्ञात नहि छल जे एहि गट्ठरमे सभसँ कठिन बात अक्षर पढ़ब नहि, साक्षी सभक कथन पढ़ब होयत।

साँझक पहिने ऊपरक तीन पन्ना एतेक सूखल जे किनार उठि सकय। पहिल पन्ना उठेलहुँ। नीचाँ दोसर पन्नाक माथ पर तीन नाम एकहि स्याहीमे लिखल छल। तीनूमे सँ पहिल नाम स्पष्ट। दोसरक मध्य अक्षर बहल। तेसरक अन्तिम मात्रा मेटल। नामक पछाति जे ठाम वंशक अगिला पाँति रहबाक चाही, ओतय केवल भीजल उज्जर ठाम छल।

हम ओकरा जलक क्षति मानलहुँ। दैनिकीमे लिखलहुँ—“तीन नाम; अनुवर्ती अंश नष्ट प्रतीत।” “प्रतीत” शब्द रखलहुँ। प्रमाण बिना “नष्ट” एकसरि नहि लिखल जा सकैत।

रातिमे गट्ठर उत्तर कोठलीमे रहल। आलमारीमे नहि राखल गेल, किएक तँ भीजल वस्तु बन्द ठाममे बिगड़ैत अछि। चाबी एहि बेर कोनो काजक नहि छल। हम दरबज्जा बन्द कयलहुँ, खिड़की आधा खुलल छोड़लहुँ, आ दैनिकीमे अन्तिम पाँति लिखलहुँ—“पोथी एखन पोथी नहि; पहिने एकरा सूखय दिअ।”

अध्याय ३ — पँजीकारक विधि

२० अगस्त २००८

पँजीकारक काज नाम लिखब मात्र नहि अछि। नाम तऽ ककरो मुँहसँ सुनि कऽ लिखल जा सकैत अछि। पाँजि तखन बनैत अछि जखन नामक संग ओकर ठाम, पूर्वज, सम्बन्ध, स्रोत आ जाँचक सीमा सेहो लिखल रहय। हमरा गुरु पहिल दिन कहलनि—“जे नहि बुझल, से नहि जोड़िहें; जे सुनल, से सुनल कहिहें; जे देखल, से देखल कहिहें।” एहि तीन वाक्यसँ बेसी उपयोगी शिक्षा हमरा दोसर नहि भेटल।

२० अगस्तक बिहान भीजल गट्ठरक ऊपरक पाँच पन्ना कने सूखि गेल छल। मुदा ओकरा पढ़बाक पहिने हम दैनिकीमे पँजी-काजक विधि लिखलहुँ। कारण सरल छल। अपरिचित अभिलेख पढ़ैत काल अपन नियम पहिने लिखि देल जाए तँ पछाति सुविधानुसार नियम बदलबाक अवसर कम रहैत अछि। जे पाँति हमरा मनोनुकूल हो, ओकरा प्रमाण मानि ली आ जे बाधा दे, ओकरा जल-क्षति कहि छोड़ि दी—ई पँजीकारक काज नहि।

विधि सात भागमे लिखल गेल—पहिचान, मूल, ग्राम, अधिकार, सम्बन्ध, साक्ष्य आ अभिलेख। सात शब्द सुनबामे छोट अछि; एक वंशक भीतर ई सातो शब्द पीढ़ी-पीढ़ीक भार लऽ कऽ चलैत अछि।

१. पहिचान

ककरो व्यक्ति विषयक पहिल लेख ओकर नाम अछि, मुदा नाम एकसरि पहिचान नहि। एकहि नाम अनेक गाममे, एकहि गाममे अनेक घरमे भेटि सकैत अछि। तेँ नामक संग पिता, पितामह, उपलब्ध भेल तँ मातृक पक्ष, निवास, उपाधि वा आन एहन चिह्न लिखल जाए जे दोसर समान नामसँ भेद करय। उपनाम बदलि सकैत अछि; उच्चारण बदलि सकैत अछि; लिखावट सेहो बदलि सकैत अछि। पँजीकार ध्वनि केँ अक्षर बनबैत काल ई नहि मानय जे अक्षर ध्वनिक मालिक भऽ गेल। जँ दू रूप प्रचलित हो तँ दुनू रूप लिखल जाए, मुदा कोन रूप ककर मुँहसँ सुनल गेल, से सेहो रहय।

हमरा लग एक बेर “वाचस्पति” नामक तीन पुरुष एके दिन आयल छलाह। एक जनक पिता हरिनाथ, दोसरक हरिनारायण, तेसरक हरिहर। तीनू अपन कागज पर केवल “वाचस्पति

मिश्र” लिखबैत छलाह। जँ पिता-पितामहक पाँति छोड़ि देल जाए तँ तीन जीवन एक पाँतिमे घुसि जाएत। पाँजिमे संक्षेप कखनो-कखनो असत्यक दोसर नाम होइत अछि।

२. मूल

मूलक अर्थ केवल गोत्र नहि। गोत्र व्यापक परिचय भऽ सकैत अछि; मूल वंशक विशिष्ट आरम्भ-बिन्दु वा मान्य पूर्वज-परम्पराक परिचय दैत अछि। मूल लिखैत काल ओकर वर्तनी अपन मनसँ सुधरबाक नहि। पुरान पातमे जे रूप अछि, पहिने वएह उतारल जाए; पछाति प्रचलित रूप पृथक लिखल जाए। दू मूलक नाम मिलैत-जुलैत हो तँ समान मानि देब भारी दोष। विवाहक जाँचमे एक अक्षरक ढिलाई अनेक पीढ़ीक दूरी मेटा सकैत अछि।

मूलक प्रश्न ग्राहक प्रायः हतबड़ीमे पूछैत अछि—“हमर मूल ई अछि ने?” पँजीकारक उत्तर “हँ” वा “नहि” एतेक शीघ्र नहि होयबाक चाही। पहिने पाँति देखू, तिथि देखू, पहिल प्रविष्टिक हाथ देखू, पछिला जोड़ देखू। जँ पुरान पातमे किछु अस्पष्ट अछि तँ “अस्पष्ट” लिखू। पँजीकारक लाज अस्पष्टता नहि; अप्रमाणित स्पष्टता अछि।

३. ग्राम

ग्राम वर्तमान डाक-ठेगाना नहि। वंशक ग्राम, निवासक ग्राम, विस्थापनक ग्राम आ कागज पर लिखल राजस्व-ग्राम पृथक-पृथक भऽ सकैत अछि। नदी बाट बदलैत अछि, बस्ती उठैत अछि, टोला आन गाममे गनल जाए लगैत अछि, सीमा सरकैत अछि। तेँ ग्रामक नाम पढ़ैत काल काल सेहो पढ़ू। “एखन कतय?” आ “तखन कतय?” दुनू प्रश्न पृथक अछि। पाँजि पुरान ठाम कैँ वर्तमान नक्शामे बलपूर्वक नहि ठेलय।

हमर अपन जीवनमे पाँच गामक नाम एहन देखलहुँ जे सरकारी कागजमे बदलि गेल, मुदा पाँजिमे पुरान रूप चलैत रहल। एक गाम दू जिलाक बीच कागज पर सरकल, लोकक मुँहमे नहि। दोसर गामक आधा भाग नदी काटि नेने, बचल लोक दोसर ठाम बसल, मुदा विवाहक समय ओ सभ एखनहुँ पुरान ग्राम कहैत छल। ग्राम भूमि मात्र नहि; अभिलेखमे ओ वंशक ठामक स्मृति अछि। स्मृति प्रमाण नहि, मुदा प्रमाणक बाट अवश्य अछि।

४. अधिकार

अधिकार शब्द पाँजिमे केवल सत्ता नहि जनबैत अछि। ई बतबैत अछि जे कोन सम्बन्ध मान्य मानल गेल, कोन शाखा ककरा संग वैवाहिक सम्बन्ध करबाक योग्य मानल गेल, आ कोन अभिलेखक आधार पर एहन निर्णय भेल। अधिकारक जाँच वंश-क्रमसँ पृथक नहि। पँजीकार

अपन मनसँ अधिकार नहि बनबैत अछि; पुरान अभिलेख, मान्य वंश-श्रृंखला आ उपलब्ध प्रमाणक आधार पर ओकर स्थिति कहैत अछि। जँ अभिलेख अपूर्ण हो तँ निर्णय स्थगित कयल जा सकैत अछि। स्थगन अपमान नहि; असत्य निर्णयसँ बचाव अछि।

लोक निर्णय चाहैत अछि, विशेषतः विवाहक समय। घरमे तिथि ठाढ़, अतिथि बजाओल, अन्न मँगाओल, गाड़ी तय। तखन “जाँच शेष अछि” सुनब कठिन लगैत अछि। मुदा पाँजि घरक हड़बड़ीक अधीन नहि होयबाक चाही। विवाह एक दिनक; एक बेर भूल लिखल गेल तँ ओकर असर अनेक पीढ़ी धरि रहि सकैत अछि। पँजीकारक कलम पर दबाव जतेक बढ़य, ओकर गति ओतबे कम होयबाक चाही।

५. सम्बन्ध

सम्बन्ध लिखैत काल पुरुषक पितृ-रेखा मात्र पर्याप्त नहि। जे विवाहक जाँच अछि, ओहिमे मातृक सम्बन्धक दूरी, पूर्व विवाह, शाखा, ज्ञात निषेध, आ पुरान सिद्धान्त-पत्र वा समकक्ष अभिलेख सभ देखल जाए। सम्बन्धक उद्देश्य लोकक देह पर टिप्पणी करब नहि, वंशक निकटता आ पूर्व निर्धारित मर्यादा जाँचब अछि। जे बात पाँजिमे नहि अछि, ओकरा पाँजि कहि कऽ नहि लिखू। जे सामाजिक व्यवहार अछि मुदा अभिलेखीय सूत्र नहि, ओकरा पृथक राखू।

एहि नियम पर हम स्वयं अनेक बेर चुकल छी। पितृ-पक्ष स्पष्ट देखाइत छल तँ मन मानि लैत छल जे काज आधा समाप्त। गुरु डाँटैत छलाह—“माए कतय गेली?” तखन हम मातामहक पाँति खोजैत रही। पाँजि पुरुषक नामसँ भरल अछि, मुदा विवाहक दूरी स्त्रीक वंश बिना सम्पूर्ण नहि होइत। नाम कम लिखल गेल हो, तेँ महत्त्व कम नहि भऽ जाइत अछि।

६. साक्ष्य

साक्ष्य चारि प्रकारसँ आबि सकैत अछि—पुरान पाँति, पछिला प्रमाणित अभिलेख, जीवित साक्षीक कथन, आ बाहरी कागज। चारू समान भारक नहि। पुरान पाँतिमे सेहो भूल भऽ सकैत अछि; जीवित साक्षी भूलि सकैत अछि; सरकारी कागजमे नाम बिगड़ि सकैत अछि; घरक पोथी अपन सुविधा अनुसार काटल-बढ़ाओल भऽ सकैत अछि। तेँ एक स्रोत केँ दोसरसँ मिलाउ। मिलान नहि भेल तँ मतभेद लिखू। पँजीकारक काज मतभेद मेटायब नहि, ओकर यथास्थान बतायब अछि।

साक्षी जे कहैत अछि, ओकर शब्द ओकरे शब्द रहय। “हम सुनने रही” केँ “हम देखलहुँ” नहि बनाउ। “कहैत छलाह” केँ “घटल” नहि लिखू। मुँहक कथनमे समय पूछू—कखन सुनल,

ककरा सँ सुनल, ओ लोक तखन जीवित छल कि नहि। जे उत्तर नहि भेटय, रिक्त छोड़ू। रिक्त स्थान पर मन अपन शब्द रखय लगैत अछि; तैँ रिक्तिक रक्षा सेहो काज अछि।

७. अभिलेख

अन्तिम नियम अभिलेख लिखबाक अछि। तिथि लिखू। लिखनिहारक नाम वा चिह्न लिखू। पुरान पाँति काटू नहि। भूल भेटल तँ सुधार पृथक लिखू, कारण सहित। कोनो शब्द पढ़ाइत नहि हो तँ अनुमानित अक्षर कैँ निश्चित अक्षर-जकाँ नहि उतारू। कागज फाटल हो तँ फाटल कहू; स्याही मेटल हो तँ मेटल कहू; पाँति जानि-बुझि कऽ खुरचल हो, जँ प्रमाण अछि, तखन “खुरचल” लिखू। जल, दीमक, हाथ आ इच्छा—चारूक क्षति पृथक-पृथक देखाइत अछि। सभ मेटायल अक्षर जलक दोष नहि।

एहि अन्तिम वाक्य लिखिते हमर हाथ कने रुकल। उत्तर कोठलीमे रखल भीजल गट्ठरक तीन नाम मोन पड़ल। हम पिछला साँझ “अनुवर्ती अंश नष्ट प्रतीत” लिखने रही। “नष्ट”क कारण नहि लिखने रही। जल मानि लेने रही। विधि लिखैत काल अपन काल्हिक अभिलेख स्वयं हमरा प्रश्न कयलक।

हम दैनिकी खोललहुँ। काल्हिक पाँतिक कातमे छोट चिह्न देलहुँ—“कारण फेर जाँचू।” पुरान अभिलेख काटल नहि। पँजीकारक पहिल अनुशासन अपन लिखल बात पर सेहो लागू होयबाक चाही।

विधिक सात भाग एतय समाप्त भऽ सकैत छल, मुदा गुरु आठम नियम मुँहे कहलनि, कागज पर कम लिखैत छलाह। ओ नियम छल—“ग्राहकक इच्छा आ अभिलेखक कथन एक नहि।” कियो अपन वंश लम्बा चाहत, कियो छोट; कियो कोनो नाम जोड़य चाहत, कियो हटबय; कियो उपाधि आगाँ करय चाहत, कियो विवाहक पाँति पाछाँ। पाँजि इच्छा-पत्र नहि। जे प्रमाणित अछि, से रहत; जे विवादित अछि, से विवादित कहल जाएत।

एहि नियमक दोसर भाग हम दीर्घ काल पछाति बुझलहुँ—पँजीकारक अपन इच्छा सेहो ग्राहकक इच्छासँ पृथक कोनो शुद्ध वस्तु नहि। हमरो कुल अछि, मान-अमान अछि, भय अछि, लाभ अछि, परिवार अछि। तैँ जखन अपन घरक नाम पाँजिमे आबय, तखन कलम निष्पक्ष अपने नहि रहैत। ओकरा निष्पक्ष रखबाक लेल नियम चाही, साक्षी चाही, दोसर हाथक जाँच चाही। अपन वंशक अभिलेख एकान्तमे लिखब उचित नहि।

ई लिखैत समय हमरा अपन परदादाक हाथक अनेक पाँति मोन पड़ल। अक्षर पहिचानैत रही—लम्बा ईकार, दाहिना झुकल “र”, तिथिक पछाति छोट दोहरा डण्डा। घरमे हुनक लिखावट प्रमाण मानल जाइत छल। मुदा प्रमाण आ पवित्रता एक वस्तु नहि। पाँजि मनुष्य लिखैत अछि। मनुष्यक हाथ थाकैत अछि, चुकैत अछि, डरैत अछि, दबैत अछि, कखनो लोभ करैत अछि। तेँ पुरान हस्ताक्षरक आदर हो, पूजा नहि।

दोपहरसँ पहिने हम विधिक पन्ना पृथक मोड़ि कऽ दैनिकीमे राखलहुँ। ओकर माथ पर लिखल—“भीजल गट्ठर पढ़बाक पहिने अपन उपयोगार्थ।” ई सार्वजनिक नियमावली नहि छल। ककरो शिष्य लेल सेहो नहि। स्वयं कैँ बाँधबाक कागज छल।

तखन गट्ठर खोललहुँ। ऊपरक पात आब कने कठोर भेल छल। पहिल पन्नामे मूलक नाम आधा पढ़ाइत छल। दोसरमे ग्राम स्पष्ट। तेसरमे एक पुरुषक नाम, पिता, पितामह। चारिम पन्नामे विवाहक तिथि। पाँचम पन्नामे एक पुरान सिद्धान्त-जेकाँ संरचना, मुदा माथक भाग गलल। हम क्रमांक देब आरम्भ कयलहुँ—अस्थायी १, अस्थायी २, अस्थायी ३। मूल क्रम ज्ञात नहि छल, तेँ स्थायी संख्या देनाइ उचित नहि।

एक पन्नाक दहिना कातमे हलुक खरोंच देखायल। काल्हि एकरा हम जलक सिकुड़न मानने रही। आइ प्रकाश कातसँ देलाक पछाति खरोंच सीधा नहि, बेराबेरी चलल देखायल—जेना धारदार वस्तु एकहि ठाम अनेक बेर चलाओल गेल हो। अक्षर एखन पढ़ाइत नहि छल। हम “खुरचल” नहि लिखलहुँ। केवल—“दहिना कात, सतह-क्षति; कारण अनिश्चित।” नियम सात एतबे अनुमति दैत छल।

तीन नामवला पन्ना फेर सोझाँ आयल। पहिल नामक पछाति पिता-पितामहक क्रम छल। दोसर नामक पछाति दू अक्षर, फेर रिक्त। तेसर नामक पछाति एक महीन रेखा, फेर उज्जर भाग। उज्जर भाग जलक कारण बनल कि हाथक कारण, निर्णय एखन नहि। हम तिरछा प्रकाश देलहुँ, आवर्धक काँच लगेलहुँ, पन्ना उलटि नहि सकलहुँ। निष्कर्ष स्थगित।

विधि लिखबाक लाभ तत्काल भेटल। काल्हि हम तीन नाम देखि कथा बनयबाक आरम्भ कऽ सकैत रही—बाढ़ि, नष्ट वंश, बहल पाँति। आइ हमरा केवल तीन नाम देखाइत छल, आ तीन पृथक प्रकारक रिक्ति। पाँजि कखनो-कखनो मनुष्यसँ एतबे माँगैत अछि जे ओ अपन हतबड़ी रोकय।

दुपहर २ बजि १४ मिनट पर एक वृद्ध आगन्तुक आयलाह। ओ गट्ठरक गामक नाम सुनि आएल छलाह। कहलनि, “हमरा पुरखा ओतहि छलाह।” हम नाम पुछलियनि। कहलनि। पन्नामे नाम नहि भेटल। ओ फेर दोसर उच्चारण कहलनि। हम सेहो खोजलहुँ। नहि। तखन ओ पुछलनि, “तँ हम ओहि गामक नहि?” हम कहलियनि, “हम एतेक मात्र कहि सकैत छी जे एहि भीजल गट्ठरक एखन धरि पढ़ल भागमे अहाँक कहल नाम नहि भेटल।”

हुनका उत्तर पसिन्न नहि पड़लनि। ओ कहबाक चाहैत छलाह जे हुनक दादा अमुकक विवाह अमुक घरमे भेल, आ सभ जानैत अछि। हम कहलियनि, “सभ जानैत अछि—ई सेहो एक साक्ष्य अछि, मुदा ककरा-ककरा सँ, कखनसँ, से लिखब पड़त।” ओ उठि गेलाह। जाइत काल कहलनि, “बेसी कागज देखबैत छी।” हम उत्तर नहि देलियनि। पँजीकारक काज कखनो लोक कैं अनावश्यक जाँच जकाँ देखाइत अछि। जाँच हटैतहि पाँजि स्मृति मात्र रहि जाएत।

साँझमे हम विधिक पन्ना फेर पढ़लहुँ। “अधिकार” शब्द पर एक छोट रेखा खींचल। हमरा बुझायल जे अधिकार केवल ककरा संग सम्बन्ध मान्य अछि, ताहि तक सीमित नहि; ककर नाम अभिलेखमे प्रवेश पबैत अछि, ई सेहो अधिकारक प्रश्न अछि। मुदा ई विचार हम नियममे नहि जोड़लहुँ। ओ तखन प्रमाणित विधि नहि, हमर निजी आशंका छल। निजी आशंका कैं नियम बनबैत देरि नहि लगैत अछि।

राति ८ बजि ३५ मिनट पर मोहन फोन केलक। पुछलक, “पोथी सुखा रहल अछि?” हम कहलियैक, “अछि।” ओ पुछलक, “किछु भेटल?” हम कहलियैक, “मूल, ग्राम, किछु नाम।” ओ कहलक, “एतबे?” हम उत्तर देलियैक, “एखन एतबे।” तखन हम ओकरा नहि कहलियैक जे तीन नामक पछाति तीन रिक्ति अछि। नियम छओ कहैत छल—साक्ष्य पूर्ण होअय, तखन कथन बढ़ाउ।

फोन राखलाक पछाति हम दैनिकीमे दिनक अन्तिम लेख लिखलहुँ—“विधि पहिने, पठन पछाति।” ओकर नीचाँ सात शब्द फेर लिखलहुँ: “पहिचान। मूल। ग्राम। अधिकार। सम्बन्ध। साक्ष्य। अभिलेख।” सातम शब्दक पछाति स्थान छोड़ल। किएक छोड़ल, तखन नहि जानैत रही। एखन बुझैत छी—पाँजिमे जे लिखल अछि, ओकर जाँचक विधि अछि; जे जानि-बुझि कऽ नहि लिखल गेल, ओकर विधि पृथक होइत अछि। ओ विधि हमरा एखन सीखबाक छल।

अध्याय ४ — कोसी — १

हम एखन बहैत छी आ हमरा बहब कहल जाइत अछि मुदा हमर बहब एकटा बाट पर चलब नहि अछि हम बालू उठबैत छी हम बालू छोड़ैत छी हम कछेर काटैत छी हम दोसर कछेर बनबैत छी हम रातिमे जे खेतक कात लग छी भोरमे ओकर मध्य दिस पहुँचैत छी हम जे धार छोड़ि दैत छी तकर भीजल रेखा अनेक दिन धरि घासक नीचाँ रहैत अछि आ लोक ओकरा पुरान धार कहैत अछि जखन ओहि रेखा पर घर उठैत अछि आ बाँस रोपल जाइत अछि आ तुलसीक चौरा बनैत अछि तखन नाम नव होइत अछि मुदा माटिक नीचाँ महीन बालू ओहि पुरान चलन कैँ रखैत अछि हम पाथरक बीच सँ उतरैत छी आ समतल भूमि पाबि कऽ पसैरबाक ठाम खोजैत छी हमरा रोकबाक लेल बाँध उठैत अछि तटबन्ध उठैत अछि माटि भरल जाइत अछि बोरा पड़ैत अछि बोल्डर अबैत अछि तारक जाली कसैत अछि खूँटा गड़ैत अछि रजिस्टर खुलैत अछि नाप लिखल जाइत अछि आदेश निकलैत अछि हस्ताक्षर होइत अछि आ एहि सभक कातसँ हमर जल अपन भार लऽ कऽ चलैत अछि जखन कियो कहैत अछि जे हमरा थामल गेल तखन हम थामल शब्द नहि बुझैत छी हम केवल ऊँचाइ बुझैत छी ढलान बुझैत छी भीजल माटि बुझैत छी कातक दबाव बुझैत छी भीतर भरैत जल बुझैत छी आ जँ कोनो ठाम माटि हमरा भारक संग नहि टिकैत अछि तँ ओहि ठाम हम जाइत छी हमरा लेल भंग आ मार्ग पृथक शब्द नहि अछि लोकक लेल अछि किएक तँ लोक घर बनबैत अछि सीमा खींचैत अछि खेत नापैत अछि नाम लिखैत अछि खाता खोलैत अछि आ अपन बालक कैँ कहैत अछि जे ई भूमि तोहर अछि हम ई बात सुनैत नहि छी मुदा भूमि पर पड़ल सभ चिन्ह हमरा स्पर्शमे अबैत अछि हलक धारक रेखा धानक जरि पोखरिक मेड़ गोबरसँ लीपल आँगन ईंटक नेब चूल्हिक राख कूपक घेरा पीपरक जड़ मचानक बाँस मृत देहक राख विवाहक मड़वाक खूँटा सभ हमरा भीतर एक बेर नहि मुदा कालक्रमे अबैत अछि आ हम ओकरा अपन संग राखि नहि सकैत छी किछु छोड़ि दैत छी किछु आगू लऽ जाइत छी किछु बालूक नीचाँ ढाकि दैत छी किछु फेर उजागर करैत छी आ एहि कारण जे वस्तु लोक हेरायल मानैत अछि से कखनो कछेर पर फेर देखाइत अछि मुदा जे फेर देखाइत अछि से पहिने जकाँ नहि रहैत अछि कागजक स्याही पसरल रहैत अछि लकड़ी फूलल रहैत अछि हड्डी पर माटि सटल रहैत अछि धातु पर जंग रहैत अछि नामक आधा अक्षर बचल रहैत अछि आ शेष भाग अनुमान माँगैत अछि हम अनुमान नहि दैत छी हम केवल जे बचल अछि तकर कात बदलैत छी लोक हमरा एकहि नदी कहैत अछि मुदा गाम हमरा देह पर अपन आकार छोड़ैत अछि नावक घाट खेतक मेड़ चूल्हिक राख मचानक बाँस आ पयरक असंख्य चिन्ह हमरा जलमे पड़ैत अछि मुदा जल ओकर

जाति नहि पूछैत अछि जाति कछेर पर पूछल जाइत अछि कूप पर पूछल जाइत अछि भोजनक पाँति पर पूछल जाइत अछि विवाहक कागज पर पूछल जाइत अछि आ जखन ओहि कागजक गट्ठर हमरा जलमे भीजैत अछि तखन अक्षरक भेद स्याहीक रंग आ कागजक मोटाइ धरि सीमित रहि जाइत अछि हम एक नाम कैँ बचबैत नहि छी आ दोसर नाम कैँ मेटैत नहि छी हमर जलक कोनो कुल नहि अछि मुदा हमरा कात पर कुलक पोथी राखल अछि आ पोथीक भीतर जे रेखा सीधा देखाइत अछि से हमरा धार जकाँ सीधा नहि रहैत अछि कियो एक अक्षर जोड़ैत अछि कियो एक नाम छोड़ैत अछि कियो विवाह लिखैत अछि कियो विवाहक ठाम रिक्त छोड़ैत अछि कियो जन्मक तिथि जानैत अछि कियो मृत्युक दिन भूलि जाइत अछि कियो अपन हाथक खोंचसँ एक पीढ़ी कैँ दोसर पीढ़ीसँ काटैत अछि आ कागज चुप रहैत अछि जाबत धरि कियो फेर ओकरा खोलि नहि देखैत अछि हम चुप नहि रहैत छी हमरा ध्वनि अछि मुदा हमर ध्वनि कथन नहि अछि रातिमे बाँधक देह पर रगड़ अछि दिनमे नावक तल्ला पर थपकी अछि झाड़ीमे अटकल घासक सरसराहट अछि दूर खेतक मेड़ टूटबाक मद्धिम गर्जना अछि गहिर जलमे घूमैत काठक ठकठक अछि आ कखनो एहन ध्वनि अछि जकरा सुनि लोक बाहर अबैत अछि आ किछु नहि देखैत अछि किएक तँ जे बदलैत अछि से आँखिक सोझाँ एकहि क्षणमे सम्पूर्ण नहि होइत अछि पहिने माटिक भीतर जल भरैत अछि फेर कात नरम होइत अछि फेर एक रेखा बनैत अछि फेर रेखा चौड़ा होइत अछि फेर लोक फोन करैत अछि फेर कोनो दफ्तर समय लिखैत अछि फेर दोसर दफ्तर उत्तरक प्रतीक्षा करैत अछि फेर कियो बोरा गनैत अछि कियो गाड़ी गनैत अछि कियो मजूर गनैत अछि कियो किलोमीटर गनैत अछि कियो कहैत अछि जे एखन अवसर अछि आ हम एखन शब्द नहि बुझैत छी हम केवल दबावक बढ़नाइ बुझैत छी हमरा ऊपर आकाशक बरखा पड़ैत अछि हमरा भीतर पहाड़क जल अबैत अछि हमर कातक माटि भीजैत अछि आ जे संकीर्ण ठाम हमरा देल गेल अछि ओहि ठाम हम गहिराइ बढ़बैत छी वेग बढ़बैत छी कछेरक तल पर जलक निरन्तर स्पर्शसँ माटि हटबैत छी आ लोक एहि हटबाक तिथि खोजैत अछि जखन घटना पहिने सँ अनेक दिन धरि बनैत रहैत अछि हम घड़ी नहि रखैत छी मुदा हमरा कात घड़ी सभ चलैत अछि फोनक घड़ीमे दफ्तरक देबाल पर राहत शिविरक मेज पर पँजीकारक दैनिकीमे आ एखन जखन एक वृद्ध हाथ समय लिखैत अछि आ एक अभियन्ता फोनक दोसर दिस किछु शब्द रोकैत अछि आ एक नाविक भीजल गट्ठर कैँ बाँसक फट्टीक बीच बचबैत अछि तखन हम ओहि सभक सोझाँ नहि रुकैत छी हम बहैत छी पुरान धारक स्मृति माटिक भीतर खुलैत अछि नव धारक दबाव कात पर चढ़ैत अछि गामक नाम कागज पर एखनहुँ अक्षुण्ण अछि घरक देबाल एखनहुँ ठाढ़ अछि

तुलसीक पात एखनहुँ भीजल हवा लेत अछि चूल्हिमे राख एखनहुँ गरम अछि आ हमरा जलक अगिला स्पर्शक विषयमे कोनो पाँति एखन धरि पूर्ण नहि लिखल गेल अछि

अध्याय ५ — तीन नाम

कोसीक पहिल स्वर हम नहि सुनलहुँ। हमरा लग जे किछु छल, से चारि दिनक लिखित लेखा, भीजल पात, दूटा सूती डोरी, आ तीनटा नाम छल। नदी अपन काज करैत रहय, मुदा पँजीकारक काज नामक क्रम जाँचब अछि। ताहि दिन भोरमे हम पहिने ओ तीनू पन्ना पृथक कयलहुँ। रातिभरि ओकरा कागजक दू तहक बीच राखल गेल छल। ऊपर छोट काठक पटरी आ ओकर ऊपर दूटा पुरान कोश राखल छल, जाहिसँ पात टेढ़ नहि होअय। भोर पाँच बजि अठावन मिनट पर पटरी हटेलहुँ। पातमे नमी एखन छल, मुदा काल्हिक अपेक्षा कम। अंगुरी नहि लगेलहुँ। बाँसक पातर चिमटीसँ कात उठेलहुँ आ उजासक दिशा बदललहुँ।

पहिल नाम छल—“श्रीधर मिश्र”। नामक आगाँ “कौशिक” पढ़ाइत छल, ओकर पछाति ग्रामक नामक पहिल दू अक्षर स्पष्ट, शेष जलसँ धुँधल। पिता—“वाचस्पति”। पितामह—“रघुपति”। एतय धरि क्रम यथावत। तकर पछाति जे ठाम पुत्र अथवा विवाह-संबन्धक अगिला अभिलेख रहबाक चाही, ओतय तीन पाँति रिक्त देखायल। रिक्ति पूर्ण उज्जर नहि छल। कागजक रंग पीयर-भूर, मुदा बीच-बीचमे कालिक महीन कण छल। हमरा पहिल विचार भेल—जल बहबाक समय स्याही घुलि गेल होयत। दैनिकीमे लिखलहुँ: “नाम १। क्रम उपलब्ध। उत्तरवर्ती अभिलेख अपठ्य। सम्भावित जल-क्षति।” सम्भावित शब्दक नीचाँ रेखा नहि खींचलहुँ।

दोसर नाम—“रत्नेश्वर झा”। मूल पढ़ाइत छल, ग्राम स्पष्ट नहि। पिता “दयाकान्त”, पितामहक नामक केवल अन्तिम “नाथ” बचल। एहि पन्नाक नीचाँ जलक गाढ़ धब्बा छल। धब्बाक सीमा गोल नहि, अनियमित। पन्ना उलटि देखलहुँ तँ पछिला पृष्ठक अक्षर सेहो ओहि ठाम फैलल छल। एतय जल-क्षतिक अनुमान पहिल नामसँ बेसी सहज छल। मुदा रत्नेश्वरक नामक पछाति एक छोट चिह्न छल—दू बिन्दु आ ओकर बीच खड़ी पातर रेखा। ई चिह्न हमरा घरक पुरान पोथीमे “क्रम आगाँ” बुझबैत छल, मुदा आगाँ किछु नहि। हम चिह्नक नकल दैनिकीमे बनौलहुँ। लिखलहुँ: “नाम २। क्रम-सूचक चिह्न विद्यमान। अगिला अभिलेख नहि।”

तेसर नाम पढ़बामे बेसी काल लागल। पहिल अक्षर “ज” कि “य”, निश्चय नहि भेल। पात सुखलाक संग स्याहीक बाहरी भाग फाटि रहल छल। हम ओकरा फेर राखि देलहुँ। सात बजि बीस मिनट पर दोसर बेर देखलहुँ। उजास एहि बेर पूबसँ सीधा आबि रहल छल। अक्षर “ज” सिद्ध भेल। नाम—“जयनारायण मिश्र”। पिता “माधव”, पितामह “देवदत्त”। ग्रामक नाम वएह छल जे गट्ठर लऽ कऽ आएल नाविक कहने छल। एहि नामक पछाति आधा पाँति धरि महीन खरौंच सन देखाइत छल, मुदा हम ओकरा खरौंच नहि लिखलहुँ। दैनिकीमे केवल एतबे: “नाम ३। उत्तरवर्ती भाग अस्पष्ट। परीक्षण शेष।”

तीनू नाम पृथक-पृथक कुलक्रममे छल, मुदा तीनू एकहि दशकक आसपासक अभिलेख बुझाइत छल। तिथि पूर्ण नहि बचल छल। एक ठाम संवत्क दू अंक, दोसर ठाम मास, तेसर ठाम पक्षक नाम। यदि ई तीनू पन्ना एकहि पोथीक क्रमिक भाग होइत, तँ समयक निकटता असामान्य नहि। मुदा तीनू ठाम उत्तरवर्ती क्रम टूटल छल। एतबा संयोग पँजीमे भेटि सकैत अछि। परिवार समाप्त भऽ सकैत अछि, पुत्र नहि भऽ सकैत अछि, पुत्री मात्र भऽ सकैत अछि, परदेस गेल लोकक अगिला विवरण पाँजिमे नहि आबि सकैत अछि, पोथीक दोसर खण्डमे क्रम चलि सकैत अछि, अथवा पन्ना छुटि सकैत अछि। पँजीकारक पहिल धर्म संयोग कैँ अपराध नहि मानब अछि।

हम अपन पुरान पेटार खोललहुँ। पेटारक भीतर पाँचटा नकल-पोथी छल, जे हमर पिता हमरा देने छलाह। ओहि सभमे गामक नाम खोजलहुँ। पहिल नकल १९१२ सँ १९२७ धरि, दोसर १९२८ सँ १९४१ धरि, तेसर विवाह-अभिलेख, चारिम विवादित अभिलेखक प्रति, पाँचम असंपूर्ण अनुक्रमणिका। गामक नाम पहिल नकलमे एक बेर, दोसरमे तीन बेर भेटल। श्रीधर, रत्नेश्वर, जयनारायण—तीनूमे सँ कोनो नाम नहि।

एहि अनुपस्थिति कैँ हम प्रमाण नहि मानलहुँ। नकल-पोथी पूर्ण नहि छल। पिता अनेक बेर कहने छलाह जे पँजीमे “नहि भेटल” आ “नहि छल” दुइ पृथक कथन अछि। पहिल कथन पँजीकारक सीमा बतबैत अछि, दोसर इतिहासक निर्णय। हम दैनिकीमे लिखलहुँ: “नकलमे अनुपलब्ध। मूल स्रोतक अभावमे निष्कर्ष स्थगित।”

आठ बजि दस मिनट पर घरक आँगनमे चूल्हिक धुआँ उठल। नातिनक कोठली बन्द छल; ओ एखन दिल्लीमे छल, ताहि समय ओकर कोठली प्रायः बन्दे रहैत। हम चाह पीबैत पन्ना नहि देखैत

रही। भीजल पातक संग भोजन अथवा पेय राखब हमर नियमक विरुद्ध छल। चाह पीबि कऽ हाथ धोएलहुँ, सुखेलहुँ, तखन फेर बैसलहुँ।

नामक क्रम बुझबाक एक उपाय विवाह-अभिलेख अछि। यदि पुरुषक मूलक्रम नहि चलल, तकर विवाह सम्बन्ध ककरो दोसर घरक पँजीमे रहि सकैत अछि। हमर लग ओ गामसँ जुड़ल तीनटा विवाह-अभिलेखक पुरान प्रति छल। पहिल प्रति पर स्याही फीक, मुदा पढ़बाक योग्य। ओतय “श्रीधर” नाम दू बेर भेटल—एक बेर साक्षी, एक बेर कन्याक मामाक रूपमे। पिता-नाम मेल नहि खाइत छल। ताहि कारण ओ हमर श्रीधर नहि। दोसर प्रतिमे रत्नेश्वर नाम नहि। तेसरमे “जयनारायण” छल, मुदा ग्राम दोसर। नामक समानता सम्बन्ध सिद्ध नहि करैत अछि। पँजीमे समान नाम बेसी अछि।

दस बजि पाँच मिनट पर एक प्रश्न उठल—तीनू नामक पछातिक लेख किएक टूटल? हम तत्क्षण ओकर उत्तर लिखबाक इच्छा रोकलहुँ। प्रश्न लिखलहुँ, उत्तरक ठाम रिक्त छोड़लहुँ। रिक्त ठाम छोड़ब सेहो विधिक भाग अछि। जे बात एखन ज्ञात नहि, ओकरा भाषा देब इतिहास बनायब नहि, कथा बनायब अछि। हम कथा लिखनिहार नहि, पँजीकार छी।

एहि वाक्य लिखलाक पछाति किछु काल हम अपन हाथ देखैत रहलहुँ। अस्सी वर्षक हाथ। नखक कातमे स्याहीक पुरान दाग। तर्जनीक जोड़ कड़ा। दहिना अंगूठाक नीचे चमड़ा मोट। एहि हाथसँ कतेक नाम लिखल गेल अछि, ओकर गणना हमरा लग नहि। मुदा नाम लिखल मात्रे नाम बचैत अछि, ई कहब यथार्थ नहि। नाम तखने टिकैत अछि जखन अगिला लोक ओकरा खोजैत अछि, पढ़ैत अछि, आ अपन सम्बन्ध स्वीकार करैत अछि। पन्ना रहि जाय आ सम्बन्ध नहि रहय तँ अभिलेख एकटा शब्द भरि भऽ सकैत अछि।

एगारह बजि अठारह मिनट पर नाविक फेर आयल। काल्हि जे गट्ठर देलने छल, वएह। ओकर धोतीक नीचाँ भाग एखन सेहो कीचड़सँ करिया छल। ओ पूछलक, “पोथी बाँचत?”

हम कहलियैक, “किछु पात बाँचत। किछु नहि।”

ओ तीनू नाम सुनबाक आग्रह नहि केलक। ओ केवल गामक नाम पुछलक। हम कहलियैक। ओ माथ हिलेलक। किछु काल चुप रहल, तखन कहलक, “ओ गामक लोक सभ कैम्पमे पृथक-पृथक अछि। ककरो कागज नहि। राशनक नाँव बनेत तखन गामक नाँव पुछतै।”

हम पुछलियैक, “अहाँक नाँव राशन-अभिलेखमे चढ़ल?”

ओ कहलक, “काल्हि धरि नहि।”

हम ओकर नाम, पिता-नाम, गाम दैनिकीक पृथक पन्नामे लिखलहुँ। पँजीमे नहि। ओ कहलके, “एहि पोथीमे लिखि दिऔ।”

हम कहलियैक, “ई पोथी अहाँक राशन-अभिलेख नहि।”

ओ हँसल नहि। कहलके, “लिखल नाम तँ लिखले नाम भेल।”

एहि कथनक उत्तर हम तत्क्षण नहि देलियैक। ओकरा लग सभ अभिलेखक प्रयोजन एक्के सन देखाइत होयत—नाम रहय, तखन लोक मानल जाय। शासनक सूचीमे नाम नहि तँ अनाज नहि। पँजीमे नाम नहि तँ सम्बन्ध नहि। दुनू अभिलेखक नियम पृथक, मुदा नाम छूटलाक परिणाम दूनूमे लोकपर पड़ैत अछि। हम ओकर नाम दैनिकीमे रहए देलहुँ, मुदा पँजीमे नहि चढ़ेलहुँ।

नाविक गेलाक पछाति तीनू नाम फेर पढ़लहुँ। श्रीधर। रत्नेश्वर। जयनारायण। जोर सँ नहि। मनमे। नामक उच्चारणसँ अक्षरक आकार बदलैत नहि, मुदा कखनो-कखनि ध्वनि पुरान परिचय जगा दैत अछि। जयनारायण नाम पर एक क्षण लेल हमरा परदादाक पोथीक एक पन्ना मोन पड़ल। स्मृति स्पष्ट नहि छल। हम पेटारक चारिम नकल निकाललहुँ—विवादित अभिलेखक प्रति। पन्ना १७ पर “जयनारायण” भेटल, मुदा उपनाम नहि, पिता-नाम नहि। केवल एक वाक्य: “जयनारायणक विषय स्थगित।” तिथि धुँधल।

“विषय स्थगित” पँजीक सामान्य सूत्र नहि। हम पिता सँ ई वाक्य कखनो सुनने नहि रही। परदादाक कागजमे “निर्णय स्थगित”, “साक्ष्य शेष”, “अधिकार विवादित” भेटैत छल, मुदा “विषय स्थगित” कम। हम ओहि पन्नाक प्रति बनौलहुँ। मूल नकल-पोथी फेर पेटारमे राखलहुँ।

दुपहर एक बजि सैंतीस मिनट पर मोहनक फोन आयल। आवाजक पाछाँ अनेक लोकक बोल सुनाइत छल। ओ राहत शिविरमे छल। पुछलक, “बाबूजी, किछु नाँव भेटल?”

हम कहलियैक, “तीनटा।”

“ककर?”

हम तीनू नाम कहलियैक।

फोनक दोसर कात तीन-चारि क्षण चुप्पी रहल। तखन ओ कहलक, “हम एहि नाम सभकेँ नहि चिन्हैत छी।”

हम कहलियैक, “चिन्हब आवश्यक नहि।”

ओ पुछलक, “आगाँ किछु?”

“नहि।”

“अर्थ?”

“अर्थ एखन नहि।”

ओ किछु कहए चाहलक, मुदा पाछाँ सँ केओ ओकरा बजेलक। ओ कहलके, “रातिमे फेर फोन करब।” फोन कटि गेल।

हम दैनिकीमे फोनक समय लिखलहुँ। मोहनक चुप्पी नहि लिखलहुँ। दैनिकी ध्वनिक लेखा नहि, तथ्यक लेखा छल। तथापि मनमे प्रश्न रहल जे तीनू नाम सुनि ओ किएक किछु क्षण चुप भेल। प्रश्नक उत्तर हमरा लग नहि छल। तेँ ओहो प्रश्न लिखल नहि गेल।

दुपहरक पछाति पात कने बेसी समतल भेल। श्रीधरक पन्नामे जे तीन रिक्त पाँति छल, तकर पहिल पाँतिक आरम्भमे एक अति महीन अक्षर देखायल। “पु” कि “पौ”। आवर्धक शीशा लगेलहुँ। “पु” सिद्ध नहि भेल। कागजक रेशा स्याही सन देखाइत छल। हम शीशा हटेलहुँ। पानी जे नष्ट करैत अछि, ओ कखनो-कखनि नष्ट वस्तुक आकार सेहो बनबैत अछि। पँजीकारक आँखि जतेक पढ़ैत अछि, ओतबे भ्रम सेहो उत्पन्न कऽ सकैत अछि। दैनिकीमे एहि कारण लिखलहुँ: “अनिश्चित चिह्न—अभिलेख नहि मानल जाय।”

रत्नेश्वरक पन्ना दोसर कठिनाइ दैत छल। क्रम-सूचक चिह्नक पछाति रिक्त भागक कागज शेष पन्नासँ कने पातर छल। जलमे भीजला पर घर्षणसँ एहन भऽ सकैत अछि। पन्ना एक-दोसरासँ सटि कऽ खुलल होयत। हम ओतय कोनो धारदार वस्तुक निसान नहि देखलहुँ। अतएव जल-क्षतिक अनुमान यथावत राखलहुँ।

जयनारायणक पन्ना हम अन्तमे देखलहुँ। आधा पाँतिक महीन रेखा फेर सोझाँ छल। काल्हि ओकरा खरोंच बुझने रही, आइ परीक्षण शेष लिखने रही। सूखलाक पछाति रेखाक भीतर कागजक रेशा टूटल देखायल, मुदा टूटन सभ एक दिशा नहि। एतय जल, रगड़, अथवा जानि-बुझि कऽ किछु हटाओल गेल—तीनू सम्भावना खुलल छल। हम तेसर सम्भावना दैनिकीमे नहि लिखलहुँ। कारण बिना प्रमाणक गम्भीर सम्भावना लिखि देब स्वयं प्रमाणक रूप लऽ सकैत अछि।

साँझ चारि बजि एक्काइस मिनट पर हम तीनू नामक एक सूची बनौलहुँ। नाम, पिता, पितामह, मूल, ग्राम, उपलब्ध तिथि, पन्नाक दशा, अगिला क्रमक दशा। आठटा कोठली। तीन पाँति। जे ज्ञात नहि छल, ओतय डैश नहि देलहुँ; “अज्ञात” लिखलहुँ। डैश रिक्ति अछि, “अज्ञात” ज्ञानक सीमा। ई अन्तर हमरा लेल आवश्यक छल।

सूची बनलाक पछाति एक बात देखायल—तीनू नामक अभिलेख पृथक हाथक नहि छल। अक्षरक ढाल, मात्रा, “र”क आकार, अंक लिखबाक रीति—सभ एकहि लेखकक बुझाइत छल। लेखक कए वर्ष धरि पँजी लिखैत रहल होयत, ताहि कारण समय पृथक भऽ सकैत अछि। मुदा यदि तीनू अभिलेख एकहि हाथक अछि आ तीनू क्रम एकहि प्रकारे टूटल अछि, तँ जल-क्षतिक संयोग कने कम सहज बुझाइत अछि।

हम एही ठाम रुकलहुँ। “कम सहज” प्रमाण नहि। दैनिकीमे लिखलहुँ: “लेखक सम्भवतः एक। हस्तलेख-परीक्षण आवश्यक।”

घरमे हस्तलेख-परीक्षणक कोनो यन्त्र नहि छल। हमरा लग केवल आँखि, पुरान नकल, आ समय छल। परदादाक लिखावट हमरा परिचित छल, मुदा परिचय प्रमाण नहि। हम निर्णय अगिला दिन धरि स्थगित कयलहुँ।

साँझक उजास घटल। पन्ना फेर कागजक तहक बीच राखल गेल। तीनू नामक प्रति पृथक लिफाफामे। लिफाफाक ऊपर लिखलहुँ—“अस्थायी प्रति। मूलसँ सत्यापन शेष।” श्रीधर, रत्नेश्वर, जयनारायणक नाम नहि लिखलहुँ, केवल क्रमांक १, २, ३। कारण नाम लिखल लिफाफा घरक कोनो दोसर लोक खोलि सकैत छल। पँजीकारक गोपनीयता केवल जीवित ग्राहक लेल नहि होइत अछि। मृतक नाम सेहो परिवारक भीतर विवाद जगा सकैत अछि।

राति मोहनक फोन नहि आयल। आठ बजि पचपन मिनट धरि प्रतीक्षा कयलहुँ। तखन दैनिकी बन्द करबाक पहिने दिनक निष्कर्ष लिखलहुँ—“तीन नाम। उत्तरवर्ती क्रम अनुपलब्ध। जल-क्षति सम्भव। अन्य कारण अप्रमाणित। निर्णय स्थगित।”

“जल-क्षति सम्भव” लिखिते हमरा कने सुविधा भेल। सुविधा प्रमाण नहि। ई बात हम जानैत रही। तथापि जे पन्ना नदीसँ भीजि कऽ आयल हो, ओकर रिक्ति जलक कारण मानब मनुष्यक सहज प्रवृत्ति अछि। हम सेहो मनुष्य छी। पँजीकारक विधि मनुष्यक एहि सहजताक विरुद्ध बनाओल गेल अछि।

दैनिकी बन्द कयलहुँ। पेटारक चाबी तकियाक नीचाँ नहि, पुरान ठामे कमराक डोरीमे राखलहुँ। तीनू पन्ना रातिभरि दबावमे रहत। भोरमे फेर देखब। एखन धरि हमर अभिलेखमे कोनो वंश मेटायल नहि छल। केवल तीन नाम छल, जकर आगाँ किछु पढ़ाइत नहि छल।

अध्याय ६ — मोहनक फोन

राति मोहनक फोन नहि आयल छल। भोरमे हम ई बात नहि लिखलहुँ। फोन नहि आयब घटना नहि, केवल अपेक्षाक अपूर्णता छल; दैनिकीमे हम अपेक्षा नहि लिखैत रही। पाँच बजि चवालीस मिनट पर तीनू भीजल पन्ना फेर देखलहुँ। छओ बजि बारह मिनट पर जयनारायणक पन्नाक महीन रेखा पहिले जकाँ देखायल। सात बजि पाँच मिनट पर पात फेर दबावमे राखल। सात बजि सैंतीस मिनट पर पहिल फोन आयल। नम्बर मोहनक नहि छल।

दोसर कात एक युवक छल। कहलक जे ओ राहत-शिविरसँ बजैत अछि आ मोहन बाबू व्यस्त छथि। ओ पुछलक—“रामानुग्रह मिश्र?” हम कहलियैक—“हँ।” ओ कहलक—“मोहन बाबू कहलनि जे अहाँ घरसँ बाहर नहि जाउ।” हम पुछलियैक—“ओ स्वयं किएक नहि बजलाह?” युवक उत्तर देलक—“बैसारमे छथि।” हम पुछलियैक—“ककर बैसार?” उत्तर आयल—“विभाग आ जिला प्रशासनक।” एहि पछाति पाछाँ सँ केओ ओकर नाम बजेलक। ओ कहलक—“ओ फेर बजैत छथि।” फोन कटि गेल।

हम समय लिखलहुँ। “७:३७—अपरिचित युवक; मोहनक सन्देश—घर सँ बाहर नहि।” युवकक नाम नहि पुछि सकलहुँ। ताहि कारण “अपरिचित” लिखल। राहत-शिविरक नाम सेहो नहि पुछल गेल। लेख अधूरा छल।

आठ बजि एगारह मिनट पर मोहन स्वयं बजलक। आवाज थाकल छल, मुदा हम दैनिकीमे “थाकल” नहि लिखलहुँ। थकान अनुमान अछि। फोनक पाछाँ निरन्तर नाम पुकारल जा रहल छल—“सदरपुर... भेलाही... बसन्तपुर...” बीच-बीचमे कागज उलटबाक ध्वनि। मोहन पहिल वाक्य कहलक—“बाबूजी, अहाँ कुशल छी?”

हम कहलियैक—“कुशल छी।”

ओ पुछलक—“घरमे जल घुसल?”

“नहि।”

“कुआँ?”

“एखन उपयोग नहि कऽ रहल छी।”

“पीबाक जल?”

“दू घड़ा बचल अछि। रामदेव काल्हि देलक।”

ओ कहलक—“घड़क जल उबालि कऽ पीबू।”

हम कहलियैक—“जानैत छी।”

ओ फेर कहलक—“बाहर नहि जाउ।”

“सन्देश भेटल।”

एतय बातचीत समाप्त भऽ सकैत छल। मुदा ओ फोन नहि रखलक। हम सेहो नहि। दोसर कात नाम पुकारबाक क्रम चलैत रहल। एक क्षण ओ ककरोसँ कहलक—“एहि सूचीमे परिवार संख्या पृथक लिखू।” फेर हमरा कहलके—“पोथी?”

हम कहलियैक—“सुखा रहल अछि।”

“तीन नाम?”

“वएह।”

“आगाँ?”

“एखन नहि।”

ओ चुप रहल। हम पुछि सकैत रही—“काल्हि राति किएक नहि बजलह?” नहि पुछलियैक। एहन प्रश्नक उत्तर प्रायः थकान, बैसार, चार्ज समाप्त, नेटवर्क—एहि सभमे सँ किछु होइत। हमरा जे प्रश्न पूछबाक छल, से ई नहि छल।

मोहन कहलक—“एतय नाँवक पैघ कठिनाइ अछि।”

हम पुछलियैक—“ककर नाँव?”

“लोकक। एकहि गामक नाम तीन ढंगसँ लिखल। कोनो सूचीमे टोला पृथक, कोनोमे मूल गाममे। ककरो मतदाता-पत्र बहि गेल, ककरो राशन-पत्र। सभ कहैत अछि पहिने नाँव लिखू।”

हम कहलियैक—“अभिलेखक आधार?”

ओ हँसल कि नहि, ध्वनिसँ निश्चित नहि भेल। कहलक—“एतय अहाँक पँजीक नियम नहि चलत।”

“नियम बिना अभिलेख चलत?”

“चलाबय पड़ैत अछि।”

“चलाबय पड़ैत अछि आ चलैत अछि—दूनू एक बात नहि।”

ओ चुप भेल। पाछाँ सँ फेर केओ ओकरा बजेलक। ओ कहलके—“एक मिनट।” फोन खुल्ले रहल। हमरा कागज घिसबाक, प्लास्टिकक कुर्सी सरकबाक, लोकक बोलबाक ध्वनि सुनाइत रहल। कियो कहैत छल—“दू परिवार छूटि गेल।” कियो दोसर उत्तर दैत छल—“पहिने जे अछि से बाँटू।” मोहनक आवाज दूर सँ आयल—“छूटल नाम पृथक लिखू, काटू नहि।”

एहि वाक्य पर हमर ध्यान गेल। “काटू नहि।” ई पँजीकारक नियमक शब्द छल, मुदा ओ राहतक सूची लेल कहि रहल छल। किछु क्षण पछाति ओ फेर फोन पर आयल।

“बाबूजी?”

“हँ।”

“कतय छलहुँ?”

“एतहि।”

“हमरा मोन भेल फोन कटि गेल।”

“नहि।”

हम ओकरा कहि सकैत रही जे तोहर “काटू नहि” सुनलहुँ। नहि कहलियैक। पिता-पुत्रक बातचीतमे कखनो-कखनि सुनल बात बतायब अनावश्यक होइत अछि।

मोहन पुछलक—“दवा अछि?”

“छओ दिनक।”

“हम पठा देब।”

“पहिने कैम्पक लोक।”

“अहाँ कैम्पक लोक नहि छी?”

“एखन घरमे छी।”

ओ उत्तर नहि देलक। हमरा बुझायल ओ चिढ़ल होयत, मुदा ई अनुमान छल। हम स्वरक आधार पर मनःस्थिति दैनिकीमे कखनो नहि लिखैत रही।

किछु क्षण पछाति ओ कहलक—“हम एहि कात दू दिन आ रहब।”

“विभागक आदेश?”

“हँ।”

“कुसहा जाइ छह?”

फोनक दोसर कात पहिल बेर पूर्ण चुप्पी भेल। पाछाँक ध्वनि रहल, मुदा मोहन नहि बजलक। तखन कहलक—“एखन नहि।”

हम पुछलियैक—“कखन?”

“जखन कहत।”

“के?”

“ऊपरसँ आदेश आएत।”

“ककर ऊपर?”

एहि प्रश्न पर ओ कहलक—“बाबूजी, एखन ई सभ फोन पर नहि।”

हम “ई सभ”क अर्थ पुछि सकैत रही। नहि पुछलियैक। वाक्य स्वयं अस्पष्ट छल, आ अस्पष्टताक चारू कात अनुमानक अनेक ठाम होइत अछि। हम अनुमान रोकलहुँ।

मोहन जल-संसाधन विभागमे कनिष्ठ अभियन्ता छल। ओकर नियुक्ति भेलाक दिन हम पँजीमे किछु नहि लिखने रही; पँजी जीविका नहि लिखैत। घरक दैनिकीमे अवश्य लिखने रही—“मोहन नियुक्त; जल-संसाधन।” तिथि एखन मोन नहि। ओकर पहिल पदस्थापन तटबन्धक रखरखाववला उपखण्डमे भेल छल। एहि तथ्यक कारण गामक लोक कोनो कटाव, मरम्मत, बोरा, बोल्डर, भुगतान, माप-पुस्तिका वा ठेकेदारक बातमे हमरा सँ प्रश्न करैत छल, जेना पिता होयबाक कारण विभागीय अभिलेख हमरा लग रहय। हमरा लग नहि रहैत छल।

कुसहा टूटलाक पछाति प्रश्नक भार बदलि गेल छल। काल्हि साँझसँ दू लोक पुछि चुकल छल—"मोहन बाबू ओहि काजमे छलाह?" हम दुनू बेर उत्तर देलने रही—"हम नहि जानैत छी।" ई उत्तर तथ्यक अनुरूप छल। पिता अनेक बात नहि जानैत अछि, विशेषत: बेटाक कार्यालयक। तथापि "नहि जानैत छी" कहला सँ प्रश्न समाप्त नहि होइत।

फोन पर हम पुछलहुँ—"तोहर उपखण्ड एतय सँ कतेक दूर पड़ैत अछि?"

मोहन कहलक—"एहि समय दूरीक की अर्थ?"

"प्रश्न दूरीक अछि।"

"नक्शामे एक, बाटसँ दोसर, एखन पहुँचसँ तेसर।"

"कुसहासँ?"

ओ फेर चुप। तखन कहलक—"हमर नियमित क्षेत्र ओ नहि छल।"

ई उत्तर हमरा पुछल प्रश्नसँ कने आगाँ छल। हम "नियमित क्षेत्र" शब्द दैनिकीमे लिखबाक इच्छा अनुभव कयलहुँ, मुदा फोन चलि रहल छल। कलम हाथमे छल। कागज पर केवल समय लिखल।

हम कहि सकैत रही—"नियमित नहि, मुदा काज?" नहि कहलियैक। कारण प्रश्नक भीतर आरोप प्रवेश कऽ रहल छल। प्रमाण बिना आरोप पँजीकारक विधिक विरुद्ध अछि। परिवारमे सेहो एही नियम लागू होयबाक चाही कि नहि, ई हम कखनो निश्चित नहि कयने रही।

मोहन स्वयं कहलक—"बान्ह पर अनेक निकाय काज करैत अछि। विभाग, ठेकेदार, स्थानीय दल, नेपालक अधिकारी, केन्द्रक लोक... सभ किछु एक लोकक हाथमे नहि रहैत।"

हम एहि सूचीमे ध्यान देलहुँ। प्रश्न हम नहि पुछने रही, उत्तर ओ दऽ रहल छल।

"हम एक लोक नहि कहलहुँ।"

ओ तत्क्षण कहलक—"हम सामान्य बात कहि रहल छी।"

"बुझलहुँ।"

"अहाँ फेर ओहि ढंगसँ 'बुझलहुँ' कहलहुँ।"

हम पुछलियैक—"कोन ढंग?"

"जखन अहाँ किछु लिखि लैत छी मुदा कहैत नहि छी।"

हमरा उत्तर देबाक चाही छल। नहि देलियैक। पिता-पुत्रक बीच किछु पुरान वाक्य एहन रहैत अछि जकर स्रोत ज्ञात नहि रहैत, मुदा दुनू ओकर अर्थ बुझैत अछि। मोहन बाल्यकालसँ हमरा दैनिकी लिखैत देखलक। ओकर धारणा छल जे हम बोलबाक बदला लिखैत छी। सम्भवतः ई आंशिक सत्य छल।

पाछाँ सँ कियो कहलक—“सर, इंजीनियर साहब बजा रहल छथि।” मोहन उत्तर देलक—“आबि रहल छी।” फेर हमरा कहलक—“हम राति बजाएब।”

हम कहलियैक—“काल्हियो कहने छलह।”

ओ चुप भेल। तखन कहलक—“काल्हि सम्भव नहि भेल।”

“बुझलहुँ।”

“फेर वएह।”

“कोन?”

“किछु नहि।”

फोन कटि गेल। समय आठ बजि छब्बीस मिनट। बातचीत पन्द्रह मिनटसँ कने बेसी चलल। दैनिकीमे हम लिखलहुँ—“८:११–८:२६ मोहन। राहत-अभिलेखमे नाम/ग्रामक असंगति। घरसँ बाहर नहि जेबाक सल्लाह। दवा पठेबाक बात। विभागीय आदेशसँ कैम्पमे। कुसहा एखन नहि गेल।” अन्तिम वाक्य लिखलाक पछाति रुकलहुँ। “नियमित क्षेत्र ओ नहि छल”—ई सेहो लिखलहुँ। ओकर पहिने “मोहनक कथन” जोड़लहुँ। कथन आ तथ्य पृथक रहय।

हम “अनेक निकाय”वला वाक्य नहि लिखलहुँ। कारण ओ सामान्य कथन छल, प्रमाणित विवरण नहि। तथापि वाक्य मनमे रहल।

दुपहर धरि मोहन फेर नहि बजलक। घरक बाहर दू बेर मोटरक ध्वनि आयल। एक बेर लाउडस्पीकर पर किछु कहल गेल, स्पष्ट नहि सुनायल। गामक उत्तर दिससँ तीन परिवार दक्षिण दिस जाइत देखलहुँ; माथ पर गठरी, हाथमे बालक। हम बरामदासँ बाहर नहि गेलहुँ। मोहनक सन्देश मानलहुँ कि मार्गक दशा देखि, कहि नहि सकैत छी।

एगारह बजि उनचास मिनट पर एक स्त्री फोन केलनि। स्वयं कैँ मोहनक सहकर्मी कहलनि। नाम—किरण। ओ पुछलनि जे मोहन घरक कोनो पुरान नक्शा रखने अछि कि नहि। हम

कहलियनि—“हमर जानकारीमे नहि।” ओ पुछलनि—“पुरान कागज?” हम पुछलियनि—“कोन कागज?” ओ कहलनि—“तटबन्धक नहि, गामक पुरान नक्शा, राजस्वक।” हम कहलियनि—“हमर लग पाँजि अछि, राजस्व-नक्शा नहि।” ओ “बुझलहुँ” कहि फोन रखलनि।

ई फोन दैनिकीमे लिखलहुँ। “११:४९—किरण, मोहनक सहकर्मी; पुरान गाम/राजस्व नक्शा विषयक प्रश्न।” एतय पहिल बेर हमरा भीजल गट्ठरक ग्रामक नाम आ विभागीय नक्शाक प्रश्न एकहि पन्ना पर लिखल देखायल। दुनू बीच सम्बन्ध अछि कि नहि, ज्ञात नहि। अतएव किछु जोड़ल नहि।

दुपहर एक बजि सात मिनट पर मोहनक छोट सन्देश आयल—“दवा साँझ धरि पहुँचा देब।” देवनागरी नहि, रोमन अक्षरमे मैथिली-जेकाँ लिखल छल। हम सन्देश नकल नहि कयलहुँ; केवल आशय लिखल।

दू बजि पचपन मिनट पर एक मोटरसाइकिल आएल। युवक दवाक पन्नी देलक। पन्नीमे रक्तचापक गोली, ज्वरक गोली, दू पैकेट ओआरएस, एक साबुन। पर्ची नहि। हम युवकक नाम पुछलियैक—सुभाष। ओ राहत-शिविरमे स्वयंसेवक छल। दवा मोहन देने छल कि प्रशासन, ओ निश्चित नहि कहि सकल। हम पन्नी स्वीकार कयलहुँ, वस्तुसूची दैनिकीमे लिखलहुँ। जकर स्रोत अनिश्चित, ओकर स्रोत “मोहन” नहि लिखल।

सुभाष जाइत काल कहलक—“मोहन बाबू रातिदिन लागल छथि।” हम केवल माथ हिलेलहुँ। प्रशंसा सेहो साक्ष्य नहि।

साँझ पाँच बजि बीस मिनट पर तीनू नाम फेर देखलहुँ। श्रीधर, रत्नेश्वर, जयनारायण। मोहनक फोनक कारण हुनका पर कोनो नव तथ्य नहि जुड़ल छल। हम जानि-बुझि कऽ विभागीय बात आ पँजीक बात पृथक पन्नामे रखलहुँ। मन सम्बन्ध खोजैत अछि; अभिलेखक काज सम्बन्ध सिद्ध होएबाक पहिने ओकरा पृथक रखब अछि।

छओ बजि तैंतालीस मिनट पर बिजली गेल। फोनक बैटरी आधासँ कम छल। हम चार्ज करबाक उपाय नहि कयलहुँ। रातिक फोन छूटि सकैत छल। आश्चर्य जे एहि सम्भावनासँ हमरा असुविधा भेल। दिन भरि हम कहैत रहलहुँ जे फोन घटना मात्र अछि, अपेक्षा नहि; मुदा साँझ पड़िते हम फोनक प्रतीक्षा करैत रही। दैनिकी आ मनक नियम पृथक होइत अछि।

आठ बजि नौ मिनट पर मोहन बजलक। आवाज पहिने सँ धीम। पाछाँक शोर कम छल। सम्भवत: ओ कैम्पक बाहर वा कोनो कोठलीमे छल।

ओ पुछलक—“दवा भेटल?”

“भेटल।”

“सभ कुशल?”

“वस्तु अक्षत अछि। स्रोत स्पष्ट नहि।”

ओ थोड़ेक काल चुप रहि कहलक—“बाबूजी, दवामे सेहो स्रोत लिखब आवश्यक अछि?”

“दैनिकीमे जे लिखैत छी, तकर स्रोत आवश्यक अछि।”

“हम पठौने रही।”

“आब लिखि देब।”

ओ हँसल। एहि बेर हँसी स्पष्ट छल। कहलक—“अहाँ नहि बदललहुँ।”

हम कहलियैक—“अस्सी वर्षमे बदलबाक समय कम रहैत अछि।”

ओ कहलक—“समय कम नहि, इच्छा कम।”

एहि वाक्यक उत्तर हमरा लग छल—“तोहरो।” मुदा नहि कहलियैक।

फोन पर किछु क्षण मौन रहल। तखन मोहन स्वयं पुछलक—“गाममे लोक की कहैत अछि?”

“ककर विषयमे?”

“बान्हक।”

ई पहिल बेर ओ स्वयं “बान्ह” शब्द बजलक। हम कहलियैक—“अनेक बात।”

“हमर विषयमे?”

एहि प्रश्न पर हम तत्क्षण उत्तर नहि देलियैक। सत्य ई छल जे दू लोक पुछने छल। सत्य ई सेहो छल जे कोनो आरोप हमरा सोझाँ प्रमाण सहित नहि आयल छल। हम कहलियैक—“दू लोक पुछलक जे तोहर काज ओहि क्षेत्रमे छल कि नहि।”

“अहाँ की कहलियनि?”

“नहि जानैत छी।”

ओ दीर्घ साँस लेने सन ध्वनि आयल, मुदा हम एकरा लिखबाक योग्य तथ्य नहि मानलहुँ। ओ कहलक—“एतबे?”

हम कहलियैक—“एतबे।”

“आ अहाँ?”

“हम की?”

“अहाँक विचार की अछि?”

ई प्रश्न ओहि एक बातक कात पहुँचल जे दिन भरि हमरा बीच घुमैत रहल। हम चाहैत तँ पुछि सकैत रही—कुसहाक मरम्मत, माप-पुस्तिका, ठेका, निरीक्षण, भुगतान, कोन फाइल पर तोहर हस्ताक्षर अछि? हम चाहैत तँ कहि सकैत रही—लोक तोहर नाम किएक पुछैत अछि? हम चाहैत तँ केवल पिता बनि कहि सकैत रही—तोँ हमरा सत्य कह। मुदा हमरा लग कोनो कागज नहि छल, कोनो प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि, केवल बेटाक आवाज आ लोकक प्रश्न।

हम कहलियैक—“विचार प्रमाण नहि।”

मोहन तत्क्षण उत्तर देलक—“अहाँ हमरा संग सेहो पँजीक भाषा बोलैत छी।”

हम कहलियैक—“भाषा बदललासँ तथ्य नहि बदलत।”

ओ कहलक—“सभ तथ्य कागज पर नहि होइत।”

एहि वाक्य पर हमरा तीनू नाम मोन पड़ल। हम कहि सकैत रही—“जे कागज पर नहि, तकर साक्ष्य दोसर होइत अछि।” नहि कहलियैक। ओहि क्षण पिता-पुत्रक फोन पँजीक बहस बनि जाइत।

मोहन कहलक—“हम अत्यन्त थाकल छी।”

एहि बेर थकान ओ स्वयं कहलके, तेँ दैनिकीमे लिखल जा सकैत छल। हम कहलियैक—“विश्राम कर।”

ओ कहलक—“एखन नहि।”

“भोजन?”

“भेल।”

“कतेक बजे?”

“मोन नहि।”

“ई उत्तर प्रमाणित नहि।”

ओ फेर हँसल, मुदा हँसी छोट छल। कहलक—“अहाँ हमर पिता छी कि जाँच अधिकारी?”

हम उत्तर देलियैक—“दूनू होयब सँ बचब सम्भव नहि।”

ई वाक्य निकलि गेलाक पछाति हम स्वयं ओकर अर्थ पर विचार कयलहुँ। मोहन चुप रहल। किछु काल बाद कहलक—“हम काल्हि फेर बजाएब।”

हम कहलियैक—“हँ।”

ओ फोन रखबाक पहिने “बाबूजी” कहलक। केवल एतबे। हम “हँ” कहलियैक। जे बात ओ कहबाक चाहैत छल, से नहि कहलक। जे बात हम पुछबाक चाहैत रही, से हम नहि पुछलहुँ। फोन कटि गेल। समय आठ बजि बत्तीस मिनट।

दैनिकी खोललहुँ। लिखलहुँ—“२०:०९–२०:३२ मोहन। दवा प्राप्तिक पुष्टि। गाममे विभाग/बान्ह विषयक प्रश्नक चर्चा। मोहनक प्रश्न—‘अहाँक विचार की अछि?’ उत्तर—‘विचार प्रमाण नहि।’ मोहन—‘सभ तथ्य कागज पर नहि होइत।’” अन्तिम वाक्य अक्षरशः लिखलहुँ। ओकरा उद्धरणचिह्नमे राखलहुँ, कारण ई ओकर कथन छल।

तकर नीचाँ किछु लिखबाक इच्छा भेल—“पुछबाक शेष।” नहि लिखलहुँ। दैनिकीमे शेष प्रश्नक सूची बनय लगय तँ मन ओकर उत्तर अपने रचय लगैत अछि।

राति नौ बजि सात मिनट पर तीनू भीजल पन्नाक ऊपर राखल पटरी जाँचलहुँ। सभ यथास्थान। कमराक डोरीमे चाबी। फोनक बैटरी तेइस प्रतिशत। घरक बाहर अन्हार। दूर सँ कोनो वाहनक ध्वनि नहि।

दिनक अन्तिम लेख लिखलहुँ—“तीन नामक विषयमे नव तथ्य नहि।” एहि एक पाँतिक बाद कलम रोकलहुँ। मोहनक विषयमे सेहो नव तथ्य नहि छल। केवल अनेक वाक्य छल, आ ओहि वाक्यसभक बीच एक प्रश्न जे दूनू कातसँ उच्चरित नहि भेल। पँजीमे रिक्त पाँति देखाइत अछि। फोनमे रिक्ति सुनाइत नहि; तथापि ओ रहैत अछि।

अध्याय ७ — कैम्प

भोरक फोन सुभाषक छल। ओ काल्हि दवा देने युवक। कहलक जे राहत-शिविरमे तीन गामक नामक सूची बनि रहल अछि आ एकहि परिवारक लोक अपना गामक नाम तीन ढंगसँ कहि रहल छथि। मोहन ओकरा हमर नाम देने रहैक। सुभाष पुछलक—“अहाँ कने आबि सकैत छी?” हम पहिने समय पुछलियैक, तखन कारण। कारण सुनलाक पछाति कहलियैक—“हम सरकारी सूची प्रमाणित नहि करब।” ओ कहलक—“प्रमाणित नहि, नाम बुझा दिअ।”

सात बजि पैंतालीस मिनट पर हम घरसँ निकललहुँ। पेटार बन्द। तीनू भीजल पन्ना भीतर। दैनिकी, दूटा खाली कागज, पेंसिल, चश्मा आ पुरान ग्राम-सूची झोलामे। सुभाष मोटरसाइकिल लेने आएल छल, मुदा हम ओकर पाछाँ बैसबाक बदला आधा कोस पैदल चलबाक कहलियैक। ओ हमर आयु देखलक, किछु नहि बजलक। अन्तमे बाट पर जलक दूटा गहिर खड्डा देखलाक पछाति मोटरसाइकिल पर बैसलहुँ।

शिविर उच्च विद्यालयक परिसरमे छल। प्रवेश-दुआर पर नीला तिरपाल, ओकर नीचाँ मेज, मेज पर दू रजिस्टर, कार्बन-पेपर, तीन मोहर, लाल धागा, प्लास्टिकक डब्बामे पिन, कागजक गड्डी, एक खाली ग्लूकोजक बोतलमे पीबाक जल, आ दूटा कप। दाहिना कात चाउरक बोरा। बाँया कात औषधिक पेटी। बरामदामे लोकक पाँति। मैदानमे तिरपालक सतर। विद्यालयक नामपट्ट पर कीचड़क छींटा।

पहिल रजिस्टरक ऊपर लिखल छल—“परिवार पंजीकरण।” दोसरक ऊपर—“वितरण।” “पंजीकरण” शब्दमे दीर्घ ई नहि छल; हम सुधारल नहि। सरकारी अभिलेखमे अक्षर-संशोधन हमर अधिकार नहि।

सुभाष हमरा एक कुर्सी देलक। हम पुछलियैक—“काज की?” ओ एक कागज सोझाँ रखलक। ऊपर तीन गामक नाम: बसन्तपुर, सोनबरसा, बेलही। बसन्तपुरक आगाँ कोष्ठकमे “पूर्वी टोला” लिखल छल। सोनबरसाक आगाँ किछु नहि। बेलहीक आगाँ दू बेर काटल नाम। ओ कहलक—“लोक कहैत अछि राजस्व गाम पृथक, टोला पृथक, डाकघर पृथक।” हम कहलियैक—“तँ तीनू लिखू।” ओ कहलक—“प्रपत्रमे एक ठाम अछि।”

ई पहिल असंगति छल: भूमि पर मनुष्यक ठाम एकसँ बेसी, प्रपत्रमे एक।

पाँतिमे पहिल स्त्रीक नाम कौशल्या देवी। आयु लगभग पचपन, विधवा। कर्मचारी पुछलक—"परिवार-मुखिया?" ओ कहली—"हम।" कर्मचारी दू क्षण रुकल। तखन लिखलक—कौशल्या देवी। पति-नामक कोष्ठमे "स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण झा।" पुत्र दू, दुनू परदेस। शिविरमे ओ अकेली। परिवार-संख्या एक। ओ चाउर एक व्यक्तिक हिसाबे लेतीह। पँजीमे हुनका खोजल जाए तँ हुनकर नाम मुख्य पाँतिमे नहि भेटत; पति आ पुत्रक वंशक्रम भेटत। राहत-रजिस्टरमे परिवार हुनका सँ आरम्भ भेल।

हम ई अन्तर कागज पर लिखलहुँ—"विधवा स्वयं मुखिया।" टिप्पणी नहि।

दोसर परिवारमे पाँच लोक छल। पुरुषक नाम शम्भुनाथ यादव, स्त्री पार्वती, दू बालक, एक वृद्धा। कर्मचारी वृद्धाक सम्बन्ध पुछलक। शम्भुनाथ कहलक—"माय।" वृद्धा तत्क्षण कहली—"माय नहि, मौसी।" शम्भुनाथ हँसल नहि। कहलक—"हमरा संग रहैत छथि।" कर्मचारी पुछलक—"परिवारमे गनब?" शम्भुनाथ कहलक—"गनू।" वृद्धा कहली—"हमर नाँव पृथक लिखू।" राशनक गणना पाँच पर होयत कि चारि पर, एहि पर तीन मिनट लगल। अन्तमे वृद्धाक नाम पृथक क्रमांक पर लिखल गेल, मुदा तिरपाल संख्या वएह।

पँजी सम्बन्धक नाम चाहैत अछि। राहत-रजिस्टर उपस्थित देहक संख्या। दुनू प्रश्न समान नहि।

तेसर क्रम पर एक युवक आयल। ओकर मतदाता-पत्र बहि गेल छल। नाम—अजित पासवान। ओ अपन गाम "बेलही" कहलक। कर्मचारी सूची देखलक—"बेलही दूटा अछि, कोन?" युवक दक्खिन दिशामे हाथ देखेलक—"जे बान्हक भीतर।" कर्मचारी पुछलक—"राजस्व थाना?" युवक चुप। पाछाँ ठाढ़ वृद्ध कहलक—"पुरान नाँव बेलही मुसहरी।" कर्मचारी पेंसिल रोकलक। प्रपत्रमे जातिक कोष्ठ नहि छल, मुदा टोला लिखबाक पृथक ठाम सेहो नहि। अन्तमे "बेलही—भीतर" लिखल गेल।

"भीतर" राजस्व नाम नहि। मुदा एखन ओहि शब्दसँ शिविरक लोक गाम पहचानि रहल छल।

सुभाष हमरा पुछलक—"ई एना?" हम कहलियैक—"एना-ओना कहबाक प्रश्न नहि। जकरा खोजब, ओकरा भेटबाक उपाय रहबाक चाही।" ओ "बेलही—भीतर"क आगाँ कोष्ठकमे "मुसहरी" जोड़लक।

एहि बेर हम ओकर हाथ रोकलहुँ नहि। पँजीकारक नियम कहैत अछि जे सुनल शब्दक स्रोत रहय। एतय स्रोत सोझाँ ठाढ़ वृद्ध छल। हम वृद्धक नाम पुछलियैक—रामचरित्र सदा। कर्मचारी ओकर नाम नहि लिखने छल। हम अपन कागज पर लिखलहुँ—“स्थानीय साक्षी: रामचरित्र सदा।”

रामचरित्र सदा पुछलनि—“हमर नाँव कागजमे किएक?” हम कहलियनि—“अहाँ कहलहुँ जे टोला पुरानसँ ओहि नाँवसँ चिन्हल जाइत अछि।” ओ कहलनि—“तँ लिखू।” एतबे।

बरामदाक दोसर छोर पर बालकसभक नाम लिखल जा रहल छल। जन्म-तिथि अनेकक ज्ञात नहि। एक माय कहली—“बाढ़िक दू बरख पहिने।” कर्मचारी वर्ष अनुमान करय लगल। हम कहलियैक—“अनुमान पृथक चिन्हित करू।” कर्मचारी हमरा देखलक। ओकर आयु तीस सँ कम। कहलक—“बाबा, एतय सभ ठाम एना नहि चलत।” हम उत्तर देलियैक—“तखन जे निश्चित नहि, तकरा निश्चित सन नहि लिखू।” ओ कागज पर “लगभग” लिखलक।

मोहन ओतय नहि छल। सुभाष कहलक ओ दोसर केन्द्र गेल अछि। हम पुछलियैक नहि जे कोन केन्द्र।

दस बजि पाँच मिनट पर वितरण आरम्भ भेल। क्रमांक पुकारल जाइत। लोक पर्ची देखबैत। एक बोरा चाउर खोलल गेल। लोहेक बाट, तराजू, प्लास्टिकक बाल्टी। पाँच किलो, दस किलो, परिवार-संख्याक हिसाबे मात्रा। एक स्त्रीक पर्ची पर चारि सदस्य, रजिस्टरमे तीन। ओ कहली हुनकर बेटी राति दोसर शिविरसँ एतय आयल। कर्मचारी कहलक—“सूचीमे नाम नहि।” स्त्री बेटीकेँ हाथ पकड़ि सोझाँ कयली। बालिका लगभग बारह वर्षक। उपस्थित देह चारि। रजिस्टर तीन।

कर्मचारी कहलके—“काल्हि नाम जुड़त।” स्त्री पुछली—“आइक चाउर?” कर्मचारी वितरण-रजिस्टर देखलक, फेर चारू कात। अन्तमे पाँच किलो अधिक देलक कि नहि, हम निश्चित नहि देखलहुँ; लोकक जमघट बीच बाल्टी ओझरायल। दैनिकीमे हम ई बात तथ्यक रूपमे नहि लिखि सकैत रही। केवल एतबे लिखलहुँ—“पर्ची ४, पंजी ३; बालिका उपस्थित।”

एगारह बजि एक पुरुष हमरा पहचानलक। नाम—नित्यानन्द झा। ओ कहलनि हुनकर पितामह हमर परदादाक पँजीमे छथि। हम कहलियनि—“सम्भव।” ओ तत्क्षण पुछलनि—“तखन अहाँ हमर परिवार लिखि दिअ।” हम पुछलियनि—“कोन प्रयोजन?” ओ राहत-पर्ची देखेलनि। ओकर पर्चीमे परिवार सात, शिविरमे पाँच। दू पुत्र दिल्लीमे। कर्मचारी कहलक जे जे शिविरमे नहि,

राहतक तत्काल गणनामे नहि गनल जाएत। नित्यानन्द कहलनि—“ओहो एहि घरक।” कर्मचारी कहलक—“एतय उपस्थित नहि।”

नित्यानन्द हमरा सोझाँ पँजीक प्रमाण चाहैत छलाह जे दू पुत्र परिवारक अंग छथि। पँजी देत। राहत-रजिस्टर उपस्थितिक प्रमाण चाहैत छल। पँजी ओ प्रमाण नहि देत।

हम हुनका कहलियनि—“वंश-सम्बन्ध आ राहत-उपस्थिति दूटा भिन्न अभिलेख अछि।” ओ सन्तुष्ट नहि भेलाह। कहलनि—“कागज तँ कागज।” हम कहलियनि—“प्रयोजन बदललासँ प्रमाणक अर्थ बदलैत अछि।” ओ पर्ची मोड़ि कऽ चलि गेलाह।

एहि वाक्यक बाद हम अपन कागज देखलहुँ। पँजीकारक विधि अध्यायमे हम लिखने रही—अभिलेखक अधिकार ओकर प्रयोजनसँ आबैत अछि। एतय वएह बात दोसर रूपमे सोझाँ छल।

दुपहरक लग एक मुसहर परिवार आयल। पुरुषक नाम बुधन सदा, स्त्रीक नाम रम्पतिया, बालक तीन। हुनका लग कोनो परिचय-पत्र नहि। जल रातिमे झोपड़ी लऽ गेल छल। कर्मचारी पुछलक—“कोनो कागज?” बुधन माथ हिलेलक। पाछाँ रामचरित्र सदा कहलनि—“हम चिन्हैत छी।” कर्मचारी कहलक—“दू साक्षी चाही।” दोसर साक्षी खोजल गेल। पाँच मिनट पछाति विद्यालयक रसोइया आयली; ओ रम्पतियाकेँ चिन्हैत छली। नाम लिखल गेल।

हम अपन पुरान ग्राम-सूची खोललहुँ। ओहि टोला विषयमे पँजीक कोनो अभिलेख नहि। ई अभाव आश्चर्यक नहि छल। हमर पँजी सभ जातिक समग्र जनगणना नहि। तथापि शिविरक रजिस्टरमे बुधन, रम्पतिया आ तीन बालक पाँच स्पष्ट पाँति बनि गेलाह, जखन कि हमर अभिलेखमे हुनकर कुलक कोनो पाँति नहि।

एहि ठाम पहिल बेर हमरा दू रजिस्टर एक संग खुलल देखायल—एक हमर झोलामे, एक मेज पर। एकमे किछु लोकक सात पीढ़ी, मुदा सोझाँ ठाढ़ पाँच लोकक नामो नहि। दोसरमे आइ उपस्थित पाँच लोक, मुदा हुनका पाछाँक एक पीढ़ीक भरोसो केवल दू जीवित साक्षी।

हम टिप्पणी नहि कयलहुँ। केवल दू स्तम्भ बनौलहुँ—“वंश-अभिलेख” आ “राहत-अभिलेख।” बुधन सदा परिवारक आगाँ पहिल स्तम्भ रिक्त, दोसरमे पाँच। कौशल्या देवीक आगाँ पहिलमे पति-वंश द्वारा सम्बन्ध, दोसरमे स्वयं मुखिया। नित्यानन्दक आगाँ पहिलमे सात सदस्यक सम्बन्ध सम्भव, दोसरमे पाँच उपस्थित।

दू रजिस्टर एक-दोसराकेँ असत्य सिद्ध नहि करैत छल। मुदा जँ कियो एकहि रजिस्टरकेँ सम्पूर्ण सत्य मानय, तँ मनुष्य घटि जाइत। ई वाक्य हम दैनिकीमे नहि लिखलहुँ; दैनिकी निष्कर्षक ठाम नहि।

एक बजि दस मिनट पर भोजन बाँटल गेल। चूड़ा, गुड़, नमकक छोट पुड़िया। बरामदाक कोनमे पीबाक जलक ड्रम। ड्रमक नल ढीला। नीचाँ कीचड़। दू बालक खाली बोतल भरि रहल छल। तिरपालक एक कोन हवा सँ उठैत, फेर खसैत। विद्यालयक घंटी रस्सी बिना लटकल। कक्षामे पट्ट पर पछिला पाठक तिथि एखनहुँ लिखल—“१६-८-०८।” ओकर नीचाँ खड़ियासँ “गृहकार्य” लिखल छल।

सुभाष हमरा भोजन देबाक चाहलक। हम आधा चूड़ा लेलहुँ, गुड़ नहि। ओ कहलक—“अहाँ काल्हिसँ किछु कम खाइत छी।” हम पुछलियैक—“ई कथन कतय सँ?” ओ कहलक—“आँखिसँ।” हम कहलियैक—“साक्ष्य पर्याप्त नहि।” ओ हँसल।

दुपहर दू बजि कने पछाति एक सरकारी कर्मचारी पुरान सूची लेने आयल। सूची ब्लॉक कार्यालयसँ बनल छल। ओ नाम पढ़ैत गेल। किछु परिवार कहलक हुनकर गामक नाम विकृत अछि। “सोनबरसा” एक ठाम “सोनवर्षा,” “बेलही” एक ठाम “बेलाही,” “परसौनी” “परसौना।” कर्मचारी कहलक—“कम्प्यूटरमे जे चढ़ल, वएह छपल।”

हम पुछलियैक—“मूल कागज?” ओ कहलक—“कार्यालयमे।” “ककर लिखावट?”—“मोन नहि।” “सुधार?”—“पछाति।”

ई उत्तर हम मोनमे राखलहुँ। पँजीमे अशुद्ध नाँव सुधरैत काल पुरान पाठ काटि मेटाओल नहि जाइत; नूतन अभिलेखक संग कारण जोड़ल जाइत। सरकारी सूचीमे त्रुटि सुधारक प्रक्रिया हमरा ज्ञात नहि। तेँ तुलना करब उचित नहि। तथापि “कम्प्यूटरमे जे चढ़ल” सुनि हमरा बुझायल जे नव अभिलेखक लिपिकार अदृश्य अछि।

तीन बजि लग पाँति छोट भेल। मेज पर कागजक कोन मुड़ि गेल छल। कार्बन-पेपरक नील हाथ पर लागल। मोहरक स्याही घटि गेल। वितरण-रजिस्टरक पृष्ठ १७ पर चाउरक दाग। पंजीकरण-रजिस्टरक पृष्ठ ९ पर जलक गोल छींटा। कोनो रजिस्टर पवित्र नहि; सभ उपयोगमे मलिन होइत अछि।

सुभाष हमरा तीन गामक नाम फेर देखेलक। बसन्तपुरक दू परिवार अपन टोला “नवका बसन्तपुर” कहैत छल। राजस्व सूचीमे नवका शब्द नहि। हम कहलियैक—“पुरान नाम काटू नहि। कोष्ठकमे प्रचलित नाम जोड़ू।” सुभाष लिखलक। एतय हमर पँजीकारक विधि सरकारी कागज पर लागू भेल कि केवल साधारण सावधानी, ई निर्णय हम नहि कयलहुँ।

तखन एक वृद्धा आयली। नाम—फुलकली देवी। ओ अपन नैहरक गाम “छातापुर” कहली, ससुरार “बसन्तपुर।” कर्मचारी परिवारक स्थायी गाम पूछने छल, ओ ससुरार लिखलक। वृद्धा कहली—“हम तीन महीनासँ नैहरमे रही।” प्रश्न उठल—ओ कोन गामक विस्थापित? ससुरारक घर जलमे, मुदा ओ घटना समय नैहरमे। राहत कोन सूचीसँ?

कर्मचारी माथ खुजललक। सुभाष हमरा देखलक। हम कहलियैक—“हमर पँजी एहि प्रश्नक उत्तर नहि देत।”

फुलकली देवी हँसली नहि। कहली—“हम जँ एतय छी तँ नाँव कतय लिखत?” कर्मचारी अन्तमे बसन्तपुरक सूचीमे नाम लिखलक, टिप्पणीमे “घटना समय नैहर” जोड़लक। ई छोट टिप्पणी हमरा उपयोगी बुझायल। मनुष्यक ठाम एक शब्दमे बन्द नहि भेल।

चारि बजि दस मिनट पर मोहन आएल। जूता पर कीचड़, कमीजक बाँहि कुहिन धरि मोड़ल। ओ हमरा देखि पहिले सुभाषकेँ देखलक। पुछलक—“बाबूजी कखन आएल?” हम उत्तर देलियैक—“सात पैंतालीस घरसँ निकललहुँ; एतय आठ बीस।” मोहन कहलक—“हम समय नहि पुछि रहल रही।”

हम कहलियैक—“प्रश्न ‘कखन’ छल।” ओ किछु नहि कहलक।

ओ रजिस्टर देखलक। पृष्ठ उलटलक। बुधन सदाक नाम पर कने रुकल। कौशल्या देवीक नाम पर नहि। फुलकली देवीक टिप्पणी पढ़लक। सुभाष कहलक—“बाबूजी कहलनि पुरान नाम काटब नहि।” मोहन हमरा देखलक। ओकर आँखिमे थकान छल कि असन्तोष, हम निश्चित नहि।

मोहन कहलक—“एतय अत्यन्त शीघ्र लिखबाक पड़ैत अछि।” हम कहलियैक—“शीघ्रता कारण लिखबाक आवश्यकता बढ़बैत अछि, घटबैत नहि।” ओ उत्तर देलक—“सभ कारण लिखैत रहब तँ लोककेँ सामग्री कखन देब?”

हम ओकर बात स्वीकार कयलहुँ। कहलियैक—“तँ न्यूनतम लिखू—ककर कथन पर।”

मोहन पृष्ठ ९ पर उँगली रखलक—“ई सरकारी अभिलेख अछि, पँजी नहि।”

हम कहलियैक—“वएह कारण सँ अधिक लोकक जीवन एहि पर निर्भर अछि।” वाक्य निकलि गेलाक पछाति हम अनुभव कयलहुँ जे ई दैनिकी-भाषा नहि। मोहन सेहो किछु क्षण चुप रहल।

ओ कहलक—“अहाँ हमरा संग चलू, घर छोड़ि देब।” हम “हँ” कहलियैक।

जायब सँ पहिने हम पंजीकरण-रजिस्टरक पहिल पाँच पृष्ठ फेर देखलहुँ। नाम, आयु, सम्बन्ध, गाम, पहचान, सदस्य-संख्या। पँजीक सूत्रसँ अत्यल्प, जीवनक तत्काल आवश्यकतासँ अत्यन्त बेसी। एहि रजिस्टरमे गोत्र नहि, मूल नहि, अधिकार नहि। हमर पँजीमे राशन मात्रा नहि, तिरपाल संख्या नहि, उपस्थित बालकक आयु अनुमान नहि। दुनूक रिक्त कोष्ठ पृथक-पृथक छल।

झोलामे अपन पुरान ग्राम-सूची रखैत समय बुधन सदाक परिवारक पाँति फेर मोन पड़ल। हमर सूचीमे रिक्त। शिविरक सूचीमे पाँच नाम। तखन कौशल्या देवी—हमर पँजीमे पति द्वारा चिन्हित, एतय स्वयं परिवार-मुखिया। नित्यानन्द—पँजीमे परदेस गेल पुत्र सहित वंश, राहतमे केवल उपस्थित पाँच।

हम अपन कागजक ऊपर लिखलहुँ—“दू अभिलेख। प्रयोजन भिन्न। अनुपस्थिति भिन्न।” तकर नीचाँ किछु नहि।

मोहन मोटरसाइकिल निकालि रहल छल। मैदानक तिरपालसभ साँझक हवा सँ फड़फड़ा रहल छल। पाँति लगभग समाप्त। मुदा मेज पर रजिस्टर खुलल छल। कर्मचारी अन्तिम पर्ची लिखि रहल छल। एक बालक ओकर कोहनी लग ठाढ़ भऽ अपन नामक अक्षर देखैत छल।

घर घुरैत काल मोहन केवल एक बेर बजलक—“अहाँकेँ एहि सभमे एतेक देर ठाढ़ नहि रहबाक चाही।” हम कहलियैक—“अधिकांश समय बैसल रही।” फेर मौन।

बाटक एक ठाम जल पार करैत मोटरसाइकिल धीम भेल। हम झोला छातीसँ सटा लेलहुँ। भीतर पँजी नहि, केवल ग्राम-सूची आ आइक लिखित विवरण छल। मूल पन्ना घरक पेटारमे सुरक्षित। तथापि हाथ अपने झोला पकड़लक।

घर पहुँचि पाँच बजि छप्पन मिनट पर दैनिकी खोललहुँ। शिविरक विवरण क्रमसँ नकल कयलहुँ। अन्तिम पाँति लिखलहुँ—“राहत-रजिस्टरमे जे अछि से तत्काल उपस्थितिक अभिलेख; पँजीमे जे अछि से वंश-सम्बन्धक अभिलेख। एकक अभाव दोसरक प्रमाण नहि।”

तखन तीनू भीजल पन्ना निकाललहुँ। श्रीधर। रत्नेश्वर। जयनारायण। हुनकर आगाँ उत्तरवर्ती क्रम एखनहुँ अस्पष्ट। शिविरमे दिन भरि नाम जोड़ल जाइत देखलहुँ। घरमे तीन नामक आगाँ रिक्ति

देखैत रही। दूटा रजिस्टरक असंगति हमरा जल-क्षतिक अनुमान बदलबाक पर्याप्त कारण नहि छल।

दैनिकी बन्द करबाक पहिने केवल एक प्रश्न लिखलहुँ—“नाम नहि भेटब आ नाम नहि लिखल जाएब—की दूनू एक बात अछि?” उत्तर नहि लिखलहुँ। प्रश्नक आगाँ तिथि राखलहुँ।

अध्याय ८ — मेटाओल पाँति

शिविरसँ घुरलाक अगिला भोर हम भीजल पन्नासभ फेर खोललहुँ। तीन दिनमे कागजक गन्ह बदलि गेल छल। पहिने जल, कीचड़ आ पुरान मसिक मिश्रित गन्ह छल; आब सुखैत रेशाक गन्ह बेसी छल। पन्ना पूर्ण सुखायल नहि छल। कोनसभ एखनहुँ कने नरम। हम खिड़की नहि खोललहुँ। बाहर हवा तेज छल। कमराक भीतर मेज पर सूती कपड़ा बिछौलहुँ, तकर ऊपर पहिल पन्ना राखलहुँ। समय छह बजि बयालीस मिनट।

दैनिकीमे पहिल लेख—“तीन नामक उत्तरवर्ती क्रम फेर जाँचब। जल-क्षति आ अभिलेख-क्षति पृथक चिन्हित करब।”

जल-क्षतिक चिन्ह हमरा परिचित अछि। अक्षर पसरि जाइत अछि, मसि किनार दिस हरियर-कत्थई छाया छोड़ैत अछि, कागजक रेशा फुलि जाइत अछि, दू पन्ना एक-दोसरासँ सटि कऽ अक्षरक उलटा छाप दैत अछि। कखनो जल अक्षर उठबैत नहि; केवल ओकर रूप बिगाड़ैत अछि। जँ कागजक ऊपरी सतह घिसल हो, रेशा एक दिस झुकल हो, अथवा अक्षरक ठाम कागजक मोटाइ घटल हो, तँ कारण दोसर खोजबाक होइत अछि।

पहिल नाम श्रीधर। ओकर आगाँक रिक्त ठाम कने उज्जर छल। हम पहिने एकरा जलक दागक उलट प्रभाव बुझने रही। आइ पन्ना कने सुखायल छल, तेँ उज्जर भागक सीमा अधिक स्पष्ट देखायल। उज्जर भाग सीधा नहि। लगभग दू अँगुर लम्बा, आध अँगुर चौड़ा। ओकर ऊपर सूक्ष्म रेशा उठल। हम नख नहि लगेलहुँ। बाँसक पतला सलाइकेँ किनार सँ घुमेलहुँ। सलाइ रेशामे अटकल। जलक दागमे एहन प्रतिरोध नहि होइत।

दैनिकीमे लिखलहुँ—“श्रीधरक पश्चात् रिक्त भाग—सतह घर्षित?” प्रश्नचिह्न लगेलहुँ।

दोसर नाम रत्नेश्वर। ओकर आगाँ सेहो रिक्ति। मुदा एहि ठाम मसि पसरल छल। कागजक सतह यथावत। जल-क्षति सम्भावित। तेसर जयनारायण। ओकर आगाँ पृष्ठक दहिना कोन फाटल। एहि ठाम उत्तरवर्ती अभिलेख वास्तवमे बहि अथवा फाटि सकैत छल। तीनू रिक्ति एक कारणक नहि—ई पहिल नव तथ्य छल।

हम श्रीधरक पाँति पर घुरलहुँ। मेजक बामा दिस पीतलक छोट दीप-ढकना राखल छल। ओकर चमकीला भीतर भागकेँ हम कखनो प्रकाश घुमेबाक लेल उपयोग करैत छी। भोरक प्रकाश कम छल। ढकना खिड़की दिस कऽ राखलहुँ, ताहि सँ पन्ना पर तिरछा उजास पड़ल। उठल रेशा छाया देलक। घर्षित भागक बीच तीन-चारि ठाम मसिक अति सूक्ष्म बिन्दु छल। अक्षर नहि पढ़ल जा सकैत छल। मुदा सतह पर किछु लिखल छल आ पछाति हटाओल गेल—एतबा कहबाक आधार भेटल।

हम दैनिकीमे “मेटाओल” नहि लिखलहुँ। लिखलहुँ—“मानवीय घर्षणक सम्भावना प्रबल।” कारण निष्कर्ष आ सम्भावना एक बात नहि।

सात बजि दस मिनट पर पुरान पेटार खोललहुँ। अपन घरक पाँजि पृथक कपड़ामे बन्हल अछि। ओकरा बाहर निकालब हम टारैत रही। भीजल गट्ठर बाहरी गामक छल; अपन घरक पाँजि खोललासँ जाँचक विषय घरक भीतर आबि जाइत। मुदा घर्षित पाँतिक काल-निर्धारण बिना तुलना सम्भव नहि छल।

घरक पाँजिमे पिताक हाथ हम तत्क्षण चिन्हैत छी। पितामहक हाथ सेहो। ओकर पहिने पितामहक पिताक लिखावट—जे हमरा जन्मसँ दीर्घ काल पहिने चलि गेल छलाह—हम केवल पाँजि आ दूटा पुरान पत्रसँ चिन्हैत छी। हुनकर अक्षर छोट, दहिना दिस कने झुकल। “श्री”क शिरोरेखा प्रायः शब्दक अन्त धरि नहि जाइत। “त्र” लिखैत काल पहिल डाँड़ी छोट। अंक ३क नीचला घुमाव खुला। सुधार करैत काल ओ मूल पाठ पर सीधा रेखा नहि खींचैत छलाह; पाँतिक बामा किनार पर दू छोट तिरछा चिन्ह देबाक हुनकर अभ्यास छल। तकर अर्थ—पाठ पर फेर विचार कयल गेल।

ई सब हम अध्याय ३क नियममे नहि लिखने रही। पँजीकारक विधि सभ घरक निजी लिखावट-अभ्यास नहि बतबैत अछि।

हम अपन घरक पाँजिक तीन पृष्ठ चुनलहुँ जतय पितामहक पिताक अभिलेख निश्चित छल। एक पृष्ठ पर विवाह-सम्बन्धक संशोधन, दोसर पर ग्राम-नामक सुधार, तेसर पर मृत्यु-वर्षक परवर्ती अभिलेख। तीनू ठाम पाँतिक बामा किनार पर वएह दू तिरछा चिन्ह। अत्यन्त छोट। लगभग मसिक दू काँटा।

भीजल पन्ना फेर सोझाँ रखलहुँ। श्रीधरक पाँतिक बामा किनार जलक दागसँ कारी छल। पहिल दृष्टिमे किछु नहि। सूती कपड़ाक दू तह पन्नाक नीचाँ देलहुँ, तिरछा प्रकाश घुमेलहुँ। कारी दागक भीतर दू सूक्ष्म तिरछा रेखा देखायल। एक पूर्ण, दोसर आध।

हम तत्क्षण निष्कर्ष नहि लिखलहुँ।

पहिने माप लेलहुँ। घरक पाँजिमे दू चिन्हक बीच दूरी लगभग दू मिलीमीटर। भीजल पन्नामे सेहो लगभग वएह। कोण मिलैत-जुलैत। मसिक रंग पृथक देखाइत छल, मुदा भीजल पन्नाक सभ मसि बदलि गेल छल। रंग प्रमाण नहि। आकार उपयोगी। स्थान उपयोगी।

तखन घर्षित भागक दहिना छोर देखलहुँ। ओतय एक अधकटल अक्षर बाँचल छल—केवल ऊर्ध्व डाँड़ी आ नीचाँ घुमाव। ओकर पछाति किछु नहि। अक्षर अनुमान करब उचित नहि। हम नकल-पन्ना पर वएह आकार उतारलहुँ, नीचे लिखलहुँ—“अक्षर अपठित; रूप मात्र।”

आठ बजि पाँच मिनट। बाहर सँ दूध देनिहार बालक बजौलक। हम पन्ना ढाकि कऽ दुआर धरि गेलहुँ। दूध लेलहुँ। पैघ गिलास नहि, छोट कटोरी। ओकर नाँव पुछलहुँ नहि; ओ नित्य अबैत अछि, हम नाँव जनैत छी। भीतर घुरि दुआर भीतरसँ अटका देलहुँ।

ई काज नुकायब नहि कहल जाएत। भीजल पन्नाक सुरक्षा लेल दुआर बन्द राखब सामान्य अछि। तथापि दैनिकीमे ई बात लिखलहुँ—“०८:०७ दुआर भीतरसँ बन्द।” कारण जाँच करैत काल अपन क्रिया सेहो लिखल होयबाक चाही।

घरक पाँजि आ भीजल पन्ना एक संग मेज पर छल। एहि दृश्यकेँ हम कोनो अर्थ नहि देलहुँ। अर्थ देब जाँचक काज नहि।

हम पितामहक पिताक एक पुरान अभिलेख फेर पढ़लहुँ। तिथि स्पष्ट। पृष्ठक दहिना किनार पर हुनकर हस्ताक्षर नहि, केवल नामक छोट संक्षेप। ओ संक्षेपक अन्तिम अक्षरमे एक विशेष वक्रता

छल—ऊपर सँ उतरैत रेखा एकाएक बामा घुरैत। भीजल पन्नाक घर्षित भागक नीचाँ, पाँतिक बाहर, जलक दागक भीतर एक छोट मसि-चिन्ह देखायल। पहिने हमरा ई कीचड़क बिन्दु बुझायल छल। काँच लगेलहुँ। बिन्दु नहि। दू रेखा। पहिल सीधा, दोसर बामा घुमल। सम्पूर्ण संक्षेप नहि, केवल अन्तिम भाग।

हम साँस रोकलहुँ कि नहि, ई लिखबाक योग्य तथ्य नहि। हाथ कने काँपल—ई देखल जा सकैत छल। पेंसिलक नोक कागज पर लगैत दू बेर एकहि बिन्दु पर पड़ल। दैनिकीमे छोट गाढ़ बिन्दु बनि गेल।

नकल-पन्ना पर घरक पाँजिवला संक्षेपक अन्तिम भाग बनौलहुँ। तकर सोझाँ भीजल पन्नावला। दुनू समान कहब शीघ्रता होइत। मुदा भिन्न कहब सेहो कठिन।

हम तेसर प्रमाण खोजलहुँ। पृष्ठक ऊपर तिथि-शैली। भीजल पन्नामे मूल अभिलेखक तिथि पुरान हाथमे छल; ओकर पछाति कने छोट अक्षरमे एक परवर्ती वर्ष जोड़ल। वर्षक अंक ३ खुला घुमाववला। घरक पाँजिमे पितामहक पिताक ३ सेहो वएह। केवल अंकसँ लेखक निश्चित नहि होइत। मुदा चिन्ह, संक्षेपक अवशेष, अंकक रूप—तीनू एक दिशामे छल।

दैनिकीमे लिखलहुँ—“घर्षित पाँतिक परवर्ती हस्तक्षेप पितामहक पिताक हस्तलिपिसँ मेल खाइत अछि। निर्णायक तुलना लेल अन्य मूल अभिलेख आवश्यक।”

“हमर परदादा” लिखबाक इच्छा नहि भेल। सम्बन्ध लिखलासँ प्रमाण बढ़ैत नहि। तेँ वंशगत पदक बदला हस्तलिपि लिखलहुँ।

नौ बजि बीस मिनट पर फोन बाजल। मोहन। हम उठेलहुँ नहि। फोन चारि बेर बाजि बन्द। एक मिनट पछाति फेर। एहि बेर उठेलहुँ।

“बाबूजी, भोजन भेल?”

“नहि।”

“किएक?”

“काजमे छी।”

“कोन काज?”

हम कहलियैक—“पन्ना जाँचि रहल छी।”

ओ किछु क्षण चुप रहल। पुछलक—“तीन नाम?”

“हँ।”

“किछु भेटल?”

हम उत्तर देबाक पहिने मेज देखलहुँ। फोनमे मेज देखाइत नहि। तथापि उत्तर तत्क्षण नहि देलहुँ। कहलियैक—“जल-क्षति सभ ठाम समान नहि।”

मोहन कहलक—“एकर अर्थ?”

“एखन अर्थ निश्चित नहि।”

ओ कहलक—“अहाँ फेर वएह।”

“वएह की?”

“सभ बातक उत्तर एखन नहि।”

हम कहलियैक—“जकर उत्तर एखन नहि, तकरा एखन देब अनुचित।”

ओ दीर्घ साँस लेलके। तकर ध्वनि फोनमे स्पष्ट छल। कहलक—“दुपहरमे आएब।”

हम “नहि” कहबाक विचार कयलहुँ। मुदा कहलियैक—“आबि जा।” फोन बन्द। समय नौ बजि छब्बीस मिनट।

दैनिकीमे फोनक विवरण लिखलहुँ। “मोहनकेँ घर्षण विषय नहि कहल।” एहि वाक्य पर कने देर रुकलहुँ। कोनो तथ्य जानि-बुझि कऽ नहि कहब आ असत्य कहब दूटा भिन्न बात। मुदा दुनू बात लिखल रहबाक चाही।

दस बजि लग हम भीजल गट्ठरक बाँकी पन्नासभमे वएह दू तिरछा चिन्ह खोजलहुँ। पाँच ठाम भेटल। चारि ठाम पाठ मेटाओल नहि छल; केवल परवर्ती टिप्पणी जोड़ल। एक ठाम ग्राम-नाम

सुधरल। ओहि सुधारक अक्षर घरक पाँजिवला हाथसँ मेल खाइत छल। एहि सँ चिन्हक लेखक विषयक सम्भावना आरो प्रबल भेल।

पाँचम ठाम एक पाँति पर कने घर्षण छल, मुदा पाठ पढ़ल जा सकैत—पुरान ग्राम-नाम काटल नहि, ओकर ऊपर छोट अक्षरमे नूतन नाम। एहि ठाम खुरचनाइ अत्यल्प। कारण स्पष्ट: पुरान पाठ बचाओल गेल। श्रीधरक आगाँ पुरान पाठ बचाओल नहि गेल छल। सतह एतेक घिसल जे मूल अक्षर प्राय: समाप्त।

ई भेद आवश्यक छल। संशोधन आ मेटेनाइ एक क्रिया नहि।

हम दैनिकीमे दू शीर्षक बनौलहुँ—“संशोधन” आ “उच्छेदन।” पहिलमे चारि उदाहरण। दोसरमे केवल श्रीधरक पाँति। “उच्छेदन” शब्द लिखलाक पछाति पेंसिल रोकलहुँ। कठोर शब्द अछि, मुदा कागजक अवस्थाक वर्णन करैत अछि। व्यक्तिक उद्देश्य नहि।

एगारह बजि तेरह मिनट पर हम पहिल बेर अपन घरक वंश-क्रम ओहि पृष्ठसँ मिलेलहुँ। श्रीधरक नाम हमर कुल-पाँतिक बाहरी शाखासँ जुड़ैत छल। ई सम्बन्ध दूरक छल; एतय धरि हम पहिले सेहो जनैत रही। मुदा पितामहक पिताक समयमे ओ शाखा आ हमर शाखा एकहि पँजीकारक अधिकारक्षेत्रमे छल। अत: हुनकर हाथ ओहि पन्ना पर होयब असम्भव नहि।

असम्भव नहि—ई प्रमाण नहि। मुदा आब प्रश्न बदलि गेल छल। पहिने प्रश्न छल—जल की मेटा देलक? आब प्रश्न छल—कियो मेटेलक तँ किएक?

हम एहि दोसर प्रश्नकेँ दैनिकीमे नहि लिखलहुँ। कारण “किएक” उद्देश्य पूछैत अछि; उद्देश्यक कोनो प्रमाण एखन नहि। लिखलहुँ—“घर्षण कखन आ ककर हाथसँ?”

“ककर”क आगाँ कोष्ठकमे लिखलहुँ—“प्राथमिक तुलना: पितामहक पिता।”

ई चारि शब्द लिखैत काल पेंसिलक दबाव बढ़ि गेल। अक्षर गाढ़ भेल। हम मेटेलहुँ नहि। दबाव सेहो लिखित चिह्नक अंग बनि गेल छल।

दुपहर बारह बजि पाँच मिनट पर भोजन कयलहुँ। भात कम, दालि। थारी धोइत काल हाथ पर मसिक सूक्ष्म दाग देखलहुँ। सम्भवत: पुरान पन्नासँ लागल। साबुनसँ धोएलहुँ। दाग कने रहल।

एहि बातक कथासँ सम्बन्ध नहि, मुदा दैनिकीमे लिखलहुँ नहि। सभ दृश्य लिखित अभिलेख नहि बनैत।

बारह बजि सैंतीस मिनट पर फेर मेज लग बैसलहुँ। आब हम घर्षित पाँतिक नीचला पाँति पढ़लहुँ। ओतय एक विवाह-सम्बन्धक अभिलेख छल, मुदा तिथि घर्षित पाँतिक पछातिक। नाम सभ स्पष्ट। घर्षित पाँति जँ मूलत: वंश-क्रमक छल, तँ ओकर हटेनाइ पछातिक सम्बन्धक अर्थ बदलि सकैत छल। मुदा ई केवल संरचनागत सम्भावना। हम कोनो नाम जोड़लहुँ नहि।

एक बजि दस मिनट पर मोहन आएल। दुआर खटखटेलक। हम पन्ना ढाकलहुँ नहि। केवल घरक पाँजि दहिना दिस सरका देलहुँ, कारण दूटा पन्ना एक-दोसर पर चढ़ल छल। ओ भीतर आएल, मेज देखलक, जूता दुआर पर खोललक।

“भोजन?”

“भेल।”

ओ कुर्सी पर बैसल। मेजक पन्ना दिस हाथ बढ़ेलक नहि। पुछलक—“देखी?”

हम कहलियैक—“हाथ सुखाओ।” ओ हाथ धोने आएल छल, तथापि गमछासँ फेर पोंछलक।

हम श्रीधरक पाँति देखेलियैक। ओ पहिने किछु नहि बुझलक। कहलके—“एतय तँ किछु नहि।”

हम कहलियैक—“वएह देखबाक अछि।”

“रिक्त?”

“रिक्ति कतेक प्रकारक होइत अछि?”

ओ हमरा देखलक। “अहाँ प्रश्न नहि, उत्तर दिअ।”

हम तिरछा प्रकाश देलहुँ। उठल रेशा देखेलियैक। ओ नजिक झुकल। कहलक—“खुरचल अछि?”

“सम्भावना प्रबल।”

“कैं?”

हम घरक पाँजि खोललहुँ। तीन तुलना देखेलियैक। दू तिरछा चिन्ह। अंक ३। संक्षेपक वक्रता। मोहन दीर्घ समय नहि देखलक। ओ अभियन्ता अछि; हस्तलिपि-जाँच ओकर काज नहि। तथापि चिन्हक समानता बुझि सकल।

ओ पुछलक—“ई ककर हाथ?”

हम कहलियैक—“हमर पितामहक पिताक।”

पहिल बेर सम्बन्धक शब्द मुँहसँ निकलल। दैनिकीमे एखन धरि नहि छल।

मोहन कुर्सी पर पीठ सटेलक। किछु क्षण बाद कहलक—“निश्चित?”

“नहि। अत्यन्त प्रबल मिलान।”

“तँ ओ मेटेलनि?”

हम कहलियैक—“हस्तक्षेप हुनकर हाथसँ मेल खाइत अछि। ‘ओ मेटेलनि’ कहबाक लेल आरो जाँच चाही।”

मोहन माथ झुका कऽ पन्ना देखलक। तखन पहिल प्रश्न पुछलक जे हमरा स्वयं दैनिकीमे लिखबाक साहस नहि भेल छल—“किएक?”

हम उत्तर देलियैक—“ज्ञात नहि।”

ओ तत्क्षण दोसर प्रश्न नहि पुछलक। बाहर बाट पर साइकिलक घण्टी बजल। घरक पछिला भागसँ बर्तन रखबाक ध्वनि। मेज पर दू पाँजि खुलल।

मोहन कहलक—“ई हमर घरक बात अछि?”

हम कहलियैक—“ई पाँजिक बात अछि। घरक सम्बन्ध प्रमाणित सीमा धरि अछि।”

ओ कने कठोर स्वरमे कहलक—“अहाँ सभ बात एना पृथक कऽ सकैत छी?”

“जाँच करैत काल करबाक पड़ैत अछि।”

“आ जाँचक बाद?”

हम उत्तर नहि देलहुँ।

मोहन उठि खिड़की लग गेल। बाहर देखलक। फेर पुछलक—“तीन नाममे केवल एक पाँति खुरचल?”

“एखन धरि।”

“आन दू?”

“एकमे जल-क्षति। एकमे पृष्ठ फाटल।”

ओ घुरि कऽ हमरा देखलक। “तँ तीनू एक बात नहि।”

“नहि।”

एहि उत्तरक पछाति हमर पहिल पाँच दिनक अनुमान समाप्त भेल। हम तीनू रिक्तिकेँ जलक एकहि घटना मानि रहल रही। आब ताहि लेल आधार नहि छल।

मोहन कहलक—“हम जाइ छी।”

“काज?”

“हँ।”

दुआर धरि पहुँचि ओ फेर घुरल। “बाबूजी, ई बात एखन ककरो नहि कहब?”

हम पुछलियैक—“किएक?”

ओ कहलक—“जखन धरि निश्चित नहि।”

हम कहलियैक—“ई उचित कारण अछि।”

ओ चलि गेल। समय एक बजि अठावन मिनट।

दुआर बन्द कऽ हम दैनिकी खोललहुँ। मोहनक कथन शब्दशः लिखलहुँ—“जखन धरि निश्चित नहि।” तकर नीचाँ अपन उत्तर—“उचित कारण।” एहि ठाम पिता आ पुत्र एकहि नियम पर पहुँचल छल, मुदा कारण सम्भवतः समान नहि। एहि अन्तिम अंशकेँ दैनिकीमे नहि लिखलहुँ। ओ विचार छल।

दू बजि पन्द्रह मिनट पर हम घर्षित पाँतिक पृथक नकल बनौलहुँ। पृष्ठ-संख्या, पाँति-संख्या, बामा-दहिना सीमाक माप, उठल रेशाक दिशा, मसि-बिन्दु, दू तिरछा चिन्ह, अधकटल अक्षर, परवर्ती वर्ष—सभ। नकलक ऊपर लाल पेंसिलसँ “मूल नहि” लिखलहुँ। मूल पन्ना फेर सूती कपड़ाक बीच राखलहुँ।

तखन घरक पाँजि बन्द करबाक समय पितामहक पिताक एक अभिलेख आँखिक सोझाँ पड़ल। अभिलेख सामान्य छल। दू भाइ, एक विवाह, ग्राम-नाम। अक्षर वएह छोट, झुकल, अनुशासित। एहन हाथ जे वर्ष, नाम आ सम्बन्ध नापि कऽ लिखैत छल। भीजल पन्नामे वएह हाथक चिन्ह एक पाँति हटेबाक क्रियाक सोझाँ छल।

हम ओकरा नैतिक अर्थ नहि देलहुँ। हाथक सुन्दरता अथवा कुरूपता प्रमाण नहि। केवल लेखकक पहिचान प्रासंगिक।

तीन बजि चारि मिनट पर दैनिकीमे दिनक निष्कर्ष लिखलहुँ—

“१. श्रीधरक पश्चात् रिक्त भाग जल-क्षति मात्र नहि। कागजक सतह मानवीय घर्षणसँ हटाओल गेल प्रतीत।
२. ओहि पाँतिक बामा किनारक द्वि-तिर्यक चिन्ह, समीपस्थ परवर्ती अंक-रूप, आ संक्षेप-अवशेष हमर पितामहक पिताक निश्चित अभिलेखसभसँ प्रबल मेल।
३. रत्नेश्वरक रिक्ति जल-क्षति सम्भावित। जयनारायणक रिक्ति पृष्ठ-भंगसँ सम्बन्धित।
४. तीनू रिक्तिक एक कारण मानबाक पूर्व अनुमान त्याज्य।
५. मेटाओल पाठक मूल शब्द एखन अपठित। उद्देश्य अज्ञात।”

पाँचम पाँतिक पछाति कलम रोकलहुँ। “मेटाओल” शब्द आब पहिल बेर निष्कर्षमे लिखल गेल छल। प्रश्नचिह्न नहि। कागजक सतह पर्याप्त छल।

दैनिकी बन्द कयलहुँ, मुदा तत्क्षण फेर खोललहुँ। तिथि नीचाँ एक पाँति आरो जोड़लहुँ—“जाँच एहि क्षणसँ पारिवारिक हितसँ प्रभावित हो सकैत अछि; अतः आगाँक सभ तुलना दोहरा साक्ष्य पर।”

एहि पाँतिक आवश्यकता छल। पँजीकार दोसरक वंश जाँचैत काल जे दूरी रखैत अछि, अपन वंशक आगाँ वएह दूरी अपने नहि बनैत। ओकरा लिखि कऽ बनाबय पड़ैत अछि।

चारि बजि लग पन्ना पेटारमे राखलहुँ। श्रीधरवला पन्ना पृथक कपड़ामे नहि बन्हलहुँ; पृथक करब सेहो अर्थ देब होइत। तीनू पन्ना जे क्रममे छल, वएह क्रममे राखल। ऊपर नकल, ओकर ऊपर दैनिकी नहि। दैनिकी पृथक। चाबी कमराक डोरीमे।

पेटार बन्द करैत काल हमरा पहिल दिनक वाक्य मोन पड़ल—तीन नामक विषयमे नव तथ्य नहि। आब नव तथ्य छल। तीन नाममे एक नामक आगाँ जल नहि, हाथ छल। आ ओ हाथ अपरिचित नहि छल।

हम एहि बातक कोनो व्याख्या नहि लिखलहुँ। केवल पेटारक ताला दू बेर खींचि जाँचलहुँ। समय चारि बजि नौ मिनट।

खण्ड २ — पाँजि (१९०१–१९३४)

अध्याय ९ — धरती हिलल

१५ जनवरी १९३४

हम धरती हिलल दिन उपस्थित नहि रही। हमर जन्म तकर दू बरख पछाति भेल। तथापि हमर बाल्यकालमे १५ जनवरी १९३४ कोनो बीतल तिथि नहि छल। गामक बुजुर्ग लोक ओकरा दिन नहि, सीमा मानैत छलाह—धरती हिलबाक पहिने आ धरती हिलबाक पछाति। घरक आयु पूछू तँ उत्तर भेटत, “भूकम्पसँ दू बरख पहिने बनल।” ककरो जन्मक अनुमान चाहू तँ कहल जाएत, “धरती हिलल तखन गोदमे छल।” विवाहक समय पूछू तँ स्मृति ओकरा सेहो ओही सीमा लग आनिकऽ राखि दैत। लिखित तिथि कम छल; धरतीक कम्पन सभक भीतर एकटा साझा तिथि बनि गेल छल।

हम एहि घटना विषयमे पहिल बेर बारह बरखक आयुमे लिखलहुँ। दैनिकी हमर तखनक नहि; विद्यालयक पुरान अभ्यास-पुस्तिकाक पछिला पन्नामे पाँच पाँति भेटैत अछि। “दादी कहलीह जे पहिने घंटी बजल। बाबा कहलनि पहिने भीत खसल। पोखरि उफनल कि नहि—दुनू पृथक कहैत छथि।” बालकक लिखावट अछि। शब्द दू-तीन ठाम अशुद्ध, मुदा मतभेद यथावत लिखल गेल अछि। सम्भवतः पँजीकार बनबाक पहिल अभ्यास वएह छल—एकहि घटनाक दू कथन कैं एकमे मिला कऽ नष्ट नहि करब।

हमर पितामहक कथनमे भूकम्प ध्वनिसँ आरम्भ होइत छल। ओ कहैत छलाह, धरती पहिने नहि हिलल; पहिने नीचाँसँ एहन गम्भीर गर्जना उठल मानो अनेक बैलगाड़ी एकहि बेर कच्ची बाट पर आबि रहल हो। घरक लोक बाहरक ओर देखलनि, मुदा बाट रिक्त। तकर पछाति तुलसी-चौरा लग राखल पीतलक लोटा अपने खिसकल। लोटा खसबाक ध्वनि हुनका सभसँ स्पष्ट मोन छलनि। हुनकर कथामे पहिल ढहल वस्तु घरक पश्चिमी देबाल छल। देबाल खसला पर धूरक बादर उठल, आ ओ अपन छोट भाइ कैं बाँहि पकड़ि अँगना पार करौलनि।

मुदा हमर पितामही एहि क्रमकैं स्वीकार नहि करैत छलीह। हुनकर अनुसार पहिने मन्दिरक घंटी अपने बाजल। कियो रस्सी नहि खींचने छल। घंटीक दू अथवा तीन चोट सुनिते ओ धान चुनैत हाथ रोकलनि। तखन भूमि तरंग जकाँ उठल। “लोटा तऽ बादमे खसल,” ओ पितामहकैं टोकैत छलीह। पितामह कहैत छलाह, “तोहर आँखि घंटी पर छल, हमर लोटा पर।” दुनू हँसैत नहि छलाह। ई तर्क नित्यक दाम्पत्य-विनोद नहि छल; दुनू अपन स्मृतिक अधिकार बचबैत छलाह।

पितामहीक कथामे पश्चिमी देबाल नहि, गोहालक कोन पहिने ढहल। एक गोरु रस्सी तोड़ि भागल, दोसर खूँटासँ बन्हले रहल। ओ कहैत छलीह जे ओहि बन्हल गोरुक आँखि हुनका अनेक दिन धरि मोन रहल—देह काँपैत, आँखि स्थिर। पितामह एहि विवरण पर चुप रहैत छलाह। हुनकर कथामे गोरु नहि अबैत छल। ओ केवल लोक, भीत आ माप कहैत छलाह। पितामही वस्तु आ देह कहैत छलीह—उलटल मटकी, धानमे पड़ल चूना, छप्परक फूसमे अँटकल लाल कपड़ा, आ एक बालिका जकर पएरमे काँसक टुकड़ा धँसि गेल छल।

गामक पुरान वैद्य रामलोचन झाक कथन तेसर छल। हुनका अनुसार ध्वनि नहि, पानिक रंग पहिल संकेत छल। ओ कहैत छलाह जे भूकम्पसँ कने पहिने कुआँक पानि धुँधला देखल गेल। ई कथन ओ जीवनक अन्तिम बरख धरि दोहरबैत रहलाह। ककरो पूछला पर जे पानि पहिने धुँधला भेल

कि कम्पनक पछाति, ओ झुँझला उठैत छलाह—“हम अपन आँखिसँ देखने छी।” मुदा हुनकर छोट भाइ कहैत छलाह जे कुआँ तऽ भूकम्पक पछाति माटि छोड़लक। दुनू भाइ एकहि घरमे रहैत छलाह, एकहि कुआँक पानि पीबैत छलाह, मुदा कुआँक समय दुनू लग पृथक छल।

रामलोचन झाक कथा चिकित्सकक कथा छल। केकर माथ फूटल, केकर बाँहि उतरि गेल, केकर पएर भीतक नीचाँ दबायल, के लोक अपन बलसँ निकलल, केकरा चारि जन उठा कऽ आनल—ओ नामक्रम बना सकैत छलाह। जखन हम वयस्क भऽ कऽ हुनकर पुरान सूची खोजलहुँ, कोनो लिखित सूची नहि भेटल। कहल गेल जे कागज बादक बरखामे गलि गेल। तखन हमरा बुझाइत भेल जे कतेक सूची केवल मुँहमे जीवित रहैत अछि, आ मुँह बन्द भेलाक संग सूची सेहो समाप्त।

चौठ कथा बुधन सदाक छल। ओ मुसहर टोलाक सभसँ बूढ़ लोक छलाह जखन हम किशोर रही। हुनकर जन्मक तिथि ककरो ज्ञात नहि छल; ओ अपने कहैत छलाह जे धरती हिलल तखन “दू बालकक बाप” छलाह। हुनकर कथामे मन्दिरक घंटी नहि, पितामहक लोटा नहि, वैद्यक कुआँ नहि। हुनकर पहिल बात छल—“माटि फाटल।” ओ हाथसँ दू दिशा देखबैत कहलनि जे टोलाक पाछाँ खेतमे लम्बा चीरा खुलल, ओहिमे सँ बालू-मिश्रित पानि निकलल, फेर किछु देरमे भरि गेल।

हम एक बेर हुनकासँ पुछलियनि—“कतेक चौड़ा?” ओ अपन दुनू पएर फैला कऽ देखौलनि। दोसर बेर पुछलहुँ तँ एक बाँसक गाँठसँ दोसर गाँठ धरि देखौलनि। तेसर बेर ओ कहलनि—“एतेक नाप किएक चाही? फाटल छल, एतबे।” साक्षीक बोलीकेँ अपन सुविधा अनुसार बदलि देब साक्ष्य बदलनाइ अछि।

बुधन सदाक कथामे एक आरो बात रहैत छल—सभ घरक लोक एकहि खुला खेतमे राति काटल। पहिल राति ककरो भीतक भरोसा नहि रहल। ब्राह्मणक परिवार, कायस्थक परिवार, दुसाध टोलाक लोक, मुसहर टोलाक लोक—दूरी रखितो, मुदा एकहि खेतमे। ओ कहैत छलाह, “धरती जाति नहि पूछलक।” ई वाक्य सुनि कऽ गामक किछु लोक असहज होइत छलाह। दोसर बुजुर्ग तत्क्षण जोड़ैत छलाह—“खाइ-पिबैक बर्तन पृथक छल।” बुधन सदा हँसैत नहि छलाह; केवल कहैत छलाह—“माटि एक छल।”

एहि रातिक विवरण सभसँ बेसी बदलैत अछि। पितामही कहैत छलीह जे लोक दू राति बाहर रहल। पितामह कहैत छलाह पाँच राति। रामलोचन झा सात रातिक उपचारक बात करैत छलाह, मुदा ई नहि जे सभ लोक सातो राति खेतमे छल। बुधन सदा कहैत छलाह, “जखन धरती चुप

भेल तखन लोक भीतक मुँह ताकलक।” कखन धरती चुप भेल—एहि प्रश्नक उत्तर हुनका लग तिथि नहि, देहक भय छल।

गामक पूर्वी भागमे पुरान शिवमन्दिरक शिखर चिरा गेल छल—एहि बात पर लगभग सभ कथन मेल खाइत अछि। मुदा घंटी पर मतभेद रहि गेल। कियो कहैत घंटी अपने बाजल, कियो कहैत छप्परक कड़ी रस्सी पर खसल, ताहिसँ बाजल। एक वृद्ध पुरोहित तऽ ईहो कहैत छलाह जे घंटी बाजलहि नहि; ई बात पछातिक जोड़ अछि। जखन हम हुनकासँ पुछलियनि जे तखन घंटीक कथा एतेक लोक किएक कहैत अछि, ओ उत्तर देलनि—“लोक घटना नहि, ध्वनि मोन रखैत अछि; ध्वनि नहि भेटल तँ बना लैत अछि।” ई हुनकर मत छल, प्रमाण नहि। हम दुनू लिखलहुँ।

पोखरिक विषयमे सेहो तीन रूप छल। एक कथामे पानि किनार लाँघि अँगना दिस आएल। दोसरमे केवल सतह काँपल आ माछ ऊपर उछलल। तेसरमे पोखरि स्थिर छल; धूरक बादरक कारण लोक स्पष्ट देखि नहि सकल। बादमे जखन हम पुरान भू-नक्शा देखलहुँ तँ पोखरिक आकार भूकम्पक पहिने आ पछाति पृथक नापल गेल छल, मुदा ताहिसँ ओहि क्षणक पानि सिद्ध नहि होइत। कागज सेहो सभ प्रश्नक उत्तर नहि दैत।

घरसभक क्षति विषयक लिखित अभिलेख किछु बेसी अछि। राजस्व कागजमे ककरो मकान “पूर्ण क्षतिग्रस्त”, ककरो “आंशिक” लिखल भेटैत अछि। मुदा जे घर सरकारी कागजमे एक पाँति अछि, ओ परिवारक स्मृतिमे पाँच पीढ़ीक वस्तु छल। पितामही एक पेटीक बात करैत छलीह जकर ढक्कन देबालक ईंटसँ टूटल। पेटीमे विवाहक कपड़ा, दू चाँदीक सिक्का, एक तेलचित्र, आ किछु पत्र छल। राजस्व सूचीमे पेटी नहि। पितामहीक कथा बिना पेटीक सम्पूर्ण नहि होइत।

धरती हिललाक पछाति गाम फेर बनल, मुदा पहिल जेकाँ नहि। किछु दुआर पूब दिसक बदला दक्खिन दिस खुलल। दू परिवार पुरान भीतक नीचाँ घर नहि बनौलक। एक गल्ली चौड़ी भेल किएक तँ दुनू कातक देबाल खसि गेल छल; पछाति कियो पुरान सीमा धरि भीत नहि उठौलक। मुसहर टोलाक किछु झोपड़ी ऊँच भाग दिस सरकल, मुदा बरखाक पछाति फेर नीच भागमे गेल—ऊँच माटि ककर छल, ई प्रश्न भूकम्पसँ पृथक नहि छल।

एहि पुनर्निर्माणक कालक कथा सुनैत हमरा सदिखन एक बात ध्यानमे आएल—लोक “गाम बचल” कहैत छल, मुदा वस्तुतः पुरान गाम सम्पूर्ण रूपेँ आपस नहि आयल। नाम वएह रहल, देवस्थान वएह, पोखरि वएह कहल गेल, मुदा दुआर, भीत, गल्ली, टोलाक किनार, कुआँक

गहिराइ, खेतक चिरा—सभमे किछु बदलल। अभिलेखमे ग्राम-नाम नहि बदलल, तेँ कागजक दृष्टिसँ गाम वएह छल। देह आ माटिक दृष्टिसँ ओ नव छल।

हमर पितामह एहि नव गामक बात कम करैत छलाह। हुनकर कथा कम्पन धरि तीक्ष्ण, पुनर्निर्माण पर संक्षिप्त। “भीत फेर उठल,” एतबे। पितामही विस्तारसँ कहैत छलीह—के घरमे पहिल चुल्हि जरल, के परिवार ककर बरामदामे दू मास रहल, केकर बेटी विवाहक तिथि टारि देल गेल, ककर धान माटिमे मिलल। रामलोचन झा रोग आ घावक क्रम राखैत छलाह। बुधन सदा माटि आ मजदूरीक। एकहि गाम चारि प्रकारसँ फेर बनैत छल।

हम युवावस्थामे एक बेर निर्णय करबाक चेष्टा कयलहुँ जे एहि कथामे कोन “यथार्थ” अछि। एक कागज पर चारि खण्ड बनौलहुँ—ध्वनि, पहिल ढहनाइ, पानि, राति बाहर रहबाक अवधि। साक्षीक नाम सोझाँ लिखलहुँ। दू घंटा पछाति कागज देखलहुँ तँ बुझलहुँ जे हम घटना नहि, मतभेद नापि रहल छी। तखन पाँचम खण्ड जोड़लहुँ—“जे बात पर सभ सहमत।” ओ खण्ड आश्चर्यजनक रूपसँ छोट छल: धरती अत्यन्त जोर सँ हिलल; अनेक घर ढहल; लोक बाहर भागल; घाव भेल; गामक बनावट बदलल।

पँजीमे भूकम्पक लेख लगभग नहि अछि। विवाह स्थगित भेल तकर संकेत कतहु-कतहु तिथिक अन्तरसँ बुझाइत अछि। एक पन्नामे मसि बदलल अछि। दोसरमे “गृहभङ्ग” शब्द किनार पर अछि। मुदा माटि फाटल, गोरु बन्हल रहल, घंटी बाजल कि नहि, पेटी टूटल—किछु नहि। पँजीक प्रयोजन ई सभ लिखब नहि छल। तथापि जखन बादक पीढ़ी केवल पँजी पढ़त, ओकरा लग १९३४क गाम अत्यन्त शान्त देखायत।

एतय अभिलेख आ स्मृति एक-दोसरक विरोधी नहि। दुनू अधूरा अछि, मुदा अधूरापन पृथक प्रकारक। स्मृति घटना केँ बचबैत-बचबैत ओकर क्रम बदलि दैत अछि। अभिलेख क्रम बचबैत-बचबैत घटना छोड़ि दैत अछि। पँजीकारक कठिनाई ई नहि जे कोन एकटा चुनल जाए; कठिनाई ई जे दुनू केँ मिलाकऽ तेसर, सुविधाजनक असत्य नहि बनाओल जाए।

१९८१मे पितामहीक देहान्तक किछु मास पहिने हम फेर पुछलियनि—“घंटी पहिने बजल छल?” ओ हमरा एना देखलनि मानो प्रश्न अतिपुरान हो। कहलनि—“तोहर बाबा एखनहुँ लोटा कहैत छथि?” हम कहलियनि—“हँ।” ओ मुस्कुरेलीह। “तँ लिखह—ओ लोटा सुनलनि, हम घंटी।”

हम पुछलियनि—“दुनूमे कोन पहिने?” ओ उत्तर देलनि—“धरती।”

ई उत्तर हमर कोनो तालिकामे नहि अँटैत छल। तखन हम ओकरा जकाँ-तकराँ लिखि देलहुँ।

दीर्घ काल पछाति, २००८क भीजल गट्ठर खोलैत काल, १९३४क ओहि कथासभ फेर मोन पड़ल। कागज पर घर्षण देखैत हम बुझि रहल रही जे रिक्ति सेहो घटना होइत अछि। मुदा ई बोध नव नहि छल। बाल्यकालसँ हम सुनैत आएल रही जे एकहि कम्पनक बीच पाँच लोक पाँच वस्तु बचबैत अछि—कियो लोटा, कियो घंटी, कियो कुआँ, कियो माटिक चिरा, कियो घायल देह। जे बचल, से केवल घटना नहि; साक्षीक अपन ठाम सेहो छल।

आ जे नहि बचल, तकर विषयमे एखन किछु लिखबाक नहि छल। १९३४क गामक कथा भूकम्प पर समाप्त नहि होइत। ओहि बरखक भीतर आरो किछु भेल छल, जकरा बुजुर्ग लोक धरतीक कथा जकाँ खुलि कऽ नहि दोहरबैत छलाह। भूकम्पक स्मृतिमे मतभेद छल; ओहि दोसर बातक स्मृतिमे मौन। मतभेद लिखल जा सकैत अछि। मौनक नाप दोसर विधिसँ करबाक पड़ैत अछि।

अध्याय १० — साक्षी एक: पुरोहित

घटना: माघ १९३४ · कथन: हरिनारायण झा

भूकम्पक कथा सुनबैत जे वृद्ध पुरोहित घंटीक बात अस्वीकार कयने छलाह, हुनक नाम हरिनारायण झा छल। हम हुनकर विवाह-विषयक कथन दीर्घ काल पछाति लिखने रही। ओहि समय हम जवान रही, ओ वृद्ध। प्रश्न सुनिते पहिल वाक्य कहलनि—“विवाह शब्द पहिने नहि लिखू। जे भेल से विवाह छल कि नहि, वएह तऽ प्रश्न अछि।” हम तिथि लिखलहुँ, हुनकर नाम लिखलहुँ, आ कहलियनि जे जेना कहब, तेना लिखब। ओ उत्तर देलनि—“तँ पहिने सीमा लिखू।”

हुनकर सीमा पाँच छल। पहिल—ओ ककरो विवाह करबय ओतय नहि गेल छलाह। दोसर—ओ कोनो मन्त्र नहि पढ़ने छलाह। तेसर—अग्नि हुनका द्वारा प्रज्वलित नहि भेल छल। चौठ—कन्यादान नहि भेल। पाँचम—पाँजि देखल बिना ओ कोनो सम्बन्ध मान्य नहि कहैत छलाह। पाँच बात कहलाक पछाति ओ हमरा दिस देखि पुछलनि—“एखन लिखलहुँ?” हम कहलियनि—“हँ।” ओ तखन कथा आरम्भ कयलनि।

“भूकम्पक पछाति गामक व्यवस्था अपने बिगड़ल छल,” ओ कहलनि। “भीत खसल, देवस्थान चिरायल, लोक बाहर रहैत छल। एहन समयमे धर्मक नियम बदलि नहि जाइत। संकटमे नियमक आवश्यकता घटैत नहि, बढ़ैत अछि। किएक तँ जखन घरक देबाल नहि रहय, तखन लोक सीमा मोनसँ राखैत अछि।” ई हुनकर पहिल आत्म-समर्थन छल। हम तखन एहि शब्दक उपयोग नहि कयने रही; केवल वाक्य जकाँ-तकराँ उतारने रही।

ओ फुलझरीक नाम पहिने नहि लेलनि। “घरक ओ स्त्री” कहलनि। हम पुछलियनि—“कोन स्त्री?” ओ कहलनि—“अहाँ जानैत छी।” हम कहलियनि—“अभिलेख अनुमान पर नहि चलैत।” तखन दीर्घ समय पछाति कहलनि—“फुलझरी।” नाम उच्चरित कयलाक पछाति ओ जल पीबय लगलाह। पीतल लोटाक किनार पर हुनकर दाँत लगबाक छोट ध्वनि भेल। हम ई बात लिखलहुँ, किएक तँ ओहि क्षणक चुप्पी लम्बा छल।

हुनकर अनुसार फुलझरी ओहि साँझ घरसँ एकसरि नहि निकललीह। संग एक युवक छल। युवकक नाम पुछलहुँ तँ हरिनारायण झा कहलनि—“नाम लिखलासँ की होयत?” हम कहलियनि—“व्यक्ति नामसँ भिन्न नहि होइत।” ओ कहलनि—“हमरा नाम मोन नहि।” बादमे

वएह कथनक भीतर ओ युवकक बाबूक पेशा, ओकर टोलाक दिशा आ ओकर घर लगक पीपरक उल्लेख कयलनि। नाम मात्र मोन नहि छल।

“ओ दुनू मन्दिरमे आयल छल?” हम पुछलियनि। पुरोहित तत्क्षण कहलनि—“मन्दिरक भीतर नहि।” कने पछाति कहलनि—“देहरी धरि आयल होयत।” फेर कहलनि—“हम ओतय तखन रही नहि।” तीन उत्तर एक प्रश्नक छल। हम तीनू लिखलहुँ।

कथनक पहिल रूपमे हरिनारायण झा अपन घरमे संध्या करैत छलाह जखन एक बालक आबि कहलके जे दू लोक देवस्थानक कात बैसल अछि। पुरोहित बालककेँ आपस पठा देलनि। ओ कहैत छलाह जे ओहि समय गाममे एहन बात सुनब सामान्य छल—भूकम्पक पछाति घर टूटल, लोक देवस्थान, बारी, मचान, खाली आँगन, जतय ठाम भेटय ओतय बैसैत। “दू लोक बैसल अछि” सुनि कऽ ओ नहि गेलाह।

कथनक दोसर रूप ओ स्वयं किछु वाक्य पछाति देलनि। कहलनि—“जखन देखलहुँ जे पीयर साड़ी पहिरने स्त्री देहरीक बाहर ठाढ़ अछि, तखन बुझलहुँ बात केवल आश्रयक नहि।” हम रोकि पुछलियनि—“अहाँ देखलहुँ?” ओ कहलनि—“लोक कहलक।” हम कहलियनि—“पीयर साड़ी?” ओ कने असन्तुष्ट भेलाह। “पीयर कि फीका पीयर, एतेक वर्ष पछाति रंग पर विवाद नहि करू।” हम रंग पर विवाद नहि कयलहुँ। केवल लिखलहुँ जे हुनका साड़ी रंग मोन छल।

ओ कहैत छलाह फुलझरीक दहिना कलाईमे लाल सूत छल। ई सूत विवाहक चिह्न नहि—ई बात ओ बिना हमरा पुछने जोड़लनि। “गाममे स्त्रीलोक कलाईमे सूत बान्हैत अछि, व्रतमे, पूजामे, रोगमे। ओकरा विवाहक डोरा नहि लिखब।” हम कहलियनि—“हम केवल लाल सूत लिखि रहल छी।” ओ कहलनि—“तँ रहय दिअ।”

युवक विषयक हुनकर शब्द कम छल। “ओ बाहर ठाढ़ छल।” “ओ माथ झुका कऽ बोलैत छल।” “ओ ब्राह्मण नहि छल।” एतय हम पुछलियनि—“जाति?” पुरोहित हमरा दिस किछु काल देखलनि। फेर कहलनि—“जकरा पाँजिमे अधिकार नहि, ओकर जाति पूछलासँ की लाभ?” हम कहलियनि—“घटना बुझबाक लाभ।” ओ उत्तर देलनि—“घटना तऽ एतबे जे मान्य सम्बन्ध सम्भव नहि छल।”

शास्त्रक बात एतयसँ आरम्भ भेल। हरिनारायण झा गोत्र, कुल, आचार, अधिकार, संस्कार—पाँच शब्द बेराबेरी कहैत रहलाह। कोनो ग्रन्थक श्लोक नहि उद्धृत कयलनि। हम पुछलियनि—“कोन नियम?” ओ कहलनि—“जे सभ मानैत अछि।” हम पुछलियनि—“लिखित?” ओ कहलनि—“सभ बात पोथीमे लिखल रहय आवश्यक नहि।” ई उत्तर हमरा तखन साधारण लगने छल। पँजीकार भेलाक पछाति ओकर अर्थ दोसर बुझायल—जे नियम लिखल नहि, ओकर सीमा ककर हाथमे रहैत अछि?

फुलझरी पुरोहितसँ की चाहैत छलीह, एहि प्रश्न पर हुनकर कथन सभसँ बेसी टारू छल। पहिने कहलनि—“आशीर्वाद।” फेर—“साक्षी।” फेर—“केवल एतबे जे हम ककरो कहल नहि करी।” हम पुछलियनि—“तीनूमे कोन?” ओ कहलनि—“स्त्रीक वाणी भावसँ चलैत अछि, विधिसँ नहि।” हम एहि वाक्यक कात प्रश्नचिह्न बनौने रही। एखन बुझैत छी, प्रश्न फुलझरीक वाणी पर नहि, पुरोहितक स्मृति पर छल।

ओ एक बात स्पष्ट कहलनि—फुलझरी अपन इच्छा स्वयं कहने छलीह। कोनो पुरुष ओकर बदला नहि बोलल। “ओ कहलीह जे हम एहि मनुष्य संग रहब।” हरिनारायण झा ई वाक्य बेसी धीमे कहलनि। हम पुछलियनि—“शब्द यएह छल?” ओ उत्तर देलनि—“अर्थ यएह।” हम मूल शब्द चाहलहुँ। ओ नहि देलनि।

तखन युवक सेहो किछु कहने छल। पुरोहित ओकर वाक्य मोन नहि होयबाक बात कहलनि। मुदा ओ ई अवश्य मोन राखैत छलाह जे युवक हाथ जोड़ने छल। “हाथ जोड़लासँ विवाह नहि होइत,” ओ तत्क्षण जोड़लनि। ई कथन प्रश्न बिना आयल। हुनकर सम्पूर्ण वृत्तान्तमे जे बात ओ अपने जोड़ैत छलाह, ओ प्रायः हुनकर बचावक बात होइत छल।

हम पुछलियनि—“अग्नि छल?” ओ कहलनि—“नहि।” किछु देर पछाति मन्दिरक देहरी लग राखल माटिक दीयाक बात कयलनि। “दीया तऽ संध्या समय रहबे करैत।” हम कहलियनि—“अग्नि नहि, दीया छल?” ओ कहलनि—“दीया कैँ अग्नि कहि विवाह बना देब उचित नहि।” हम दुनू शब्द पृथक लिखलहुँ।

फेर ओ कहैत छथि जे फुलझरी देहरीक कात माटि पर बैसि गेलीह। ओकर साड़ी किनार भीजल छल। पएरमे कादो। बामा पएरक एड़ी लग छोट काटल चिन्ह। हम पुछलियनि—“अहाँ एतेक देखलहुँ तखन ओतय नहि छलहुँ कथन कोना?” ओ चुप रहलाह। दीर्घ काल पछाति कहलनि—

“हम पहुँचल रही, मुदा कर्म कराबय नहि।” एतय पहिल सीमा बदलि गेल। आब ओ घटना-स्थल पर गेल छलाह, केवल पुरोहितक काज नहि कयने छलाह।

हुनकर कहब छल जे ओ फुलझरीकेँ आपस घर जेबाक सल्लाह देलनि। “अहाँक कुलक लोकसँ बात होयत, पाँजि देखल जाएत, तखन जे विधि।” फुलझरी कथित रूपसँ हँसल नहि, कानल नहि, केवल पुछलनि—“पाँजिमे हमर इच्छा कतय लिखल अछि?” ई वाक्य हरिनारायण झा स्वयं हमरा सुनौलनि। जँ ई वाक्य यथार्थ अछि तँ ई ओहि रातिक सभसँ स्पष्ट वाक्य छल। जँ बादक स्मृतिसँ बनल अछि तँ सेहो महत्त्वपूर्ण, किएक तँ पुरोहितक स्मृतिमे फुलझरीक प्रश्न पाँजि पर छल।

ओ उत्तर की देलनि? पहिने कहलनि—“हम शास्त्रक मर्यादा कहलियनि।” शब्द पुछलहुँ तँ कहलनि—“स्त्रीक इच्छा एकमात्र प्रमाण नहि।” तकर पछाति गोत्र आ कुलक चर्चा। फेर अधिकार। फेर पूर्वज। मुदा ओ कतहु नहि कहि पेलाह जे फुलझरीक इच्छा कोन पाँतिसँ निरस्त होइत छल। हुनकर तर्क वृत्ताकार छल—सम्बन्ध मान्य नहि किएक तँ पाँजिमे अधिकार नहि; अधिकार नहि किएक तँ एहन सम्बन्ध मान्य नहि।

युवक ओहि बीच की करैत छल, पूछलहुँ। “चुप।” “कतय ठाढ़?” “दीयासँ दू हाथ दूर।” “फुलझरीक कात?” “कने पाछाँ।” “केहन वस्त्र?” “धोती।” “रंग?” “माटिसँ बुझाइत नहि।” युवकक नाम नहि, मुदा दूरी, वस्त्र, माटि—सभ मोन।

हरिनारायण झा फेर स्पष्ट कयलनि जे ओ कोनो मन्त्र नहि पढ़लनि। फुलझरी आ युवक एक-दोसराक हाथ पकड़ने छल कि नहि, एहि प्रश्न पर ओ पहिने “नहि” कहलनि। फेर कहलनि—“हम ध्यान नहि देलहुँ।” फेर—“स्त्रीक हाथमे लाल सूत देखलहुँ।” तीन वाक्य एक-दोसरासँ पूर्ण मेल नहि खाइत।

ओहि साँझक एक वस्तु हुनका विशेष मोन छल—पीतलक छोट थारी, जकरा भीतर चाउर, दू सुपारी, सिंदूरक डिबिया, आ एक सूखल फूल छल। पुरोहित कहैत छलाह ई विवाह-सामग्री नहि, सामान्य पूजा-सामग्री छल। हम पुछलियनि—“के अनने छल?” ओ कहलनि—“ज्ञात नहि।” “ककर हाथमे?”—“ओतय राखल छल।” “पहिने सँ?”—“हो सकैत अछि।” थारीक सभ वस्तु मोन, ओकर अननिहार नहि।

कथन एतय पहुँचि हरिनारायण झा अपन भूमिका फेर सीमित कयलनि। “हम धर्मक सीमा कहलहुँ, एतबे। ककरो पकड़बाक, रोकबाक, मारबाक, बाँधबाक आदेश हम नहि देने रही।” एहि चारि क्रियामे सँ कोनो क्रिया विषय हम तखन धरि पुछने नहि रही। ओ अपने कहलनि। हम चारू लिखलहुँ।

हम पुछलियनि—“तखन अहाँ केकरा सूचना देलहुँ?” ओ कहलनि—“घरक जेष्ठकेँ खबर करब अनुचित कोना?” ई प्रश्नक रूपमे उत्तर छल। नाम पुछलहुँ तँ पहिने नहि कहलनि। पछाति दू नाम देलनि, मुदा कहलनि—“ओ सभ केवल बुझाबय आयल छलाह।” केकरा बुझाबय? “घरक स्त्रीकेँ।” युवककेँ? “ओ हमर विषय नहि।”

एतय हुनकर स्वर बदलल। शास्त्रीय शब्द घटल, घरक शब्द बढ़ल। “राति बढ़ि रहल छल, भूकम्पक पछाति बाहर रहब सुरक्षित नहि, स्त्री घर घुरय, ई सभक हित।” हम पुछलियनि—“ओ घुरलीह?” पुरोहित उत्तर नहि देलनि। लोटासँ जल पीबि कऽ कहलनि—“एहि प्रश्नक उत्तर आन लोक देत।”

“अहाँ कखन घुरलहुँ?”—“संध्ये।” “घरक जेष्ठ कखन पहुँचलाह?”—“पछाति।” “अहाँ देखलहुँ?”—“लोक कहल।” किछु देर बाद ओ कहैत छथि—“जखन ओ सभ आयल तखन दीया आधा जरि गेल छल।” हम फेर पुछलियनि—“अहाँ तऽ संध्येमे घुरि गेल रही?” ओ कहलनि—“दीया कतेक जरल छल, ई हमरा पछाति कहल गेल।” मुदा पहिने ई बात ओ अपन आँखिक दृश्य जकाँ कहने छलाह।

फुलझरीक अन्तिम दृश्य हुनकर कथनमे स्थिर नहि। एक ठाम ओ देहरी लग बैसल। दोसर ठाम ओ आँगनक किनार ठाढ़। तेसर ठाम ओ घरक जेष्ठ लोक आबिते युवकक कात गेलीह। “कात गेलीह”क अर्थ पुछलहुँ तँ पुरोहित असन्तुष्ट भेलाह। “दू पएर चललीह, एतबा बातक अर्थ किएक चाही?” अभिलेखमे गति सेहो दिशा माँगैत अछि। ओ दिशा नहि देलनि।

हुनकर अनुसार ओहि राति विवाह नहि भेल। कारणक सूची फेर कहलनि—मन्त्र नहि, अग्नि नहि, कन्यादान नहि, मान्य पुरोहितक संस्कार नहि, पाँजिक अधिकार नहि। हम पुछलियनि—“दू वयस्क मनुष्य अपन इच्छा कहलक, संग रहबाक निर्णय कहल, एक थारी पूजा-सामग्री छल, दीया छल, साक्षी लोक छल—एहि सभकेँ अहाँ की कहब?” ओ उत्तर देलनि—“अविधि।”

“अविधि विवाह?” हम पुछलियनि।

ओ कहलनि—“केवल अविधि।”

ई दू शब्दक बीच ओ अपन जीवनक सुरक्षा बना रहल छलाह। विवाह कहिते पाँजि, कुल, वंश, सन्तान, अधिकार सभ प्रश्न उठैत। अविधि कहिते घटना व्यक्ति लोकक अनुचित कृत्य बनि जाइत। शब्द चुननाइ एतय वर्णन नहि, निर्णय छल।

हम पुछलियनि—“फुलझरी पछाति कतय गेलीह?” ओ उत्तर देलनि—“हम नहि देखलहुँ।” “युवक?”—“नहि देखलहुँ।” “घरक जेष्ठ?”—“हम घुरि गेल रही।” “तखन जे पछाति भेल, से अहाँक कथनमे नहि?”—“नहि।”

किछु क्षण पछाति ओ अपने जोड़लनि—“हमरा दोसर दिन खबर भेटल छल, मुदा सुनी-सुनायल बात साक्ष्य नहि।” हम पुछलियनि—“की खबर?” ओ कहबाक तैयार नहि भेलाह। “सुनी-सुनायल बात लिखि कऽ की करब?” हम कहलियनि—“सुनी-सुनायल कहि कऽ लिखब।” ओ कहलनि—“नहि।” एहि एक ठाम ओ अभिलेखक सीमा स्वयं चुनलनि।

हम प्रश्न बदललहुँ। “पाँजिमे फुलझरीक नाम छल?” ओ कहलनि—“स्त्रीक नाम सभ ठाम रहैत नहि।” “ओकर विवाहक पाँति?”—“जँ मान्य विवाह नहि भेल तँ कोन पाँति?” “ओ युवकक संग सम्बन्ध?”—“अधिकार नहि।” “तखन घटना पाँजिमे कोना आबत?” ओ उत्तर देलनि—“नहि आबत।”

ई उत्तर लिखिते हमरा पहिल बेर बुझायल जे अभिलेखक रिक्ति कखनो घटना नहि होयबाक प्रमाण नहि। कखनो घटना एहन होइत अछि जकरा लिखबाक कोष्ठे नहि बनाओल गेल हो। हम तखन ई निष्कर्ष पुरोहितकेँ नहि सुनौलहुँ। केवल अगिला प्रश्न पुछलहुँ—“जँ पाँजिमे स्थान नहि, तँ लोकक स्मृतिमे?”

हरिनारायण झा कहलनि—“स्मृति धर्मशास्त्र नहि।”

कथन समाप्त करैत ओ हमरा कागज देखबाक इच्छा कयलनि। हम पढ़ि सुनौलहुँ। तीन ठाम रोकलनि। पहिल—“पीयर साड़ी”क आगाँ “सम्भवतः” जोड़ू। दोसर—“लाल सूत”क आगाँ “पूजाक” जोड़ू। तेसर—“घरक जेष्ठकेँ खबर”क आगाँ “कर्तव्यवश” जोड़ू। हम पहिल दू ठाम

हुनकर सुधार पृथक लिखलहुँ; मूल शब्द नहि मेटेलहुँ। तेसरमे सेहो “हुनकर कथन: कर्तव्यवश” लिखलहुँ।

ओ पुछलनि—“अहाँ हमरा दोषी बनबैत छी?” हम कहलियनि—“हम दोषक लेखा नहि लिखि रहल छी।” ओ कहलनि—“तँ एतेक सूक्ष्म बात किएक?” हम उत्तर देलियनि—“किएक तँ मोट बात सभ लोक कहैत अछि; भेद सूक्ष्म बातमे रहैत अछि।”

हरिनारायण झा उठैत काल लाठी खोजलनि। लाठी हुनकर दहिना कात देबालसँ टेकायल छल। ओ देखलनि नहि, हाथ बढ़ा कऽ सहजहि पकड़लनि। दरबज्जा धरि पहुँचि फेर मुड़लाह। कहलनि—“एक बात लिखू—हम ओकरा घर घुरबाक लेल कहने रही।”

हम कहलियनि—“ई पहिनहिसँ लिखल अछि।”

ओ फेर कहलनि—“आ लिखू जे हम कोनो अनिष्ट चाहने नहि रही।”

हम एहि वाक्यकेँ सेहो लिखलहुँ। इच्छा घटना नहि, मुदा साक्षीक आत्म-समर्थनक अंग अछि।

दीर्घ काल पछाति जखन हम एहि कथनकेँ फेर पढ़लहुँ, पाँच विरोध पृथक चिन्हित कयलहुँ। एक—ओ पहिने घटना-स्थल पर नहि होयबाक बात कहैत छथि, पछाति देहरी, साड़ी, कलाई, पएर, थारी, दीया देखैत छथि। दुइ—युवकक नाम मोन नहि, मुदा टोल, घरक दिशा, बाबूक पेशा मोन। तीन—संध्ये घुरि गेल होयबाक कथन, मुदा पछातिक आगमनक दृश्यक विवरण। चारि—विवाह शब्द अस्वीकार, मुदा दू लोकक संग रहबाक स्पष्ट इच्छा स्वीकार। पाँच—घरक जेष्ठकेँ सूचना देब स्वीकार, मुदा तकर पछातिक काजसँ अपन सम्बन्ध पूर्ण काटि देब।

एहि पाँच विरोधमे सँ कोनो एक अपने सत्य सिद्ध नहि करैत अछि। वृद्ध स्मृति बदलि सकैत अछि। आत्म-रक्षा स्मृति बदलि सकैत अछि। हमरा प्रश्न सेहो कथनक रूप बदलि सकैत अछि। तेँ हम निर्णय नहि लिखलहुँ। केवल एतबे लिखलहुँ—“साक्षी विवाहक विधि अस्वीकार करैत छथि; उपस्थितिक सीमा अस्पष्ट; स्त्रीक स्वयं व्यक्त इच्छा स्वीकार; पछातिक घटना विषय मौन।”

फुलझरीक अपना मुँहक मूल शब्द हमरा एहि साक्षीसँ नहि भेटल। पुरोहितक स्मृतिमे ओकर एक वाक्य बचल—“पाँजिमे हमर इच्छा कतय लिखल अछि?” ई वाक्य हुनकर बनाओल सेहो भऽ

सकैत अछि। मुदा जँ बनाओल, तँ प्रश्न रहि जाइत अछि जे वृद्ध पुरोहित अपन बचावक कथा बनबैत काल फुलझरीक मुँहमे यएह प्रश्न किएक राखलनि।

हम एहि प्रश्नक उत्तर तखन नहि देलहुँ। एखनहुँ नहि दैत छी। साक्ष्यक काज उत्तर बनायब नहि, सीमा देखायब अछि।

अध्याय ११ — साक्षी दुइ: भौजी

घटना: माघ १९३४ · कथन: कमला देवी

दोसरा साक्षीक नाम कमला देवी छल। ओ फुलझरीक पैघ भौजी छलीह। हरिनारायण झा अपन कथनक आरम्भ धर्मक सीमा गना कऽ कयने छलाह; कमला देवी अपन कथनक आरम्भ रसोईघरक तीन वस्तुसँ कयलनि—माटिक पैघ हाँड़ी, पीतलक छोट थारी, आ सरिसोक तेलक आध भरल शीशी। कहलनि, “ई तीनू बात लिखू। शेष बात पछाति।” हम तीनू लिखलहुँ। तखन ओ पुछलनि—“थारीक बात पुरोहित कहलक?” हम कहलियनि—“कहने छथि।” ओ हँसलीह नहि। कहलनि—“थारी हुनकर नहि छल। हमर रसोईक छल।”

कमला देवीक स्मृति घरक काजक क्रममे चलैत छल। समय घड़ीसँ नहि, चूल्हिसँ ठहरैत। ओ कहलनि जे ओहि दिन साँझसँ पहिने दोसर बेर भात चढ़ल छल, कारण भूकम्पक पछाति घरक अनेक लोक आँगनक बाहर बनल अस्थायी छाजनमे रहैत छलाह आ भोजन दू खेपमे बनैत छल। पहिल खेप वृद्ध आ बालक लेल, दोसर शेष लोक लेल। फुलझरी पहिल खेपमे नहि खयलीह। “पेट नहि मानैत अछि” कहि थारी हटा देने छलीह। कमला देवी एहि बातकेँ बीमारी नहि मानैत छलीह। हुनकर कथनमे ई “मनक हठ” छल।

“ओ दिन भरि काज कयने छलीह?” हम पुछलियनि।

“काज छोड़ने नहि छलीह,” ओ कहलनि। “भोरमे जल अनलीह, दू बेर कपड़ा निचोड़लीह, छोटकीक केशमे तेल लगेलनि, मुदा अपन भोजन नहि कयलीह। जँ लिखब तँ सभ लिखू। एना नहि लिखू जे घर छोड़बाक विचार भेल आ दिन भरि ओ कोठलीमे बैसल रहलीह। ओ काजो कयलीह, बातो नुकौलनि।”

ई वाक्य हुनकर कटुताक पहिल स्पष्ट रूप छल। फुलझरीक विरुद्ध हुनकर मुख्य आरोप छल—"बात नुकौलनि।" कोन बात, ई पुछलाक पहिने कमला देवी साड़ी विषयक सुधार कयलनि। पुरोहितक "पीयर साड़ी" हुनका स्वीकार नहि छल। "पीयर नहि," ओ कहलनि, "उज्जर साड़ी छल, हल्दी लगल पुरान दागसँ पीयर बुझाइत होयत। ओकर किनार गेरुआ छल। हम अपने धोने रही।" हम पुछलियनि—"ओहि दिन वएह साड़ी पहिरने छलीह?" कमला देवी कहलनि—"हँ। दोसर साड़ी रस्सी पर भीजल छल।"

लाल सूत विषयक सेहो हुनकर कथन पृथक छल। फुलझरीक दहिना कलाईमे लाल सूत छल, मुदा पूजा लेल नहि। तीन दिन पहिने चूल्हिक कात माटिक घैल उठबैत कलाई छिलि गेल छल। कमला देवी लाल सूतमे कपासक छोट फाहा बान्हि देने छलीह। फाहा ओहि दिन धरि खसि गेल छल; सूत रहि गेल। "पुरोहित ओकरा व्रतक सूत बना देलक?" ओ पुछलनि। हम उत्तर नहि देलहुँ। ओ कहलनि—"जकरा घरक भीतरक बात नहि बुझाइत, ओकरा सभ सूत पूजा बुझाइत।"

बामा पएरक एड़ी पर काटल चिन्हक बात सुनि ओ फेर सुधार कयलनि। "एड़ी नहि। अँगूठाक बगलमे फाटल छल। नून-पानिमे जलैत छल, तेँ ओ पएर भरि भार नहि दऽ पबैत छलीह।" ई बात किएक मोन, पुछलहुँ। कहलनि—"हम दू दिन सरिसोक तेल आ हल्दी लगौने रही। देहक चोट जे देखभाल करैत अछि, ओकरा ठाम मोन रहैत अछि।"

कमला देवी फुलझरीसँ स्नेह करैत छलीह कि नहि, ई प्रश्न अनावश्यक लगल। हुनकर कथनमे स्नेहक वचन कम छल, देखभालक क्रिया बेसी। ओ हुनकर साड़ी धोने छलीह, कलाई बान्हने छलीह, पएरमे तेल लगौने छलीह, मुदा संगहि कहलनि—"ओ घरक मान राखलीह नहि।" दुनू बात एक संग छल।

पीतलक छोट थारी कमला देवीक अनुसार फुलझरी स्वयं रसोईसँ लेने छलीह। थारीमे चाउर, दू सुपारी, सिंदूरक डिबिया आ एक सूखल फूल—एहि चारू वस्तु पुरोहितक कथनसँ मेल खाइत छल। मुदा पाँचम वस्तु ओ जोड़लनि—एक टुकड़ी गुड़। "गुड़ लिखल अछि?" ओ पुछलनि। हम कहलियनि—"पुरोहित नहि कहलनि।" कमला देवी तखन रसोईक पेटारक ढक्कन, गुड़क भेली काटबाक चाकू, आ ओहि साँझ कटायल छोट चौकोर टुकड़ीक आकार धरि बतौलनि। "हम पूछने रही—कोना लऽ जाइ छी? ओ कहलीह—देवस्थान पर चढ़त।"

“सिंदूर?” हम पुछलियनि।

कमला देवी कने चुप रहलीह। फेर कहलनि—“ओ स्वयं लेलनि। हमरा पुछलनि नहि।”

“अहाँ रोकलहुँ?”

“नहि। सिंदूरक डिबिया देवघरक कात रहैत छल। ओ घरक स्त्री छलीह। डिबिया छूबाक लेल अनुमति किएक माँगतीह?”

ई उत्तर पुरोहितक अधिकार-विषयक कथनसँ भिन्न प्रकारक छल। घरक भीतर वस्तुक अधिकार विधिसँ कम, व्यवहारसँ चलैत छल। कमला देवी फुलझरीक निर्णयसँ असहमत छलीह, मुदा ई नहि कहलनि जे फुलझरीकेँ थारी वा सिंदूर छूबाक अधिकार नहि छल।

फुलझरी घरसँ कखन निकललीह, एहि प्रश्नक उत्तर कमला देवी घरक क्रमसँ देलनि। “दूध उतारि चुकल छल। छोटका बालकसभकेँ भात देल जा रहल छल। पश्चिमक उजास एखन छल। गोरू बन्हा गेल छल, मुदा तुलसी लग दीया नहि जरल छल।” ई चारि चिह्न लिखलाक पछाति हम पुछलियनि—“एकर अर्थ संध्या पहिने?” ओ कहलनि—“हँ, मुदा दीर्घ काल पहिने नहि।” घड़ीक समय ओ नहि बनौलनि।

ओ कहैत छलीह जे फुलझरी एकसरि दुआरसँ निकललीह। युवक घरक भीतर वा दुआर पर नहि छल। “ओकर संग निकललीह” पुरोहितक कथन पर कमला देवी स्पष्ट असहमति जनौलनि। “हम दुआर पर रही। ओ एकसरि गेलीह।” युवक कतय छल, ओ नहि देखलनि। “बादमे देवस्थान लग देखल गेल, से आन बात।”

“फुलझरी किछु कहलीह?”

“कहलीह—थारी राखि अबैत छी।”

“एतबे?”

“एतबे हमरा कहलनि।”

कमला देवी अनुमान जोड़बाक ठाम प्रायः स्वयं रुकैत छलीह। जखन हम पुछलियनि जे फुलझरी पहिनहिसँ युवकसँ भेटबाक योजना बनौने छलीह कि नहि, ओ कहलनि—“हमरा नहि ज्ञात। हम

कहि सकैत छी जे थारी लेलनि, एकसरि निकललीह, भोजन नहि कयलीह। योजना हुनकर माथमे छल, हमर आँखिमे नहि।" एहि एक वाक्यक कारण हुनकर कथन अनेक ठाम अधिक उपयोगी भेल।

युवक विषयक हुनकर जानकारी सीमित, मुदा पुरोहितसँ अधिक ठोस छल। नाम ओ उच्चरित नहि कयलनि। कहलनि—"नाम लिखला सँ ओकर घरक लोक फेर घेरल जाएत।" हम बुझौलियनि जे घटना अतिपुरान अछि। ओ उत्तर देलनि—"पुरान अपमानक उमेर नहि होइत।" तखन ओ टोलक दिशा बतौलनि—गामक मुख्य बस्ती सँ दक्षिण-पूरब, नीचाँ भूमि दिस, जतय बरखा मे पानि पहिने ठाढ़ होइत। युवकक बाबू खेतिहर मजदूरी करैत छलाह; युवक स्वयं हल चलबैत, माटि काटैत, आ कखनो नाव खेने लोककेँ पार करबैत। कमला देवी ओकर जाति-नाम नहि कहलनि। "अहाँ बुझि गेलहुँ," एतबे कहलनि।

हम कहलियनि—"बुझब लिखित प्रमाण नहि।"

ओ उत्तर देलनि—"तँ नहि लिखू। जे हम कहलहुँ से लिखू।"

देवस्थान पर की भेल, कमला देवी प्रत्यक्ष नहि देखलनि। एहि ठाम ओ हरिनारायण झाक कथनक विरोध करबाक लोभमे सेहो सीमा नहि लाँघलनि। "हम ओतय नहि रही," ओ कहलनि। "ओतय की मन्त्र पढ़ल, की नहि पढ़ल, हाथ पकड़लक कि नहि, ई हमरा मुँहसँ नहि लिखू।" मुदा घरमे की भेल, ओ विस्तारसँ कहलनि।

फुलझरी घुरलीह। ई हुनकर कथनक पहिल एहन तथ्य छल जे पुरोहित टारि देने छलाह। कमला देवी कहैत छलीह जे तुलसी लग दीया जरि चुकल छल, दोसर खेपक भात उतारल जा चुकल छल, आ बालकसभ सुतबाक तैयारीमे छल। फुलझरी दुआर पर आयलीह। साड़ी किनारमे कादो छल, बामा पएरमे धूर-माटि चिपकल, थारी हाथमे नहि छल। लाल सूत कलाईमे छल। बाल खुजल नहि, जकाँ गेलीह तकाँ घुरलीह। कमला देवीक ई विवरणमे कोनो नाटकीय परिवर्तन नहि छल।

"एकसरि?" हम पुछलियनि।

"दुआर धरि एकसरि।"

“युवक?”

“बाँसक बेड़ा पाछाँ छाया देखलहुँ। मनुष्य छल। ओ छल कि आन, हम नहि कहब।”

फुलझरी भीतर प्रवेश कयलीह कि नहि, एहि पर कमला देवी अत्यन्त सूक्ष्म भेद कयलनि। “दुआर लाँघलीह, मुदा भीतरक कोठलीमे नहि गेलीह। ओसार पर ठाढ़ रहलीह।” हुनका अनुसार ओतय घरक दू वृद्ध पुरुष पहिनहिसँ बैसल छलाह। पुरोहितक “हम खबर देलहुँ” वाक्य पर कमला देवी कहलनि—“खबर पुरोहितसँ पहिने घर पहुँचल छल।” के अनने छल? “छोटका हरवाह बालक।” नाम? ओ नाम देलनि; हम लिखलहुँ। बालकक कथन एहि अध्यायमे उपयोगी नहि, कारण हम ओकरा स्वयं नहि पुछि सकल रही।

कमला देवीक अनुसार हरिनारायण झा सेहो पछाति घरक दुआर धरि आएल छलाह। “भीतर नहि, दुआर धरि।” ई बात पुरोहितक अपन कथनसँ आंशिक मेल खाइत, आंशिक टकराइत छल। ओ कहने छलाह जे घरक जेष्ठकेँ खबर कयलनि; कमला देवीक कथनमे घरक जेष्ठ पहिनहिसँ जानैत छलाह, आ पुरोहित स्वयं पछाति दुआर धरि पहुँचलाह।

ओसार पर फुलझरी की कहलीह, कमला देवी तीन वाक्य मोन राखैत छलीह। पहिल—“हम ओकर संग रहब।” दोसर—“हमरा रोकि कऽ की करब?” तेसर—“जे लिखल नहि अछि, से असत्य नहि होइत।” तेसर वाक्य हमरा सुनिते हम रोकलहुँ। पुछलियनि—“शब्द यएह छल?” कमला देवी कहलनि—“पहिल दुइ वाक्य पर हमरा पूर्ण विश्वास अछि। तेसरक भाव यएह छल; शब्द बदलि सकैत अछि।” हम तेसर वाक्यक आगाँ लिखलहुँ—“भाव-स्मृति; मूल शब्द अनिश्चित।”

ई भेद हुनका बिना कहने सेहो हम करितहुँ; मुदा ओ स्वयं कयलनि।

घरक पुरुष लोक की कहलनि, एहि विषय ओ कम स्पष्ट छलीह। एक वाक्य हुनका मोन छल—“पहिने पाँजि देखल जाएत।” दोसर—“राति बाहर नहि जायत।” के कहलनि, ओ निश्चित नहि। एक वृद्धक हाथमे बाँसक छड़ी छल। छड़ी नित्य उपयोगक छल; कमला देवी विशेष अर्थ नहि देलनि। “छड़ी देखि कऽ कथा नहि बनाउ,” ओ हमरा कहलनि। “बुढ़बा बिना छड़ी चलैत नहि छल।”

फुलझरी पर हाथ उठल कि नहि, हम पुछलियनि। कमला देवी उत्तर देबाक पहिने हमरा दीर्घ समय देखलनि। फेर कहलनि—“हम ओसार पर तखन धरि रही जखन बात ऊँच भेल। तकर पछाति बालकसभकेँ पछिला कोठलीमे लऽ गेलहुँ। हम जे नहि देखलहुँ से नहि कहब।”

“ध्वनि?”

“बोलक ध्वनि। एक बेर पीतलक कोनो वस्तु खसल। रोदनक ध्वनि हमरा मोन नहि।”

“पुरुषक?”

“बोलक ध्वनि अनेक छल। केकर वाक्य कोन, एखन जोड़ब असत्य होयत।”

एहि उत्तरक पछाति ओ अनेक घरक बात बतबय लगलीह। छोट बालिका पानि माँगने छल। चूल्हिक राखि बुझा देल गेल। दोसर खेपक भातमे सँ आध बचल। फुलझरीक थारी पृथक नहि परसल गेल, कारण ओ खेबाक लेल बैसलीह नहि। ओकर बिछाओन ओहि राति खोलल नहि गेल। तकिया जकाँ राखल छल, तहिना रहल। लकड़ीक कंघी, दूटा साड़ी, लोहेक छोट सन्दूक, एक जोड़ी काँसक चूड़ी, सूत कातबाक तकली—सभ कोठलीमे रहल। “जँ ओ घर छोड़ि परदेस जायत, तँ किछु लैत,” कमला देवी कहलनि। “मुदा ई हमर अनुमान अछि। वस्तु रहल—ई तथ्य।”

हम अनुमान आ तथ्य पृथक लिखलहुँ।

रातिक पछिला पहर विषय कमला देवीक कथन छोट भेल। “हम बालकसभक संग भीतर रही। दुआर कखन खोलल, कखन बन्द, सभ नहि देखलहुँ। एक बेर बाहर गेलहुँ तँ ओसार खाली छल। वृद्ध लोक नहि। फुलझरी नहि। पुरोहित नहि। दीया बुझल छल।”

“युवक?”

“नहि देखलहुँ।”

“फुलझरी कतय गेलीह?”

“नहि देखलहुँ।”

“के संग?”

“नहि देखलहुँ।”

तीन उत्तर एकहि रूपक छल। एतय ओ अनुमानो नहि जोड़लनि।

भोरमे पहिल काज कमला देवी आँगन बुहारब कहलनि। भूकम्पक पछाति भूमि समतल नहि छल; माटि चिरायल, ईंटक टुकड़ी, धूर। ओ कहैत छलीह जे दुआरक बाहर दू प्रकारक पएर-चिन्ह देखल, मुदा राति भरि अनेक लोक आयल-गेल, तेँ चिन्हक अर्थ निकालब सम्भव नहि। “पएर-चिन्ह लिखब तँ संग लिखू—ककर, नहि ज्ञात।” हम तहिना लिखलहुँ।

पीतलक छोट थारी भोर धरि घर नहि घुरल छल। सिंदूरक डिबिया सेहो नहि। गुड़क टुकड़ी स्वभावतः नहि। मुदा देवघरमे दोसर डिबिया छल; घरक दैनन्दिन काज रुकल नहि। कमला देवी एहि अनुपस्थित वस्तुसभक सूची स्वयं देलनि। “थारी पछाति भेटल?” हम पुछलियनि। ओ कहलनि—“किछु दिन पछाति देवस्थानक पछिला भागमे। कादोसँ भरल। हम धो कऽ फेर उपयोग कयलहुँ।” एहि उत्तरमे हुनका कोनो पवित्र भय नहि छल। वस्तु घरक छल; धोएल गेल; फेर काजमे आयल।

फुलझरी फेर घरमे देखल गेलीह कि नहि, एहि प्रश्न पर कमला देवीक उत्तर छल—“हम नहि देखलहुँ।” हम पुछलियनि—“कियो कहलक?” ओ कहलनि—“अनेक बात कहल गेल। सुनी-सुनायल सभ लिखब तँ कागज भरत, सत्य नहि।” ई वाक्य हरिनारायण झाक सुनी-सुनायल बात अस्वीकार करबाक वाक्य जकाँ सुनाइत छल, मुदा भेद छल। पुरोहित ओहि ठाम खबरक विषय सेहो नहि कहलनि। कमला देवी खबरक प्रकार गना देलनि—कियो कहलक फुलझरी युवक संग भागि गेलीह; कियो कहलक नैहर दिस गेलीह; कियो कहलक नदी पार; कियो कहलक घरक लोक आन ठाम पठा देलक। “हम कोनो बात देखल नहि,” ओ कहलनि। “तेँ कोनो एककेँ अपन नहि मानैत छी।”

तथापि फुलझरी प्रति हुनकर कटुता घटल नहि। कहलनि—“एक स्त्री अपन बात कहि सकैत अछि। मुदा घरमे सभक जीवन रहैत अछि। ओ जे कयलीह, तकर लज्जा सभ पर पड़ल।” हम पुछलियनि—“लज्जा कोन काजक—ओकर अपन इच्छा कहबाक, कि जाति-पार मनुष्य संग रहबाक?” कमला देवी उत्तर देलनि—“दुनू पृथक कोना?”

ई उत्तर हुनकर सामाजिक सीमा स्पष्ट करैत छल। तथ्यक विश्वसनीयता आ नैतिक दृष्टिक संकीर्णता एक-दोसराकेँ रद्द नहि करैत। साक्षी घटनाक सूक्ष्म क्रम यथार्थ कहि सकैत अछि आ तकर अर्थ विषय पूर्वाग्रहित भऽ सकैत अछि।

हम हुनका पुरोहितक पाँच सीमा पढ़ि सुनौलहुँ—मन्त्र नहि, अग्नि नहि, कन्यादान नहि, पाँजि नहि, कर्म नहि। कमला देवी सुनि कऽ कहलनि—“दीया छल, थारी छल, सिंदूर ओ स्वयं लेलनि, संग रहबाक बात ओ स्वयं कहलीह। एकरा विवाह कहब कि नहि, ई अहाँ सभ पोथीवला लोक जानू। हमरा लेल बात ई अछि जे ओ अपन मनक बात घरक सोझाँ कहि देलनि।”

“अहाँ हुनका रोकलहुँ?”

कमला देवी दीर्घ समय चुप रहलीह। फेर कहलनि—“हम कहने रही—एखन नहि जा, भोर धरि रुकू। ओ कहलनि—भोर धरि रुकलहुँ तँ फेर कखनो नहि जा सकब।”

ई वाक्य हुनकर सम्पूर्ण कथनमे एकमात्र ठाम छल जतय स्वर नरम भेल। हम पुछलियनि—“शब्द यएह?” ओ कहलनि—“ई शब्द हमरा मोन अछि।”

“अहाँ किएक चाहैत छलीह जे भोर धरि रुकथि?”

“राति छल। घरक पुरुष क्रोधमे छलाह। भूकम्पक पछाति सभक माथ गरम छल। हम चाहैत रही जे राति बीति जाय।”

“अहाँ अनिष्टक आशंका बुझैत छलीह?”

कमला देवी तत्काल उत्तर नहि देलनि। कहलनि—“क्रोधसँ अनिष्ट भऽ सकैत अछि कि नहि, ई लिखबाक लेल हमरा शास्त्र नहि चाही।”

हम ई वाक्य जकाँ-तकराँ लिखलहुँ।

फेर पुछलियनि—“अहाँ ककरो कहलहुँ जे ओकरा एकसरि नहि छोड़ू?”

ओ कहलनि—“छोटकी देबरानीकेँ कहलहुँ। मुदा ओकरा बालक ज्वरमे छल। ओ कतेक देखितथि?”

“पुरुष लोककेँ?”

“क्रोधमे रहनिहारकेँ क्रोध नहि करू कहला सँ क्रोध रुकैत अछि?”

एहि प्रश्नक उत्तर हम नहि देलहुँ।

कथन समाप्त होयबाक कात कमला देवी तीन वस्तु फेर गनौलनि—माटिक हाँड़ी, पीतलक थारी, तेलक शीशी। पुछलियनि—“हाँड़ी किएक?” ओ कहलनि—“भात आध बचल छल। जँ घरमे ओ राति सामान्य रहित, भात एतेक नहि बचित। सभक पेट बन्द छल।” तेलक शीशी? “फुलझरीक पएरमे लगबैत रही। ओहि राति नहि लगल। भोरमे शीशी जतय छल तहिना।” थारी? “ओ संग लऽ गेलीह, पछाति देवस्थान पाछाँ भेटल।”

तखन बुझायल जे कमला देवी घटना केँ भावक शब्दमे नहि, अधूरा काजमे मोन राखने छलीह—नहि खायल भात, नहि लगायल तेल, नहि खोलल बिछाओन, घर नहि घुरल थारी। हुनकर कटुता एहि सूक्ष्म विवरणकेँ नष्ट नहि कयने छल; कखनो-कखनो ओकरे कारण ओ सभ बात मोन राखने छलीह जे दोसर लोक बिसरि गेल।

कथनक अन्तमे हम पुछलियनि—“जँ अहाँ फुलझरीसँ एतेक असहमत छलीह, तँ ओकर बात एतेक सावधानीसँ किएक कहैत छी?”

कमला देवी उत्तर देलनि—“असहमति सँ देखल बात बदलि जाइत अछि?”

हम कहलियनि—“लोक बदलि दैत अछि।”

ओ कहलनि—“तँ अहाँ नहि बदलू।”

हम ओहि दिनक लिखित विवरणक अन्तमे चारि पाँति लिखलहुँ—“साक्षी घरक भीतर उपस्थित। घरेलू क्रम आ वस्तु-विवरण अत्यन्त सूक्ष्म। फुलझरीक निर्णय प्रति स्पष्ट विरोध। प्रत्यक्ष देखल, सुनल आ अनुमानित बातमे प्रायः भेद करैत छथि। फुलझरी संध्याक पछाति घर घुरलीह; ओसार पर अपन इच्छा फेर व्यक्त कयलीह; रातिक पछिला भागमे साक्षी हुनका फेर नहि देखलनि।”

एहि चारि पाँतिक बाहर एक बात पृथक लिखलहुँ—“भोर धरि रुकू।” एक स्त्री दोसर स्त्रीकेँ ई सलाह किएक देलक, तकर उत्तर घटना नहि दैत। मुदा एहि सलाहसँ एतबा स्पष्ट छल जे कमला

देवी ओहि राति घरक पुरुषसभक क्रोधकेँ साधारण नहि मानैत छलीह। एहि स्थितिक कोनो पृथक लिखित प्रमाण हमरा लग नहि छल। वाक्य प्रत्यक्ष स्मृति छल। तेँ वाक्य बचा कऽ राखलहुँ।

अध्याय १२ — कोसी — २

हम एखन बहैत छी आ धरती एखनहुँ हमरा नीचाँ स्थिर नहि अछि लोक देबाल ठाढ़ देखि ओकरा स्थिर मानैत अछि आ पोखरिक पानि चुप देखि ओकरा थिर मानैत अछि मुदा माटिक भीतर महीन रेखा चलैत रहैत अछि बालूक तह एक दोसर पर सरकैत अछि पुरान धारक पेटमे भीजल माटि साँस लैत अछि आ जखन धरती हिलैत अछि तखन जे किछु ऊपर अछि से अपन नाम छोड़ि देहक भार बनि जाइत अछि भीत भीत नहि रहैत अछि ओ माटि आ खपड़ाक ढेर बनैत अछि कूपक घेरा गोल नहि रहैत अछि ओ एक दिस झुकैत अछि तुलसीक चौरा फाटैत अछि गोहालक बाँस खसैत अछि धानक मड़ाइ लेल राखल खूँटा थरथराइत अछि पानि अपन पात्रक सीमा लाँघैत अछि आ लोक बाहर दौड़ैत अछि तखन ककरो स्मृतिमे पहिने घण्टी बाजैत अछि ककरो स्मृतिमे पहिने भीत खसैत अछि ककरो स्मृतिमे पोखरि उफनैत अछि ककरो स्मृतिमे धरतीक आवाज पहिने अबैत अछि आ ककरो स्मृतिमे कोनो आवाज नहि रहैत अछि केवल पयरक नीचाँ भूमि चलैत अछि हम एहि कथनसभक बीच बहैत छी आ हमरा लेल पहिने आ पछाति ओतेक स्पष्ट विभाजन नहि अछि जतेक लोक चाहैत अछि किएक तँ जे कम्पन एक घरमे खपरैल खसाबैत अछि से दोसर ठाम कूपक पानि मटमैला करैत अछि तेसर ठाम माटिक भीतर एहन चीरा खोलैत अछि जाहिमे बरखा उतरैत अछि आ ओहि बरखाक पानि पछाति हमरा कातक ढलान बदलैत अछि जखन बुजुर्ग लोक एक घटना बेराबेरी कहैत छथि तखन हुनकर शब्द बदलैत अछि मुदा हुनकर हाथक गति बहुधा ओहि दिस जाइत अछि जतय हुनकर स्मृतिमे कोनो देबाल खसैत अछि वा कोनो देह दबाइत अछि वा कोनो बाट बन्द होइत अछि शब्द अपन क्रम बदलैत अछि देहक स्मृति अपन दिशा नहि बिसरैत अछि हम लोकक देहक स्मृति पढ़ि नहि सकैत छी मुदा माटिक दिशा पढ़ैत छी कछेरक कटान पढ़ैत छी बालूक रंग पढ़ैत छी गाछक जरिक उघड़नाइ पढ़ैत छी नव फाटल धरतीमे भरैत जल पढ़ैत छी आ जे ठाम जे धरतीकेँ लोक सूखल कहैत अछि ओतय आइ भीतरी नमी ऊपर चढ़ैत देखि बुझैत छी जे नीचाँ कोनो पुरान पानि एखनहुँ चलैत अछि लोक हमरा कहैत अछि जे भूकम्प नदीक बाट बदलैत अछि आ ई कथन आधा अछि किएक तँ बाट केवल एक दिनमे नहि बदलैत अछि धरतीक ढलान कनी सरकैत अछि कतहु बालू धँसैत अछि कतहु पुरान नाला खोलाइत अछि कतहु पोखरि फाटि कऽ खेतमे जाइत अछि कतहु खेतक मेड़ नव जलक बाट बनैत अछि फेर अगिला बरखा ओहि कमजोर रेखा केँ पैघ करैत अछि आ हम ओतय पहुँचैत छी जतय पहिने केवल महीन भीजल चिन्ह देखाइत अछि गाम एहि परिवर्तन केँ एक तिथि दैत अछि मुदा माटि अनेक तिथि राखैत अछि गाम कहैत अछि ओहि दिन धरती हिलैत अछि माटि कहैत अछि ओहि दिन एक रेखा खुलैत अछि दोसर दिन ओहि रेखामे जल भरैत अछि तेसर दिन किनार नरम होइत अछि बरखाक मासमे ओहि ठाम नव धारक बीआ पड़ैत अछि आ किछु बरखाक पछाति लोक बुझलक जे पुरान नक्शा आब गामक धरती सँ मेल नहि खाइत अछि नक्शा तखनहुँ सीधा रेखा रखैत अछि नाम तखनहुँ अपन कोष्ठमे रहैत अछि

पँजी तखनहुँ वंशक क्रम रखैत अछि मुदा धरती ओहि सभसँ पृथक अपन लेख बनबैत अछि हम ओहि लेख पर बहैत छी आ कखनो ओकर किछु अंश मेटा दैत छी कखनो बालू सँ ढाकि दैत छी कखनो कटानसँ पुरान तह खोलि दैत छी आ तखन लोकक हाथमे एहन वस्तु अबैत अछि जकर विषयमे कोनो जीवित मनुष्य निश्चित नहि अछि ई ईंट केकर आँगनक अछि ई काँसाक टुकड़ी केकर थारीक अछि ई हड्डी पशुक अछि कि मनुष्यक ई लाल सूत विवाहक अछि कि पूजा कयल काजक ई प्रश्न हमरा लग नहि टिकैत अछि मुदा मनुष्यक बीच टिकैत अछि आ प्रश्न जतेक पुरान होइत अछि ओकर चारूकात कथा ओतेक बढ़ैत अछि कियो अपन कुल बचबैत अछि कियो अपन घरक मान बचबैत अछि कियो अपन देहक डर लुकबैत अछि कियो दोसरक जाति कहि बात रोकैत अछि कियो अपन उपस्थितिकेँ अस्वीकार करैत अछि कियो कहैत अछि जे ओकर आँखिक सोझाँ सभ किछु घटैत अछि आ कियो एहन काजक नामो नहि लैत अछि जकर चिन्ह ओकर कथनक बीच रिक्त रहैत अछि हम रिक्ति बुझैत छी किएक तँ धारमे सेहो रिक्ति होइत अछि जतय जल ऊपरसँ शान्त देखाइत अछि मुदा नीचाँ घूमैत भँवर माटि काटैत अछि ओहि ठाम सतहक चुप्पी तलक काजक प्रमाण नहि मेटबैत अछि लोकक कथनमे सेहो चुप्पी कखनो रिक्त ठाम नहि होइत अछि ओकर कात समयक क्रम बदलैत अछि वस्तुक क्रम बदलैत अछि के पहिने अबैत अछि के पछाति जाइत अछि के ककरा बजबैत अछि के कोन दुआर सँ निकलैत अछि एहि सभमे कनी कनी अन्तर जमा होइत अछि आ जखन बेसी वर्षक पछाति कियो सभ कथन एक कात राखैत अछि तखन समान बातसँ बेसी असमान बात बोलैत अछि हमरा जलमे दुइटा धार मिलैत अछि तखन मिलल जलकेँ फेर पृथक नहि कयल जा सकैत अछि मुदा कथन मिलैत अछि तखन ओकर पृथक पृथक रंग बचल रहैत अछि पुरोहित अपन शास्त्रक भाषा राखैत छथि भौजी चूल्हि आ थारीक क्रम राखैत छथि गामक बुजुर्ग अपन डरक ध्वनि राखैत छथि आ जे लोक खेतक माटि जोतैत अछि से पयरक नीचाँक कठोरता आ नरमी स्मृतिमे रखैत अछि हम ओहि खेतक कात बहैत छी जतय हलक फाल धरतीमे पुरान तह काटैत अछि हम ओहि टीलाक नीचाँ भीजल बालू रखैत छी जकर नाम नक्शामे छोट अछि मुदा लोकक पयर लेल ऊँच जगह अछि हम देखैत नहि छी जकाँ मनुष्य देखैत अछि मुदा जे हमरा छूइत अछि से हमर चलन बदलैत अछि आ जे धरती केँ छूइत अछि से धरतीक आकार बदलैत अछि एहि लेल कियो जे कहैत अछि आ कियो जे नहि कहैत अछि दुनू बातक कात माटि अपन चिन्ह रखैत अछि हम नाम नहि चुनैत छी हम दोष नहि बाँटैत छी हम न्याय नहि करैत छी हम केवल बहैत छी आ बहैत काल पुरान किनारक एक टुकड़ी काटि नव बालू पर राखि दैत छी जतय काल्हि कियो हल चलाओत आ फालक सोझाँ एहन वस्तु आबि सकैत अछि जकरा देखि लोक फेर अपन पुरान कथासभ खोलैत अछि आ ओहि कथासभक बीच एकटा आवाज एहन रहैत अछि जे शास्त्रक नहि घरक नहि कार्यालयक नहि बल्कि खेत जोतैत हाथक होयत आ ओ हाथ जे देखैत अछि से कहबाक पहिने अनेक बेर अपन हथेली माटिसँ झाड़ैत अछि

अध्याय १३ — साक्षी तीन: हरवाह

बुधन सदा सँ ई कथन हम १९६१क जेठमे लिखलहुँ। ओहि समय हम पचीस वर्षक रही आ पँजीक काजमे अपन पिताक संग गाम-गाम जाइत रही। बुधन सदा उमेरक निश्चित गणना नहि बतौलनि। कहलनि—“भूकम्प होइत हम जवान रही, एतेक लिखू।” हुनकर दहिना हथेलीक बीच पुरान घट्ठा छल, बामा हाथक तर्जनी आध मोड़ल रहैत छल। हलक मूठ पकड़ैत-पकड़ैत जे देहक आकार बनैत अछि, से उमेर गनबाक कागजसँ बेसी स्पष्ट छल।

ओ हमरा घरक ओसार पर बैसबाक बदला दक्षिणक बँसबिट्टीक कात बैसब कहलनि। कारण पुछलहुँ तँ कहलनि—“घरक भीत कान रखैत छै।” हम लिखलहुँ नहि। ओ स्वयं कहलनि—“ई वाक्य लिखू नहि, बात बुझू।” हम तखन पहिल बेर बुझलहुँ जे किछु साक्षी अपन शब्दसँ पहिले ठाम चुनैत अछि।

बुधन सदा हमर कागज देखलनि। पुछलनि—“नाम लिखब?” हम कहलियनि—“अहाँक?” ओ कहलनि—“हमर तऽ लिखू। जेकर बात अछि ओकर नाम लिखब?” हम उत्तर देलहुँ—“जँ अहाँ कहब।” ओ किछु देर धरि माटि कुरेदैत रहलाह। फेर कहलनि—“तखन पहिने हमर काज लिखू। हम हल चलबैत रही। खेत मालिकक छल, बैल मालिकक छल, घाम हमर छल।”

हुनकर कथनक भाषा हरिनारायण झा वा कमला देवीक भाषा जकाँ नहि छल। ओ वंश, अधिकार, विधि, कुल, मान—एहि शब्दसभक बदला बाट, खेत, बैल, माटि, पएर आ रातिक बात करैत छलाह। हम प्रश्न पँजीक ढंगसँ पुछैत रही; ओ उत्तर खेतक ढंगसँ दैत छलाह।

ओहि तीन सप्ताहक पहिल बात हुनका धरतीक चिरा मोन छल। भूकम्पक पछाति दक्षिण-पूरबक खेतमे एक लम्बा चिरा पड़ल छल, जाहिमे पहिल दिन सुख्खा धूर देखाइत छल, दोसर दिन भीतरसँ नमी चमकल, तेसर दिन दू ठाम पानि भरि गेल। बुधन सदा कहलनि—“हमरा सभ बुझायल धरतीक पेट फाटल।” हम पुछलियनि—“कतेक लम्बा?” ओ बाँसक दू खण्डक दूरी देखौलनि। माप नहि छल; दिशा स्पष्ट छल।

ओहि चिराक पार मुसहर टोल छल। पुरोहित टोलक नाम नहि लेने छलाह। कमला देवी दिशा कहने छलीह। बुधन सदा नाम कहलनि। “हमरा सभक टोल। कागजमे की नाम छल, हम नहि

जानैत रही। लोक मुसहर टोल कहैत।” ओ एहि शब्दमे लज्जा वा विनोदक स्वर नहि देलनि। ई केवल ठामक नाम छल, जेना उत्तरक पोखरि वा पश्चिमक बधार।

हम पुछलियनि—“ओ युवक ओहि टोलक छल?” बुधन सदा हमरा देखलनि। “युवक कहि कऽ किएक लिखब? नाम छल ओकर।” दीर्घ समय पछाति ओ कहलनि—“जगेसर सदा।” हम नाम फेर पुछलहुँ। “जगेसर। ओकर बाबू दलित सदा। हमर काका लगक घर। हमसँ सात-आठ बरिस छोट।” एतय पहिल बेर हमरा कागज पर ओ नाम आयल जे पुरोहित भूलि गेल छलाह आ कमला देवी जानि कऽ नहि कहने छलीह।

जगेसरक काज? “हल, माटि, नाव—जतय काज भेटय। बरखा मे नाव बेसी, जाड़मे हल।” कमला देवीक कथनसँ ई मेल खाइत छल। बुधन सदा जोड़लनि—“ओ अक्षर कने पढ़ैत छल। मेलामे कागज पढ़निहार लोकक पाछाँ ठाढ़ रहैत। अपन नाम लिखि सकैत छल।” ई बात आन कोनो साक्षी नहि कहने छल। हम ओकर प्रमाण पुछलहुँ। बुधन सदा कहलनि—“हम देखने रही। माटि पर लकड़ीसँ लिखैत छल।”

फुलझरीक नाम पर ओ चुप भेलाह। हम प्रश्न नहि दोहरौलहुँ। दीर्घ समय पछाति ओ कहलनि—“ओकर नाम अहाँ सभक घरमे धीरे कहल जाइत छल। हमरा सभक टोलमे खुलि कऽ।” किएक? “ओ हमरा सभकेँ मनुष्य जकाँ बात करैत छलि।” हम ई वाक्य जकाँ-तकराँ लिखलहुँ। बुधन सदा कागज देखलनि, मुदा अक्षर पढ़लनि नहि।

फुलझरी आ जगेसरक भेट कखनसँ होइत छल, ई हुनका निश्चित नहि छल। “हम खेतमे देखने रही। तीन बेर, चारि बेर—गणना नहि। कखनो ओ पानि देलक, कखनो बात भेल।” हम पुछलियनि—“एकान्तमे?” ओ कहलनि—“खेतमे एकान्त कोना? आकाश रहैत, बैल रहैत, बाट चलनिहार रहैत।” हुनकर उत्तरमे न तिरस्कार छल, न बचाव।

ओ कहैत छलाह जे भूकम्पक पछाति अनेक घर बाहर छाजन बनौने छल। गामक पुरान सीमा ढीली भेल। लोक एक-दोसराक आँगन, खेत, पोखरि, छाजनमे बेसी अबैत-जाइत छल। “धरती सभक भीत खसा देलक, मुदा लोक फेर मनक भीत ठाढ़ करय लगल।” ई वाक्य हुनकर छल। हम पूछलहुँ—“ककर मनक भीत?” ओ कहलनि—“जातिक।”

ओहि साँझ, जकर बात पुरोहित आ कमला देवी कहने छलाह, बुधन सदा मुसहर टोलमे नहि छलाह। ओ मालिकक बैल घुरबय बधार गेल छलाह। सूर्य नीचाँ जा रहल छल। घुरैत काल देवस्थानक पाछाँ जगेसर भेटल। “ओ एकसरि छल?”—“पहिने एकसरि। पछाति फुलझरी आयल।” “थारी?”—“हाथमे छल।” “साड़ी?”—“उज्जर, किनार रंगीन। हम रंग नहि कहब।” ई कमला देवीक कथनक अधिक निकट छल।

बुधन सदा ओहि ठाम ठाढ़ रहलाह कि चलि गेलाह? “हम बैल लऽ जाइत रही। ठाढ़ किएक रहितहुँ? दुनू हमरा देखि चुप भेल। जगेसर कहलक—काका, ककरो नहि कहब। हम कहलहुँ—हमरा तोहर बातसँ की? मुदा मुँह कहलक एक बात, मोन दोसर बुझलक।”

“मोन की बुझलक?”

“ई खेल नहि छल।”

हम ई शब्द लिखलहुँ। ओ फेर कहलनि—“ओ दुनू खेल नहि करैत छल। संग रहबाक ठानि लेने छल।”

“विवाह?”

बुधन सदा हमरा दिस सीधा देखलनि। “अहाँ पोथीवला लोक विवाहक नाम राखू। हमरा सभक टोलमे जँ दू मनुष्य सभक सोझाँ कहय जे संग रहब आ एक-दोसराक दायित्व लेय, लोक ओकरा घर बसौनाइ कहैत। पुरोहित आयत कि नहि, से दोसर बात।”

हम पुछलियनि—“ओहि साँझ कोनो विधि देखलहुँ?” ओ कहलनि—“नहि। हम देवस्थान पाछाँ ठाढ़ नहि रहलहुँ। हम बैल लऽ कऽ चलि गेलहुँ।” “दीया?”—“दूरसँ उजास छल।” “सिंदूर?”—“नहि देखलहुँ।” “हाथ पकड़ल?”—“नहि देखलहुँ।” ओ जे नहि देखलनि, ओकरा नहि जोड़लनि।

राति अन्हार खसलाक पछाति बुधन सदा कैँ एक बालक बजबय आयल। बालकक नाम ओ कहलनि। वएह नाम कमला देवीक कथनमे “छोटका हरवाह बालक”क रूपमे आयल छल। बालक कहलक जे मुख्य बस्तीमे झगड़ा बढ़ि रहल अछि आ जगेसरक घरक लोककेँ खबर चाही।

बुधन सदा पुछलनि—“जगेसर कतय?” बालक कहलक—“ओतय।” “फुलझरी?”—बालक उत्तर नहि देलक।

बुधन सदा मुसहर टोलक दू पुरुष संग चललाह। ठाम पुछलहुँ तँ ओ पहिने “देवस्थानक कात” कहलनि। फेर सुधारलनि—“देवस्थान नहि, ओकरा सँ उत्तर दिस पुरान आमक गाछ लग।” हम दिशा लिखलहुँ। ओहि ठाम की देखलनि, एहि प्रश्न पर हुनकर कथन पहिल बेर टूटल। ओ दू बेर पानी पीलनि। तखन कहलनि—“जे देखलहुँ, सभ नहि कहब।”

हम कहलियनि—“जे नहि कहब, से हम लिखब नहि।”

ओ कहलनि—“मुदा जे बात सभ उल्टा कहैत अछि, ओकरा सीधा लिखू।”

“कोन बात?”

“भागल नहि छल।”

“के?”

“दुनूमे सँ कियो भागल नहि छल।”

एहि उत्तरक पछाति हम प्रश्न रोकलहुँ। ओ स्वयं आगाँ कहलनि—“गाममे भोरसँ बात फैलल जे फुलझरी जगेसर संग भागि गेलि। फेर कोनो कहलक जगेसर नेपाल दिस चलि गेल। ई दुनू बात एक संग कोना? जँ दुनू संग भागल, एकटा कथा। जँ एकटा नेपाल, दोसर कतय? मुदा लोक प्रश्न नहि पुछलक।”

हम पुछलियनि—“अहाँ की देखलहुँ जे भागल नहि कहलहुँ?”

बुधन सदा दहिना हथेलीक घट्ठा घसलनि। “हम रक्त देखलहुँ।”

“ककर?”

ओ उत्तर नहि देलनि।

“देह?”

ओ कहलनि—“एकटा देह भूमि पर छल। दोसर मनुष्य ओतय नहि छल।”

“के छल?”

ओ फेर चुप। पछाति कहलनि—“नाम एखन नहि लिखब।”

हम आपत्ति कयलहुँ—“नाम बिना अभिलेख अधूरा रहत।”

बुधन सदा कहलनि—“अधूरा रहय दिअ। अधूरा बात जिउत रहैत अछि। नाम लिखलहुँ तँ किछु लोक फेर नामपर मार करत।”

ई १९६१क वाक्य छल। घटना कैं सत्ताइस वर्ष बीति चुकल छल। भय तखनहुँ वर्तमान छल। हम ओकरा सम्मान देलहुँ। कागज पर “एक देह” लिखलहुँ, नाम रिक्त छोड़लहुँ।

“जीवित छल?”

बुधन सदा कहलनि—“जखन हम पहुँचलहुँ तखन बोलैत नहि छल। साँस हमरा नहि बुझायल। हम वैद्य नहि रही।”

“घाव?”

ओ कहलनि—“माथक कात रक्त छल। एतबे।”

“हथियार?”

“नहि देखलहुँ।”

“लोक?”

“किछु पएरक चिन्ह छल। माटि नरम छल। चिन्ह देखलासँ मनुष्यक नाम नहि निकलैत।”

हुनकर एहि वाक्यक पछाति हम बुझलहुँ जे ओ जानि कऽ साक्ष्यक सीमा खींचि रहल छथि। ओ हत्या देखलनि नहि। ओ मारनिहार नहि देखलनि। ओ केवल पछातिक ठाम देखलनि। मुदा गामक “भागि गेल” कथनक विरुद्ध हुनका लग एक देहक स्मृति छल।

हम पुछलियनि—“तखन अहाँ ‘हत्या’ शब्द किएक कहैत छी?”

बुधन सदा अत्यन्त धीरे उत्तर देलनि—“किएक तँ साँझमे जे मनुष्य अपन पएर पर छल, रातिमे ओकर देह रक्तमे छल, आ भोरमे गाम कहलक ओ भागि गेल। ई भागब नहि। ई हत्या छल।”

ई शब्द चारू साक्षीमे केवल ओ कहलनि—हत्या। मुदा ओ के मारल गेल, के मारलक, कोन वस्तुसँ मारलक, एहि तीन प्रश्नक उत्तर नहि देलनि। हम ओहि समय जोर नहि देलहुँ। एखन बुझैत छी, ओ शब्दक साहस आ नामक भय एक संग ढोइत छलाह।

हम पुछलियनि—“देहक की भेल?”

ओ पहिने कहलनि—“हम नहि जानैत।” फेर किछु देर पछाति—“जेना सभ देहक होइत अछि।” हम चुप रहलहुँ। ओ स्वयं सुधारलनि—“ई उत्तर मेटा दिअ। हम नहि कहब।” हम मेटेलहुँ नहि; ओकर आगाँ लिखलहुँ—“साक्षी उत्तर आपस लेैत छथि।”

फुलझरीक विषयमे ओ फेर एक बात कहलनि। “ओहि रातिक पछाति हम ओकरा जिउत नहि देखलहुँ।” ई कमला देवीक “हम नहि देखलहुँ” सँ मेल खाइत छल, मुदा अर्थ अधिक भारी छल। “अहाँ सुनलहुँ?”—“अनेक बात। नदी पार, नैहर, जनकपुर, दरभंगा—सभ दिशा। जे लोक दिशा बेसी गनबैत अछि, प्रायः ओकरा ठाम ठोस बात कम रहैत अछि।”

जगेसरक विषयमे? बुधन सदा उत्तर देलनि—“ओकर नाम टोलमे धीरे होय लगल। ओकर माय दू मास धरि साँझमे बाट दिस देखैत रहलीह। पछाति ओ घर छोड़ि नातेदार लग गेलीह।” “मृत्यु-क्रिया?”—“नहि।” “विवाहक कोनो लिखित बात?”—“हमरा सभ लग लिखित की? लोकक स्मृति छल।”

हम पुछलियनि—“पाँजि?”

ओ पहिल बेर हँसलाह, मुदा हँसी हमरा ऊपर नहि, वस्तुस्थिति ऊपर छल। “हमरा सभक नाम अहाँक पाँजिमे कतय? जे किताब हमरा जन्म नहि लिखैत, से हमर विवाह की लिखत?” हँसी तुरते थमि गेल। “मुदा फुलझरीक नाम तँ छल ने?”

हम उत्तर देबाक पहिने रुकलहुँ। स्त्रीक नाम सभ पाँजिमे समान रूपसँ नहि रहैत, ई पुरोहित कहने छलाह। मुदा हमरा घरक एक पुरान पन्नामे फुलझरीक पितृ-पाँति सम्बन्धी संकेत छल। विवाहक आगाँ रिक्ति छल। हम बुधन सदाकेँ ई नहि कहलहुँ।

ओ स्वयं कहलनि—“जँ अहाँ लिखनिहार छी तँ एक बात लिखू—ओ अपन इच्छा कहने छलि। जाति बदलल नहि छलि, मनुष्य चुनने छलि। गाम ओकरा जाति बनौलक।” वाक्यक अन्तिम अंश हमरा तत्काल स्पष्ट नहि भेल। पुछलहुँ—“अर्थ?” ओ कहलनि—“जखन लोक ओकर नाम नहि कहलक, केवल ई कहलक जे ऊँच घरक स्त्री नीच टोलक पुरुष संग गेल, तखन दू मनुष्य गायब भऽ गेल, दू जाति बचल रहल।”

ई कथन हम बड़ सावधानीसँ लिखलहुँ। बुधन सदा फुलझरीकेँ प्रतीक नहि बनौने छलाह। ओ ओकर स्वभावक दू बात सेहो कहलनि—“क्रोधी छलि। बात काटैत छलि। जे नहि पसन्द, मुँह पर कहैत छलि।” फेर जोड़लनि—“जगेसर सेहो दूधक धोएल नहि। जिद्दी। काज छोड़ि गीत सुनय चलि जाए। दुनूक स्वभाव मिलैत कि लड़ैत, हम नहि जानैत।” एहि छोट विवरणसँ दुनू देह फेर मनुष्य बनैत छल, कथा नहि।

हम पुरोहितक कथनक एक अंश पढ़ि सुनौलहुँ—मन्त्र नहि, अग्नि नहि, कन्यादान नहि, पाँजि नहि। बुधन सदा सुनि कऽ कहलनि—“ओ पाँच बातक बीच दुइ मनुष्य कतय?” हम उत्तर नहि देलहुँ।

कमला देवीक कथनक वाक्य सुनौलहुँ—“भोर धरि रुकू।” बुधन सदा माथ झुकौलनि। “ओ भौजी समझैत छलीह।” “की?”—“राति नीक नहि छल।” “कोना?”—“लोकक बोली बदलि गेल छल। जखन मनुष्य नाम छोड़ि जाति कहय लगैत अछि, राति नीक नहि रहैत अछि।”

कथन समाप्त करबाक पहिने हम फेर देहक नाम पुछलहुँ। बुधन सदा एहि बेर क्रोध नहि कयलनि। कहलनि—“अहाँ जवान छी। कागजकेँ बड़ बलवान बुझैत छी। कागज बलवान अछि, ताहि लेल डर अछि। जे नाम एक बेर कागज पर गेल, ओ फेर लोकक हाथमे जायत। एखन हम एकटा बात बचबैत छी, झूठ नहि बनबैत।”

हम पुछलियनि—“कखन कहब?”

ओ कहलनि—“जखन कागज केवल मालिकक नहि रहत।”

ई वाक्य हम तखन बुझि नहि सकलहुँ। २००८मे भीजल गट्ठर खोलैत, मेटाओल पाँति देखैत, आ अपन पितामहक पिताक लिखावट चिन्हैत काल ई फेर मोन पड़ल। कागज ककर? नाम

लिखबाक अधिकार ककर? नाम मेटबाक अधिकार ककर? बुधन सदा उत्तर नहि देने छलाह; ओ केवल प्रश्नक मालिक बदलि देने छलाह।

ओहि १९६१क लिखित विवरणक अन्तमे हम पाँच पाँति लिखलहुँ—“साक्षी खेतिहर हरवाह। मुसहर टोलक निवासी। युवकक नाम जगेसर सदा बतबैत छथि। फुलझरी आ जगेसर संग रहबाक निश्चय कयने छलाह—एहन प्रत्यक्ष कथन। रातिमे एक रक्तसिक्त देह देखबाक बात; देहक नाम कहब अस्वीकार। मारनिहार वा मारबाक क्रिया प्रत्यक्ष नहि देखल। ‘भागि गेल’ जनश्रुति अस्वीकार; घटनाकेँ ‘हत्या’ शब्द दैत छथि।”

एहि पाँच पाँतिक नीचाँ हम एकटा रिक्त रेखा छोड़ने रही। ओहि समय एकर कारण केवल एतबा छल जे बुधन सदा नाम नहि कहलनि। दीर्घ काल पछाति बुझायल—रिक्त रेखा स्वयं प्रमाण नहि, मुदा कखनो-कखनो ओ ई बतबैत अछि जे कागज पर कोन बात लिखबाक साहस एखन बनल नहि छल।

अध्याय १४ — साक्षी चारि: पँजीकार

पृष्ठ २१७। विवादित शाखा।

मूल — कौशिक। ग्राम — पूर्ववत्। अधिकार — पूर्ववत्।

श्रीधर मिश्र। पिता — वाचस्पति मिश्र। पितामह — रघुपति मिश्र। श्रीधरक गृह-पाँतिमे एक कन्या — फुलझरी। जन्म-वर्ष १९०१। विवाहक पूर्व अभिलेख उपलब्ध नहि।

सम्बन्ध-विषयक परीक्षण।

भूकम्पक पछिला सप्ताहसभमे ग्रामक सामान्य व्यवस्था विचलित। घरसभक भीत खसल। अनेक परिवार आँगन-बाहर अस्थायी छाजनमे। एहन अवस्थामे फुलझरीक सम्बन्ध विषयक विवाद उपस्थित। परिवारक जेष्ठ लोकक कथन — कन्या घरक मर्यादा विरुद्ध दक्षिण टोलक एक पुरुष संग संगति राखैत अछि। पुरुषक नाम प्रथम कथनमे नहि देल गेल।

पुरोहितक कथन — विधिपूर्वक विवाह सम्पन्न नहि। मन्त्र, अग्नि, कन्यादान, कुल-अनुमति आ पाँजि-अधिकार अनुपस्थित। देवस्थान लग कन्या आ पुरुषक उपस्थितिक बात स्वीकार। कन्या अपन इच्छा स्वयं व्यक्त कयलनि। पुरोहित कर्म करब अस्वीकार कयलनि।

गृहक स्त्री-साक्ष्य — कन्या साँझसँ पहिने घरसँ निकललीह; हाथमे पीतलक थारी, चाउर, सुपारी, सिंदूर, फूल आ गुड़क टुकड़ी। राति होएबासँ पहिने घर घुरलीह। ओसार पर जेष्ठ लोकक सोझाँ कहलनि जे ओ अपन चुनल पुरुष संग रहब चाहैत छथि। रातिक पछिला भागमे घरक स्त्री हुनका फेर नहि देखलनि।

दक्षिण टोलक एक हरवाहक कथन — पुरुषक नाम जगेसर सदा। ओ खेत, माटि काटब आ नाव खेबाक काज करैत अछि। फुलझरी आ जगेसर परस्पर संग रहबाक निश्चय कयने छथि। हरवाहक जाति आ टोल कारण परिवारक जेष्ठ लोक ओकर कथन स्वीकार करब उचित नहि मानैत छथि।

साक्ष्य-सूची।

एक — पुरोहितक मौखिक कथन। दुइ — गृहक पैघ स्त्रीक मौखिक कथन। तीन — दक्षिण टोलक हरवाहक कथन, परिवार-पक्षसँ विवादित। चारि — पीतलक थारी देवस्थानक पछिला भागमे भेटल। पाँच — कन्याक कोठलीमे बिछाओन, साड़ी, कंघी, तकली, चूड़ी आ तेलक शीशी यथास्थान। छह — यात्रा वा दीर्घ प्रवासक तैयारी दर्शबैत कोनो गठरी उपलब्ध नहि। सात — रातिक पछिला भागमे घरक अनेक पुरुषक आवागमन विषयक कथन, मुदा व्यक्ति-क्रम असंगत।

उपर्युक्त वस्तुसभमे सँ कोनो एकटा वस्तु विवाह सिद्ध नहि करैत। तथापि सभ वस्तु एक संग एहि बातक विरोध करैत अछि जे कन्या दिन-दुपहरिया पूर्व-नियोजित रूपेँ दूर परदेस प्रस्थान कयलीह। परिवार-पक्ष एहि निष्कर्ष पर आपत्ति करैत अछि।

काल-क्रम।

साँझसँ पहिने — कन्या घरसँ बाहर। देवस्थान लग उपस्थितिक कथन। साँझ — कन्या घर घुरलीह। ओसार पर विवाद। अन्हार खसलाक पछाति — घरक भीतर-बाहर आवागमन। रातिक पछिला भाग — कन्या घरक स्त्री-साक्षीक दृष्टिसँ बाहर। भोर — कन्या घरमे नहि। जगेसर अपन टोलमे नहि। भोरक पछाति — “दुनू भागि गेल” कथन फैलल। एहि क्रमक कोनो एकल प्रत्यक्ष साक्षी उपलब्ध नहि।

प्रथम लेख।

~~श्रीधर मिश्रक कन्या फुलझरी अपन इच्छासँ जगेसर सदा संग गृहस्थ-सम्बन्ध स्वीकार कयलनि; देवस्थान लग परस्पर वचन भेल; परिवारक अनुमति नहि।~~

एहि पाँतिक बामा कात दू तिरछा चिन्ह। पाँतिक ऊपर महीन घर्षण। प्रथम लेख परवर्ती निर्णय धरि स्थगित।

आपत्ति।

एक — जगेसर सदा परिवारक स्वीकृत विवाह-वृत्तक भीतर नहि।

दुइ — गोत्र-परीक्षणक प्रश्न एहि सम्बन्ध पर लागू करब कठिन, कारण पुरुषक वंश-पाँति एहि पाँजिमे उपलब्ध नहि।

तीन — कुलज्येष्ठक अनुमति अनुपस्थित।

चारि — पुरोहित वैदिक अथवा कुल-विधिक कर्म सम्पन्न भेल मानब अस्वीकार करैत छथि।

पाँच — कन्याक स्वयं कथन मात्र विवाह-अधिकार सिद्ध करबाक पर्याप्त प्रमाण मानल नहि जाए।

छह — दक्षिण टोलक साक्ष्य परिवार-पक्षसँ विवादित।

प्रतिवचन।

कन्याक वाणी प्रत्यक्ष सुननिहार एकसँ बेसी व्यक्ति। “संग रहब”क इच्छा पर साक्ष्य मेल खाइत। देवस्थान लग उपस्थितिक बात पर सेहो मेल। थारी, सिंदूर, चाउर, सुपारी, फूल विषयक साक्ष्य

उपलब्ध। जगेसरक उपस्थितिक बात पुरोहित पूर्णतः अस्वीकार नहि करैत छथि। अतः सम्बन्धक इच्छा कल्पित कहल नहि जा सकैत।

तथापि इच्छा आ स्वीकृत विवाह एक वस्तु नहि — परिवार-पक्षक आपत्ति।

पुरोहितक मत — इच्छा व्यक्तिगत; विवाह कुल-विधि आ अधिकारक विषय। गृह-स्त्रीक मत — कन्या अपन निर्णय घरक सोझाँ कहने छलीह। दक्षिण टोलक साक्ष्य — दुनू व्यक्ति संग रहबाक निश्चय कयने छलाह। तीन मत एक निष्कर्ष पर नहि अबैत, मुदा “कोनो सम्बन्ध नहि छल” एहन कथनकेँ तीनू एक संग दुर्बल करैत अछि।

रातिक घटना।

साँझक पछाति विवाद बढ़ल। कन्या घर घुरलीह। घरक पुरुषसभ उपस्थित। कोनो विधि सम्पन्न भेल अथवा नहि, एहि विषयक नव प्रमाण नहि। रातिक पछिला भागमे कन्या आ जगेसर दुनूक ठाम विषयक परस्पर-विरोधी कथन। कियो कहैत अछि दुनू गाम छोड़ि गेल। कियो कहैत अछि पुरुष नेपाल दिस गेल। कियो कहैत अछि कन्या नैहर गेलीह। एहि सभ कथनमे प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत नहि।

~~सतिक पछिला भागमे दक्षिण टोल दिस अनिष्टक घटना भेल एहन कथन; एक मनुष्यक देह भूमि पर देखल जाएबाक बात, परिचय लिखित रूपेँ सिद्ध नहि।~~

उपर्युक्त पाँति पर बामा दिस द्वि-तिर्यक चिन्ह। “एक मनुष्यक देह” शब्दक ऊपर घना मसि। पाँतिक पछिला अर्धांश पर अधिक घर्षण। परिचय सिद्ध नहि, अतः पाँजि-विवाह-विषयमे ई कथन ग्रहणीय नहि — एहन निर्णय।

मृत्यु अथवा हत्या शब्द मुख्य लेखमे नहि चढ़ाओल गेल। कारण रूपेँ लिखल — प्रत्यक्ष मारनिहारक साक्ष्य नहि, देहक पहचान लिखित रूपेँ नहि, परिवार-पक्ष कथन अस्वीकार करैत अछि।

द्वितीय लेख।

~~फुलझरी — जगेसर सदा संग सम्बन्धक कथन; कुल-अनुमति नहि; विवाह-विधि विवादित; उत्तरवर्ती वंश परीक्षणार्थ स्थगित।~~

द्वितीय लेखक “जगेसर सदा” शब्द पर घना मसि फेराओल। तकर ऊपर कागज कने कुरचल। “उत्तरवर्ती वंश” शब्दक नीचाँ दू रेखा।

परिवार-पक्षक निवेदन।

एहन सम्बन्ध पाँजिमे स्थिर रूपेँ रहलासँ श्रीधरक अन्य सन्तानक विवाह-व्यवहार बाधित होयत। कन्याक अपन इच्छा परिवारक अन्य शाखा पर अधिकारक रूपमे नहि चढ़ाओल जाय। जाति-सीमा उल्लंघनक प्रसंग लिखल रहला सँ आगामी सम्बन्धमे प्रश्न उठत। परिवार-पक्ष पुरान पाँति हटेबाक आग्रह करैत अछि।

पँजीकारक विचार।

पाँजि वंश, ग्राम, मूल, विवाह-अधिकार आ सम्बन्धक अभिलेख। पाँजि दण्ड-पुस्तक नहि। तथापि जे सम्बन्ध समाजक मान्य विवाह-वृत्तमे स्वीकृत नहि, तकर प्रविष्टि केहन रूपेँ हो, एहि विषय पूर्व उदाहरण अस्पष्ट। कन्याक इच्छा उपलब्ध। पुरुषक नाम उपलब्ध। परस्पर सम्बन्धक साक्ष्य उपलब्ध। कुल-अनुमति अनुपस्थित। विधिक मतभेद उपस्थित।

जँ सम्बन्ध “विवाह” लिखल जाए तँ कुल-पक्ष आपत्ति करैत अछि। जँ “अविवाह” लिखल जाए तँ कन्याक प्रत्यक्ष वचन अस्वीकार होइत अछि। जँ केवल नाम लिखल जाए तँ भावी पाठक सम्बन्धक प्रकार नहि बुझत। जँ किछु नहि लिखल जाए तँ घटना अभिलेखसँ बाहर रहत।

एहि चारि विकल्पमे परिवार-पक्ष अंतिम विकल्प आग्रह करैत अछि।

परवर्ती निर्णय।

फुलझरीक सम्बन्धक प्रविष्टि विवाह-पाँतिमे स्थिर नहि कयल जाय। जगेसर सदाक नाम मुख्य पाँजि-पृष्ठ पर नहि रहय। सम्बन्ध-विषयक पृथक विवाद-पत्र अस्थायी रूपेँ राखल जाय। श्रीधरक अन्य सन्तानक अधिकार अप्रभावित मानल जाय।

विवाद-पत्र परिवारक आग्रह पर बाहरी पाठककेँ नहि देखाओल जाय।

विवाद-पत्रक दू प्रति बनाबय प्रस्ताव अस्वीकार। एक प्रति मुख्य पेटारमे, बाहरी अनुक्रमणिका बिना। पृष्ठ-संख्या मुख्य क्रमसँ पृथक। एहन व्यवस्था कारण सम्बन्धक तथ्य उपलब्ध रहत, मुदा सामान्य वंश-पठनमे सोझाँ नहि आएत।

परिवार-पक्ष आग्रह करैत अछि जे विवाद-पत्र सेहो नष्ट कयल जाय। पँजीकार तत्काल सहमति नहि दैत। लिखल — “पृथक पत्र रहय; मुख्य पाँति शुद्ध कयल जाय।” “शुद्ध” शब्दक नीचाँ पछाति एक महीन रेखा।

तृतीय लेख।

~~श्रीधर मिश्रक कन्या फुलझरी — सम्बन्ध-विवाद; निर्णय पृथक पत्रमे।~~

तृतीय लेख छोट अक्षरमे। “फुलझरी” शब्दक ऊपर पहिल घर्षण। “सम्बन्ध-विवाद”क ऊपर दोसर घर्षण। “निर्णय पृथक पत्रमे”क पछिला भाग पहिने मसिसँ काटल, तकर पछाति कागजक ऊपरी रेशा हटाओल।

पाँतिक बामा किनार पर दू तिरछा चिन्ह।

शुद्धि-काज।

पहिल प्रयत्नमे केवल मसिक ऊपरी भाग हलुक भेल। अक्षर एखनहुँ पढ़ल जा सकैत छल। दोसर प्रयत्नमे पाँतिक मध्यभागक कागजी तन्तु उठल। तेसर प्रयत्नमे अक्षरक आकार टूटल; शब्द नहि, केवल कारी बिन्दु आ रेखाक अधछिन्न भाग बचल।

“फुलझरी” शब्दक स्थान पर कागज अन्य भागसँ कने पातर। “जगेसर” रहबाक ठाम मसि भीतर धरि धँसल छल, तेँ ऊपरी घर्षणक पछातियो दू अक्षरक अधरूप बचल। ओहि अधरूप पर फेर घर्षण।

लेख मेटेबाक क्रममे मूल पृष्ठ फाटल नहि, मुदा सतह एकरूप नहि रहल। पाँति रिक्त देखबैत अछि; स्पर्शमे रेशा भिन्न।

पाँति फेर घिसल।

पहिल घर्षणसँ अक्षरक माथ हटल। दोसर घर्षणसँ मध्यभाग। तेसर घर्षणक चिन्ह कागजक तन्तु धरि। मसिक किछु बिन्दु नीचाँ धँसल रहि गेल। पाँति पढ़ब कठिन, मुदा एतबा बुझाइत जे एतय पहिने लेख छल।

फुलझरीक नाम अपठित।

जगेसर सदाक नाम मुख्य पृष्ठ पर नहि।

विवाद-पत्रक उल्लेख नहि।

श्रीधरक नामक पछाति उत्तरवर्ती ठाम रिक्त।

अन्तिम रूप।

श्रीधर मिश्र। पिता — वाचस्पति। पितामह — रघुपति।

अगिला शाखा पृथक पृष्ठसँ।

रिक्त ठाम पर कोनो “कन्या”, “विवाह”, “जगेसर”, “दक्षिण टोल”, “विवाद” अथवा “अनिष्ट” शब्द नहि बचल। पाठक जँ केवल मुख्य पाँजि देखत तँ श्रीधरक पाँति एतय स्वाभाविक रूपेँ समाप्त बुझत।

नकल-विधान।

अगिला स्वच्छ प्रतिमे श्रीधरक वंश-पाँति मुख्य पृष्ठक वर्तमान रूपेँ उतारल जाय। घर्षित पाँतिक पूर्व पाठ अनुमानसँ नहि भरल जाय। विवाद-पत्रक उल्लेख मुख्य नकलमे नहि। एहि कारण अगिला प्रति रिक्तिक कारण नहि कहत; ओ केवल रिक्ति दोहराओत।

जँ भावी पँजीकार मूल पृष्ठ नहि देखत आ केवल स्वच्छ प्रति देखत, तखन ओकरा ई ज्ञात नहि होयत जे श्रीधरक नामक पछाति कखनो फुलझरीक पाँति लिखल छल। नकल मूलक मेटाओल निर्णयकेँ नव कागज पर बिना घर्षणक चिन्हक पहुँचा देत।

नकल बननिहारक लेल निर्देश — “जतबा मुख्य पृष्ठ पर पठनीय, ततबे उतारू।” विवाद-पत्र पृथक। परिवारक मौखिक कथा नकलक आधार नहि।

दहिना किनार पर लघु लेखक-संकेत। वर्ष १९३४।

लेखक-संकेतक अन्तिम अक्षर बामा घुरल। अंक ३क नीचला घुमाव खुला। सुधार-चिह्न — बामा किनार पर दू तिरछा रेखा।

परिशिष्ट, मुख्य पृष्ठ पर नहि चढ़ाओल जाय।

“कन्याक इच्छा विषयक कथन सत्यापन योग्य, मुदा कुल-अधिकारसँ असंगत। पुरुषक नाम लिखलासँ विवाद बढ़त। घटनाक राति विषयक कथन परस्पर-विरोधी। परिवारक प्रतिष्ठा, अन्य सन्तानक विवाह आ ग्राम-व्यवहार विचारणीय। मुख्य पाँतिमे सम्बन्ध नहि राखब उचित।”

एहि परिशिष्टक नीचाँ एक पाँति आरम्भ कयल गेल — “जे लिखल नहि जाए...” — तकर आगाँ मसि रुकल। वाक्य पूर्ण नहि।

नीचाँ लेखक-संकेत।

तिथि।

दू तिरछा रेखा।

पछिला लेख, अन्य मसिमे।

“विवाद-पत्र उपलब्ध नहि।”

तिथि नहि। लेखक-संकेत नहि। एहि पाँतिक मसि मुख्य १९३४क मसिसँ गाढ़।

तकर नीचाँ पुनः रिक्ति।

अध्याय १५ — जे लिखल नहि गेल

चारू लिखित विवरण एक संग राखलाक दिन हम पहिने कोनो निष्कर्ष नहि लिखलहुँ। पुरोहितक कथन, कमला देवीक कथन, बुधन सदाक कथन आ १९३४क पँजी-पृष्ठ—चारू कागजक ऊपर पृथक-पृथक भार राखल छल, जइसँ हवा सँ पन्ना नहि घुरय। एक पर पीतलक छोट कटोरी, दोसर पर काठक पट्टी, तेसर पर स्याहीक खाली दवात, चौठ पर पोथीक पुरान दबनी। बीचमे एकटा उज्जर कागज छल। ओहि पर हम शीर्षक लिखलहुँ—“जे लिखल नहि गेल।”

पहिल मेल नामक नहि, समयक छल। कमला देवीक अनुसार फुलझरी साँझसँ पहिने घरसँ निकललीह आ तुलसी लग दीया जरलाक पछाति घर घुरलीह। पुरोहित देवस्थान लग हुनकर उपस्थितिक बात मानैत छथि, मुदा अपन पहुँचबाक समय बेराबेरी बदलैत छथि। बुधन सदा साँझक उजासमे देवस्थानक पाछाँ फुलझरी आ जगेसरकेँ देखबाक बात कहैत छथि। पँजी-पृष्ठमे सेहो “साँझसँ पहिने” बाहर जाएब आ “साँझ” घर घुरब—ई दू बिन्दु पृथक-पृथक लिखल अछि। चारू कागजमे एहि बीचक समय पूर्णतः नहि भरल। मुदा एतबा मेल अछि जे फुलझरी दिन ढलबाक पहिने घर छोड़ि दूर परदेस नहि गेलीह।

दोसर मेल वस्तुक छल। पीतलक छोट थारी। पुरोहितक कथनमे थारी देवस्थानक कर्मसँ जोड़ल गेल। कमला देवीक कथनमे थारी घरक रसोईक, जाहिमे चाउर, दू सुपारी, सिंदूर, सूखल फूल आ गुड़क टुकड़ी छल। बुधन सदा थारी हाथमे देखबाक बात कहैत छथि, भीतर की छल से नहि। पँजी-पृष्ठमे थारी “देवस्थानक पछिला भागमे भेटल” लिखल अछि। चारू विवरणमे थारी अछि। थारीक अर्थ चारि प्रकारक। वस्तु एकटा।

एक छोट वस्तु पर दू स्मृति एक-दोसरासँ बेसी दूर गेल। लाल सूत। पुरोहित ओकरा पूजा-व्रतक सम्भावनासँ पृथक करैत छथि, मानो पहिने सँ एहि आशंकाक उत्तर दैत होथि जे कियो ओकरा विवाहक चिह्न बुझत। कमला देवी कहैत छथि—कलाई छिलल छल, ओ स्वयं कपासक फाहा

लाल सूतसँ बान्हने छलीह। बुधन सदा सूतक बात नहि कहैत छथि। पँजी-पृष्ठमे सूत नहि। एकहि वस्तु एक कथनमे धार्मिक अर्थक सम्भावना, दोसरमे देहक छोट चोटक उपचार। सूत स्वयं कोनो अर्थ नहि लिखैत।

साड़ीक रंगो तहिना। पुरोहितक स्मृतिमे पीयर। कमला देवीक स्मृतिमे उज्जर, पुरान हल्दी-दागसँ पीयर बुझाइत, किनार गेरुआ। बुधन सदा रंगक निर्णय नहि दैत छथि—उज्जर आ रंगीन किनार एतबे। पँजी-पृष्ठ रंग छोड़ि दैत अछि। एहन छोट विरोध मुख्य घटनाकेँ सिद्ध वा असिद्ध नहि करैत, मुदा ई देखबैत अछि जे स्मृति वस्तुकेँ अपन-अपन काजक अनुसार सँवारैत अछि। हम कोनो रंगकेँ काटि दोसर रंग नहि राखलहुँ।

तेसर मेल वचनक छल। पुरोहित कहैत छथि—फुलझरी अपन इच्छा स्वयं कहलीह। कमला देवी कहैत छथि—ओसार पर फुलझरी कहलनि, “हम ओकर संग रहब।” बुधन सदा कहैत छथि—फुलझरी आ जगेसर संग रहबाक निश्चय कयने छलाह। पँजी-पृष्ठक प्रथम लेखमे रहैत अछि—“अपन इच्छासँ जगेसर सदा संग गृहस्थ-सम्बन्ध स्वीकार कयलनि।” एहि चारि कागजमे विवाहक विधि पर मेल नहि, मुदा इच्छाक अस्तित्व पर विरोध अत्यल्प अछि।

हम एहि बिन्दुक आगाँ कोनो धार्मिक शब्द नहि लिखलहुँ। मन्त्र भेल कि नहि, अग्नि छल कि दीया, कन्यादान भेल कि नहि, पाँजि-अधिकार छल कि नहि—ई सभ प्रश्न पुरोहितक कथनमे प्रधान अछि। कमला देवी एहि सभक प्रत्यक्ष साक्षी नहि। बुधन सदा एहि सभकेँ सम्बन्धक मूल प्रश्न नहि मानैत छथि। पँजीकार पहिने इच्छा लिखैत छथि, तकर पछाति अधिकारक आपत्ति गनैत छथि। चारू कागज एकहि शब्दक अर्थ पर एक मत नहि, मुदा चारू एहि बातक आस-पास अछि जे फुलझरी अपन मनक निर्णय स्वयं कहने छलीह।

नाम पर मेल कम छल। पुरोहित युवकक नाम “मोन नहि” कहैत छथि, मुदा ओकर टोल, पेशा, बाबूक पेशा आ पीपरक गाछ मोन राखैत छथि। कमला देवी नाम जानैत बुझाइत छथि, मुदा लिखब नहि चाहैत छथि। बुधन सदा नाम कहैत छथि—जगेसर सदा। पँजी-पृष्ठक पहिल-दोसर लेखमे वएह नाम अछि; अन्तिम रूपमे नहि। नाम पहिने अनुपस्थित नहि छल। नाम पछाति हटाओल गेल।

हम चारू कागजमे “जाति” शब्द खोजलहुँ। पुरोहित सीधा नाम नहि कहैत छथि; “जकरा पाँजिमे अधिकार नहि” कहैत छथि। कमला देवी टोल आ पेशा बतबैत छथि, जाति-नाम नहि। बुधन सदा

मुसहर टोल कहैत छथि आ ई सेहो कहैत छथि जे जखन लोक नाम छोड़ि जाति कहय लगैत अछि तखन राति नीक नहि रहैत अछि। पँजी-पृष्ठमे परिवार-पक्षक आपत्तिमे जाति-सीमा स्पष्ट अछि। जे बात मुँहक कथनमे टारल गेल, ओ आपत्तिपत्रक भाषामे सोझाँ अछि।

चारू कागजमे एक आरो अनुपस्थिति समान अछि—फुलझरीक अपन हाथक कोनो लेख नहि। ओकर वाणी पुरोहितक स्मृतिमे अछि, कमला देवीक स्मृतिमे अछि, बुधन सदाक कथनमे परोक्ष रूपेँ अछि, पँजीकारक सूत्रमे अछि। “हम ओकर संग रहब” कथित वाक्य बचल, मुदा फुलझरीक लिखल अक्षर नहि। ओकर निर्णयक सभ प्रमाण आन लोकक मुँह वा आन पुरुषक कागजसँ गुजरि कऽ अबैत अछि। एहि अनुपस्थितिक पूर्ति हम नहि कयलहुँ। ओकरा पत्र नहि देलहुँ, डायरी नहि देलहुँ, अन्तिम कथन नहि गढ़लहुँ। कागजमे जे नहि छल, कथा बनबैत काल सेहो ओतबे रिक्त राखल उचित बुझायल।

फुलझरी घर घुरलीह—ई बिन्दु पुरोहितक कथनमे धुँधला, कमला देवीक कथनमे प्रत्यक्ष, पँजी-पृष्ठमे स्वीकार। बुधन सदा एहि घुरबाक साक्षी नहि। जँ केवल पुरोहितक कागज रहित तँ पाठक बुझि सकैत छल जे देवस्थानक पछाति फुलझरी कतहु चलि गेलीह। जँ केवल कमला देवीक कागज रहित तँ देवस्थान पर की भेल, से नहि बुझाइत। जँ केवल बुधन सदाक कागज रहित तँ घरक ओसारक विवाद नहि रहित। जँ केवल पँजी-पृष्ठ रहित तँ सभ किछु विवाद, आपत्ति आ निर्णयक छोट सूत्रमे सिमटि जाइत।

ओसारक राति चारू कागजक बीच सभसँ पैघ रिक्ति छल।

कमला देवी कहैत छथि—घरक पुरुष क्रोधमे छलाह। एकटा बाँसक छड़ी छल, मुदा ओ ओकरा विशेष अर्थ नहि दैत छथि। बोल ऊँच भेल। एक बेर पीतलक वस्तु खसल। ओ बालकसभकेँ भीतर लऽ गेलीह। पछाति बाहर आयलीह तँ ओसार खाली। ओ कहैत छथि—“भोर धरि रुकू,” आ ई सेहो जे राति बीतय दैत तऽ किछु अनिष्ट टरि सकैत छल। हुनकर शब्द “आशंका” तक जाएत, घटना तक नहि।

पुरोहित घरक जेष्ठ लोकक क्रोधक बात पर कम बोलैत छथि। हुनकर कथन धर्मक मर्यादा पर बेसी ठहरैत अछि। ओ अपन भूमिकाकेँ कर्म करब अथवा नहि करबक प्रश्नमे राखैत छथि। रातिक पछिला भागक ठोस क्रम हुनकर कागजमे नहि।

बुधन सदा ओसार पर नहि छलाह। ओ मुसहर टोलक लोकक संग उत्तर दिस पुरान आमक गाछ लग पहुँचबाक बात कहैत छथि। ओ रक्त देखलनि। भूमि पर एक देह देखलनि। माथक कात रक्त। मारनिहार नहि देखलनि। हथियार नहि देखलनि। देहक नाम नहि कहलनि। हुनकर एक शब्द अछि—“हत्या।” एहि शब्दक कात प्रमाणक तीन रिक्त ठाम अछि—के, केकरा, कोन वस्तुसँ।

पँजी-पृष्ठ रातिक विषयमे लिखैत अछि—“दक्षिण टोल दिस अनिष्टक घटना।” “एक मनुष्यक देह।” “परिचय लिखित रूपेँ सिद्ध नहि।” फेर मृत्यु अथवा हत्या शब्द मुख्य लेखमे नहि चढ़ेबाक निर्णय। ओहि निर्णयक तर्क—प्रत्यक्ष मारनिहारक साक्ष्य नहि, देहक पहचान लिखित रूपेँ नहि, परिवार-पक्ष अस्वीकार करैत अछि।

चारू कागजक बीच एकटा बात कतहु पूर्ण वाक्यमे नहि आयल—जखन फुलझरी ओसार पर अपन निर्णय कहलीह, तखन ओकर पछाति कोन व्यक्ति हुनका संग कोन ठाम गेल। कमला देवी नहि देखलनि। पुरोहित नहि लिखैत छथि। बुधन सदा घटनास्थल पर पहुँचबाक पहिने केकरा के संग देखलनि, से नहि कहैत छथि। पँजी-पृष्ठ “घरक पुरुषसभ उपस्थित” कहि रुकि जाइत अछि। व्यक्तिक क्रम नहि।

हम उज्जर कागज पर चारि पाँति खींचलहुँ। पहिल पर—फुलझरी घर घुरलीह। दोसर पर—ओसार पर विवाद। तेसर पर—रातिक पछिला भागमे अनेक पुरुषक आवागमन। चौठ पर—उत्तर दिस एक रक्तसिक्त देह। पहिल आ चौठ पाँतिक बीच कोनो प्रत्यक्ष साक्षी नहि। ई रिक्ति कथा लिखि भरबाक ठाम नहि छल।

भोरक कथा पृथक प्रकारेँ बनल। कमला देवी फुलझरीकेँ नहि देखलनि। बुधन सदा जगेसरक “भागि गेल” जनश्रुति अस्वीकार करैत छथि। पुरोहितक कथनमे भोरक ठोस विवरण नहि। पँजी-पृष्ठ लिखैत अछि—“भोर—कन्या घरमे नहि। जगेसर अपन टोलमे नहि। भोरक पछाति—दुनू भागि गेल कथन फैलल।” एहि क्रममे “नहि भेटल” सँ “भागि गेल” धरि जे दूरी अछि, ओकर बीच कोनो साक्षी लिखल नहि।

“भागि गेल” वाक्य ककर मुँहसँ पहिने निकलल, चारू कागज नहि कहैत। के ई बात टोल-टोल पहुँचौलक, नहि। के नेपालक दिशा जोड़लक, नहि। के नैहरक दिशा जोड़लक, नहि। दिशासभ बढ़ैत गेल, स्रोत लोप होइत गेल। एक घटना जतेक दूर गेल, ततेक ओकर ठामक नाम बेसी भेल।

रक्तसिक्त देहक विषयमे सेहो चारू कागज समान भार नहि दैत। पुरोहितक कथन ओतय पहुँचैत नहि। कमला देवी रातिक भीतरक भाग देखलनि, बाहरी ठाम नहि। बुधन सदा देह देखलनि, नाम रोकलनि। पँजीकार देहक उल्लेख लिखलनि, फेर परिचय अनिश्चित कहि मुख्य लेखसँ मृत्यु-हत्या शब्द हटौलनि। एतय “कियो नहि कहैत” आ “कियो कहि नहि सकैत” एक बात नहि। बुधन सदा किछु जानैत छथि आ जानि-बुझि नाम रोकैत छथि; पँजीकार किछु लिखैत छथि आ जानि-बुझि मुख्य पाँतिसँ हटबैत छथि। दुनू मौनक कारण पृथक।

एकटा दोसर रिक्ति जगेसरक घर दिस छल। बुधन सदा कहैत छथि ओकर माय दू मास साँझमे बाट दिस देखैत रहलीह। मृत्यु-क्रिया नहि। शरीर घर नहि आयल—एहन वाक्य सेहो हुनका कागजमे नहि, केवल ई जे मृत्यु-क्रिया नहि भेल। पँजी-पृष्ठ जगेसरक परिवारक कोनो कथन नहि रखैत। पुरोहित ओहि घरक लोकक उल्लेख नहि करैत छथि। कमला देवी नाम धरि नहि कहैत छथि। जगेसर पँजीक अधिकारक बाहर छल; ओकर अनुपस्थिति लिखबाक उत्तरदायित्व सेहो ककरो ठाम स्थिर नहि भेल।

फुलझरीक घरमे वस्तु बचल—बिछाओन, साड़ी, कंघी, तकली, चूड़ी, तेलक शीशी। यात्रा लेल गठरी नहि। एहि वस्तुसभक अर्थ कमला देवी स्वयं सीमित करैत छथि—“वस्तु रहल ई तथ्य।” पँजी-पृष्ठ वएह सूची दोहरबैत अछि आ एतबा लिखैत अछि जे पूर्व-नियोजित दूर-प्रस्थानक कथा एहि वस्तुसभसँ मेल नहि खाइत। मुदा वस्तु ई नहि कहैत जे रातिक पछाति फुलझरी कतय गेलीह।

एकटा कागज वस्तुसँ भरल, एकटा नियमसँ, एकटा भय-सहित देखल देहसँ, एकटा काटल पाँतिसँ। चारू कागजक संग पढ़लासँ घटना पैघ नहि होइत; उलटे अनेक ठाम छोट-छोट रिक्ति स्पष्ट होइत अछि।

हम पँजी-पृष्ठक तीन लेख फेर पढ़लहुँ।

पहिल लेखमे फुलझरी आ जगेसर दुनूक नाम।

दोसर लेखमे सम्बन्ध विवादित, वंश परीक्षणार्थ स्थगित।

तेसर लेखमे केवल “सम्बन्ध-विवाद; निर्णय पृथक पत्रमे।”

तकर पछाति घर्षण।

विवाद-पत्रक अनुपस्थिति चारू साक्ष्यसँ पृथक प्रकारक रिक्ति अछि। मनुष्यक स्मृति बिसरि सकैत अछि, डरि कऽ रुकि सकैत अछि, पूर्वाग्रहसँ शब्द बदलि सकैत अछि। मुदा “पृथक पत्र” लिखल अछि आ पत्र नहि अछि—ई वस्तुगत अभाव अछि। पत्र कखनो बनल नहि कि बनि कऽ हटल, मुख्य पृष्ठ केवल एतबा कहैत अछि जे बनबाक व्यवस्था लिखल गेल छल। पछिला गाढ़ मसिक पाँति—“विवाद-पत्र उपलब्ध नहि”—एहि अभावक बादक साक्षी अछि, कारणक नहि।

मूल पृष्ठक बाहर पृथक विवाद-पत्र रहबाक उल्लेख अछि। पत्र स्वयं उपलब्ध नहि। के ओकरा पेटारसँ निकाललक, कखन, ककर आदेश पर—कोनो कागज नहि कहैत। मुख्य पृष्ठ पर घर्षणक चिन्ह अछि; विवाद-पत्रक अनुपस्थितिमे कोनो घर्षण नहि देखाइत। एकटा वस्तु पर मेटेबाक निशान बचल, दोसर वस्तु स्वयं नहि बचल।

हम अपन पितामहक पिताक लेखक-संकेतक आकार फेर मिलेलहुँ। बामा घुरल अन्तिम अक्षर। अंक तीनक खुला नीचला घुमाव। दू तिरछा सुधार-चिह्न। ई सभ हस्तलिपिक परिचय देत, मनक कारण नहि। हाथ चिन्हल जा सकैत अछि। हाथ किएक चलल—ई कागज अनुमान बिना नहि कहैत।

परिशिष्टमे वाक्य आरम्भ होइत अछि—“जे लिखल नहि जाए...” तकर आगाँ मसि रुकल।

ई अधूरा वाक्य चारू कागजक बीच राखल उज्जर पन्नासँ बेसी भारी लगल। एकर आगाँ हम शब्द जोड़ि सकैत छलहुँ—“से रहैत नहि,” “से असत्य होइत,” “से बचि जाइत,” “से मेटि जाइत”—मुदा एहि चारूमे सँ कोनो शब्द मूल कागज पर नहि। हम कोनो शब्द नहि जोड़लहुँ।

ओहि दिन हम चारू साक्ष्यक सार बनबय बैसलहुँ, मुदा सार नहि बनल। सार बनबैत काल एक कथनकेँ प्रधान आ दोसरकेँ गौण करब पड़ैत। एतय चारू कागज पृथक-पृथक वस्तु बचबैत छल—पुरोहित विधिक सीमा, कमला देवी घरक क्रम, बुधन सदा रक्तसिक्त देह आ नामक भय, पँजीकार समाजक स्वीकृति आ अभिलेखक निर्णय। एककेँ हटेलासँ घटना बदलि जाइत।

हम तखन केवल मेल आ विरोधक सूची लिखलहुँ।

मेल—फुलझरी अपन इच्छा कहलीह।

मेल—जगेसर संग सम्बन्धक बात काल्पनिक नहि।

मेल—देवस्थान लग दुनूक उपस्थितिक आधार अछि।

मेल—फुलझरी घर घुरलीह।

मेल—घरमे विवाद भेल।

मेल—रातिक पछिला भागमे क्रम अस्पष्ट।

मेल—भोरमे फुलझरी घरमे नहि।

मेल—जगेसर अपन टोलमे नहि।

विरोध—विवाह भेल कि नहि।

विरोध—पुरोहित कखन पहुँचलाह।

विरोध—साड़ीक रंग।

विरोध—लाल सूतक अर्थ।

विरोध—रातिक घटनास्थल पर के-के छल।

रिक्त—रक्तसिक्त देहक नाम।

रिक्त—मारनिहारक नाम।

रिक्त—फुलझरीक रातिक पछिला ठाम।

रिक्त—जगेसरक अन्तिम ठाम।

रिक्त—विवाद-पत्र।

रिक्त—पहिल “भागि गेल” कथनक स्रोत।

एहि सूचीक नीचाँ हम निष्कर्षक लेल ठाम छोड़लहुँ।

किछु नहि लिखलहुँ।

राति पोथी बन्द करैत काल चारू कागज फेर पृथक-पृथक राखलहुँ। उज्जर पन्ना बीचमे रहल। ओकर ऊपर केवल शीर्षक, मेल-विरोधक सूची आ अन्तिम रिक्त ठाम छल। कोनो नामक आगाँ दोष नहि। कोनो नामक आगाँ निर्दोष सेहो नहि। कोनो मृत्यु प्रमाणित नहि। कोनो पलायन प्रमाणित नहि। कोनो विवाह पूर्णतः सिद्ध नहि। कोनो सम्बन्ध अस्वीकारो नहि।

कागज जे कहैत अछि, से बचल। जे नहि कहैत अछि, ओकर ठाम रिक्त रहल।

ओहि रिक्तिक आकार चारू कागजमे एक नहि छल, मुदा चारू एक-दोसराक कात राखलाक पछाति बुझाइत छल जे कखनो-कखनो लिखित इतिहासक सभसँ पैघ वाक्य ओ होइत अछि जकर शब्द कागज पर चढ़ल नहि।

अध्याय १६ — १९३४क बाढ़ि

भूकम्पक किछु मास पछातिक कागज हम पृथक राखलहुँ। चारू साक्ष्यक कात नहि। ओ सभक बाद। कारण जे बात रातिक रिक्तिमे नहि भेटल, ओकर किछु चिन्ह वर्षाकालक बहिसभमे भेटैत छल। अपराधक नहि; ठामक। मुसहर टोल कतय छल, कतेक घर छल, कोन खेतक मेड़ धरि ओकर बास पहुँचैत छल, आ बाढ़िक पछाति ओहि ठामक नाम कोना लिखल गेल—ई सभ।

हमरा लग तीन प्रकारक कागज छल। पहिल, भूकम्पक पछाति घर-क्षतिक हाथे लिखल सूची। दोसर, वर्षाकालक अन्न-सहायताक बहि। तेसर, पछिला वर्षक लगान-पत्रक नकल। तीनूमे एकहि टोलक नाम पृथक-पृथक रूपमे छल—मुसहर टोली, दक्षिण टोला, खेतिहर बस्ती। कागज बनौनिहारक अनुसार नाम बदलैत रहल। लोक ओएह रहलाह।

भूकम्पक पछातिक सूचीमे सत्ताइस घर लिखल छल। पाँच घर “सम्पूर्ण ढहल”, नौ “रहबा योग्य नहि”, शेषमे भीत फाटल, छप्पर खसल, चूल्हि टूटल, अथवा माटिक देवाल झुकल। एहि सूचीमे घरक मालिकक नाम कम, घरक प्रकार बेसी छल। “फूस”, “माटि”, “एक कोठली”, “दू कोठली”, “ओसार सहित।” जगेसर सदाक नाम कतहु नहि। हुनकर माय केर नाम सेहो नहि। मुदा बुधन सदाक बाबूक नाम छल। एहि सँ हम टोलक ठाम पहचानि सकलहुँ।

सूचीक नीचाँ एकटा पाँति छल—“दक्षिण धारक कात माटि धँसल।” लिखनिहार “धार” शब्द लिखने छल कि “धारक”—अक्षर घिसल छल। हम ओकर अर्थ नहि बढ़ेलहुँ। भूकम्पक समय भूमि फाटल, किछु ठाम धँसल—एतबा दोसर स्मृतिसँ सेहो मेल खाइत छल। नदीक मुख्य धार तखन ओहि ठाम छल कि नहि, कागज नहि कहैत।

वर्षाकालक बहि एकदम दोसर प्रकारक छल। ओतय घरक क्षति नहि, चाउरक माप लिखल छल। नाम, परिवारक लोक-संख्या, देल अन्न। पहिल दू पन्नामे दक्षिण टोलाक अठारह परिवार। तेसर पन्नामे लिखल—“शेष परिवार उत्तरक ऊँच ठाम पर।” चौठ पन्नामे पाँच नाम फेर दोहराओल। पाँचम पन्नाक आधा भाग जलक दागसँ नष्ट।

एहि बहिमे पहिल बेर हम “बस्ती बहि गेल” वाक्य पढ़लहुँ। वाक्यक ऊपर अधिकारीक हस्ताक्षर नहि, नीचाँ सेहो नहि। कोनो कर्मचारी बीचक खाली ठाममे जोड़ने छल। ओकर मसि शेष पाँतिसँ हलुक। तिथि नहि। “बस्ती” सँ कोन सीमा अभिप्रेत, नहि लिखल।

गामक बुजुर्ग लोक ई घटना भूकम्पक कथा जकाँ बेराबेरी नहि कहैत छलाह। भूकम्पक दिनक लेल सभक लग कोनो ने कोनो आवाज छल—घण्टी, भीत, लोटा, गाछ, पशु। बाढ़िक लेल छोट वाक्य छल—“ओहि बेर दक्षिण टोल नहि बचल।” एतबे कहि कऽ लोक अगिला बात पर चलि जाइत छलाह।

हम बाल्यकालमे एक बेर पितामहसँ पुछने रही—दक्षिण टोल कतय छल। ओ अंगुरीसँ खेतक पार देखौने छलाह। ओतय तखन बालू छल। दूटा बाबूरक गाछ। वर्षाकालमे पानि। जाड़मे चराइ। ओ कहलनि—“ओहि दिस।” नाम नहि कहलनि।

हम दोसर बेर पुछलहुँ—ओ लोक फेर कतय बसलाह। उत्तर भेटल—“जतय भूमि भेटल।” ई उत्तर ठाम नहि छल।

पुरान लगान-पत्रक नकल एहि ठाम बेसी उपयोगी भेल। बाढ़िसँ पहिनेक खेत-सीमामे तीन नाम बारम्बार आबैत छल—पूर्वे अमुक खेत, पश्चिमे मुसहर टोलीक बास, दक्षिणे पुरान धार, उत्तरे आम-बारी। बाढ़िक पछिला नकलमे “मुसहर टोलीक बास” नहि छल। ओकर ठाम लिखल—“बालूमय परती।” एक शब्द-समूहक बदला दोसर। एतय कोनो रेखा खुरचल नहि। कोनो नाम काटल नहि। अगिला नकलमे पुरान बास भूमि-प्रकार बनि गेल।

ई परिवर्तन पँजीक मेटाओल पाँतिसँ पृथक छल। ओतय हाथक घर्षण देखाइत छल। एतय जल पहिने माटि बदललक, तकर पछाति कागज बदलल। कागज लिखनिहार जे देखलक, से लिखलक—बालू। मुदा बालूक नीचाँ घरक ठाम छल, से अगिला पन्ना नहि कहैत।

बुधन सदा अपन कथनमे कहने छलाह जे रक्तसिक्त देह पुरान आमक गाछ लग देखल गेल। गाछक ठाम पहचानबाक लेल हम तीन बुजुर्गक पृथक-पृथक कथन पढ़लहुँ। एक कहैत छथि—टोलक उत्तर-पश्चिम। दोसर—पुरान धारक मोड़। तेसर—आम-बारीक नीचाँ। लगान-पत्रक तीनू संकेतकेँ लगभग एकहि पट्टीमे आनैत अछि। ओहि पट्टीक बाढ़ि-पछिला नाम—बालूमय परती।

हम एकटा मानचित्र नहि बनौलहुँ। दूरीक माप पर्याप्त नहि छल। अनुमानक रेखा खींचलासँ कागज यथार्थ नहि होइत। हम केवल तीन संकेत एक पन्ना पर लिखलहुँ आ बीचमे खाली ठाम छोड़लहुँ।

वर्षाकालक जल कखन चढ़ल, एहि परो कथन एक नहि। कियो कहैत छथि—राति। कियो—दोपहर पछाति। कियो—तीन दिनक वर्षा पछाति। एक सरकारी बहिमे “तीव्र धारा” लिखल। दोसर कागजमे “कटान।” गामक लोक “नदी घुरि अएल” कहैत छलाह। भूकम्प नदीकेँ घुमा देलक—ई वाक्य हम ककरो मुँहसँ निश्चित रूपेँ नहि सुनलहुँ। लोक घटना जोड़ैत छल—धरती हिलल, माटि फाटल, वर्षाकाल आयल, धार बदलल, टोल गेल। एहि क्रमक भीतर कारण कतेक, संयोग कतेक, कागज नहि कहैत।

मुदा एक बात निश्चित छल। बाढ़िक पछाति मुसहर टोल ओहि पुरान ठाम पर नहि रहल।

बस्ती बहबाक वर्णनमे लोकक नाम अत्यल्प अछि। एक बूढ़ि स्त्रीकेँ नाव पर चढ़ाओल गेल। दू बालक बाँसक मचान पर राति काटलक। चारि बकरा बहि गेल। एक बैल रस्सी सहित गाछमे अँटकल। अन्नक तीन मटका नष्ट। चूल्हिसभ माटिमे मिलल। एहि सभ विवरणमे फुलझरी नहि। जगेसर नहि। रक्तसिक्त देह नहि। ओ राति मानो वर्षाकालक कागजक विषय नहि छल।

ई स्वाभाविक सेहो छल। राहत बाँटनिहार कर्मचारी तीन मास पहिनेक विवाद नहि खोजैत। ओकर काज जीवित लोकक संख्या गनब, अन्न बाँटब, नावक व्यवस्था करब। मुदा जखन हम २००८मे एहि बहिसभकेँ एक संग देखलहुँ, तखन बुझायल जे प्रशासनिक प्रयोजनक ई स्वाभाविक सीमा

पछिला मौन लेल सुविधाजनक बनि गेल। जे प्रश्न पहिने अनुत्तरित छल, ओकर भौतिक ठामो आब नहि बचल।

भौजीक कथनमे फुलझरीक कोठलीक वस्तुसभ बचल छल—बिछाओन, कंघी, तकली, चूड़ी, तेलक शीशी। बाढ़िक पछाति घर-क्षतिक सूचीमे ओ घरक उल्लेख नहि। परिवारक मुख्य घर गामक ऊँच भागमे छल; बचि गेल। वस्तुसभक बादक हाल कागजमे नहि। दक्षिण टोल बहल, मुदा फुलझरीक नैहरक मुख्य घर नहि बहल। तैँ बाढ़ि ओकर अपन वस्तु प्रत्यक्ष नहि मेटौलक। ओ केवल ओहि भूगोलकेँ मेटौलक जाहिमे जगेसरक घर, पुरान आम, धारक मोड़ आ रक्तसिक्त देहक सम्भावित ठाम पड़ैत छल।

ई अन्तर महत्त्वपूर्ण छल। नदी परिवारक सम्पूर्ण इतिहास नहि बहौलक। नदी एक पक्षक ठाम बहौलक। दोसर पक्षक घर, बहि आ पँजी बचल रहल।

बाढ़िक पछाति राहत-सूचीमे दक्षिण टोलक परिवारसभ पृथक-पृथक गामक नामक नीचाँ लिखल गेल। कियो मामाक बास पर। कियो खेत-मालिकक खलिहान लग। कियो बाँधल मचानक कात। कियो उत्तरक ऊँच पट्टी पर। एहि बिखरावक कारण एकटा पुरान टोल अगिला कागजमे एक इकाई जकाँ नहि भेटैत। लोक बचलाह, मुदा नामक समूह टूटल।

राहत-सूचीमे देल वस्तुसभक हिसाब सेहो छल—चाउर, चूड़ा, नून, तेल, सूखल लकड़ी, दू परिवारक लेल कम्बल, तीन परिवारक लेल बाँस, एक परिवारक लेल फूस। कागज मनुष्यक दुःख नहि, वस्तुक मात्रा गनैत छल। ई ओकर दोष नहि; ओकर प्रयोजन ओएह छल। मुदा एहि मात्रासभक बीच एक तथ्य स्पष्ट भेल—दक्षिण टोलक परिवारसभकेँ एक ठाम फेर बसाओल नहि गेल। जकरा जतय थोड़े दिनक आसरा भेटल, ओतय ओकर नाम चढ़ल।

एक वर्ष पछातिक कागजमे ओहि अठारह परिवारमे सँ सातक नाम दोसर गामक नीचाँ भेटल, चारिक उपनाम बदलल रूपमे, तीनक पहिचान सुनिश्चित नहि भेल, आ शेषक विषयमे हम कोनो निश्चय नहि कयलहुँ। एहि बदलाबक कारण मृत्यु छल, पलायन छल, विवाह छल, कि केवल लिखनिहारक भिन्नता—कागज पृथक नहि करैत। हम नामसभक कात प्रश्नचिह्न नहि देलहुँ; केवल स्रोतक नाम लिखलहुँ।

दक्षिण टोलक भौतिक रेखा टूटलाक संग सामाजिक रेखा सेहो बिखरल। जे परिवार पहिने एक-दोसराक लग रहैत छल, ओ आब खेतक किनार, सम्बन्धीक आँगन, अथवा मालिकक गोठक पाछाँ बसल। एक बुजुर्गक कथनमे आयल—“हमर टोल तखन लोकमे बचल, भूमि पर नहि।” ई वाक्य हम पृथक कागज पर लिखलहुँ। ई तथ्यक माप नहि, मुदा विस्थापनक अनुभवक साक्ष्य छल।

बाढ़िपूर्वक गामक बाटक वर्णनमे “दक्षिण टोल पार कऽ आम-बारी” कहबाक चलन छल। बाढ़िपश्चात् दू संस्मरणमे वएह बाट “बालूक पट्टी पार कऽ” कहल गेल। ठामक नाम मेटेबाक लेल ककरो आदेश आवश्यक नहि पड़ल। चलन बदलल, भाषा बदलल, पछाति कागज बदलल।

जगेसरक मायक नाम खोजैत हम तीन सूचीक अन्त धरि गेलहुँ। निश्चित पहिचान नहि भेल। दू स्त्रीक नाम सम्भावित छल, मुदा दुनूक पति-नाम अस्पष्ट। बुधन सदा कहने छलाह—ओ दू मास साँझमे बाट दिस देखैत रहलीह। जँ बाढ़ि ओहि दू मासक भीतर आयल, तखन हुनकर घरक ठाम बहि गेल होयत। जँ पछाति आयल, तखन ओ पहिने सँ कोनो आन ठाम गेल होयतीह। तिथि निश्चय करबाक आधार नहि। हम दुनू सम्भावना पृथक लिखलहुँ।

ओहि कागजक कात हम एक प्रश्न लिखलहुँ—“घर नहि रहल तऽ प्रतीक्षा कतय गेल?”

प्रश्नक उत्तर नहि छल।

बाढ़ि पछातिक पहिल विवाह-अभिलेख देखैत हम एक आरो परिवर्तन देखलहुँ। दक्षिण टोलक लोकक परिचयमे पुरान ठामक नाम कम भऽ गेल। नब बासक नाम आयल। “अमुक गाममे अस्थायी”, “अमुक टोलमे रहनिहार”, “मजदूरी हेतु रहैत।” भूमिहीन परिवारक परिचय भूमिसँ अधिक सम्बन्धी अथवा मालिकक नामसँ होमय लगल। पँजीक संसारमे मूल आ ग्राम स्थिर मानल जाइत; एहि सरकारी बहिसभमे ग्राम जलसँ चलि सकैत छल।

हम सोचलहुँ—जे समाज एक मनुष्यक नाम पाँतिसँ मेटा सकैत अछि, ओ नदीक बाद एक सम्पूर्ण टोलक नाम कागजसँ गुम भऽ जाइत देखियो ओकरा साधारण परिवर्तन मानि सकैत अछि। मुदा ई विचार हम अपन टिप्पणीमे नहि लिखलहुँ। टिप्पणीमे केवल तथ्य राखलहुँ—बाढ़िपूर्व “मुसहर टोलीक बास”; बाढ़िपश्चात् “बालूमय परती।”

चारू साक्ष्यक पन्ना फेर खोललहुँ। बुधन सदाक कथनमे एक पाँति छल—“भूमि सेहो सब किछु मोन नहि रखैत।” पहिने ई वाक्य हमरा भावक वाक्य बुझायल छल। बाढ़िक कागज पढ़लाक पछाति एकर भौतिक अर्थ स्पष्ट भेल। भूमि जे ठाम घर छल, ओ बालू भेल। आमक गाछक ठाम बादमे नहि भेटल। पुरान धारक मोड़ अगिला वर्षक मानचित्रमे सीधा नहि चिन्हायल। साक्ष्यक भूगोल बदलल।

तथापि सभ किछु नहि मेटल। लगान-पत्रक पुरान नकल बचल। घर-क्षतिक सूची बचल। अन्न-सहायताक बहि बचल। लोकक मुँहक दू-चारि वाक्य बचल। आ पँजीक खुरचल पाँति बचल। नदी माटि मेटबैत अछि, मुदा सभ कागज एकहि बेर नहि। कागज लोक मेटबैत अछि, मुदा सभ चिन्ह मेटि नहि सकैत।

एहि ठाम हम अपन पितामहक पिताक भूमिकाक विषयमे कोनो नव निष्कर्ष नहि लिखलहुँ। बाढ़ि हुनकर काजक प्रमाण नहि। ओ केवल पछिला जाँच कठिन करैत अछि। मुख्य पाँतिमे जे मेटाओल गेल, ओकर बाहरी भूगोल सेहो किछु मास पछाति जलसँ बदलि गेल—एतबा क्रम अछि। “सुविधा” शब्द लिखब हमरा अनुचित बुझायल, कारण नदी ककरो सुविधा लेल नहि बहैत। मुदा लोक एहि परिवर्तनक सुविधा लए सकैत अछि। एहि बातक प्रमाण प्रत्यक्ष नहि, केवल बादक मौन अछि।

बाढ़ि पछातिक ग्राम-बैसारक एक पन्ना भेटल। विषय—उच्च ठाम पर नव बास लेल भूमि। पाँच परिवारक नाम। तेसर नामक आगाँ लिखल—“दक्षिण टोलक।” जाति नहि। पुरान घरक संख्या नहि। प्रस्तावक नीचाँ दू हस्ताक्षर, चारि अंगूठा-चिह्न। निर्णय—“अस्थायी रूपेँ रहबाक अनुमति।” स्थायी अधिकारक बात नहि।

ओहि पन्नाक पछिला भाग खाली छल।

ग्राम-बैसारक एहि पन्नामे एक आरो बात ध्यान देबाक छल। पाँच परिवारक लेल “अस्थायी” शब्द लिखल गेल, मुदा पछिला कागजमे ओहि अस्थायी बासमे सँ दू ठाम स्थायी घरक रूपमे देखाइत अछि। “अस्थायी” कखन स्थायी भेल, कोनो पृथक निर्णय नहि भेटल। प्रशासनिक शब्दक आयु कागज पर छोट छल; लोकक बासक आयु लम्बा। एहि अन्तरक कारण पुरान टोलक पुनर्निर्माण स्वतः प्रश्नसँ बाहर भऽ गेल।

हम ओहि खाली भागकेँ दीर्घ समय देखलहुँ। एतय कोनो खुरचन नहि। कोनो मेटाओल मसि नहि। केवल कागजक उज्जर भाग। कखनो रिक्ति बनाओल जाइत अछि। कखनो रिक्ति एही कारण रहि जाइत अछि जे कियो आगाँ लिखबाक आवश्यकता नहि बुझैत। दुनूक परिणाम पछिला पाठक लेल एक्के जकाँ देखाइत अछि।

खण्डक आरम्भमे हम तीन नामक उत्तरवर्ती पाँति नहि भेटलासँ जल-क्षतिक अनुमान कयने रही। आब जल-क्षति शब्दक अर्थ पैघ भऽ गेल छल। जल केवल अक्षर नहि धोइत। जल ठाम बदलैत अछि। ठाम बदललाक पछाति नामक सन्दर्भ बदलैत अछि। सन्दर्भ बदललाक पछाति अगिला लिखनिहार पुरान पाँति छोड़ि सकैत अछि, बिना ई जाने जे ओ ककर इतिहास छोट करैत अछि।

१९३४क बाढ़िक कागज सभसँ अन्तमे हम दू पाँति लिखलहुँ।

पहिल—“दक्षिणक मुसहर टोल पुरान ठामसँ उजड़ल।”

दोसर—“रातिक घटनाक सम्भावित भौतिक ठाम बाढ़िपश्चात् पहचानब कठिन।”

तेसर पाँति लिखबाक लेल कलम उठेलहुँ। मनमे आयल—“एहि सँ लाभ ककरा भेल?”

हम नहि लिखलहुँ।

कागज पर प्रश्नक उत्तरक प्रमाण नहि छल।

बाहर वर्षा नहि छल। २००८क जल घरसँ बेसी दूर नहि छल, मुदा ओहि राति हमर कोठली शान्त छल। पुरान बहिसभ समेटि पँजीक गट्ठरक कात राखलहुँ। एक दिस १९३४क खुरचल पाँति, दोसर दिस १९३४क बालूमय परती। एकटा मनुष्यक हाथक काज। दोसर जलक काज। दुनूकेँ एक वाक्यमे मिलेनाइ उचित नहि छल।

हम पृथक-पृथक राखलहुँ।

खण्ड ३ — बान्ह (१९५४–१९६६)

अध्याय १७ — सन्धि

१९५४क बैसाखमे हमरा अठारह वर्ष छलहुँ। गाममे कोसीक विषयमे जे पहिल खबरि पहुँचल, ओ कागज पर नहि छल। हाटसँ घुरैत लोक कहलक जे नेपाल आ भारतक बीच कोसीक जल रोकबाक विषयमे सन्धि भेल अछि। दोसर दिन ओही खबरि बदलि गेल—कोसी पर पैघ बाँध बनत। तेसर दिन कहल गेल—नदीकेँ दू तटबन्धक बीच बाँधि देल जाएत। चारिम दिन कियो कहलक जे गाम उठाओल जाएत। ककरो लग कागज नहि छल।

हम पितामहक कात पँजीक पन्ना सुखा रहल छलहुँ। ओ खबरि सुनि केवल पुछलनि—“ककर कहल?”

उत्तरमे तीन नाम आयल—हाटक तेली, डाकघरक मुंशी, आ थाना दिससँ आएल एक सिपाहीक साला। पितामह कहलनि—“तीनू साक्षी एक नहि।”

ओहि समय हमरा ई वाक्य केवल पँजीक नियम बुझाइत छल। पछाति बुझलहुँ जे गामक नव इतिहासक आरम्भो एही रूपेँ भेल—तीन खबरि, तीन स्रोत, कोनो मूल कागज नहि।

दू सप्ताह पछाति डाकघर पर अखबारक एक पुरान प्रति आयल। कागजक कोना फाटल छल। बीचक एक छोट समाचारमे काठमाण्डूक नाम, पच्चीस अप्रैल, भारत सरकार, नेपाल सरकार, कोसी परियोजना, बैराज, नहर, बाढ़ि-नियन्त्रण आ विद्युत शब्द छल। डाकघरक मुंशी पढ़ि सुनौलक। लोक सभ “बैराज” शब्द पर अटकि गेल।

“बैराज की?”

कियो कहल—“बाँध।”

कियो कहल—“फाटक।”

मुंशी फेर पाँति पढ़लक। ओकरा सेहो भेद स्पष्ट नहि छल।

हम अखबार हाथमे लऽ कऽ शब्दसभ फेर पढ़लहुँ। कागज पर ‘बाढ़ि-नियन्त्रण’ लिखल छल। ‘सिंचाइ’ लिखल छल। ‘विद्युत’ लिखल छल। ‘नेपालक भूमिमे निर्माण’ लिखल छल। गामक नाम नहि छल।

गामक लोकक पहिल प्रश्न गामक नामक विषयमे छल।

“हमर गाम कतय पड़त?”

अखबार एहि प्रश्नक उत्तर नहि दैत छल।

पितामह अखबार देखलनि। ओ परियोजनाक लाभ वा हानि पर किछु नहि कहलनि। केवल तिथि लिखि लेलनि—२५ अप्रैल १९५४। पँजीक खाली कागज पर नहि; अपन पृथक बहिमे। ओ बहि घरक खर्च, आगन्तुक, विवाह-सम्बन्धक चिट्ठी आ असामान्य घटनाक छोट लेखा लेल छल। ओ लिखलनि—“कोसी विषयक भारत-नेपाल सन्धिक समाचार प्राप्त।”

हम पुछलहुँ—“एतबे?”

ओ कहलनि—“एखन एतबे प्रमाण अछि।”

ज्येष्ठक आरम्भमे पहिल सरकारी कागज अएल। मुखियाक घर पर। ओ कागज पढ़बाक लेल चारि लोक जमा भेल। हम पाँचम छलहुँ। ऊपर विभागक नाम, नीचाँ कोसी परियोजना, आ बीचमे सर्वेक्षणक सूचना छल। नदी, तट, खेत, बाट, नाला, ऊँचाइ, माटि आ दूरी नापल जाएत। आवश्यक ठाम कर्मचारी प्रवेश करताह। उपकरण आनल जाएत। चिन्ह लगाओल जाएत। गामक लोक सहयोग करथि।

मुखिया कागज पढ़ि कऽ कहलनि—“एहि मे घर तोड़बाक बात नहि अछि।”

एक वृद्ध किसान पुछलनि—“घर बचबाक बात अछि?”

मुखिया फेर कागज देखलनि। उत्तर नहि देलनि।

ओहि दिन साँझमे चौपाल पर ‘सन्धि’ शब्द पहिल बेर अखबारक शब्द नहि, गामक शब्द बनल। कियो कहैत छल जे दिल्ली नदीकेँ सीधा करत। कियो कहैत छल जे नेपाल पहाड़मे जल रोकि देत। कियो कहैत छल जे नहर आबि गेलापर धानक उपज दुगुना होयत। एक खेतिहर कहलनि जे

नदी जँ दू तटबन्धक बीच रहत तऽ बाहरक खेत सुरक्षित रहत। दक्षिण टोलक एक वृद्ध पुछलनि—“दू तटबन्धक बीच जे रहत, ओकर की?”

उत्तरमे मौन छल।

एहि प्रश्नक अर्थ तखन हमरा स्पष्ट नहि छल। तटबन्धक रेखा कतय होयत, कियो नहि जनैत छल। नक्शा एखन गाममे नहि पहुँचल छल।

तीन दिन पछाति दू कर्मचारी आएल छलाह। एक स्थानीय अमीन छलाह, दोसर बाहरक सर्वेक्षण-कर्मचारी। हुनका संग एक लम्बा चेन, दू लाल-सफेद दण्ड, एक तिपैया, चमड़ाक पेटी, कागजक नली, हथौड़ी, काठक खूँटी, आ एक छोट बहि छल। बैलगाड़ी पर दू पेटी आरो छल। गामक बालकसभ उपकरण देखबाक लेल पाछाँ-पाछाँ चलल।

सर्वेक्षण-कर्मचारी पहिने मुखियाक घर गेलाह। कागज देखौलनि। मुखिया हस्ताक्षर कयलनि। तकर पछाति ओ लोक खेत दिस बढ़लाह।

हम सेहो गेलहुँ। कारण उत्सुकता छल, काज नहि।

पहिल माप पोखरिक पश्चिमी कोनासँ लेल गेल। अमीन चेन पसारैत छलाह। एक बालक चेन पर पएर राखि देलक। अमीन ओकरा हटौलनि। सर्वेक्षण-कर्मचारी तिपैया खोलि यन्त्र राखलनि। दूरक दण्ड दिस देखलनि। बहिमे अंक लिखलनि। फेर दण्ड दोसर ठाम गेल।

गामक लोक अंक नहि देखैत छल। लोक खूँटी देखैत छल।

पहिल काठक खूँटी खेतक मेड़ पर गाड़ल गेल। हथौड़ी तीन बेर बजल। खेत मालिक पुछलक—“ई कोन रेखा?”

अमीन कहलनि—“एखन केवल सर्वेक्षणक चिन्ह।”

“तटबन्ध?”

“एखन नहि कहल जा सकैत।”

“नहर?”

“एखन नहि।”

“भूमि लेत?”

“हमरा लग ओ आदेश नहि।”

चारि प्रश्न। तीन बेर एखन नहि। एक बेर आदेश नहि।

हमरा ई क्रम मोन रहि गेल।

दोपहर धरि पाँच खूँटी गाड़ल गेल। दू पर लाल रंगक छोट दाग देल गेल। एक खेतक मालिक दाग मेटा देबाक विचार व्यक्त कयलक। ओकर भाइ रोकलक—सरकारी चिन्ह छेड़लासँ झंझट होयत। साँझ धरि लाल दाग गामक चर्चाक मुख्य विषय बनि गेल।

पितामह हमरा पुछलनि—“की देखलह?”

हम वस्तुसभ कहलहुँ—चेन, दण्ड, तिपैया, बहि, खूँटी, लाल रंग।

ओ पुछलनि—“की कहलनि?”

हम चारू प्रश्न आ उत्तर कहलहुँ।

ओ कहलनि—“वस्तु पृथक लिख। कथन पृथक।”

एहि नियमक अभ्यास हम पँजीमे कयने छलहुँ। ओहि राति पहिल बेर सरकारी सर्वेक्षण पर लागू कयलहुँ।

हम पृथक बहिमे लिखलहुँ—

आएल व्यक्ति: दू।
स्थानीय अमीन: एक।
बाहरक सर्वेक्षण-कर्मचारी: एक।
उपकरण: चेन, दण्ड, तिपैया-यन्त्र, कागजक नली, हथौड़ी, खूँटी।
गाड़ल खूँटी: कम सँ कम पाँच।
लाल चिन्ह: दू देखल।

घोषित उद्देश्य: सर्वेक्षण।

तटबन्धक अन्तिम रेखा: अज्ञात।

नहरक रेखा: अज्ञात।

भूमि-अधिग्रहण: एहि दिनक कथनमे पुष्टि नहि।

हम “गाम बाँचत” नहि लिखलहुँ।

हम “गाम डूबत” सेहो नहि लिखलहुँ।

दोसर दिन सर्वेक्षण दल उत्तरक खेतसभमे गेल। एहि बेर हुनका संग तीन मजदूर छलाह। एक दण्ड उठबैत, एक झाड़ी काटैत, एक खूँटी लऽ चलैत। झाड़ी कटबाक ठामक चौड़ाइ हाथ-दू हाथ सँ बेसी नहि छल। तथापि लोक कहए लगल जे “रेखा बनि रहल अछि।”

रेखा कागज पर छल कि खेतमे, ई भेद लोकक लेल छोट छल। खूँटी गड़ल तऽ रेखा मानल गेल।

एक स्त्री अपन खेतक कात ठाढ़ भऽ पुछलनि—“एतय नहर आयत?”

अमीन कहलनि—“माइ, एखन माप अछि।”

ओ कहलनि—“मापो तऽ किछु लेल होइत अछि।”

अमीन मौन रहलाह।

ओहि उत्तरक अभाव हमरा अखबारक पहिल समाचारसँ बेसी स्पष्ट लागल। सन्धि काठमाण्डूमे लिखल गेल छल। ओकर उद्देश्य कागज पर चारि-पाँच शब्दमे छल—बाढ़ि-नियन्त्रण, सिंचाइ, विद्युत, कटाव-रोकथाम। मुदा गाममे सन्धि खूँटीक रूपमे पहुँचल। खूँटी जे खेतक मेड़ पर गड़ैत छल, ओकर चारू कात प्रश्न आबैत छल—ई भूमि? ई घर? ई बाट? ई पोखरि? ई श्मशान? ई टोल?

सर्वेक्षण-कर्मचारी सभ प्रश्नक उत्तर नहि दैत छलाह। हुनकर काज माप छल।

चौथम दिन सर्वेक्षणक रूप बदलल। एहि बेर चेन नहि, माटि जाँचबाक सामान आयल। दू मजदूर लोहमय बेधनी घुमबैत माटिमे उतारैत छलाह। गोल नली बाहर अबैत तऽ भीतरक माटि तह-तह देखाइत छल—ऊपर करिया, तकर नीचाँ धूसर, फेर बालू। कर्मचारी छोट कागजी पुड़ियामे नमूना

राखैत छलाह। पुड़ियाक ऊपर अंक लिखैत छलाह। खेत मालिक पुछलक—“एहि माटिसँ की बुझब?”

कर्मचारी कहलनि—“नीचाँक धरती।”

“नीचाँक धरती बुझि कऽ की करब?”

“निर्माणक जाँच।”

“एतय निर्माण?”

कर्मचारी कहलनि—“रेखा निश्चित नहि।”

एहि दिन लोकक डर खूँटीसँ माटिक नली पर गेल। एक वृद्ध कहलनि जे जँ लोक धरतीक भीतर धरि देखए लगल तऽ किछु पैघ काज अवश्य अछि। दोसर कहलनि जे सरकारक लोक माटि देखैत छथि तऽ बाट बनैत अछि। तेसर कहलनि जे नहर लेल धरती जाँचल जाइत अछि। कियो प्रमाण नहि देलक।

हम माटिक पुड़ियासभक अंक देखलहुँ—एक, दू, तीन, चारि नहि; अक्षर आ संख्या मिला कऽ चिन्ह। कर्मचारीक बहिमे ओही चिन्ह छल। खेतक मालिकक नाम कतहु हमरा देखाइत नहि छल। ठाम संख्या बनि रहल छल।

साँझमे हम पितामहसँ कहलहुँ—“खेतक नाम नहि लिखैत छथि, अंक लिखैत छथि।”

ओ कहलनि—“अंकसँ हुनकर काज चलैत होयत।”

“नाम नहि रहत तऽ ठाम कोना पहचानताह?”

“नक्शा रहत।”

हम पुछलहुँ—“नक्शामे नाम अशुद्ध रहत तऽ?”

ओ हमरा दिस देखलनि। “तँ जखन पुछथि तखन शुद्ध कहिह।”

गामक दोसर छोर पर एहि बीच एक पृथक लेखा चलि रहल छल। ककर खेतमे खूँटी गड़ल, ककर खेतक माटि लेल गेल, कोन मेड़ पर लाल चिन्ह भेल—लोक अपन स्मृतिमे सूची बनबैत छल। कियो कागज पर नहि लिखैत छल। पाँचम दिन धरि एक किसान तेरह खूँटी गनि चुकल छल। दोसर कहैत छल सोलह। बालकसभ उन्नैस कहैत छल। अमीनक बहि हमरा देखबाक अधिकार नहि छल।

गिनती स्वयं खबरि बनि गेल।

तेरह खूँटी मतलब तटबन्ध।
सोलह मतलब नहर।
उन्नैस मतलब गामक आधा भाग सरकारी भूमि।

ई अर्थ खूँटी पर नहि लिखल छल। लोक जोड़ैत छल।

ओहि सप्ताह एक साइकिल पर तहसीलक कागज लऽ कऽ एक कर्मचारी अएल। मुखियाक ओसार पर राजस्व-नक्शाक नकल खोलल गेल। सर्वेक्षणक नक्शा आ राजस्व-नक्शा एक-दोसराक कात राखल गेल। दू कागजमे पुरान धारक मोड़ एक समान नहि छल। कर्मचारीसभ आपसमे चर्चा कयलनि। हम दूर छलहुँ, शब्द स्पष्ट नहि सुनल। बादमे अमीन कहलनि जे पुरान नक्शा अनेक ठाम अनुमान पर अछि, नव मापसँ रेखा सुधरत।

“सुधरत” शब्द हमरा अटपटा लागल।

पँजीमे जखन कोनो नाम बदलैत छी तऽ कारण लिखैत छी। नक्शामे रेखा बदलल तऽ पुरान रेखाक कारण कतय रहत? ई प्रश्न तखन हम नहि पुछलहुँ।

ओहि राति पृथक बहिमे लिखलहुँ—“पुरान राजस्व-नक्शा आ नव सर्वेक्षण-रेखामे भेद देखल। कारण नहि सुनल।”

हम “पुरान अशुद्ध” नहि लिखलहुँ।
हम “नव शुद्ध” सेहो नहि लिखलहुँ।

गाममे एक छोट बैसार भेल। मुखिया कहलनि जे सर्वेक्षणक लोकक काज रोकल नहि जाए। खेतक मेड़ पर लगाओल चिन्ह कियो उखाड़थि नहि। एक किसान कहलनि जे ओकर धानक

रोपनीक ठाम खूँटी अछि। अमीन कहलनि—खूँटीक चारू कात रोपनी कयल जा सकैत अछि, खूँटी नहि हटाबी। एक स्त्री कहलनि जे बालक खेलैत-खेलैत उखाड़ि देत। तखन खूँटीक कात काँटावला डाढ़ गाड़ल गेल।

सरकारी चिन्ह बचेबाक लेल गामक काँट बचाओल गेल।

बैसारमे पहिल बेर ‘क्षतिपूर्ति’ शब्द सुनलहुँ। एक लोक पुछलक—“जँ भूमि लेत तऽ मूल्य भेटत?”

मुखिया कहलनि—“एखन भूमि लेबाक कागज नहि अछि।”

“पछाति?”

“पछातिक कागज पछाति।”

ई उत्तर पर हँसी नहि भेल।

पितामह बैसारमे नहि गेल छलाह। हम घुरि कऽ कहलहुँ। ओ पुछलनि—“कागजमे मूल्य छल?”

“नहि।”

“तँ बहिमे सेहो नहि लिखिह।”

हम बुझैत गेलहुँ जे हुनकर लेल अनिश्चित बात नहि लिखब निष्पक्षता मात्र नहि, आत्मरक्षा सेहो छल। लिखल शब्द पछाति साक्ष्य बनैत अछि। साक्ष्य बनलाक पछाति लोक लेखककेँ सेहो पकड़ैत अछि।

तीसर दिन ओ लोक पुरान धारक कात गेलाह। ओहि ठाम १९३४क बाढ़िपछाति बालूक पट्टी बनल छल। दक्षिण टोलक पुरान ठामक विषयमे बुजुर्गसभक कथन पृथक-पृथक छल। अमीन एक वृद्धसँ पुछलनि—“पुरान बस्ती कतय धरि छल?”

वृद्ध हाथसँ दू दिशा देखौलनि। निश्चित सीमा नहि कहलनि।

अमीन दोसर लोकसँ पुछलनि। दोसर लोक पहिलसँ लगभग पचास हाथ पश्चिम देखौलक।

सर्वेक्षण-कर्मचारी बहिमे किछु लिखलनि।

हम दूर ठाढ़ छलहुँ। हमरा अध्याय ९क बुजुर्ग-स्मृति तखन नहि छल; ओ सभ दीर्घ काल पछातिक संकलन अछि। मुदा एतय पहिल बेर देखलहुँ जे सरकारी नक्शा बनबैत कालो लोकक स्मृति मापमे प्रवेश करैत अछि। दण्ड सीधा रहैत अछि; उत्तर देनिहारक अंगुरी आवश्यक रूपेँ सीधा नहि रहैत।

दोपहरमे सर्वेक्षण-कर्मचारी हमरा पुछलनि—“तोरा पुरान गामक नाम सभ बुझाइत छौ?”

हम कहलहुँ—“किछु।”

ओ मुखियासँ सुनने छलाह जे हमर घरमे पँजी अछि।

ओ कहलनि—“काल्हि कागज देखबाक आवश्यकता पड़ि सकैत अछि।”

हम पुछलहुँ—“कोन कागज?”

“गामक नाम, पुरान टोला, सीमा, वंश नहि—ठामक नाम।”

हम पहिल बेर बुझलहुँ जे पँजीक शब्द सरकारी नक्शाक काजमे सेहो आबि सकैत अछि।

घर घुरि पितामहकेँ कहलहुँ। ओ किछु देर मौन रहलाह। तकर पछाति पुछलनि—“ओ लोक पँजी माँगलक?”

“नहि। नाम बुझबाक लेल कहलनि।”

“तँ नाम कहिह। जतेक निश्चित अछि, ओतबे।”

“पुरान टोलक नाम?”

“जँ पँजीमे अछि तऽ पँजी देखिह। जँ लोकक मुँहमे अछि तऽ कहिह जे लोकक कथन अछि।”

हम पुछलहुँ—“सरकारी नक्शामे पँजीक नाम चढ़त तऽ?”

ओ कहलनि—“कागज बदललासँ नामक स्वरूप बदलैत अछि। एहि लेल स्रोत कहब आवश्यक।”

ई वाक्य हम लिखि लेलहुँ।

ओहि राति १९५४क सन्धिक समाचारवला अखबार, मुखियाक सर्वेक्षण-सूचना, आ अपन लिखल वस्तु-सूची तीनू एक ठाम राखलहुँ। तीनू कागज पृथक प्रकारक छल। पहिल कागज कहैत छल जे दू सरकार सहमत भेल। दोसर कहैत छल जे सर्वेक्षण होयत। तेसर कहैत छल जे हमर आँखिक सोझाँ की-की देखल गेल।

तीनूमे गामक भविष्य नहि लिखल छल।

राति पितामह दीप बुझबासँ पहिने कहलनि—“काल्हि जँ नाम पढ़बह तऽ अक्षर पढ़िह, इच्छा नहि।”

हम तखन एहि वाक्यक भार नहि बुझने रही।

भोरमे सर्वेक्षण दल फेर आयल। एहि बेर बाहरक कर्मचारीक हाथमे कागजक नली खुलल छल। भीतर नक्शा छल। गामक बाहरी रेखा, नदी, पुरान धार, किछु बाट, किछु नाम। सभ नाम शुद्ध नहि छल। दू गामक उच्चारण बिगड़ल छल। एक टोलक नाम गायब छल।

ओ कागज भूमि पर नहि राखलनि। मुखियाक ओसार पर खोललनि। चारू कोना ईंटसँ दबाओल गेल।

हम सोझाँ बैसलहुँ।

सर्वेक्षण-कर्मचारी एक नाम पर अंगुरी रखलनि।

“ई कोन गाम?”

हम पढ़लहुँ। उच्चारण सुधारलहुँ।

दोसर नाम।

हम फेर पढ़लहुँ।

तेसर नामक आगाँ खाली ठाम छल।

ओ पुछलनि—“एतय?”

हम उत्तर देबाक पहिने पितामहक वाक्य मोन कयलहुँ—जतेक निश्चित अछि, ओतबे।

हम कहलहुँ—“पुरान नामक जाँच करबाक होयत।”

कर्मचारी पेन्सिल रोकलनि।

“काल्हि देखब।”

ओहि क्षण हमर पहिल सरकारी काज आरम्भ नहि भेल छल। केवल एक शब्द रोकल गेल छल। मुदा पछिला अध्यायसभक हिसाबसँ देखैत छी तऽ ओही रोकल शब्द हमरा जीवनक दोसर पँजी दिस लऽ गेल।

ओहि दिन साँझमे गामक पश्चिमी खेतमे एक आरो काठक खूँटी गाड़ल गेल।

खूँटी पर लाल रंग छल।

ओकर कात कोनो वाक्य नहि लिखल छल।

अध्याय १८ — नक्शा

भोरक बाद मुखियाक ओसार पर नक्शा फेर खोलल गेल। चारू कोना ईंट राखल छल। रातिक नमी सँ कागजक दू कोन हल्का मोड़ि गेल छल। बाहरक सर्वेक्षण-कर्मचारी एक कपड़ासँ कागजक ऊपरक धूर झाड़लनि। स्थानीय अमीन अपन बहि खोललनि। तेसर व्यक्ति ओहि दिन नव छलाह—राजस्व-दफ्तरक लिपिक। हुनका लग पुरान नक्शाक नकल, एक मोट बहि आ ढेर पातल कागज छल।

हमरा बैसबाक लेल ओसारक किनार पर पीढ़ी देल गेल।

कर्मचारी पुछलनि—“तोहर नाँव?”

“रामानुग्रह मिश्र।”

“वयस?”

“अठारह।”

ओ लिपिक दिस देखलनि। लिपिक बहिमे किछु लिखलनि। फेर कर्मचारी कहलनि—“काल्हि जे नाम रोकल गेल छल, ओहि सँ आरम्भ करब।”

हम नक्शा दिस देखलहुँ। तेसर नामक आगाँ पेन्सिलक छोट बिन्दु छल। काल्हि ओतय किछु नहि छल। बिन्दु प्रश्नक चिन्ह नहि छल; प्रश्नचिह्न लगाओल नहि गेल छल। केवल ई चिन्ह छल जे ओ ठाम पर लेखन रोकल गेल।

हम पितामहक कहल बात मोन कयलहुँ—अक्षर पढ़िह, इच्छा नहि।

हम घरसँ मूल पाँजि नहि अनने रही। पितामह अनुमति नहि देने छलाह। ओ तीन कागज पर आवश्यक अंश उतारि देने छलाह। पहिल कागजमे गामक पुरान नाम आ ओकर दू रूप। दोसरमे दक्षिणक टोलक नाम। तेसरमे ओहि पोखरिक नाम जे पुरान वंश-पाँतिमे सीमा बुझयबाक प्रसंगमे बेराबेरी अबैत छल। सभ कागजक नीचाँ पितामह लिखने छलाह—“मूल पोथी घरमे।”

हम पहिल पर्ची खोललहुँ।

“एतय पुरान रूप ‘सोनबरसा’ अछि,” हम कहलहुँ, “पछिला पाँतिसभमे ‘सोनबरिसा’ सेहो भेटैत अछि। गाममे एखन ‘सोनबरसा’ कहल जाइत अछि।”

लिपिक पुछलनि—“एकटा नाँव चाही।”

हम कहलहुँ—“एखनक उच्चारण सोनबरसा।”

ओ ‘सोनबरसा’ लिखलनि। पुरान दोसर रूप सरकारी कागजमे नहि गेल।

दोसर नाम पर कर्मचारी अंगुरी रखलनि। नक्शामे ‘कमलपुर’ लिखल छल। पर्चीमे ‘कमलपुरा’ छल। गामक लोक ‘कमलपुरा’ कहैत छल। अमीन सेहो ‘कमलपुरा’ कहलनि। लिपिक पुरान लेख काटि ‘कमलपुरा’ कयलनि।

तेसर ठाम कठिन छल। नक्शामे कोनो नाम नहि। रेखा मात्र। पर्चीमे लिखल छल—“दक्षिण टोल, मुसहर बसावट, पुरान धारक पूब।”

कर्मचारी पुछलनि—“एखन बसावट अछि?”

हम कहलहुँ—“ओहि ठाम नहि।”

“तँ एखन नाँव किएक?”

हम उत्तर नहि देलहुँ। प्रश्न हमरा काजक सीमा पर छल। पर्ची केवल पुरान अभिलेखक बात कहैत छल।

अमीन कहलनि—“भूकम्पक पछाति धार बदलल। टोल हटि गेल।”

लिपिक पुछलनि—“लोक कतय गेल?”

अमीन कन्हा उचकौलनि। “किछु पश्चिम, किछु परदेस, किछु ज्ञात नहि।”

कर्मचारी कहलनि—“नक्शामे वर्तमान ठाम चाही। पुरान बसावट टिप्पणीमे रहि सकैत अछि।”

लिपिक पातल कागज पर लिखलनि—“पुरान बसावट।” जाति वा टोलक नाम नहि लिखलनि।

हम पुछलहुँ—“नाम नहि लिखब?”

ओ कहलनि—“जँ एखन गाम नहि अछि तँ मुख्य नक्शामे नहि।”

“पाँजिमे नाम अछि।”

“पाँजि वंशक कागज अछि। ई भू-अभिलेखक काज अछि।”

ओ वाक्य हमरा मोन रहि गेल। एहि दिन पहिल बेर कोनो लोक हमरा सोझाँ पाँजि आ भू-अभिलेखक बीच रेखा खींचलक।

कर्मचारी दोसर पन्ना खोललनि। ओतय नदीक पुरान धार नीला पेन्सिलसँ, खेतक सीमा करिया रेखासँ, आ सर्वेक्षणक नव बिन्दु लाल रंगसँ छल। गामक भीतर घर-घर नहि बनाओल छल। किछु बाट, पोखरि, मन्दिर, बाँस-बाड़ी आ पैघ खेत-खण्ड मात्र।

ओ कहलनि—“तोरा पुरान पोखरिक नाम बुझाइत छौ?”

हम पर्ची देखलहुँ। “हरिण पोखरि।”

लिपिक लिखलनि—“हरीन पोखर।”

हम कहलहुँ—“हरिण। णकार।”

ओ हमरा दिस देखलनि। “उच्चारण?”

“हरिण।”

अमीन हँसलाह नहि। केवल कहलनि—“एतय लोक हरिणे कहैत अछि।”

लिपिक काटि फेर लिखलनि। एहि बेर ‘हरिण पोखरि’।

हम अक्षर देखलहुँ। एक अक्षरक सुधार छोट काज छल। मुदा हमरा भीतर किछु शान्त भेल। पँजीकारक घरमे अक्षर केवल ध्वनि नहि; वंशक बाट अछि। नक्शामे अक्षर ठामक बाट बनैत छल।

दुपहर धरि हम एगारह नाम पढ़लहुँ। पाँच नाम नक्शामे पहिनहिसँ छल। तीनक वर्तनी बदलल गेल। दू नाम पहिल बेर जोड़ल गेल। एक नाम—दक्षिण टोल—मुख्य नक्शामे नहि गेल; पातल सहायक कागज पर “पुरान बसावट” बनि रहल।

ओहि एगारह नामक लेल लिपिक एक पृथक नाम-पत्र बनौलनि। हम ओकर नकल अपन छोट बहिमे उतारि लेलहुँ। ओहि दिनक क्रम एहि प्रकारक छल—

सोनबरसा — पाँजिमे दू रूप — गामक वर्तमान उच्चारण: सोनबरसा — नक्शामे: सोनबरसा।
कमलपुरा — पुरान नक्शामे कमलपुर — लोकक उच्चारण: कमलपुरा — नक्शामे: कमलपुरा।
हरिण पोखरि — पुरान नक्शामे हरीन पोखर — पाँजि आ लोकक उच्चारण एक — नक्शामे: हरिण पोखरि।
दक्षिण टोल — पाँजिमे स्पष्ट — वर्तमान बसावट ओहि ठाम नहि — मुख्य नक्शामे: नहि — सहायक पन्नामे: पुरान बसावट।
चन्द्राही — पाँजिमे सीमा-सूचक नाम — खेतक लोकक उच्चारण समान — नक्शामे: चन्द्राही।
पुरान कोसी — पाँजिमे कौशिकी धार — वर्तमान लोकनाम: पुरान कोसी — नक्शामे: पुरान कोसी।

एहि सूचीमे सभसँ पैघ अन्तर अक्षरक नहि, स्थानक छल। किछु नाम मुख्य नक्शामे गेल, किछु सहायक पन्नामे, किछु केवल हमर पर्चीमे रहल। हम तखन पहिल बेर बुझलहुँ जे कागजमे नाम लिखब मात्र पर्याप्त नहि; **कोन कागजमे** लिखल गेल, ई सेहो ओकर भावी जीवन ठहरबैत अछि। मुख्य नक्शा अगिला कर्मचारीक सोझाँ रहत। सहायक पन्ना दफ्तरक

गट्ठरमे जा सकैत अछि। हमर पर्ची घरक पेटीमे। तीनू ठाम एकहि नामक भविष्य समान नहि।

लिपिक हमरा कहलनि—“मुख्य नक्शामे जे नहि समा रहल अछि, ओकरा टिप्पणीमे राखि देब।”
हम पुछलहुँ—“टिप्पणी पछाति नक्शा संग रहत?”
ओ कहलनि—“दफ्तरक नियम अनुसार रहबाक चाही।”
“चाही” शब्द हम पृथक सँ मोन राखलहुँ। ई प्रमाण नहि छल।

लिपिक बीच-बीचमे हमरा पुछैत छलाह—“ई सरकारी नाम अछि कि लोकक?”

हम उत्तर दैत छलहुँ—“पाँजिमे ई रूप अछि,” अथवा “गामक लोक ई कहैत अछि,” अथवा “दुनू मेल खाइत अछि।”

जतय हमरा निश्चितता नहि रहैत, हम कहैत छलहुँ—“जाँच चाही।”

तीन बेर ‘जाँच चाही’ लिखल गेल।

दोपहरक भोजनक समय कर्मचारी अपन डिब्बा खोललनि। अमीन घर गेलाह। लिपिक चिउड़ा आ गुड़ खाइत रहलाह। हम उठि घर जाएब चाहलहुँ तऽ कर्मचारी कहलनि—“दुपहरक पछाति आरो काज अछि। तोरा नाम पढ़बाक लेल राखि सकैत छी। सात दिन। पारिश्रमिक दफ्तरसँ भेटत।”

हम पहिने बुझलहुँ नहि जे प्रस्ताव हमरा लेल अछि।

“हमरा?”

“हँ। तोरा गामक पुरान नाम बुझाइत छौ। अक्षर स्पष्ट पढ़ैत छह। सात दिन रहिह।”

हम कहलहुँ—“पितामहसँ पुछि कऽ कहब।”

लिपिक कहलनि—“एखन नाँव लिखि दैत छी। नहि रहबह तऽ काटि देब।”

हम कहलहुँ—“पहिने पुछि लेब।”

ओ पेन्सिल रोकलनि।

घर पहुँचि पितामहकेँ बात कहलहुँ। ओ पर्चीसभ फेर देखलनि। पुछलनि—“मूल पोथी माँगताह?”

“एखन नहि।”

“तोरा की करबाक अछि?”

“नाम पढ़ब। पुरान ठाम बुझयब। कखनहु पाँजिमे देखब।”

“नक्शाक रेखा तौँ खींचबह?”

“नहि।”

“भूमिक सीमा तौँ ठहरबह?”

“नहि।”

“तँ जतेक बुझैत छह ओतबे कहिह। जे नहि बुझैत छह, नहि कहिह। पारिश्रमिक लेल अनुमान नहि जोड़िह।”

हम सहमति देलहुँ।

पितामह ओहि दिन एक छोट कपड़ा-थैली देलनि। भीतर तीन पर्ची, एक पेन्सिल, एक छोट कागजी बहि। मूल पाँजि घरमे रहल।

दुपहरक पछाति घुरि गेलहुँ। कर्मचारी हमरा नाम सात दिनक सहायक सूचीमे लिखलनि। पदक नाम हम पहिने नहि सुनने रही। लिपिक कहलक—“स्थानीय नाम-सहायक लिखि दिअ?”

कर्मचारी कहलनि—“लिखू।”

एहि प्रकार हमर पहिल पारिश्रमिकवला काजक नाम भेल—स्थानीय नाम-सहायक।

ओ दिन हमरा कोनो नियुक्तिपत्र नहि भेटल। सात दिनक सूचीमे नाम, दिनक अन्तमे हस्ताक्षर, आ पछाति भुगतानक पर्ची—एतबे छल। मुदा हम एकरा काज मानलहुँ। घरमे पहिल बेर कियो हमर पढ़ल अक्षर लेल सरकारी रुपया देबाक छल।

दुपहरक पछाति दल गामक पूबक सीमा दिस गेल। एक पुरान राजस्व-नक्शा बाँसक पट्ट पर टाँगि लेल गेल। नव मापवला कागज पृथक छल। पुरान नक्शामे खेत-खण्डक संख्या छल। किछु ठाम मालिकक नाम पृथक बहिमे। पँजीमे जे परिवार तीन-चारि पीढ़ीक क्रममे फैलल छल, राजस्व-बहीमे ओकरा भूमिक टुकड़ासँ चिन्हल गेल।

लिपिक एक खेत पर पुछलनि—“एहि खण्डक पुरान नाम?”

हम कहलहुँ—“चन्द्राही।”

“पाँजिमे?”

“दू विवाह-प्रसंगमे सीमा रूपेँ अछि।”

“मालिक?”

“पाँजि भूमिक मालिक नहि कहैत अछि।”

ओ पुरान राजस्व-बही देखलनि। मालिकक तीन नाम छल। दू मरि चुकल, एकक बेटा खेत जोतैत छल। लिपिक नाम काटि नव नाम लिखबाक विषयमे अमीनसँ किछु कहलनि। हम ओतय मौन रहलहुँ। ई हमर काज नहि छल।

तखन हमरा स्पष्ट भेल जे पाँजि आ राजस्व-बही एकहि मनुष्यकेँ पृथक ढंगसँ चिन्हैत अछि। पाँजिमे ओ अमुक मूलक, अमुक ग्रामक, अमुक पिताक पुत्र, अमुक विवाह-सम्बन्धक लोक होइत अछि। राजस्व-बहीमे ओ अमुक खण्डक धारक होइत अछि। नक्शामे तऽ ओकर नाँवो नहि; केवल संख्या।

एक लोक तीन कागजमे तीन रूप।

हम एहि बातक कोनो निष्कर्ष नहि लिखलहुँ। केवल अपन छोट बहिमे उदाहरण लिखि लेलहुँ।

दोसरे दिन सर्वेक्षण दल पुरान नदी-पथक कात गेल। अमीन हमरा एक ठाम ठाढ़ कऽ पुछलनि—“एहि धारक नाम?”

हम कहलहुँ—“एखन लोक ‘पुरान कोसी’ कहैत अछि। पँजीक पुरान पाँतिमे ‘कौशिकी धार’ भेटैत अछि।”

कर्मचारी पुछलनि—“नक्शामे कोन लिखी?”

हम पितामहक नियम मोन कयलहुँ। “एखनक नाम पुरान कोसी। दोसर रूप ऐतिहासिक अछि।”

कर्मचारी ‘पुरान कोसी’ लिखलनि।

‘कौशिकी’ हमर पर्चीमे रहल।

तेसर दिन हम बुझलहुँ जे नक्शा बननाइ केवल रेखा खींचनाइ नहि, नाम चुननाइ सेहो अछि। दू नाममे एक चुनल जाइत अछि। तीन रूपमे एक वर्तनी लिखल जाइत अछि। जे ठाम आब बसल नहि, ओकर नाम मुख्य कागजसँ बाहर रहि सकैत अछि। जे बाट लोक सभ काल कहैत अछि, ओकर आधिकारिक नाम दोसर भऽ सकैत अछि।

नाम चुनबाक एहि प्रक्रियामे हमरा भूमिका छल। छोट, मुदा छल।

एक ठाम हमर भूमिका हमरा असुविधाजनक लागल। पश्चिमक एक खेत-समूहक नाम लोक ‘फुलवारी’ कहैत छल। पुरान नक्शामे ‘फुलवरिया’। पँजीक एक पाँतिमे ‘फुलबाड़ी’। तीनू शब्द एकहि ठामक छल कि लगक तीन ठामक, निश्चित नहि। कर्मचारी कहलनि—“एक चुनू।”

हम कहलहुँ—“एखन नहि चुनि सकैत छी।”

लिपिक अधीर भेलाह। “नक्शा रिक्त छोड़ब?”

“जाँच कयल जा सकैत अछि।”

“ककरा सँ?”

“दू वृद्ध छथि। एक खेत जोतनिहार छथि। पँजीमे दू पाँति आरो अछि।”

कर्मचारी हमरा बात मानलनि। ओ ठाम पेन्सिलक वृत्त बना देलनि। साँझ धरि तीन लोकसँ पुछल गेल। दू ‘फुलवारी’ कहलनि, एक ‘फुलवरिया’। पँजीक पछिला पाँतिमे ‘फुलवारी’ भेटल। नक्शामे ‘फुलवारी’ चढ़ल।

ओहि दिन हमरा अपन काज पर गर्व भेल छल। एखन सोचैत छी तँ गर्वक संग भय सेहो जोड़ल अछि। एक बेर नक्शामे नाम चढ़ि गेलाक पछाति अगिला कर्मचारी ओकरा स्रोत मानैत अछि। जँ हम ओहि दिन अनुमानसँ ‘फुलवरिया’ कहि देने रहितहुँ, तँ कदाचित् पछिला कागजसभमे वएह चलैत।

पाँचम दिन राजस्व-दफ्तरक लिपिक हमरा पुरान बहि देखबय देलनि। कागज मोट छल। किछु पन्ना किनारसँ खायल। घरानाक नाँव, खेतक संख्या, क्षेत्रफल, लगानक पुरान अंक, संशोधनक लाल स्याही। हम पुछलहुँ—“ई बहि कतेक पुरान?”

ओ एक वर्ष कहलनि। हम मोन नहि राखि सकलहुँ।

हम पन्ना पलटैत एक परिचित गाम-नाम देखलहुँ। पँजीमे ओहि गामक संग चारि मूल जुड़ल छल। राजस्व-बहीमे मूलक कोनो स्थान नहि। केवल गाम, खण्ड, धारक।

हम लिपिकसँ पुछलहुँ—“एहि बहिमे मूल किएक नहि?”

ओ कहलनि—“भूमिक अभिलेखमे ओकर प्रयोजन नहि।”

उत्तर स्पष्ट छल। हम फेर नहि पुछलहुँ।

छठम दिन नक्शाक नव प्रति बनय लगल। एक लिपिक पुरान रेखा देखैत, सर्वेक्षण-कर्मचारीक अंक मिलबैत, पेन्सिलसँ नव रेखा उतारैत छलाह। हम केवल नामक ठाम बोलाओल जाइत छलहुँ। एहि दिन हम पहिल बेर देखलहुँ जे पहिल कागजक अनेक बात दोसर कागजमे पहुँचैत नहि। खेतक स्थानीय नामसभमे किछु छुटल। पुरान बसावट टिप्पणीक पन्नामे रहल। पँजीक दू वैकल्पिक वर्तनीमे केवल एक गेल।

कागज छोट नहि छल; सूचना छनल गेल छल।

हम अपन छोट बहिमे लिखलहुँ—“नक्शा सभ बात नहि लिखैत।”

पछाति पाँति जोड़लहुँ—“पाँजि सेहो नहि।”

सातम दिन पारिश्रमिकक लेखा बनल। हम हस्ताक्षर कयलहुँ। रुपया पछाति भेटबाक छल। काज समाप्त होइत काल कर्मचारी हमरा कहलनि—“तोरा अक्षरक ध्यान अछि। पढ़ाइ जारी राखिह।”

हम धन्यवाद नहि कहलहुँ; केवल माथ झुका देलहुँ।

घर घुरि पितामहकेँ छोट बहि देखौलहुँ। ओ सभ पन्ना नहि पढ़लनि। तीन पाँति पढ़लनि—दक्षिण टोलक “पुरान बसावट”, पुरान कोसीक नाम, आ अन्तिम पाँति “नक्शा सभ बात नहि लिखैत; पाँजि सेहो नहि।”

ओ पुछलनि—“दक्षिण टोलक नाँव मुख्य नक्शामे नहि गेल?”

“नहि। बसावट एखन नहि अछि, एहि कारण।”

ओ किछु देर मौन रहलाह। फेर कहलनि—“जे ठाम नहि रहल, ओकर नाम कागजमे रखबाक उत्तरदायित्व आरो पैघ होइत अछि।”

हम तखन एहि वाक्यक अर्थ केवल पुरान गामक नाम धरि बुझलहुँ।

राति हम पाँजि खोललहुँ। ओहि वंशक पन्ना सोझाँ राखलहुँ जाहिमे श्रीधरक आगाँ पाँति मेटाओल गेल छल। पँजीमे मेटाओल ठाम देखाइत छल—कागजक रेशा घिसल, स्याहीक छाया, रिक्ति। नक्शामे दक्षिण टोलक अनुपस्थिति एहन नहि छल। ओतय कागज स्वच्छ छल। जे नाम कखनो लिखले नहि गेल, ओकर मेटेबाक निशान नहि रहैत अछि।

हम ओहि राति एहि दू प्रकारक अभावकेँ एक नहि मानलहुँ। केवल पृथक-पृथक देखलहुँ।

पँजीक पन्ना बन्द कयलहुँ।

नक्शाक प्रति हमरा लग नहि छल।

हमर लग तीन पर्ची छल, सात दिनक छोट बहि छल, आ पारिश्रमिकक प्रतीक्षा छल।

हमर पहिल पेशागत काज समाप्त भेल छल।

हम सात दिन धरि राज्यक नक्शा लेल गामक नाँव पढ़ने रही।

ओहि सात दिनमे पँजीक अनेक बात नक्शामे नहि गेल।

आ नक्शाक अनेक बात पँजीमे कखनो जाएबाक नहि छल।

अध्याय १९ — कोसी — ३

हम एखन बहैत छी आ हमरा कात मनुष्य रेखा खींचैत अछि कागज पर सीधी रेखा धरती पर खूँटीक रेखा खेतक बीच माटिक रेखा आ पछाति ओहि रेखाक ऊपर आरो माटि चढ़ैत अछि आ ओकरा बान्ह कहल जाइत अछि हम रेखा शब्द नहि बुझैत छी हम ऊँच आ नीच बुझैत छी हम ढलान बुझैत छी हम दबाव बुझैत छी हम ओहि माटिक गन्ध बुझैत छी जाहि माटिकेँ दूरक खेतसँ काटि आनल जाइत अछि आ हमरा कात थपथपाकऽ जमाओल जाइत अछि हम ओहि बाँसक छाया बुझैत छी जे मापक दण्डक कात गड़ैत अछि हम ओहि लाल कपड़ाक फड़फड़ाहट देखैत छी जे सर्वेक्षणक चिन्ह बनैत अछि हम ओहि पयरक भार बुझैत छी जे अमीनक संग खेत खेत चलैत अछि आ नाम पूछैत अछि आ जे नाम कागजमे चढ़ैत अछि से एक रूप लैत अछि आ जे नाम नहि चढ़ैत अछि से लोकक मुँहमे रहैत अछि आ जे मुँह बदलैत अछि तकर संग नामो बदलैत अछि मुदा हमर जल नामक हिसाब नहि रखैत अछि हम जे ठाम पाबैत छी ओहि ठाम पसैरैत छी हम जे ठाम नीच पाबैत छी ओहि दिस

झुकैत छी हम जे ठाम माटि कम पाबैत छी ओतय कात काटैत छी आ जखन हमरा सोझाँ माटिक ऊँच देबाल ठाढ़ होइत अछि तखन हम ओकरा देबालक अर्थमे नहि बुझैत छी हम केवल अपन जलक ऊँचाइ आ ओहि माटिक भारक बीचक अन्तर बुझैत छी लोक हमरा एक कात रखबाक योजना बनबैत अछि आ दोसर कात अपन घर रखैत अछि मुदा हम योजना पढ़ैत नहि छी हम माटिक भीतरी नमी पढ़ैत छी हम बालूक महीन तह पढ़ैत छी हम ओहि गाछक जरि पढ़ैत छी जे काल्हि धरि सूखल धरतीमे अछि आ आइ ओकर आधा भाग भीजल अछि हम ओहि घासक रंग पढ़ैत छी जे नव भरल माटिक ऊपर उगैत अछि हम ओहि सुराखक भीतर भरैत जल पढ़ैत छी जतय केंचुआ निकलैत अछि आ बालू नरम होइत अछि आ लोक ओहि ठाम एक टोकरी माटि आरो दैत अछि फेर दोसर टोकरी फेर बोरा फेर पाथर फेर बाँस फेर आदेश फेर हस्ताक्षर फेर निरीक्षण आ एहि सभक बीच हम बहैत रहैत छी हमरा कात जे रेखा उठैत अछि से लोकक भरोसाक रेखा सेहो बनैत अछि आ गामक भीतर नवा हिसाब बनैत अछि के बाहर अछि के भीतर अछि के रेखाक पूब अछि के पश्चिम अछि केकर खेतक बाट बदलैत अछि केकर पोखरि आब बान्हक कात पड़ैत अछि केकर चापाकल दूर होइत अछि केकर गोहालक पाछाँ नव माटि जमा होइत अछि केकर विवाहक बरात पुरान घाटसँ नहि उतरि सकैत अछि केकर मृत देह पुरान श्मशान धरि लए जाएब कठिन होइत अछि आ ई सभ बात कागजक एक सीधी रेखामे नहि समाइत अछि मुदा गामक देहमे समाइत अछि आ लोक अपन पयर सँ ओकर माप करैत अछि कियो कहैत अछि ई रक्षा अछि कियो कहैत अछि ई रोक अछि कियो कहैत अछि ई राज्यक काज अछि कियो कहैत अछि ई नदीक संग लड़ाइ अछि हम लड़ाइ शब्द नहि बुझैत छी किएक तँ हमरा कोनो विजय नहि चाही आ कोनो पराजय नहि चाही हम केवल गुरुत्व आ ढलानक संग चलैत छी मुदा मनुष्य हमरा लेल शत्रु आ मित्रक शब्द राखैत अछि आ तकर अनुसार अपन घरक दुआरक दिशा बदलैत अछि अपन धानक बीया बदलैत अछि अपन नावक रस्सी लम्बा करैत अछि अपन बालककेँ मना करैत अछि जे ओ बान्हक पाछाँ नहि जाए आ ओ बालक फेरो जाइत अछि किएक तँ ऊँच माटि पर चढ़ि दूर धरि देखाइत अछि आ ओतय सँ हमर जल एक चमकैत पट्टी जकाँ देखाइत अछि मुदा चमकक नीचाँ बालू चलैत अछि गादि चलैत अछि कातक महीन माटि चलैत अछि आ पुरान धारक स्मृति चलैत अछि लोक पुरान धारक नाम बिसरैत अछि मुदा माटि ओहि नीच ठामकेँ रखैत अछि जतय बरखा ठहरैत अछि आ बरखा हमरा दिस बाट खोजैत अछि जखन सर्वेक्षणक खूँटी गड़ैत अछि तखन माटि ओकर चारूकात जमैत अछि जखन खूँटी उखड़ैत अछि तखन छोट गह्वर रहैत अछि जखन गह्वरमे जल भरैत अछि तखन मेढक अबैत अछि जखन मेढक अबैत अछि तखन बालक ओकरा पकड़बाक लेल झुकैत अछि आ बालकक पयरक छाप ओहि गह्वरक कात रहैत अछि एहि तरहेँ राज्यक चिन्ह खेलक चिन्ह बनैत अछि आ खेलक चिन्ह बरखाक जलमे मेटाइत अछि मुदा कागज पर रेखा रहैत अछि आ ओहि रेखाक आधार पर आगाँ माटि उठैत अछि हम कागज नहि देखैत छी मुदा कागजक परिणाम माटिक रूपमे देखैत छी

हम आदेश नहि पढ़ैत छी मुदा आदेशक भार हजार टोकरी माटिक रूपमे पाबैत छी हम सीमाक भाषा नहि सुनैत छी मुदा सीमा बनलाक बाद नावक बाट बदलैत देखि ओकर अर्थ बुझैत छी आ जे गाम काल्हि एक दोसराक कात खुलल अछि से आइ बान्हक एहि कात वा ओहि कात कहल जाइत अछि आ लोक अपन ठामक पहिचान नव शब्दमे करैत अछि भीतर बाहर ऊपर नीचाँ कटानक कात सुरक्षित कात पुरान धार नव धार आ एहि शब्दसभक बीच हमर जलक अपन कोनो शब्द नहि अछि हम बहैत छी आ जे माटि हमरा कात उठैत अछि तकर नीचाँ दबाव बनैत अछि आ जे जल बाहर निकलबाक बाट नहि पबैत अछि से भीतर ठहरैत अछि आ जे वर्षा ऊपरसँ अबैत अछि से निकास खोजैत अछि आ जे छोट धार पहिले हमरा संग जुड़ैत अछि से कखनो माटिक देबालसँ पृथक पड़ैत अछि आ ओहि पृथकावमे गामक नव कठिनाइ जन्म लैत अछि मुदा रेखा खींचनिहारक कागज पर रेखा एखनहुँ सीधी अछि आ सीधी रेखाक अपन सौन्दर्य अछि ओकर आरम्भ अछि ओकर अन्त अछि ओकर दूरी नापल जा सकैत अछि ओकर लागत लिखल जा सकैत अछि ओकर प्रगति लिखल जा सकैत अछि मुदा हमर धारक कोनो एक आरम्भ नहि अछि कोनो एक अन्त नहि अछि हम हिमक पानि सँ अबैत छी बरखाक पानि सँ भरैत छी छोट धारसभकेँ लैत छी बालू छोड़ैत छी फेर बालू उठबैत छी कछेर बनबैत छी फेर कछेर काटैत छी आ जे लोक हमरा एकहि बाटमे रखबाक आकांक्षा करैत अछि से अपन आकांक्षाक संग माटि जोड़ैत अछि हम ओकर माटिक सम्मान वा अपमान नहि करैत छी हम ओकर परीक्षा सेहो नहि लैत छी हम केवल ओहि माटिक संग ओतेक बल साझा करैत छी जतेक हमर जल ओहि घड़ी लऽ कऽ अबैत अछि आ एहि साझा बलक परिणाम कखनो शान्त सतह होइत अछि कखनो रिसैत नमी कखनो छोट कटान कखनो पैघ भंग मुदा एखन गामक लोक नव रेखाकेँ देखैत अछि आ ओकर ऊपर चढ़ि दूर धरि आँखि पसारैत अछि आ ओहि आँखिक भीतर एक भरोसा बनैत अछि जे आब नदी एक ठाम रहत आ हम ओहि भरोसाकेँ नहि तोड़ैत छी नहि बचबैत छी हम केवल बहैत छी आ रेखाक दुनू कात माटि भीजैत रहैत अछि

अध्याय २० — भीतरका गाम

१९५८क वर्षा आरम्भ होबासँ पहिने तटबन्धक रेखा अनेक ठाम धरती पर स्थिर देखाइत छल। किछु भागमे माटि एखन चढ़ि रहल छल, किछु भागमे ऊपरसँ बैलगाड़ी चलय लगल छल, आ किछु ठाम लोक पहिनहि सँ ओकरा बाटक रूपमे उपयोग करैत छल। नक्शामे नदीक दू कात दू रेखा छल। रेखाक बाहरक गामसभक विषयमे कहल जाइत छल जे ओ सुरक्षित भऽ रहल अछि। रेखाक बीच जे गाम रहि गेल, ओकर नाम लेल कोनो एक शब्द नहि छल।

लोक स्वयं कहय लगल—भीतरका गाम।

एहि शब्दमे भूगोल छल, प्रशासनिक श्रेणी नहि। दफ्तरक कागजमे गामक नाँव छल, थाना छल, अंचल छल, खेतक संख्या छल, पुनर्वास-ठामक पर्ची छल। “भीतर” अनेक बेर कागजमे नहि छल। मुदा नाववला बुझैत छल। मवेशी चरौनिहार बुझैत छल। बरखा आरम्भ होइतहि सभ बुझैत छल।

हम तखन बाइस वर्षक छलहुँ। सात दिनक स्थानीय नाम-सहायकवला काजकेँ चारि वर्ष बीति चुकल छल। बीचमे हम पँजीक काज पितामहक संग करैत रहलहुँ। सरकारी नक्शा हमर पेशा नहि बनल। मुदा गामक लोककेँ बुझाइत छल जे हम सरकारी कागज पढ़ि सकैत छी। एहि कारण एक दिन पाँच गामक सात लोक हमरा घर अयलाह।

पितामह ओसार पर छलाह। हम पोथी खोलने रही।

सभसँ आगाँ रामचरित यादव छलाह। हुनकर गाम तटबन्धक भीतर पड़ि गेल छल। संगमे महतो, एक कहार, दू मल्लाह, एक वृद्ध ब्राह्मण आ एक मुसहर खेत-मजूर छलाह। सातो लोक पृथक गामक नहि; पाँच गामक प्रतिनिधि छलाह।

रामचरित कहलनि—“एक आवेदन लिखबाक अछि।”

हम पोथी बन्द कयलहुँ।

“कोन विषय?”

ओ सभ एक-दोसर दिस देखलनि। उत्तर एक वाक्यमे नहि छल।

पहिल बात नावक छल। बरखामे खेत आ घरक बीच धार पड़ैत छल। पुनर्वासक ठाम तटबन्धक बाहर देल गेल छल, खेत भीतर छल। जे परिवार बाहर घर बना लेने छल, ओकरा खेती लेल भीतर आबय पड़ैत छल। जे परिवार पुरान गाम नहि छोड़ने छल, ओकरा हाट, दवा, विद्यालय आ दफ्तर लेल बाहर जाएब पड़ैत छल।

दोसर बात मवेशीक छल। जल बढ़लाक बाद गोहालक ठाम ऊँच नहि रहैत छल।

तेसर बात अन्न राखबाक छल। घरक मचान सभ वर्ष ऊँच कयल जाइत छल, मुदा धानक बोरा सभ बेर बचैत नहि।

चारिम बात ईंट-पाथरक बाटक छल। “ईंट-पाथरक बाट” कहितहि मल्लाह हँसलाह नहि, केवल माथ हिलौलनि। भीतर स्थायी बाट कोना बनत, ई हुनका सभकेँ बुझाइत छल। तथापि आवेदनमे बाटक प्रश्न लिखबाक छल।

पाँचम बात पुनर्वासक छल।

एहि पर सभ एक संग बाजय लगलाह। हम हाथ उठा कऽ रोकलहुँ।

“एक बेर एक बात कहू। जे लिखब, ओकर स्रोत बुझल रहय।”

पितामह हमरा दिस देखलनि, किछु कहलनि नहि।

रामचरित अपन थैलीसँ चारि पर्ची निकाललनि। दू पर्ची घर-ठामक आवंटनक छल। एक घर बनयबाक अनुदानक रसीद। एक खेतक पुरान राजस्व-पर्ची।

ओ कहलनि—“घर बाहर, खेत भीतर।”

हम पर्ची देखलहुँ।

“बाहर घर बना लेलहुँ?”

“आधा।”

“आधा घर?”

“आधा परिवार।”

एहि उत्तरक अर्थ बुझयमे हमरा किछु समय लागल। परिवारक किछु लोक पुनर्वास-ठाम पर रहैत छल, किछु पुरान गाममे। बरखा बढ़ल तऽ सभ बाहर, जल घटल तऽ खेतीक समय फेर भीतर। मवेशी प्रायः भीतर। धान भीतर। पूजा-पाठक पुरान ठाम भीतर। विद्यालय बाहर। रोगीकेँ बाहर लए जाएब पड़ैत छल।

हम आवेदनक पहिल पाँति लिखलहुँ—

“हम सभ अधोलिखित पाँच गामक निवासी तटबन्धक भीतर स्थित अपन पुरान बसावट तथा तटबन्धक बाहर देल पुनर्वास-ठामक बीच आवागमन, नाव, ऊँच शरण-ठाम आ अन्न-सुरक्षाक कठिनाइ विषयमे निवेदन करैत छी।”

महतो कहलनि—“खेती लिखू।”

हम जोड़लहुँ—“खेतीक अधिकांश भूमि भीतर रहबाक कारण।”

मुसहर खेत-मजूर, जकर नाँव बुधन सदा छल, पहिल बेर बाजल—“हमरा खेत कतय?”

ओकर प्रश्न आवेदनक भाषा पर छल। खेतीक भूमि मालिकक छल; बुधनक अपन खेत नहि। ओकर काज भीतरक खेतमे छल, घर सेहो भीतर छल, पुनर्वास-पर्ची ओकर नाम पर नहि छल।

हम पाँति रोकलहुँ।

“तोहर कठिनाइ की लिखी?”

ओ कहल—“जखन जल आबैत अछि तँ काज बन्द। बाहर गेलहुँ तँ कहैत अछि नाम सूचीमे नहि। भीतर रहलहुँ तँ नावक भाड़ा।”

रामचरित बीचमे किछु कहबाक चाहलनि, फेर चुप भऽ गेलाह।

हम आवेदनमे दोसर पाँति जोड़लहुँ—“भूमिहीन मजदूर परिवारसभक आवागमन आ राहत-सूचीमे नाम रहबाक व्यवस्था कयल जाए।”

“सुनिश्चित” शब्द हमरा दफ्तरी लागल। मुदा अर्थ स्पष्ट छल। हम ओकरा रहय देलहुँ।

आवेदन लिखि चुकैत-चुकैत दू पृष्ठ भेल। सातो लोक अंगूठाक निशान वा हस्ताक्षर कयलनि। रामचरित कहलनि जे काल्हि अनुमण्डल दफ्तर जाएब।

पितामह पुछलनि—“तौँ जाएबह?”

हम कहलहुँ—“ओ सभ कहैत छथि जे कागज पढ़बाक लेल चलू।”

पितामह कहलनि—“पँजीक काज?”

“परसू करब।”

ओ सहमति देलनि। फेर आवेदन दिस देखैत कहलनि—“जे लिखल छौ, ओ सभक कथन अछि?”

“हँ।”

“जे नहि देखलह, ओकरा अपन तथ्य नहि बनबिह।”

ई नियम पँजी लेल छल। हम ओकरा आवेदन लेल सेहो मानलहुँ।

दोसर दिन हम सभ दफ्तर पहुँचलहुँ। बरामदामे पहिनहिसँ अनेक लोक छल। कोनो भूमिक विवाद, कोनो प्रमाण-पत्र, कोनो सिंचाइक नाली, कोनो राशन। हमरा आवेदन पहिले एक लिपिक पढ़लनि। ओ शीर्षकक ऊपर पेन्सिलसँ किछु लिखलनि आ पुछलनि—

“पुनर्वास भेटल अछि?”

रामचरित कहलनि—“किछु परिवारकेँ।”

“तँ भीतर किएक रहैत छी?”

रामचरित खेतक पर्ची सोझाँ रखलनि।

लिपिक खेतक पर्ची देखलनि। फेर आवेदन देखलनि।

“ई सिंचाइ विभागक विषय सेहो अछि।”

“नाव?”

“स्थानीय व्यवस्था।”

“राहत?”

“अंचल।”

“पुनर्वास?”

“राजस्व।”

“तटबन्ध?”

“सिंचाइ।”

ओ चारि शब्द कहि आवेदनक ऊपर एक संख्या लिखलनि। हमरा बुझायल जे पाँच गामक कठिनाइ चारि दफ्तरमे बाँटल जा सकैत अछि।

हम पुछलहुँ—“एक आवेदन चारि ठाम जाएत?”

लिपिक हमरा दिस देखलनि।

“फाइल बनत।”

फाइल बनल।

पहिल कागज हमर आवेदन। ओकर पछाति पुनर्वास-पर्चीक नकल। खेतक पर्चीक नकल। पाँच गामक नामक सूची। एक टिप्पणी—“सम्बन्धित अंचलसँ प्रतिवेदन माँगल जाए।” दोसर टिप्पणी—“सिंचाइ विभागसँ आवागमन-सुविधा विषयक मत प्राप्त हो।”

रामचरित पूछलनि—“उत्तर कखन?”

लिपिक कहलनि—“प्रतिवेदन अयलाक पछाति।”

ई तिथि नहि छल।

हम सभ घुरि आयलहुँ।

बरखा आरम्भ भेल।

पहिल पैघ जलमे भीतरक बाटक दू ठाम नाव चलय लगल। बुधन सदा अपन परिवारक संग तीन राति बाँसक मचान पर रहल। रामचरितक आधा परिवार पुनर्वास-ठाम पर छल; ओ स्वयं भीतर धानक रोपनी देखबाक लेल रहलाह। पाँच गामक लोक आवेदनक उत्तरक प्रतीक्षा करैत रहल।

एक मास पछाति अंचलसँ लोक आयल। ओ घर गनलनि।

कठिनाइ एतय आरम्भ भेल जे “घर” कोन ठाम गनल जाए।

रामचरितक नाम पुनर्वास-ठामक सूचीमे छल। निरीक्षणक दिन ओ भीतर छल। बाहरक घरमे हुनकर पत्नी आ दू बालक। भीतरक पुरान घरमे ओ, पिता आ मवेशी।

कागज पर परिवार एक।

धरती पर दू ठाम।

बुधनक नाम पुरान गामक घर-सूचीमे छल, पुनर्वासक सूचीमे नहि। निरीक्षक पुछलनि—“आवंटन नहि भेटल?”

बुधन कहल—“नहि।”

“आवेदन देल?”

“ई आवेदनमे नाम अछि।”

ओ हमर लिखल कागजक नकल देखौलक।

निरीक्षक नाम पढ़लनि। किछु लिखलनि। हुनकर कागज हम नहि देखलहुँ।

दू मास पछाति दफ्तरसँ पहिल उत्तर आयल। रामचरित ओकरा हमरा घर लऽ अयलाह।

उत्तरक सार ई छल—पुनर्वासक लेल उपलब्ध घर-ठामक उपयोग कयल जाए; तटबन्धक भीतर रहनिहार परिवार बरखाक समय सावधानी राखथि; नावक विषय स्थानीय स्तर पर देखल जाए; राहत-सूची अंचल द्वारा जाँचल जाए; स्थायी निर्माणक प्रस्ताव पृथक तकनीकी परीक्षण बिना स्वीकृत नहि भऽ सकैत अछि।

हम उत्तर तीन बेर पढ़लहुँ।

रामचरित पुछलनि—“हमर प्रश्नक उत्तर अछि?”

हम कहलहुँ—“किछुक अछि। किछुक नहि।”

“नाव?”

“स्थानीय स्तर।”

“स्थानीय स्तर के?”

कागजमे नाम नहि।

“ऊँच शरण-ठाम?”

“तकनीकी परीक्षण।”

“परीक्षण के करत?”

कागजमे नाम नहि।

“बुधनक सूची?”

“अंचल जाँचत।”

“कखन?”

तिथि नहि।

हम उत्तरक नीचाँ अपन छोट बहिमे केवल चारि पाँति लिखलहुँ—

आवेदन: पाँच गाम।
उत्तर: चारि विषय।
नाव: स्थानीय।
शरण-ठाम: परीक्षण।
राहत: जाँच।
समय: लिखल नहि।

दोसरे सप्ताह प्रतिनिधिमण्डल फेर बनल। एहि बेर सात नहि, एगारह लोक। एक स्त्री सेहो आयलीह—सीता देवी। हुनकर पति बाहर कमाइत छलाह। पुनर्वास-पर्ची पति नाम पर। भीतरक घरमे सीता देवी, सासु, तीन बालक आ दू गाय।

ओ कहलनि—“कागज कहैत अछि बाहर रहू। खेत भीतर अछि। गाय भीतर अछि। ओ कलकत्तामे छथि। हम कतय रही?”

हम एहि वाक्यकेँ आवेदनमे जसक तस नहि लिखलहुँ। दफ्तरी रूपमे लिखलहुँ—“परिवारक जीविका आ निवास दू भिन्न ठाम बँटि गेलाक कारण स्त्री, वृद्ध आ बालकक आवागमन कठिन अछि।”

सीता देवी पढ़ि नहि सकैत छलीह। हम पाँति हुनका सुनौलहुँ।

ओ कहलनि—“गाय लिखल?”

हम जोड़लहुँ—“मवेशीक सुरक्षित ठामक अभाव।”

दोसर आवेदन पहिलसँ छोट छल। हम पहिल फाइलक संख्या ऊपर लिखलहुँ। दफ्तरमे लिपिक पुरान फाइल खोजलनि। पहिने भेटल नहि। अर्ध घण्टा पछाति दोसर आलमारीसँ भेटल।

फाइलक भीतर हमर पहिल आवेदन छल। ओकर ऊपर तीन नव कागज जुड़ि गेल छल। एक अंचलक प्रतिवेदन। एक सिंचाइ-दफ्तरक टिप्पणी। एक आन्तरिक पत्र।

हम समूचा पढ़बाक अनुमति नहि माँगलहुँ। जे हमरा सोझाँ खोलल गेल, ओतबे देखलहुँ।

अंचलक प्रतिवेदनमे लिखल छल जे किछु परिवार पुनर्वास-ठाम ग्रहण कयलाक बादो खेतीक कारण पुरान बसावटमे आंशिक रूपेँ रहैत अछि।

ई वाक्य तथ्यक निकट छल।

सिंचाइ-दफ्तरक टिप्पणीमे लिखल छल जे तटबन्धक भीतर नदीक प्रवाह आ बदलैत धारक कारण स्थायी बाटक व्यवहार्यता सीमित अछि।

ई सेहो तथ्यक निकट छल।

मुदा तथ्यक निकट दू वाक्य मिलि कऽ समाधान नहि बनल।

दोसर आवेदन फाइलमे जुड़ल। फेर टिप्पणी भेल—“पूर्व प्रतिवेदनक आलोकमे आवश्यक स्थानीय व्यवस्था।”

रामचरित हमरा पुछलनि—“स्थानीय व्यवस्था फेर?”

हम कहलहुँ—“हँ।”

सीता देवी पुछलनि—“स्थानीय के?”

हम उत्तर नहि देलहुँ।

ओहि वर्ष जल दू बेर पैघ भेल। पहिल बेर लोक मचान पर चढ़ल। दोसर बेर किछु परिवार पुनर्वास-ठाम दिस गेल। जल घटल तऽ फेर खेतीक काज लेल भीतर घुरल। किछु घरक खपड़ा बाहर रहल, बाँस भीतर। किछु परिवारक राशन-पर्ची बाहरक ठाम, अनाज भीतरक घर। किछु बालक विद्यालयक मासमे बाहर, रोपनी आ कटनीक बीच भीतर।

सरकारी फाइल एक ठाम रहल।

गाम दू ठाम रहय लगल।

जाड़क आरम्भमे तेसर बेर प्रतिनिधिमण्डल नहि बनल। केवल रामचरित आ बुधन आयलाह। नावक ऋण छल। मल्लाह सभ कहैत छल जे बिना भाड़ा नाव नहि चलत। लोक कहैत छल सरकारी व्यवस्था होयत। दफ्तरक उत्तरमे स्थानीय व्यवस्था लिखल छल।

रामचरित कहलनि—“फेर आवेदन लिखब?”

हम पुरान दू नकल निकाललहुँ।

पहिलमे पाँच माँग।
दोसरमे तीन।
तेसरमे की लिखी?

बुधन कहल—“एहि बेर लिखू जे हम सभ एतय छी।”

हम ओकरा दिस देखलहुँ।

ओ फेर कहल—“कागजमे जेना हो, मुदा हम सभ एतय छी।”

हम पन्ना सोझाँ कयलहुँ।

तेसर आवेदनक पहिल पाँति लिखलहुँ—

“पूर्व आवेदनसभक क्रममे निवेदन अछि जे तटबन्धक भीतर स्थित गामसभमे परिवार एखनहुँ निवास करैत अछि आ जीविका, खेती, मवेशी तथा पुरान घरक कारण बरखाक समयो एहि ठामसँ पूर्णतः पृथक रहब सम्भव नहि भऽ रहल अछि।”

रामचरित कहलनि—“एना रहू।”

बुधन पाँति सुनलक। किछु देर बाद कहल—“हमर नाम रहत?”

हम आवेदनक अन्तमे प्रतिनिधिसभक सूची लिखलहुँ। बुधन सदा—अंगूठाक निशान।

तेसर आवेदन गेल।

उत्तर फागुनमे आयल।

एहि बेर कागज छोट छल। पूर्व पत्रक सन्दर्भ छल। अंचलक प्रतिवेदनक सन्दर्भ छल। पुनर्वास सुविधा उपलब्ध कराओल जाएबाक उल्लेख छल। स्थानीय प्रशासनकेँ बरखाक समय आवश्यक सहायता लेल सतर्क रहबाक बात छल।

नावक स्थायी व्यवस्था नहि।
ऊँच शरण-ठामक स्वीकृति नहि।
भूमिहीन परिवारक पृथक सूची नहि।
मवेशीक ठाम नहि।

अन्तिम पाँतिमे लिखल छल जे विषय पर आवश्यक कार्रवाई लेल सम्बन्धित पदाधिकारीकेँ सूचित कयल जा चुकल अछि।

रामचरित कागज मोड़लनि।

“आब?”

हम कहलहुँ—“एहि पत्रमे आरो उत्तर माँगबाक कोनो तिथि नहि अछि।”

“फाइल बन्द?”

हम कहलहुँ—“हम नहि बुझैत छी।”

किछु मास पछाति दफ्तर गेलहुँ तऽ अवसर पाबि ओहि फाइलक संख्या पुछलहुँ। लिपिक पुरान बहि देखलनि। संख्या भेटल।

ओ कहलनि—“पत्र निर्गत भऽ गेल। एखन काज समाप्त मानू।”

हम किछु नहि कहलहुँ।

घर घुरैत काल तटबन्ध पर चढ़ि भीतर दिस देखलहुँ। दूर पाँच गामक दिशा छल। बीचमे चमकैत पुरान धार, बालू, खेत, बाँसक झाड़ी, किछु छप्पर। बाहर पुनर्वासक नव कतार। दुनूक बीच माटिक ऊँच रेखा।

दफ्तरक फाइल बाहर निकलि गेल छल।

गाम भीतर रहल।

अध्याय २१ — दुइ मिथिला

बैराजक निर्माण चलैत वर्षमे भीमनगर दिसक बाट पहिनेक जकाँ केवल गामसँ गाम जायबवला बाट नहि रहल। माटिक ढेर, लोहारक छड़, गिट्टीक मोटर, अभियन्ताक जीप, चौकी, फाटक आ कागजक जाँच एक संग बढ़ल। लोकक आवागमन बन्द नहि भेल, मुदा ककरा संग की जा रहल अछि, ई प्रश्न बढ़ि गेल।

ओहि वर्ष अगहनमे हमर गामक श्यामानन्द झाक विवाह सप्तरीक एक गाममे ठहरल। कन्याक पितामहक घर हमरा परिचित छल। पँजीमे दुनू पक्षक मूल, ग्राम, अधिकार आ विवाह-योग्यताक मिलान पहिनहि भऽ चुकल छल। पँजीक हिसाबे कोनो कठिनाइ नहि छल।

बरियातक दिन बिहान हम विवाहक पाँजि-पत्र, दूटा नकल, एक कपड़ाक थैली आ अपन छोट बक्सा लऽ निकललहुँ। श्यामानन्दक काका हमरा कहलनि जे सीमा दिस कागज-पत्रक प्रश्न उठि सकैत अछि, तें पँजीक पत्र संग राखू। हमरा तखन धरि बुझाइत छल जे प्रश्न नाम आ नाताक होयत।

बरियातमे दू बैलगाड़ी, एक मोटर, सात साइकिल आ पैदल लोक छल। बाजावला चारि लोक छलाह। एक हारमोनियम, दू ढोलक, एक झालक जोड़ी, एक नगाड़ा। बरक मोटरक पछिला भागमे तीन पेटी राखल छल। पहिल पेटीमे वरक वस्त्र। दोसरमे कन्याक घर लेल वस्त्र। तेसरमे पीतलक बरतन।

आन सामग्रीक सूची एना छल—धोती बारह, कुरता छह, साड़ी सोलह, चादर आठ, गमछा बीस, पीतलक थारी छह, लोटा छह, कटोरा बारह, सुपारी पाँच सेर, मखान आठ सेर, बताशा चारि सेर, मिश्री दू सेर, तेलक दू कनस्तर, इत्रक चारि शीशी, सिन्दूरक डिबिया छह, नारिकेर बारह, पानक पात पृथक टोकरीमे, एक रेडियो, एक हाथघड़ी, एक सिलाइ-मशीन।

एहि सभमे अनेक वस्तु पृथक-पृथक घरसँ आयल छल। किछु किनल गेल छल। किछु पुरान छल। किछु कन्याक माय लेल, किछु बहिन लेल, किछु पुरोहित लेल, किछु विवाहक विधिमे लागयवला। कोनो एकटा बिल नहि छल।

भीमनगर लग पहुँचैत काल पहिने मजदूरक शिविर देखलहुँ। तकर पछाति निर्माणक फाटक। ओतय परियोजनाक पहरा छल। आगाँ सीमा-पड़तालक ठाम छल। लोक पैदल पार जा रहल छल। साइकिल सेहो जा रहल छल। हमर मोटर रोकल गेल। बैलगाड़ी सेहो।

पहरादार पुछलनि—“कतय?”

श्यामानन्दक काका कहलनि—“विवाहमे।”

“ककर देश?”

एहि प्रश्नपर काका क्षण भरि चुप रहलाह। कहलनि—“समधियाना सप्तरीमे अछि।”

पहरादार फेर पुछलनि—“भारतीय कि नेपाली?”

काका कहलनि—“हम भारतक। समधियाना नेपालक।”

लोकक लेल बाट खुलल छल। सामग्रीक लेल प्रश्न पृथक छल। एक पदाधिकारी पेटी खोलबाक कहलनि। पहिल पेटी खोलल गेल। कपड़ा निकलल। संख्या पुछल गेल। दोसर पेटी खोलल गेल। साड़ी, चादर, गमछा। तेसर पेटीमे बरतन। रेडियो पृथक निकालल गेल। सिलाइ-मशीन बैलगाड़ीपर छल।

पदाधिकारी पुछलनि—“ई सभ व्यापारक माल नहि अछि?”

काका कहलनि—“विवाहक उपहार अछि।”

“प्रमाण?”

काका हमरा दिस देखलनि।

हम पँजी-पत्र निकाललहुँ। ओहि कागजमे वरक नाम, पिताक नाम, मूल, ग्राम, कन्याक पक्षक वंश आ विवाहक स्वीकृति छल। पदाधिकारी पढ़लनि। फेर कहलनि—“ई विवाहक कागज अछि। सामग्रीक नहि।”

हम कहलहुँ—“सामग्री विवाह लेल अछि।”

ओ कहलनि—“तखन सूची बनाउ। संख्या आ अनुमानित मूल्य लिखू।”

काका कहलनि—“एहि सभक मूल्य केना लिखी? आधा घरक वस्तु अछि।”

उत्तर भेल—“जे सीमा पार करत, ओकर विवरण चाही।”

हम ओतहि एक कागज लऽ सूची बनाबय लगलहुँ। पँजीमे हम नामक क्रम लिखैत छलहुँ। एतय वस्तुक क्रम लिखलहुँ। धोती बारह। कुरता छह। साड़ी सोलह। चादर आठ। गमछा बीस। थारी छह। लोटा छह। कटोरा बारह। सुपारी पाँच सेर। मखान आठ सेर।

मूल्यक ठाम कठिनाइ भेल। पुरान पीतलक थारीक मूल्य की? घरमे पहिनेसँ रहल चादरक मूल्य की? जे साड़ी मामा देने छलाह, ओकर कागज कतय? रेडियो किनल गेल छल, मुदा रसीद घरमे रहि गेल। सिलाइ-मशीनक रसीद कन्याक लेल नहि, श्यामानन्दक बहिनक नाँव पर छल; मशीन कन्याक मायकेँ देबाक विचार पछाति भेल छल।

पदाधिकारी कहलनि जे लोक पार जा सकैत छथि। सामग्री बिना विवरणक नहि जाएत।

बरियात दू भागमे बँटि गेल। किछु लोक कहलनि जे बरकेँ लऽ आगाँ बढ़ू। किछु कहलनि जे बाजा आ उपहार बिना बरियात कोना जाएत। बाजावला लोक पुछलनि जे हारमोनियम सेहो मालमे गनल जाएत कि अपन वाद्य मानल जाएत।

उत्तर लेल फेर कागज देखल गेल।

समय बीतैत रहल। कन्याक घरसँ दू लोक साइकिल पर आबि पहुँचलाह। एक कन्याक मामा छलाह। ओ हमरा पहचानलनि। पहिल प्रश्न विवाहक मुहूर्तक नहि छल। ओ पुछलनि—“कागजमे की अटकल?”

हम सूची देखेलहुँ।

ओ कहलनि—“लोकक सीमा खुलल अछि, विवाहक पेटी सीमा पर रुकल अछि।”

पदाधिकारी हुनका सेहो पुछलनि—“अहाँ नेपालक नागरिक?”

ओ कहलनि—“हँ।”

“ई सामग्री अहाँक घर जा रहल अछि?”

“हमर बहिनक बेटीक विवाह अछि।”

“तखन प्राप्त करनिहारक नाँव लिखू।”

कन्याक मामाक नाम सूचीमे जुड़ल। हुनकर पिता, गाम आ जिला सेहो लिखल गेल। पँजीमे ओहि लोकक नाम हम आन रूपमे जानैत छलहुँ। ओतय हुनकर मूल आ वंश महत्त्वपूर्ण छल। एहि कागजमे नागरिकता, ठाम आ प्राप्त करनिहारक परिचय महत्त्वपूर्ण छल।

हम दुनू कागज एक संग राखलहुँ। पँजी-पत्रमे सीमा शब्द नहि छल। सीमा-विवरणमे मूल शब्द नहि छल।

एहि बीच बरक मोटरक चालक कहलनि जे परियोजनाक फाटक साँझमे नियत समयपर बन्द भऽ सकैत अछि। बैलगाड़ी धीमे चलत। कन्याक घर धरि आरो बाट छल।

श्यामानन्दक काका निर्णय कयलनि जे बर आ आवश्यक लोक पैदल पार जाएत। विवाहक विधि रोखल नहि जाएत। पेटी आ बैलगाड़ी एतहि रहत जँ कागज नहि बनैत अछि।

श्यामानन्द मोटरसँ उतरला। माथ पर पाग छल। कन्धापर चादर। जूता हाथमे लऽ किछु दूर चलला, कारण कादो छल। हुनकर संग पिता, काका, पुरोहित, हम, पाँच बरियाती आ दू बाजावला लोक गेलहुँ। हारमोनियम रोकल गेल, तें बाजावला लोक केवल छोट झाल आ एक ढोलक लऽ गेलाह; ढोलकक विषयमे पहरादार कहलक जे हाथमे लऽ जाउ।

अन्य लोक फाटक लग रहल। पेटीसभ सेहो।

सीमा पार करैत काल कियो मन्त्र नहि पढ़लक। कियो पँजी नहि देखलक। नाम पुछल गेल। गाम पुछल गेल। ककरा लग जा रहल छी, ई पुछल गेल। हमरा पँजी-पत्र देखेबाक आवश्यकता नहि पड़ल।

नेपाल दिस कन्याक मामा पहिनेसँ ठाढ़ छलाह। ओ बरकेँ अपन साइकिलक संग चलौलनि। लगभग दू कोस आगाँ कन्याक घरसँ आन लोक भेटल। ओतय सँ विवाहक स्वागत आरम्भ भेल।

कन्याक घर पहुँचला पर पहिल प्रश्न छल—आन बरियाती कतय?

श्यामानन्दक पिता कहलनि—“सीमा पर सामग्रीक लेखा बनि रहल अछि।”

कन्याक पिता किछु देर मौन रहलाह। तकर पछाति ओ कहलनि—“लोक आबि गेल, यएह पैघ बात।”

मुदा घरक व्यवस्था लोक आ सामग्री दुनू लेल बनल छल। सोलह साड़ीमे सँ किछु विधिक उपयोगक छल। पीतलक थारीमे सँ दूटा पुरोहित आ बर-वधूक विधि लेल। सुपारी, मखान, बताशा, नारिकेरक किछु अंश बरियातक संग रहबाक चाही। ओ सभ सीमा पर छल।

कन्याक घर अपन भण्डार खोललक। पड़ोसी घरसँ थारी आयल। पान-सुपारी जुटल। चादर आयल। विधि रुकल नहि। जे वस्तु सीमा पर छल ओकर बदला आन वस्तु आयल।

राति अधिक भेलापर पहिल बैलगाड़ी पहुँचल। ओकर संग श्यामानन्दक काका छलाह। सूचीपर हस्ताक्षर, प्राप्त करनिहारक नाम आ सामग्री व्यक्तिगत विवाह-उपयोग लेल होयबाक लिखित घोषणा देल गेल छल। रेडियो आ सिलाइ-मशीन अगिला दिन धरि रोकल गेल। काकाक मुँह पर थकान छल।

ओ हमरा कागज देलनि। कहलनि—“राखू।”

हम पढ़लहुँ। ऊपर स्थानक नाम। तिथि। सामग्रीक सूची। प्रेषकक नाम। प्राप्त करनिहारक नाम। प्रयोजन—विवाह। अन्तमे लिखल छल जे वस्तुसभ बिक्री लेल नहि।

एहि एक पाँतिमे समधियानाक सम्बन्ध व्यापारसँ पृथक कयल गेल छल।

विवाह रातिमे भेल। पँजी-पत्रक आवश्यक अंश पढ़ल गेल। वरक वंश, कन्याक वंश, मूल, ग्राम, सम्बन्धक निषेध, अधिकार—सभ पूर्ववत्। विधिक भीतर भारत आ नेपाल शब्द एक बेरो नहि आयल।

भोरमे हम विवाहक प्रविष्टि लिखलहुँ। वर—श्यामानन्द झा। पिता—। ग्राम—। मूल—। वधू—। पिता—। ग्राम—सप्तरीक। तिथि—। साक्षी—।

देशक लेल कोनो कोष्ठ नहि छल।

ओहि दिन दोपहर रेडियो आ सिलाइ-मशीनक विषयमे फेर सीमा दिस लोक गेल। हम नहि गेलहुँ। हमरा विवाहक लेख सम्पूर्ण करबाक छल।

अगिला दिन कन्या विदा होयबाक समय उलटा दिशा दिस नव सामग्री जुटल। कन्याक घरसँ दू कम्बल, पीतलक एक गागरी, बाँसक दू डाला, धानक एक बोरा, घरमे बनाओल अचारक चारि मटका, कपड़ाक दू गट्ठर आ एक लकड़ीक सन्दूक बरक संग देल गेल। ई सभ भारत दिस जाएत।

कन्याक मामा हँसबाक चेष्टा कयलनि—“काल्हि अहाँक सूची छल, आइ हमर।”

कियो उत्तर नहि देलक।

विदाइ-पछाति सीमा लग फेर ओही प्रश्न आयल—ककर वस्तु, ककरा लेल, उत्पत्ति की, संख्या कतेक। घरमे बनाओल अचारक उत्पत्ति लिखब सरल छल। कम्बलक विषयमे कन्याक माय कहलनि जे स्थानीय हाटसँ किनल गेल। सन्दूक गामक बढ़ई बनौने छल। पीतलक गागरीक विषयमे कियो निश्चित नहि छल।

कन्या स्वयं पैदल आगाँ जा सकैत छल। ओकर सन्दूक रोकल जा सकैत छल। एहि अन्तरकेँ कियो विवाद नहि बनौलक। सभ थाकल छल।

हम फेर सूची लिखलहुँ। काल्हि भारतसँ नेपाल; आइ नेपालसँ भारत। काल्हि प्राप्त करनिहार कन्याक पिता; आइ प्राप्त करनिहार वरक पिता। सम्बन्ध समान रहल, दिशा बदलल।

कन्याक नाम दुनू सूचीमे कतहु नहि छल, यद्यपि विवाह ओकर छल। पहिल सूचीमे सामग्री 'विवाह प्रयोजन' लेल छल। दोसरमे 'विदाइ सामग्री' लिखल गेल।

हम पँजी-पत्र खोललहुँ। ओतय कन्याक नाम छल। ओकर पिता, ग्राम, मूल, विवाह-सम्बन्ध छल। ओतय कम्बल, गागरी, रेडियो, सिलाइ-मशीनक कोनो स्थान नहि।

सीमाक सूचीमे वस्तु छल। पँजीमे लोक। दुनू मिलि कऽ विवाहक पृथक-पृथक अंश लिखैत छल।

किछु मास पछाति श्यामानन्दक काका हमरा कहलनि जे आब नेपालक समधियाना जाइत काल पेटीमे की अछि, पहिनहि गनि लैत छथि। हुनका हँसी नहि आबैत छल। ओ केवल संख्या कहैत छलाह।

हम अपन पँजीमे ओहि विवाहक पाँति फेर पढ़लहुँ। ग्रामक नामक बाद कोनो सीमा नहि छल।

मुदा भीमनगरक फाटकपर ओहि दिनसँ हमरा ई बुझाइत रहल जे नाता पार जा सकैत अछि, लोक पार जा सकैत अछि, मुदा लोकक संग चलैत वस्तु जखन कागजमे उतरैत अछि तखन नाताक दोसर परिचय बनैत अछि।

पँजीमे हम पूछैत छलहुँ—केकर वंश?

सीमा पर प्रश्न छल—ककर देश, ककर वस्तु, ककरा लेल?

दुनू प्रश्न लिखित छल। दुनू अपन-अपन कागजमे यथार्थ छल।

दुनू कागज एक-दोसराकेँ नहि बुझैत छल।

अध्याय २२ — विवाह

हमर विवाहक बात पहिने घरमे उठल, तखन हम चौबीस वर्षक रही। पँजीक काज नियमित भऽ चुकल छल। गामक लोक हमरा पितामहक संग बैसल देखि अपन वंश-पत्र खोलबैत छलाह, मुदा अपन विवाहक विषयमे हम ग्राहक छलहुँ। एहि अन्तरक लेखा कोनो पोथीमे नहि छल।

पितामह पहिल दिन स्पष्ट कहलनि—“अपन पाँति अपने नहि जाँचब।” हुनक नियम छल जे जतय पँजीकार स्वयं पक्ष हो, ओतय दोसर अधिकारवला पँजीकार मिलान करत। हमर घरक पोथी हम खोलि सकैत रही, मुदा कन्या-पक्षक पाँति आ निषेधक अन्तिम मिलान हम नहि करब।

कन्याक नाम शारदा छल। हुनकर पिता दयानाथ झा। गाम बसबिट्टी। पहिल चिट्ठीमे एतबे आयल। दोसर चिट्ठीमे पिता-पितामहक नाम, मूल, गोत्र आ मातृक सम्बन्धक दू पाँति जोड़ल छल। तेसर कागज विवाहक प्रस्ताव नहि, जाँचक प्रश्नसभक उत्तर छल।

हम ओहि तीनू कागजकेँ घरक दोसर विवाह-पत्र जकाँ पृथक कपड़ामे राखलहुँ। पितामह हमरा पुछलनि—“कन्याक नाम कतेक बेर पढ़लह?” हम कहलहुँ—“तीन बेर।” ओ कहलनि—“नाम पढ़ब आ विवाह करब दू काज अछि।”

जाँच लेल पड़ोसी अधिकारक पँजीकार हरिशंकर बाबू अयलाह। ओ हमरा बाल्यकालसँ चिन्हैत छलाह। एहि दिन ओ हमरा परिचित लोकक रूपमे नहि, पक्षक रूपमे बैसौलनि। पहिने हमर पितृ-पाँति पढ़लनि। पिता जनार्दन मिश्र। पितामह शिवनारायण मिश्र। प्रपितामह हरिनारायण मिश्र। तकर पछाति मातृक पक्ष पुछलनि। हम उत्तर देलहुँ। ओ उत्तरक मिलान अपन कागजसँ कयलनि।

हरिनारायण नाम सुनिते हम एक बेर पितामह दिस देखलहुँ। ओ किछु नहि कहलनि। ओहि समय धरि फुलझरीक मेटाओल पाँतिक बात हमरा ज्ञात नहि छल। हमर लेल हरिनारायण केवल पुरान पँजीकारक नाम छल, जकर लिखावट हम घरक पोथीमे देखैत रही।

कन्या-पक्षक पाँति दोसर दिन आयल। शारदा। पिता दयानाथ। पितामह विनोदानन्द। गोत्र भारद्वाज। मूल भेलाही। ग्राम बसबिट्टी। मातामहक ग्राम आ मूल पृथक पाँतिमे। हरिशंकर बाबू दू पुरान विवाह खोललनि, जाहिसँ निकट सम्बन्धक निषेध जाँचल जा सकय। एक पन्ना पर मसि फीक छल; ओ तिरछा उजासमे पढ़लनि।

जाँचमे कोनो निषेध नहि भेटल। पितामह कहलनि—“एखन विवाहक बात घरक लोक करत।” पोथी बन्द भेल। तखन पहिल बेर शारदाक विषयमे एहन बात कहल गेल जे पाँजिमे नहि छल—ओ पढ़ि सकैत छलीह, हुनका सिलाइ अबैत छल, बेसी नहि बजैत छलीह, आ हुनका दूध पसिन्न नहि छल। अन्तिम बात किएक कहल गेल, हमरा ज्ञात नहि। घरक स्त्रीसभ एहि पर किछु देर चर्चा कयलनि।

विवाह फागुन मासमे ठहरल। तिथिक पर्ची पुरोहित देने छलाह। हम ओकर एक प्रति दैनिकीमे राखलहुँ। घरक खर्चक पृथक बहि खुलल। चाउर, दालि, घी, नून, तेल, सुपारी, पान, मखान, कपड़ा, बाँस, पात, इन्धन, बैलगाड़ी, बाजाक लोक—सभक आगाँ मात्रा अथवा देय राशि लिखल गेल। विवाहक तैयारी हमरा लेल पहिने सूची बनल।

विवाहक तीन दिन पहिने पितामह कहलनि जे अपन विवाहक पँजी-प्रविष्टि हम नहि लिखब। हरिशंकर बाबू लिखताह, हम केवल पढ़ब। हमरा ई नियम उचित बुझायल। जे दिनक विषयमे मनुष्य स्वयं पक्ष हो, ओहि दिनक लेख दोसर हाथसँ होयब चाही।

ओहि दिन हरिशंकर बाबू हमरा घरक पाँजिमे हमर जन्मक पाँति सेहो देखलनि। जन्म-वर्ष १९३६। नामक आगाँ पिताक नाम। तकर पछाति पितामह। ओहि पाँतिक नीचाँ अनेक ठाम खाली छल। ओ कहलनि—“विवाहक पछाति ई रिक्ति रिक्त नहि रहत।” हम पाँति देखलहुँ। अनेक वर्ष धरि हम दोसर लोकक रिक्ति भरैत आएल रही। अपन पाँतिक रिक्ति हमरा पहिल बेर पृथक बुझायल।

कन्या-पक्षसँ एक छोट सिद्धान्त-पत्र आयल। कागज मोट नहि छल। ऊपर लाल मसिक एक चिह्न, नीचाँ कारी मसि। दू नाम साक्षीमे। एक पाँति मातृक सम्बन्धक। हरिशंकर बाबू ओहि पाँतिसँ तीन पुरान विवाह मिलेलनि। एक विवाह लगभग चालीस वर्ष पुरान छल। ओहि पन्नाक किनार चिरल छल, मुदा नाम पढ़ाइत छल। जाँचक निष्कर्ष वएह रहल—निकट निषेध नहि।

घरमे एहि बीच दोसर प्रकारक काज चलैत रहल। ओसारक एक कात धान कुटल गेल। मसाला पीसल गेल। बाँस चिरल गेल। नव माटिक चूल्हि बनल। पातक थारी गिनल गेल। बाहरसँ आयल पाँच खाट पृथक राखल गेल। बरियाती लेल कम्बल, गिलाफ आ लोटा गिनल गेल। पँजीमे एहि सभक कोनो स्थान नहि छल, मुदा विवाह एहि वस्तुसभ बिना सम्पन्न नहि होइत।

हम खर्चक बहि खोलि नामक बदला वस्तु लिखैत रही—चाउर, दालि, घी, तेल, नून, सुपारी, पान, मखान। पितामह एक बेर बहि देखि कहलनि—“एतय तोहर मूल कतय?” हम कहलहुँ—“एतय मूल्य अछि।” ओ बहि आपस देलनि। विवाहक दू लेखा छल—एक वंशक, एक खर्चक। दुनू एकहि घटनाक, मुदा दुनू एक-दोसराकेँ लगभग नहि चिन्हैत छल।

बरियात निकलल तखन हमरा संग कोनो पँजी-पोथी नहि छल। हरिशंकर बाबूक थैलीमे आवश्यक नकल छल। हमरा हाथमे केवल एक छोट कपड़ाक बटुआ, एक अंगोछा आ घरसँ देल सुपारी छल। बाटमे लोक गीत गबैत छल। हम गीतक शब्द लिखि नहि रहल छलहुँ।

कन्याक घर पहुँचला पर दुआरक विधि भेल। लोकक भीड़, पानिक लोटा, अरिपन, दू दीप, पानक पत्ता, मखानक थारी, पुरोहितक आसन, बरक वस्त्र बदलबाक ठाम—एहि सभक क्रम हमरा मोन अछि। हम ककरो मुँह दीर्घ काल धरि नहि देखलहुँ। जे काज कहल गेल, कयलहुँ।

शारदाकेँ पहिल बेर स्पष्ट रूपेँ ओहि राति मण्डप लग देखलहुँ। हुनकर माथ पर पिठारक चिह्न छल। आँखि नीचाँ। हुनकर कात दू स्त्री बैसल छलीह। एक बेर पानिक पात्र आगाँ बढ़ाओल गेल तखन ओ दहिना हाथसँ ओकरा सरकौलनि। एहि सँ बेसी विवरण हम तखन नहि देखलहुँ।

मन्त्र पढ़ल गेल। अग्नि राखल गेल। परिवारक लोक क्रमसँ बैसलाह। पितामहक स्थान हरिशंकर बाबूक कात छल। विधि समाप्त भेलापर ओ दुनू कागज मिलेलनि। समय रातिक अन्तिम पहर दिस छल। तकर पछाति हरिशंकर बाबू एक नीच टेबुल पर बैसि विवाह-अभिलेख लिखलनि।

हम ओहि प्रविष्टिक नकल एतय जसक तस दैत छी। ई हमर विवाहक लेख अछि; एहि कारण शब्द बढ़ायब वा घटायब उचित नहि।

विवाह-पाँजि — गृह-प्रतिलिपि

काल — सन १९६०, फागुन मास।

वर — रामानुग्रह मिश्र।

पिता — जनार्दन मिश्र।

पितामह — शिवनारायण मिश्र।

प्रपितामह — हरिनारायण मिश्र, पँजीकार।

गोत्र — काश्यप।

मूल — ककरौल।

ग्राम — करियापट्टी।

अधिकार — गृह-पाँजि अनुसार प्रमाणित।

कन्या — शारदा झा।

पिता — दयानाथ झा।

पितामह — विनोदानन्द झा।

गोत्र — भारद्वाज।

मूल — भेलाही।

ग्राम — बसबिट्टी।

मातृक सम्बन्ध — पृथक जाँच-पत्र अनुसार परीक्षणित।

निकट सम्बन्धक निषेध — नहि भेटल।

विवाह-अधिकार — दुनू पक्षमे स्वीकृत।

विधि — परिवार आ पुरोहितक साक्ष्यमे सम्पन्न।

साक्षी — शिवनारायण मिश्र; दयानाथ झा; हरिशंकर पँजीकार; परिवारक उपस्थित ज्येष्ठजन।

लेखक — हरिशंकर, अधिकारवला पँजीकार।

परवर्ती लेख — प्रथम सन्तान अथवा अन्य वंश-परिवर्तन भेलापर जोड़ल जाए।

हरिशंकर बाबू अन्तिम पाँति लिखि कलम रखलनि। हम सम्पूर्ण प्रविष्टि एक बेर पढ़लहुँ। अपन नाम ऊपर छल; शारदाक नाम मध्यभागमे। दुनू नामक बीच पिता, पितामह, गोत्र, मूल, ग्राम, निषेध आ अधिकार छल। कागजमे विवाह एतेक वस्तुक क्रम छल।

पितामह हमरा पुछलनि—“किछु संशय?” हम कहलहुँ—“नहि।” ओ हरिशंकर बाबूक लेख पर अपन साक्षी-चिह्न देलनि। दयानाथ झा सेहो हस्ताक्षर कयलनि। कागज मोड़ल नहि गेल; मसि सुखय धरि सपाट राखल गेल।

भोरक पहिने घरक स्त्रीसभ शारदाकेँ भीतर लऽ गेलीह। हमरा पृथक कोठलीमे पठाओल गेल। ओतय एक खाट, एक गद्दा, दू तकिया, पीतलक लोटा, एक गिलास आ सरिसब तेलक दीप छल। दरबज्जाक बाहर किछु देर स्त्रीसभक स्वर सुनाइत रहल। पछाति ओ सभ हटि गेलीह।

राति हम कोठलीमे गेलहुँ।
शारदा खाटक एक कात बैसल छलीह।
हम पानि पुछलहुँ; ओ “नहि” कहलनि।
दीप बुतल; तकर पछाति हम दुनू चुप रहलहुँ।

अध्याय २३ — अकाल १९६६

सन १९६६क वर्ष हम पहिने वर्षाक हिसाबसँ नहि, व्ययक बहिसँ चिन्हलहुँ। वर्षा कम पड़ल से बात खेत देखिते बूझल जा सकैत छल, मुदा घर पर अकालक पहिल चिन्ह मेघ नहि, कीनबाक सूची छल। आषाढ़मे जे वस्तु सभ मासक पहिल हाटमे एक संग कीनल जाइत छल, ओ सावन धरि आधा-आधा मात्रा मेँ आयल। भादवमे किछु नाम सूचीसँ हटि गेल।

हम ओहि समय पँजीक काज करैत रही, संगहि घरक व्यय-बहि सेहो रखैत रही। बहिक दू पन्ना एखन धरि हमरा लग अछि। एक पन्ना पर चाउर, दालि, नून, तेल, गुड़, मसाला, साबुन, कपड़ा, केरोसिन लिखल अछि। दोसर पन्ना पर ओही नामक आगाँ मात्रा घटल अछि। किछु नामक आगाँ शून्य अछि। शून्यक अर्थ वस्तु संसारसँ समाप्त नहि भेल; अर्थ केवल ई जे हमर घर ओ मास ओकरा कीनलक नहि।

सभसँ पहिने घी बन्द भेल। घी घरमे पहिनेसँ कमे आबैत छल, मुदा ओहि वर्ष विवाह-ब्याह छोड़ि नियमित कीनब रोकल गेल। तकर पछाति अरहरिक दालिक मात्रा घटल। सरिसो तेल नापि-नापि देल जाइत। तरकारीमे तेल पहिने जतेक पड़ैत छल तकर आधा पड़य लागल। गुड़ केवल चाय वा

अतिथि लेल राखल गेल। सुपारीक डिब्बा मास भर खुलल नहि। पानक पत्ता घरक बूढ़ लोक अपन पाइ सँ कीनैत छलाह।

नून कीनब छोड़ल नहि जा सकैत छल। एहि कारण नूनक दाम हम सभसँ बेसी ध्यानसँ देखैत रही। हाटमे बनियाँक काठक पट्टी पर दाम खड़ियासँ लिखल रहैत। पहिने नूनक पाँति मासक मास नहि बदलैत छल; ओहि वर्ष ओ पाँति बेराबेरी पोंछल गेल आ नव अंक लिखल गेल। हमर बहिमे नूनक आगाँ एक मास दाम लिखल अछि, अगिला मास ओ अंक काटि दोसर अंक लिखल अछि। ओकर बाद हम अंक नहि लिखलहुँ, केवल ‘एक सेर’ लिखलहुँ। घरमे नून कम पड़ला पर भोज नहि रुकैत, मुदा सभ व्यञ्जनक स्वाद एक संग बदलि जाइत।

गामक घरसभमे घटाव समान नहि छल। जकरा धान बचल छल ओकरा बजार कम देखबाक पड़ल। जकर खेत तटबन्धक भीतर नीचाँ पड़ैत छल ओकर धान बरखा कम रहलो पर किछु बचल। जकर खेत ऊँच भूमि पर छल, ओतय रोपनीक बाद दरार पड़ल। हमर इलाका राज्यक सभसँ खराब भाग नहि छल। दक्षिण आ पश्चिमक जिलासभक समाचार बेसी कठोर अबैत छल। मुदा हाटक दाम जिलाक सीमा नहि मानैत छल। अनाजक अभावक खबरि जँ दूर छल, ओकर असर हाटमे नजदीक छल।

चाउरक बदला घरमे मकइक दरदरा बेसी बनय लागल। जौ आ मड़ुआ जे पहिने गरीब घरक भोजन कहि उपेक्षित कयल जाइत छल, ओ फेर हाटमे आदर पाबय लागल। सत्तू पानि मेँ घोलि नून देल जाइत। रातिक भात छोट देगचीमे चढ़ैत। दिउसक बाँचल भातमे पानि देल जाइत आ दोसर दिन ओकरा नून-साग संग खायल जाइत। दूध बालक आ बूढ़ लोक लेल राखल जाइत; युवा लोक चाय बिना दूधक पीबय लागल।

घरक स्त्रीसभ एहि परिवर्तनक घोषणा नहि केलनि। ओ सभ केवल मात्रा बदललनि। पीतलक पैघ बासन कोठीक ऊपर चढ़ि गेल। छोट देगची नीचे रहल। चाउर धोबाक पानि पहिले फेकल जाइत छल; आब ओहि पानिसँ गोरुक चोकर भीजाओल जाइत। मसालाक सिल पर एक दिन छोड़ि एक दिन काज होइत। कोनो नियम लिखल नहि छल, मुदा भानसघरमे एक नव गणना चलि रहल छल।

बाजारमे सरकारक अनाजक चर्चा बढ़ल। उचित मूल्यक दोकान पर पाँति लगैत। नाम, परिवारक सदस्य, राशन-पत्र, मात्रा—सभ लिखल जाइत। कागज पर चाउर आ गेहूँक दर साधारण हाटसँ

नीच रहैत, मुदा वितरण सदिखन समान नहि रहैत। कखनो गेहूँ आयल, चाउर नहि। कखनो मात्रा काटल गेल। लोक राशन-पत्र लऽ कऽ घण्टा भर बैसल, तखन कहल गेल जे अनाज एखन नहि पहुँचल। अगिला दिन ओही राशन-पत्र फेर हाथमे।

हम एक दिन वितरणक सूची लिखबाक सहायता कयलहुँ। एहि बेर पँजीक नाम काज नहि आयल। सूचीमे पिता-पितामह नहि, परिवारक मुँह गनल गेल। पाँच मुँह, सात मुँह, तीन मुँह। एक विधवा अपन दू बालक संग आयल। लिपिक पहिने ओकर पतिगृहक नाम खोजलक, नहि भेटल। ओ नैहरक गाम कहलनि। लिपिक दोसर पन्ना खोललक। कागजक भीतर परिवार फेर ठाम बदललक। ओहि दिन हमरा फेर बुझायल जे परिवारक जीवित सम्बन्ध आ कागजक कोष्ठ एके वस्तु नहि अछि।

ऋणक बहि मोट होइत गेल। बनियाँक दोकान पर नामक आगाँ देय पाइ बढ़ैत छल, वस्तुक मात्रा घटैत छल। लोक एक सेरक बदला आधा सेर माँगैत। जे पहिने हाथक पाइ दैत छल, ओ कहैत—उपज घर अयला पर देब। बनियाँ दिनाङ्क लिखैत। ककरो नामक आगाँ लाल मसिसँ चिह्न दैत। लाल चिह्नक अर्थ हम पुछलहुँ नहि। अर्थ बुझाइत छल।

कपड़ा कीनब प्रायः रुकि गेल। बालकक पुरान कुर्ता छोट भेल तऽ बाँह काटि देल गेल। फाटल धोतीक बीचक बचल कपड़ा काटि गमछा बनल। स्त्रीक साड़ी फाटल तऽ किनार उलटि सिलल गेल। पयरक पुरान पहिरन फाटल तऽ जोड़ि-सिलि चलाओल गेल। नव पीढ़ी लेल नव वस्तु कीनबक जे क्रम छल, ओ एक वर्ष लेल पुरान वस्तु कैं फेर उपयोग करबाक क्रम बनि गेल।

केरोसिनक तेल बचाओल जाइत। साँझक दीप देरिसँ जरैत। हम पँजी पढ़बाक काज दिनक उजासमे समेटबाक प्रयत्न करैत रही। जँ कोनो ग्राहक साँझ पहुँचल, ओहि दिन दू बत्ती नहि, एक बत्ती जरैत। पोथीक पन्ना पर छाया पड़ैत। एहन समयमे लिखावट पढ़ब कठिन होइत, तें हम ग्राहककैं दोसर दिन आबय कहैत। भोजनक अभाव पँजीक अक्षरक उजासो घटा देत, ई बात हम पहिने नहि सोचने रही।

गामक बालकसभक व्यवहार बदलल। हाट सँ घुरैत लोकक झोलामे की अछि, ओ देखैत। गुड़ देखल तऽ पुछैत। भुजल चना देखल तऽ नजदीक आबैत। पहिने जे बात लज्जाक मानल जाइत छल, ओहि वर्ष प्रश्न बनि गेल—“किछु खाय लेल अछि?” घरक बूढ़ लोक एहि प्रश्नपर डाँट नहि दैत छलाह। उत्तर दैत छलाह, वा चुप रहैत छलाह।

कातिक धरि चारा सेहो गनबाक वस्तु बनि गेल। धानक पराली जतेक अपेक्षित छल ततेक नहि भेल। गोरुक नादमे भुस्सा कम पड़ैत। खली कीनब घटल। घरक लोक पहिने अपन थारीक अनाज घटबैत, तकर पछाति गोरुक भाग देखैत। बरद खेतक काजक साधन छल; ओकरा कमजोर होय देब अगिला उपजकेँ कमजोर करब छल। एहि कारण घरक अनाज आ पशुक चारा दू पृथक कोठी नहि रहल, एके व्ययक दू पाँति बनि गेल।

कातिकमे राहत-काजक सूची गाम धरि पहुँचल। माटि काटब, छोट बाट उँच करब, पोखरिक कात सँ गाद हटायब—एहन काजक नाम लिखल गेल। जे लोक खेतमे काज नहि पाबैत छल, ओ नाम लिखबैत। मजूरीक चर्चा भोजनक चर्चा जतेक छल। कतेक दिन काज भेटत, कतेक दिनक पाइ एक संग देल जाएत, नाम उचित पन्ना पर चढ़ल कि नहि—एहि प्रश्नसभ पर बैसार होइत।

पूजापर्व सेहो व्यय-बहीमे बदलल रूपेँ आयल। नव वस्त्रक पाँति काटल गेल। दीप लेल तेल पृथक कयल गेल, मुदा दीपक संख्या घटल। अतिथिक थारीमे पहिने जे पाँच वस्तु रहैत छल, ओ तीन भेल। कियो एहि परिवर्तनकेँ निर्धनता कहि घोषित नहि केलक। घरक लोक कहैत—एहि बेर एतबे। अगिला बेर देखल जाएत।

बालकक थारी पर कटौती अन्तमे पहुँचैत। पहिने बूढ़ लोक अपन भाग छोट करैत, तकर पछाति युवा लोक। एहि क्रमक कोनो लिखित नियम नहि छल। मुदा जँ दूध एक कटोरी छल तऽ मोहनक भाग पहिने निकलैत। ओ तखन चारि वर्षक छल। शारदा कटोरी पृथक रखि देथि, तकर पछाति आन लोकक चाय बनैत।

राज्य भरिक समाचार रेडियो सँ अबैत। बिहारक अनेक जिलामे उपज भारी घटल, राहतक काज बढ़ाओल गेल, बाहरी अनाज आनबाक बात भेल। हमर गाममे लोक आँकड़ा नहि बोलैत छल। ओ कहैत—अमुकक खेत नहि भरल, अमुक अपन बरद बेचलक, अमुक घरक लोक दू मासँ दालि नहि कीनलक। शासन संकट केँ संख्या मेँ गनैत छल; गाम ओकरा वस्तुसभक अनुपस्थितिमे गनैत छल।

एक दिन मोहन, जे तखन चारि वर्षक छल, नूनक डिब्बा हाथसँ खसा देलक। ढक्कन खुलि गेल आ नून माटि पर छितरा गेल। शारदा ओही घड़ी झाड़ू नहि आनलनि। ओ पहिने हाथसँ ऊपरक माटि नहि लागल नून बटोरलनि, पीतलक कटोरीमे रखलनि, तकर पछाति झाड़ू लगौलनि। पहिने

एहन भेल रहित तऽ माटि लागल नून फेकल जाइत। ओहि दिन माटि आ नून पृथक करबाक लेल पाँच मिनट लगाओल गेल।

हम ई घटना बहिमे नहि लिखलहुँ। व्यय-बहीमे केवल “नून — एक सेर” छल। मुदा अकालक यथार्थ लेख सम्भवतः ओ पाँच मिनट छल। वस्तुक मूल्य दाम बढ़लासँ मात्र नहि बदलैत; ओकरा फेकबाक अधिकार घटलासँ सेहो बदलैत अछि। एतय हम भाव नहि लिखैत छी। तथ्य एतबे जे ओहि दिन माटि पर खसल नून बटोरल गेल।

अगहन आयल तखन किछु खेत सँ धान घर पहुँचल, मुदा पुरान अभाव एकहि बेर नहि भरल। ऋण चुकयबाक छल। बीआ बचयबाक छल। अगिला रोपनीक चिन्ता छल। घरक बासन फेर पैघ नहि भेल। घटावक किछु नियम वर्ष बदललापर सेहो रहि गेल। तेल मापि देब, बाँचल भात फेकब नहि, कपड़ा ओही घड़ी बदलब नहि, अनाजक कोठी मासक बीच खोलि मात्रा देखब—ई सभ व्यवहार बादक वर्षसभमे सेहो चलैत रहल।

पँजीमे सन १९६६क आगाँ कोनो विशेष चिह्न नहि अछि। विवाह भेल, जन्म भेल, मृत्यु भेल, जे प्रविष्टि अपेक्षित छल से लिखल गेल। अकाल वंशक सूत्र नहि तोड़लक। एहि कारण पँजी ओकरा लगभग नहि देखैत अछि। व्यय-बहि देखैत अछि। राशन-पत्र देखैत अछि। बनियाँक उधारक पन्ना देखैत अछि। छोट देगची देखैत अछि। नूनक डिब्बा देखैत अछि।

हमरा लेल सन १९६६क स्मृति ई चारि बातमे बचल अछि—घी नहि कीनल गेल, भातक देगची छोट भेल, नूनक दामक अंक काटि दोसर अंक लिखल गेल, आ माटि पर खसल नून फेकल नहि गेल।

अध्याय २४ — इन्जीनियर बाबू

सन १९६२क जे दिन मोहन जन्मल, ओहि दिन हमर घरमे दू तरहक कागज आयल। पहिल कागज दाइकेँ पठेबाक लोकक हाथक छोट पुर्जा छल, जाहिमे औषधि, रूई, तेल, गरम पानि आ स्वच्छ कपड़ाक सूची लिखल छल। दोसर कागज जल-संसाधन कार्यालयक छपल सूचना छल, जाहिमे तटबन्धक एक खण्ड पर रक्षण आ मरम्मति-काज लेल निविदा माँगल गेल छल। दुनू कागज

एकहि दिन हमर टेबुल पर पड़ल। एक कागज देह बचेबाक तैयारी छल। दोसर माटिक उठाओल रेखा बचेबाक।

शारदाक प्रसवक समय नजदीक छल। घरमे पिछला तीन दिनसँ एक कोठली खाली कयल गेल छल। पुरान बिछाओन धूपमे सुखाओल गेल। पीतलक लोटा माँजल गेल। गरम पानि लेल पैघ हाँड़ी पृथक राखल गेल। दाइकेँ खबरि देल गेल। हमर माय नहि रहलीह; घरक जेठ स्त्रीसभ व्यवस्था देखैत छलीह। हम ओहि काजमे कम पड़ैत रही। हमरा जे कहल जाइत, से करैत रही—काठ आनब, पानि भरब, बजारसँ रूई आनब, दवाइक पुर्जा पढ़ब।

ओहि बिहान कार्यालयक दूत आयल। ओ हमरा परिचित छल। पँजीक काजेँ कखनो-कखनो ओकर घरक लोक अबैत छल। ओ कहलक जे सिंचाइ विभागक एक कागज पढ़ि दियौ, ओकरा अंग्रेजी शीर्षक बूझयमे कठिनाइ होइत छैक। हम कागज लेलहुँ। ऊपर विभागक नाम छल। नीचाँ तटबन्धक किलोमीटर, काजक अवधि, माटि, बाँस, बोल्डर, झाँझर, मजदूर, ढुलाई आ अनुमानित लागतक कोष्ठ छल। अन्तमे निविदा जमा करबाक दिन लिखल छल।

हम ओकरा शीर्षक आ मुख्य बात पढ़ि सुनौलहुँ। ओ पुछलक—“ई पैघ काज हएत?”

हम कहलहुँ—“कागज पैघ अछि। काज कतेक पैघ हएत से स्थल देखलाक बाद बूझल जाएत।”

ओ हँसल नहि। कागज मोड़ि झोलामे राखलक आ चलि गेल।

तटबन्ध बनला पछाति हम देखलहुँ जे ओकरा बनायब एक बेरक काज नहि छल। बरखा आबिते ढाल पर घास उखड़ैत, कतहु पानि रिसैत, कतहु चूहाक बिल देखाइत, कतहु धार किनार काटैत, कतहु बोरा राखल जाइत। निर्माणक समय जे शब्द सुनने रही—“समाप्त”—ओ व्यवहारमे स्थिर नहि रहल। माटिक देहकेँ वर्ष-वर्ष देखबाक पड़ैत। काजक नव नाम बनैत—रक्षण, दृढ़ी, कटाव-रोध, पुनर्भरण, मरम्मति।

हमरा एहि बातक विशेष ज्ञान नहि छल। हम इन्जीनियर नहि रही। मुदा नाम पढ़बाक पुरान काजक कारण विभागक किछु लोक हमरा चिन्हैत छल। कखनो गामक नाम, खेतक पुरान सीमा, अथवा टोला पहिचानबाक लेल पुछि लैत। एहि कारण कागज हमरा आँखि सोझाँ अबैत रहल। हम देखैत रही जे नदीक कात बनल माटिक रेखा अपने एकटा नव अभिलेख-संसार बनबैत अछि।

पँजीमे पिता-पितामह छल; विभागक बहिमे किलोमीटर, स्पर, ढाल, माटिक घनफुट आ खर्च छल।

दुपहर धरि शारदाक पीड़ा बढ़ल। दाइ आबि गेलीह। घरक पुरुषसभकेँ ओसार सँ बाहर राखल गेल। हम आँगनक दोसर कात बैसल रही। हमरा लग कोनो काज नहि छल, तैँ हम पहिने आयल विभागीय सूचनाक शब्द मोनमे दोहरबैत रही। किलोमीटर। मरम्मति। रक्षण। समय-सीमा। जमानत। मजदूर।

बीच-बीचमे भीतर सँ स्त्रीसभक स्वर अबैत। कखनो पानि माँगल जाइत। कखनो कपड़ा। कखनो चुप्पी एतेक दीर्घ होइत जे हम उठि दरबज्जा दिस देखैत, फेर बैसि जाइत। पितामह तखन जीवित छलाह। ओ हमरा एक बेर कहलनि—“दरबज्जा ताकलासँ समय बेगें नहि बीतत।” हम किछु नहि कहलहुँ।

दुपहरक बाद विभागक दू कर्मचारी साइकिलसँ गाम आयल। हुनका सभकेँ तटबन्धक कात पुरान बाटक नाम पुछबाक छल। घरक अवस्था देखि ओ सभ भीतर नहि अयलाह। ओसारक बाहरसँ एक कर्मचारी कागज खोललक। तीन नाम छल—पुरान धार, बाँसक झाड़ीवला मोड़, आ एक छोट बसती जे सरकारी नक्शामे पृथक नामसँ लिखल छल। हम हुनका लोक-नाम बता देलहुँ। ओ लाल पेन्सिलसँ कागज पर सुधार-चिह्न देलक।

दोसर कर्मचारी कहलनि—“एहि बेर मरम्मतिक काज पैघ अछि। बरखा पहिने करबाक अछि।”

हम पुछलहुँ—“कतय धरि?”

ओ किलोमीटर कहलक। हम ओ स्थान मोनमे मिलौलहुँ। ओहि भागक कात पिछला वर्ष बरखामे पानि ढाल धरि चढ़ल छल। गामक लोक बोरा भरि राखने छल। विभागीय लोक पछाति आयल छल। एहि बेर काज बरखा पहिने कयल जाएत—कागज एतबे कहैत छल।

ओ सभ चलि गेल। लाल पेन्सिलक छोट चिह्न हमर मोनमे रहि गेल। सरकारी नक्शामे नाम बदलल जा सकैत छल। माटिक ढाल सेहो फेर भरल जा सकैत छल। पँजीक मेटाओल पाँति फेर लिखब एतेक सहज नहि छल। मुदा ओहि दिन हम पुरान पाँतिक विषयमे बेसी सोचबाक अवस्था मे नहि रही।

साँझ होइत-होइत भीतर सँ बालकक रोदन सुनाइ पड़ल। आवाज छोट छल, फेर दोसर बेर पैघ भेल। ओसारमे बैसल पुरुषसभ एक-दोसराक मुँह देखलक। पितामह उठलाह। कियो हमरा भीतर नहि बजौलक। किछु देर पछाति जेठ स्त्री बाहर आबि कहलनि—“पुत्र भेल।”

हम पहिने शारदाक कुशल पुछलहुँ। उत्तर भेटल—कुशल छथि। तकर बाद बालकक। उत्तर—कुशल अछि।

नाम ओही दिन नहि राखल गेल। जन्मक समय लिखल गेल। दाइ कहलनि सूर्य अस्त होयबासँ किछु पहिने। पितामह अपन घड़ी देखलनि। हमर घड़ी नहि छल। समयक दू रूप भेल—दाइक अनुमान आ पितामहक घड़ी। पँजीमे बादमे घड़ीक समय लिखल गेल।

रातिमे हम छोट दैनिकीमे केवल दिनाङ्क लिखलहुँ। ओकर नीचाँ—“पुत्र-जन्म।” नामक ठाम रिक्ति छोड़ल। शारदा थाकल छलीह। बालक हुनकर कात कपड़ामे लपेटल छल। हम दूरसँ देखलहुँ। माथ पर कारी केसक पातल तह छल। आँखि बन्द। दहिना हाथक आँठी भीतर मोड़ल। एतबे लिखबाक योग्य तथ्य हमरा देखाइत छल।

दोसर दिन नामक चर्चा भेल। परिवारमे अनेक नाम प्रस्तावित भेल। पितामह पुरान नामक सूची खोलबाक पक्षमे छलाह। शारदा कहलनि छोट नाम होअय। अन्तमे “मोहन” पर सहमति भेल। पँजीमे नाम लिखल गेल—मोहन मिश्र। पिता रामानुग्रह मिश्र। माता शारदा। जन्म सन १९६२। ग्राम करियापट्टी।

ओहि प्रविष्टिक नीचे पितामह हमरा लिखब कहलनि—“जन्म-दिनाङ्क परिवारक मौखिक साक्ष्य आ गृह-दैनिकीसँ मिलाओल।” हम लिखलहुँ। पितामह पढ़लनि। किछु नहि बदललनि।

तीन दिन पछाति विभागीय सूचना फेर चर्चा मे आयल। एहि बेर हाट पर दू ठीकादारक मुंशी आपसमे बात करैत छल। ककरा लग कतेक बैलगाड़ी अछि, ककरा लग बोल्डर आनबाक साधन, मजदूर कतयसँ भेटत, जमानत कतेक, भुगतान कखन—ई सभ बात। तटबन्ध आब केवल माटि नहि रहल छल; ओकरा संग मजदूरी, ढुलाई, आपूर्ति, माप-पुस्तिका आ भुगतानक एक नव संसार जुड़ि रहल छल।

हम हाटमे नून आ तेल कीनय गेल रही। मुंशी सभक बात सुनबाक हमर कोनो प्रयोजन नहि छल। मुदा “माप-पुस्तिका” शब्द कानमे अटकल। पँजीकार लेल माप शब्दक अर्थ दोसर छल—पीढ़ीक

दूरी, सम्बन्धक निषेध, मूलक शाखा। विभाग लेल माप फुट, घनफुट, किलोमीटर आ ढाल छल। दुनू काजमे लेख बिना भुगतान अथवा विवाह—किछुओ स्वीकृत नहि होइत। मुदा दुनू लेखक भूलक परिणाम पृथक छल।

किछु सप्ताह पछाति कार्यादेश निकलल। ई राज्य अथवा समूचा कोसी परियोजनाक पहिल मरम्मति-काज नहि छल; हमर परिचित डिवीजनमे एतेक पैघ रक्षण-काज पहिने हम नहि देखने रही। एहि कारण गामक लोक एकरा “पैघ ठीका” कहैत छल। कागजमे एहि शब्दक बदला काजक सम्पूर्ण विवरण छल—अमुक किलोमीटरसँ अमुक किलोमीटर धरि ढालक पुनर्भरण, चुनल ठाम पर बोल्डर, बाँसक झाँझर, माटि दबेबाक काज, श्रम-दिवस, निरीक्षण आ माप।

कार्यादेशक नकल एक दिन कार्यालयक कर्मचारी हमरा देखौलक। ओकरा फेर एक पुरान बसती-नामक वर्तनी पुछबाक छल। हम नाम बता देलहुँ। कागजक नीचाँ ठीकादारक नाम छल। ओकरा ऊपर अभियन्ताक हस्ताक्षर। तिथि मोहनक जन्मक तिथिसँ अठारह दिन पछातिक छल।

हम ओहि साम्यकेँ तखन कोनो संकेत नहि मानलहुँ। बालकक जन्म आ मरम्मति-काजक कार्यादेशक बीच कोनो कारण-संबन्ध नहि छल। एक घरक घटना छल, दोसर विभागक। केवल समय एक छल। हमरा दैनिकीमे दुनू तिथि एकहि पन्नाक दू कात पड़ल।

मोहनक जन्मक पछिला मास सभमे शारदा राति बेराबेरी जागैत छलीह। बालकक रोदन, दूध, कपड़ा, ज्वरक आशंका, तेल-मालिश—घरक समय छोट-छोट अन्तरालमे बँटि गेल। तटबन्धक काज सेहो छोट-छोट मापमे बँटल। कतहु माटि खसल, कतहु भरल, कतहु बोरा, कतहु बाँस, कतहु बोल्डर। निरीक्षणक दिन माप लिहल जाइत। जे काज मापमे नहि आयल, भुगतानमे नहि आयल।

एक दिन शारदा कहलनि—“ई बालक राति भरि जगबैत अछि।”

हम कहलहुँ—“दिनमे सुतैत अछि।”

शारदा कहलनि—“तोरा ई बात लिखबाक आवश्यकता नहि।”

हम दैनिकी बन्द कऽ देलहुँ।

मोहन दू मासक भेल तखन ओकर जन्म-पाँतिक नीचाँ पहिल परवर्ती लेख जोड़ल गेल—नामकरण सम्पन्न। एतबे। ओ कतेक रोइत अछि, ककर कोरा मे चुप होइत अछि, दूध पीबि कतेक देर सुतैत अछि—पँजी लेल एहि सभक कोनो अधिकार नहि छल। पँजीक सीमा हमरा स्पष्ट छल।

विभागीय बहिक सीमा सेहो छल। माप-पुस्तिका कहैत छल कतेक माटि भरल गेल, कतेक बोल्डर लगल, कतेक मजदूरी बनल। ओ नहि कहैत छल जे माटि काटबाक लेल ककर खेतक कात सँ बैलगाड़ी गेल, ककर आँगन धूरसँ भरल, ककरा मजदूरी समय पर भेटल, ककरा दू सप्ताह पछाति। जँ लिखल गेल तऽ पृथक शिकायत-पत्रमे। मुख्य बहि काजक माप देखैत छल, जीवनक नहि।

वर्षाक पहिल पैघ पानि अयला पर गामक किछु लोक तटबन्ध देखय गेल। हम नहि गेलहुँ। घरमे मोहन कैं ज्वर छल। बादमे सुनलहुँ जे मरम्मति कयल भाग टिकि रहल। एक ठाम ढाल पर नव माटि बहल, ओतय फेर बोरा राखल गेल। विभागक कर्मचारी एकरा सामान्य रखरखाव कहलनि। गामक लोक कहल—“बान्ह चलि रहल अछि।” दुनू कथन अपन-अपन ढंगसँ यथार्थ छल।

पितामह मोहन कैं कोरामे अत्यल्प लैत छलाह। हाथ काँपैत छल। मुदा एक दिन ओ ओकरा पँजीक कोठलीमे लऽ अयलाह। बालक तखन किछु देखबाक अवस्था मे नहि छल। पितामह पोथीक आलमारी दिस देखबैत कहलनि—“एहि सभमे तोहर नाम आबि गेल।”

हम कहलहुँ—“ओ बुझैत नहि अछि।”

पितामह कहलनि—“पँजी बुझय लेल नहि, पछाति पहचान लेल रहैत अछि।”

ई वाक्य हम दैनिकीमे लिखलहुँ।

दीर्घ काल पछाति मोहन स्वयं इन्जीनियर बनत, ई बात ओहि दिन ककरो ज्ञात नहि छल। ओहि समय ओ केवल एक बालक छल जकर नामक पाँति नव मसिसँ लिखल गेल छल। तटबन्ध सेहो हमर आँखिमे एखन अभियान्त्रिकी संस्थाक पैघ प्रश्न नहि, माटिक एक दीर्घ उठान छल जकरा बरखा पहिने फेर-फेर देखबाक पड़ैत।

सन १९६२क ओहि पन्ना पर हमरा आइयो दू लेख एक संग देखाइत अछि। ऊपर—मोहनक जन्म। नीचाँ—तटबन्धक एक खण्डक रक्षण आ मरम्मति-काजक कार्यादेशक तिथि।

दुनूकेँ तखन हम जन्म नहि कहने रही।

आब बुझैत छी, ओहि वर्ष घरमे एक बालक जन्मल आ नदीक कात एक नव पेशागत संसार सेहो आकार लेबय लागल—माप, कार्यादेश, ठीका, निरीक्षण, भुगतान आ मरम्मतिक संसार—जकर भीतर मोहन दीर्घ काल पछाति अपन जीवनक काज चुनत।

अध्याय २५ — चुप्पी

भोरक उजास भीतर धरि पहुँचबाक पहिने कोठलीक माटि ठंढा अछि। देहक दहिना कात ओहि ठंढक बेसी लगैत अछि, जतय राति भरि चटाइक धार दबने रहल। बाँहि उठबैत त्वचा पर महीन चौकोर छाप देखाइत अछि। हथेली फेरिते छाप धुँधला पड़ैत अछि। माथक केसक जड़िमे रातिक पसीना सुखि कऽ नूनक किरकिराहट छोड़ने अछि। कानक पछिला भागमे तेलक गन्ध एखनहुँ अटकल अछि। बाहर अन्हार पूर्णतः हटले नहि अछि; भीतर चूल्हिक राखि राखि रंगक उजास अछि।

पयर माटि पर पड़िते पहिल अनुभूति धूलिक नहि, महीन बालुकणक अछि। भूकम्पक बाद दीवारक तिरछा चिरा सँ राति भरि झरल कण कोठलीक कोनमे जमा अछि। अँगुरिसँ भीत छुबिते चूना नहि, कच्चा माटिक खुरदुरापन लगैत अछि। एक ठाम दरारक किनार एतेक तीक्ष्ण अछि जे नखक नीचाँ किरकिरी भरि जाइत अछि। ओ नखकेँ साड़ीमे रगड़ि स्वच्छ करैत अछि। ओकरा ई किरकिराहट नीक नहि लगैत अछि।

आँगनक पानिमे पहिल डुबकी हथेलीक ताप घटा दैत अछि। लोटाक पीतल ठंढा अछि। कलाई धरि पानि ढारैत त्वचा पर महीन रोआँ ठाढ़ होइत अछि। मुँह धोइत आँखिक कोनमे राखिक सूक्ष्म कण चुभैत अछि। दू बेर पानि देलाक बादो चुभन रहैत अछि। ओ आँखि जोर सँ नहि मलैत अछि; भीजल आँचरक कोना सँ धीरे-धीरे छुबैत अछि। पानिक स्वादमे माटिक हल्का गन्ध अछि। कुआँक पानि भूकम्पक पछाति किछु दिन एहनहि लागैत अछि।

चूल्हिक धुआँ ओकरा सहन नहि होइत अछि। काँच माटिक भीतर आधा-भीजल लकड़ी सुलगैत अछि आ धुआँ आँखि तक उठैत अछि। ओ मुँह दोसर दिस घुमा लैत अछि। आँखिमे पानि आबि जाइत अछि; नाकक भीतर तीखापन बसि जाइत अछि। चाउर धोएल पानि देगचीमे पड़ैत अछि तखन धुआँक ऊपर भापक नमी चढ़ैत अछि। उबलैत पानिक ध्वनि एकरस अछि। ढक्कन कँपैत अछि। ओ ढक्कनक कात छोट माटिक ढेला राखि दैत अछि, जाहिसँ आवाज कम होअय।

भातक गन्ध ओकरा भूख सँ पहिने पहिचानमे अबैत अछि। भातक संग आइ दालि नहि, केवल नून-मरिच आ काँच आमक छोट फाँक अछि। काँच आम ओकरा पसिन अछि। खट्ट स्वाद जिह्वाक दूनू कात एक संग सिकोड़ि दैत अछि। दाँतक एक पुरान पीड़ा खट्टासँ जागि उठैत अछि, मुदा ओ आमक फाँक छोड़ैत नहि अछि। नूनक दाना अँगुरिक पोरमे चिपकल अछि। एक दाना ओ जीह पर राखैत अछि; तकर पछाति आम काटैत अछि।

साड़ी मोट सूतक अछि। भीजल किनार पिंडलीसँ सटैत अछि तखन कपड़ाक खुरदुरापन बेसी बुझाइत अछि। बामा घुटनाक नीचाँ पुरान खरोंचक रेखा अछि। ओहि रेखा पर साड़ी रगड़ाइत तऽ महीन खुजली होइत अछि। ओ नख नहि चलबैत अछि; हथेलीसँ एक बेर दबा दैत अछि। एड़ीक त्वचा फाटल अछि। सरिसब तेलक दू बूँद रगड़िते दरारमे हल्का जरन होइत अछि। तेलक गन्ध ओकरा नीक लगैत अछि, खास कऽ धुआँक गन्धक बाद।

दुपहरक उजास भीतक चिरा सँ धार जकाँ भीतर पड़ैत अछि। ओहि उजासमे धूलिक कण ऊपर-नीचाँ तैरैत देखाइत अछि। कोठलीक आन भाग अन्हार अछि। बाँसक टोकरीमे कपड़ा राखल अछि; ऊपर लाल किनारवला एक साड़ी, नीचाँ दू साधारण साड़ी, एक पुरान ओढ़नी, काँचक चूड़ीक कपड़ामे लपेटल छोट पुड़िया। लाल किनारवला साड़ी ओकरा भारी लगैत अछि। ओ हलुक साड़ी निकालैत अछि। काँचक चूड़ीक पुड़िया खनकैत अछि; ओ पुड़िया फेर भीतर दबा दैत अछि।

दूर सँ माटि काटबाक धप-धप सुनाइत अछि। बीच-बीचमे बैलगाड़ीक पहियाक चरचराहट। ककरो खाँसी। बछियाक पातर स्वर। कुकुरक दू बेर भुकनाइ। तकर पछाति लम्बा मौन। एहि मौनमे कान अपन देहक ध्वनि सुनैत अछि—नाक सँ निकलैत श्वास, गिलल पानिक महीन गति, कपड़ाक रगड़, कलाईक चूड़ीक हलुक टकराहट। ओ चूड़ी उतारि देइत अछि। नाङर कलाई ओकरा हलुक लगैत अछि।

आँगन पार करैत धूप पयरक ऊपरी भाग जरा दैत अछि। छाँहमे पहुँचि ओ रुकैत अछि। आमक गाछक नीचाँ माटि पर कच्च आमक गन्ध अछि। एक फल आधा फाटल पड़ल अछि, ओकरा चारू कात पिपरी चलैत अछि। ओ फल नहि उठबैत अछि। गाछक छाल पर हथेली राखैत अछि। छालक रुखरुखापन भीतरक ठंढक सँ भिन्न अछि। माथ ऊपर पात हिलैत अछि। उजास पातक बीच-बीच सँ देह पर छोट-छोट चकती बनाकऽ पड़ैत अछि।

नदी एतय सँ देखाइत नहि अछि, मुदा हावा ओकर गन्ध अनैत अछि। भीजल बालु, सड़ैत पात, काइ आ दूरक जलक मिश्रित गन्ध। भूकम्पक बाद एहि गन्धमे किछु नव अछि—कच्च माटिक खुलल तहक गन्ध। ओ गन्धकेँ नाक भरि लैत अछि, फेर धीरे छोड़ैत अछि। ओकरा बड़ तीख सुगन्ध नीक नहि लगैत अछि। चमेलीक तेल सँ माथ भारी होइत अछि। सरिसब, कच्च आम, भीजल माटि—एहि तीन गन्धमे ओ सहज रहैत अछि।

बामा कानक लोतिक छेदमे पीतलक छोट बाली रहैत अछि। गर्मीमे ओहि ठाम पसीना जमि कऽ चिपचिपाहट करैत अछि। ओ बाली निकालि अँगुरिक बीच घुमबैत अछि। धातुक ठंढक धीरे देहक ताप लैत अछि। छेदक कात महीन करिया मैल लागल अछि; भीजल कपड़ासँ पोंछिते हलुक जरन होइत अछि। ओ बाली तुरत फेर नहि पहिरैत अछि। लोतिक खाली छेद हवा लगिते पृथक अनुभूति दैत अछि। माथ झुकबैत केस ओहि ठाम छुबैत अछि आ गुदगुदी जकाँ लगैत अछि।

ओकरा भातक ऊपर जमल मोट पपड़ी पसिन नहि अछि। देगचीक तलीक खरखर भाग दोसर लोक लेल छोड़ि दैत अछि। मुदा सिकी पर सुखाओल चाउरक कुरकुर ध्वनि ओकरा नीक लगैत अछि। एक छोट मुट्ठी अँगुरिसँ दबबैत दाना टूटबाक आवाज सुनैत अछि। मुखमे पड़िते सूखल दाना पहिने कठोर, फेर लारमे नरम होइत अछि। ई छोट अन्तर ओकरा स्पष्ट बुझाइत अछि। ओ एक बेरमे बेसी नहि लैत अछि; दू-तीन दाना, फेर पानि।

दुपहर उतरिते देह थाकि जाइत अछि। कमरक दहिना भागमे धीमा पीड़ा अछि। ओ ओसारक खम्भा सँ पीठ सटाकऽ बैसैत अछि। खम्भाक माटि घामसँ गरम अछि। पीठक कपड़ा ओहि गरमीकेँ थामि लैत अछि। आँखि मूनिते लाल उजास देखाइत अछि। पलकक भीतर लाल रंग, तकर बीच करिया तिरछा बिन्दु। आँखि खोलिते आँगन फेर धूसर-पीयर। कोनो स्वर ओकरा बजबैत नहि अछि। केवल घरक भीतर बासन खसकबाक ध्वनि अबैत अछि।

साँझक पहिने ओ केस खोलैत अछि। गाँठ खोलिते माथक त्वचा तनैत अछि। कंघीक दू दाँत टूटल अछि; टूटल ठाम केस अटकैत अछि। ओ अटकल केस बलपूर्वक नहि खींचैत अछि। अँगुरिसँ पृथक करैत अछि। तीनटा सफेद केस कंघीमे रहि जाइत अछि। ओ ओकरा हथेली पर राखि किछु क्षण देखैत अछि, फेर आँगनक धूरमे छोड़ि दैत अछि। हावा ओहि पतला केसकेँ एक बेर घुमबैत अछि, तकर पछाति माटिमे सटा दैत अछि।

साँझ पड़िते मच्छर बढ़ैत अछि। पिंडली, पयरक अँगुरी, बाँहक भीतरक कोमल भाग पर सुई-जकाँ चुभन। धुआँ करबाक लेल सूखल पात सुलगाओल जाइत अछि। ओ धुआँ फेर आँखिमे लागैत अछि। ओ धुआँसँ दूर हटैत अछि। नाकक भीतर दिन भरिक धुआँ पहिनेसँ बसल अछि। ओ मुँहसँ श्वास लैत अछि। जिह्वा सुखि जाइत अछि। लोटासँ पानि पीबैत पीतलक किनार दाँतसँ टकराइत अछि। ठंढ पानि कण्ठ सँ नीचाँ उतरैत अछि।

राति गाढ़ होइत देह पर दिनक सभ छोट स्पर्श फेर जागैत अछि—कलाईक खनक नहि, घुटनाक नीचाँ खुजली, एड़ीक तेल, आँखिक धुआँ, दाँतक खट्ट पीड़ा, कमरक धीमा दुखाइ। ओ करवट बदलैत अछि। चटाइक बेंत पीठमे लागैत अछि। बाहर झींगुरक निरन्तर स्वर अछि। दूर कतहु पानि चलबाक मद्धिम आवाज अछि। बीचमे एक बेर माटि भीतर सँ अत्यन्त हलुक थरथराहट जकाँ किछु लगैत अछि कि देहक अपन धड़कन, भेद स्पष्ट नहि होइत अछि। ओ हथेली माटि पर राखैत अछि। माटि स्थिर अछि।

ओ हथेली हटबैत नहि अछि। अँगुरिक पोर माटिक ठंढक पकड़ि रखने अछि। हथेलीक बीचक रेखासभमे महीन धूलि भरैत अछि। बाहरक अन्हारमे कोनो आकृति स्पष्ट नहि अछि। आँगनक कात राखल पीतलक लोटा हलुक उजास पकड़ि एक बिन्दु चमकैत अछि। तकर बाद बादर चन्द्रमाकेँ ढाँकि दैत अछि आ ओ चमक सेहो मेटा जाइत अछि। कोठलीमे केवल श्वासक आवागमन, चटाइक खुरदुरापन, माटिक ठंढक आ दूरक जलक आवाज बचैत अछि।

अध्याय २६ — कोसी — ४

हम बहैत छी आ माटि हमरा भीतर घुलैत अछि आ माटिक भीतर जे किछु दबायल अछि से हमरा लग कखनो कथा नहि बनैत अछि से केवल भार बनैत अछि आ भारक रंग होइत अछि गन्ध होइत

अछि कण होइत अछि चूना होइत अछि राख होइत अछि हड्डीक उज्जर कण होइत अछि लाल माटिक लसलसाहट होइत अछि आ हम एहि सभकेँ पृथक नाम नहि दैत छी कारण नाम मनुष्य लिखैत अछि आ हम ढलान पढ़ैत छी हम दबाव पढ़ैत छी हम कातक टूटन पढ़ैत छी हम बालुकणक घूमनाइ पढ़ैत छी आ जतय काल्हि घास अछि आइ ओतय जल अछि आ जतय आइ जल अछि ओतय काल्हि फेर बालु उठैत अछि आ मनुष्य अपन कागज पर एक रेखा खींचैत अछि आ कहैत अछि ई गाम अछि ई टोला अछि ई खेत अछि ई जाति अछि ई घर अछि ई पुरखा अछि ई अधिकार अछि मुदा हमरा लेल रेखा माटिक भीतरक हलचल धरि टिकैत अछि आ माटि जखन सरकैत अछि तखन पुरान आँगनक ईंट ऊपर अबैत अछि चूल्हिक कालिख ऊपर अबैत अछि माछक काँट ऊपर अबैत अछि माटिक घैलक टुकड़ा ऊपर अबैत अछि आ कखनो एहन किछु ऊपर अबैत अछि जेकरा देखिते मनुष्य अपन आँखि दोसर दिस घुमा लैत अछि कारण ओ वस्तु ओकर लिखल पन्नासँ मेल नहि खाइत अछि आ हम देखैत छी जे देह माटि बनैत अछि मुदा माटि देहक सभ निशान तत्क्षण नहि छोड़ैत अछि आ कलाईक गोल हड्डी दीर्घ काल धरि गोल रहैत अछि दाँतक कठोरपन दीर्घ काल धरि कठोर रहैत अछि खोपड़ीक जोड़ माटि खसैत काल पृथक रेखा बनबैत अछि आ एहि सभमे हमरा कोनो अपराध नहि देखाइत अछि कोनो निर्दोष नहि देखाइत अछि हमरा केवल पदार्थ देखाइत अछि जे जलक संग चलैत अछि वा माटिक भीतर अटकल रहैत अछि आ मनुष्य ओकरा देखिकऽ समय गनैत अछि उमेर गनैत अछि लिंग गनैत अछि चोट गनैत अछि आ पुछैत अछि ई के छल आ हमरा लग उत्तर नहि अछि कारण हम नाँव नहि राखैत छी हम केवल ठाम बदलैत छी मुदा मनुष्यक नाँवक भूख हमरा धारसँ पैघ अछि ओ घिसल पाँति फेर पढ़य चाहैत अछि ओ रिक्त ठाममे अक्षर खोजैत अछि ओ माटिक भीतरक टुकड़ा उठा कऽ पुरखा खोजैत अछि ओ अपन घरक देहरी सँ बाहर निकलि ओहि ठाम तक जाइत अछि जतय ओकरा कहियो जेबाक कारण नहि छल आ हम ओहि ठामक बालु फेर सरकबैत छी कारण वर्षा ऊपर अछि पहाड़क जल नीचाँ अबैत अछि कात कमजोर अछि भीतरी धारा तेज अछि आ एहि सभ कारणक बीच मनुष्य अपन कारण खोजैत अछि आ जखन ककरो एड़ी जकाँ एक हड्डीक टुकड़ा बालुसँ बाहर चमकैत अछि तखन पहिने कियो ओकरा काठ बुझैत अछि फेर कियो पाथर बुझैत अछि फेर एक हाथ ओकरा छूबय जाइत अछि फेर हाथ रुकैत अछि आ सभक देहक भीतर पुरान शब्द उठैत अछि मुदा हम शब्द नहि सुनैत छी हम केवल पयरक दबाव महसूस करैत छी जे एकाएक एक ठाम जमा भऽ जाइत अछि आ फेर हटैत अछि आ फेर लोक घुरि अबैत अछि डोरी अनैत अछि कपड़ा अनैत अछि बाँस अनैत अछि सरकारी लोककेँ खबरि दैत अछि आ ठामक

चारू कात चिन्ह लगैत अछि आ जे माटि कखनो खेतक मेड़ छल से जाँचक ठाम बनैत अछि आ जे बालु पर बालक सभ खेलैत अछि से एकाएक रोकल क्षेत्र बनैत अछि आ मनुष्य फेर कागज खोलैत अछि आ तिथि लिखैत अछि समय लिखैत अछि ठाम लिखैत अछि अनुमान लिखैत अछि मुदा हम तिथि नहि मानैत छी कारण एके ठाम पर अनेक वर्षक माटि एक संग अछि ऊपरक तह नव अछि नीचाँक तह पुरान अछि बीचमे बाढ़िक महीन गाद अछि कतहु भूकम्पक दरार भरल अछि कतहु चूल्हिक राख अछि कतहु गोबरक सड़ल परत अछि आ ई सभ एक दोसरासँ सटल अछि जकाँ मनुष्यक घरक कथा सटल रहैत अछि मुदा कागज ओकरा पृथक पृथक पाँतिमे चाहैत अछि आ हम देखैत छी जे पाँति बनबैत काल किछु बाहर रहि जाइत अछि आ बाहर रहि गेल वस्तु फेर हमरा कात आबि पड़ैत अछि आ हम ओकरा उठबैत नहि छी हम ओकरा नुकबैत नहि छी हम केवल ओहि पर जल फेरबैत छी आ जखन जल घटैत अछि तखन जे भारी अछि से ओतहि रहैत अछि जे हलुक अछि से आगाँ चलि जाइत अछि आ एहि साधारण भेदक भीतर मनुष्य भय देखैत अछि नियति देखैत अछि दण्ड देखैत अछि संकेत देखैत अछि मुदा हमरा लेल ई घनत्व अछि आकार अछि वेग अछि आ माटिक पकड़ अछि आ एक दिन जे हाथ पँजीक पन्ना पर एक नाम घिसैत अछि ओकर हड्डी सेहो एहि घनत्व आकार वेग आ पकड़मे अबैत अछि आ एक दिन जे देहक नाँव लिखल नहि जाइत अछि ओकर हड्डी सेहो अबैत अछि आ दुनू एकहि माटिमे पड़ि सकैत अछि बिना एहि ज्ञानक जे ऊपर कियो कोन नाम ककरा देलक आ हम बहैत छी आ सुनैत नहि छी मुदा पुलक खम्भा पर जलक चोट हमरा भीतर लौटैत अछि तटबन्धक देह पर दबाव हमरा भीतर लौटैत अछि नावक तल्ला हमरा ऊपर रगड़ खाइत अछि बाँसक डाँड़ हमरा चीरैत अछि आ किनार पर ठाढ़ लोक अपन स्वर नीचाँ करैत अछि कारण ओकरा लग एक टुकड़ा माटि आब केवल माटि नहि रहल अछि आ ओ कहैत नहि अछि मुदा ओकर पयरक ठहराव कहैत अछि जे एतय किछु अछि जे कागजमे नहि अछि आ एक बूढ़ हाथ दूर सँ देखैत अछि आ लग अबैत अछि आ फेर रुकैत अछि कारण ओकर स्मृति पन्नाक रिक्तिसँ जुड़ैत अछि आ रिक्ति माटिक उज्जर टुकड़ासँ जुड़ैत अछि आ ओहि जुड़नाइमे कियो सम्पूर्ण कथा नहि पबैत अछि केवल दू तीन चिन्ह पबैत अछि आ हम तकरा फेर छूइत छी हलुक धारसँ बालु हटैत अछि फेर जमैत अछि आ जे उज्जर छल से आधा देखाइत अछि आधा ढँकाइत अछि जकाँ मनुष्यक लेख आधा बचैत अछि आधा मेटाइत अछि मुदा ई उपमा मनुष्यक अछि हमर नहि हमरा लेल आधा देखाइत वस्तु केवल आधा उघरल वस्तु अछि आ जखन साँझक छाँह लम्बा होइत अछि तखन ओकर रंग बदलैत अछि आ राति खसैत अछि आ पहरा देनिहार लालटेन टाँगैत अछि आ लालटेनक प्रकाश जल पर

काँपैत अछि आ हम फेर बहैत छी बिना एहि बातक जे भोरमे ककरा बोलाओल जाएत ककरा पूछल जाएत ककर पुरान वंश फेर खोलल जाएत आ ककर चुप्पी पहिल बेर लिखल जाएत कारण हमरा काज केवल बहब अछि आ बहैत बहैत हम ओहि माटिक कात फेर पहुँचैत छी जतय देह आ अभिलेख दुनू अपन अपन अधूरापनमे पड़ल अछि

अध्याय २७ — अनुराधाक स्वर-सन्देश एक

[राति २:१७ · दिल्ली · night duty · voice-note प्रतिलेख]

बाबा [pause] फोन नहि कयलहुँ कारण wardमे एखन दू बेर emergency भेल [pause] आब staff roomमे पाँच मिनट भेटल अछि तऽ ई voice-note पठा रहल छी [inaudible] अहाँ सुनि लेब [pause] उत्तर एखन नहि देब तऽ सेहो चलत

पहिने ई कहू जे अहाँ कुशल छी ने [pause] मोहन बाबू कहलनि अहाँ कैम्प जा-आबि रहल छी [pause] हमरा नीक नहि लगैत अछि जे अहाँ एतेक बेर बाहर जाइत छी [pause] उमेर अस्सी भऽ गेल अछि ई बात अहाँ मानैत किएक नहि छी [pause] हँ हमरा बुझल अछि अहाँ कहब जे अस्सी केवल अंक अछि [pause] मुदा BP सेहो अंक होइत अछि आ तकरो हम सभ मानैत छी

एतय रातिक duty दिनक duty सँ भिन्न होइत अछि [pause] दिनमे लोक बेसी बोलैत छथि रातिमे machine बेसी बजैत अछि [pause] monitorक छोट आवाज [pause] oxygenक फुसफुस [pause] trolleyक पहिया [pause] आ जँ ककरो घरक लोक बाहर बरामदामे सुतल छथि तऽ ओकर चप्पलक घसघस [pause] ई सभ राति बेसी स्पष्ट सुनाइत अछि

आइ एक वृद्धा आयल छथि [pause] उमेर लिखल अछि बहत्तर मुदा हुनकर पुत्र कहैत छलाह अस्सी लग [pause] कागजमे जन्म-वर्ष दोसर अछि [pause] हम पुछलहुँ कोन मानब [pause] doctor कहलनि treatment लेल उमेरक अनुमान पर्याप्त अछि [pause] तखन हमरा अहाँक पोथी मोन पड़ल [pause] अहाँ रहितहुँ तऽ जन्म-वर्षक तीन साक्षी माँगितहुँ

[pause] एकटा कहितहुँ मौखिक [pause] एकटा लिखित [pause] एकटा परिस्थिति सँ मिलान

ओ वृद्धा पहिने हमरा हाथ पकड़ने छलीह [pause] बादमे IV लगलाक पछाति छोड़ि देलनि [pause] हमरा नाम दू बेर पुछलनि [pause] पहिल बेर अनुराधा कहलहुँ [pause] दोसर बेर ओ “राधा” बुझलनि [pause] हम सुधारल नहि [pause] अस्पतालमे कखनो नाम छोट भऽ जाइत अछि [pause] bed number पैघ भऽ जाइत अछि [pause] ई बात अहाँकेँ नीक नहि लागत [pause] हमरा बुझाइत अछि

[inaudible] [pause] एतय नाम लिखबाक ढंग भिन्न अछि बाबा [pause] registerमे surname पहिने हो वा बादमे एहि पर ककरो ध्यान नहि [pause] मुदा spelling त्रुटि भेल तऽ medicine file दोसर ठाम जा सकैत अछि [pause] तेँ हम फेर जाँचैत छी [pause] हमरा बुझाइत अछि ई आदति अहाँसँ आयल अछि [pause] मुदा निश्चित नहि [pause] एहन कहिते लगैत अछि जे हम किछु लुकबैत छी [pause] सम्भवतः एतबे उचित

मोहन बाबू कहैत छलाह जे घरक पोथी भीजल अछि [pause] कतेक क्षति भेल [pause] ई बात ओ स्पष्ट नहि कहलनि [pause] कहलनि अहाँ सुखा रहल छी [pause] पन्ना पृथक कऽ रहल छी [pause] धूपमे नहि [pause] छाहमे [pause] ई सभ हुनका कोना बुझल [pause] अहाँ हुनका फोनपर एतेक कहैत छी आ हमरा नहि [pause] ई उलाहना नहि अछि [pause] केवल पुछि रहल छी

न्यूजमे जे देखबैत अछि से देखि हमरा गाम पहिचानमे नहि अबैत अछि [pause] helicopter [pause] पानिमे छप्पर [pause] lineमे लोक [pause] मुदा हमरा अपन घरक ओसारक कोन याद अबैत अछि जतय अहाँ पोथी खोलैत छी [pause] तखने बुझाइत अछि जे पानि जँ ओतय धरि आयल तऽ कागज बचेनाइ कतेक कठिन रहल होयत [pause] फेर मोन होइत अछि कागजक चिन्ता करब अनुचित अछि जखन लोक घर छोड़ि रहल छथि [pause] फेर मोन होइत अछि लोकक नाम कागजमे नहि बचल तऽ राहतक सूचीमे सेहो कठिनाइ होइत अछि [pause] एतय hospitalमे सेहो बिना file ककरो देह अधूर जानकारी बनि जाइत अछि

आइ handover sheetमे हम तीन बात फेर सँ लिखलहुँ [pause] bed number [pause] allergy [pause] आ घरक लोकक phone [pause] तेसर बात लिखैत बुझल जे कतहु केवल एक अंक त्रुटिपूर्ण भेल तऽ रातिक emergencyमे कोन लोककेँ फोन जाएत से बदलि सकैत अछि [pause] एतय कागज देहक बदला नहि अछि [pause] मुदा कागज बिना देहक किछु आवश्यक बात अगिला duty धरि नहि पहुँचैत [pause] अहाँ पँजीक विषयमे जे कहैत छी ओकर किछु अंश एतय आबि कऽ बुझाइत अछि [pause] किछु अंश एखनहुँ नहि

एक patientक घरक लोक एखन बाहर बैसल छथि [pause] हुनका सभमे दू गोटे गामक छथि [pause] सुपौल दिसक [pause] हमरा भाषा सुनि पुछलनि हम कतयक छी [pause] हम गामक नाम कहलहुँ तऽ एक गोटे तुरत दोसर गामक नाम लेलनि [pause] कहैत छलाह ओतय हुनकर मौसीक घर छल [pause] “छल” कहलनि [pause] एखन अछि कि नहि से हुनको ज्ञात नहि [pause] ई “छल” शब्द आइ राति हमरा नीक नहि लगल

रातिक wardमे समय घड़ीसँ चलैत अछि मुदा लोकक प्रतीक्षा घड़ीसँ नहि चलैत [pause] दू बजि कऽ बीस मिनट पर दवा [pause] ढाइ बजे temperature [pause] तीन बजे urine output [pause] मुदा बरामदामे जे परिवारक लोक बैसल छथि ओकरा लेल समय केवल दरबज्जा खुलबाक ध्वनि अछि [pause] ई बात लिखबाक कोनो column नहि अछि [pause] तखनो ई बात अछि

बाबा [pause] अहाँ खाइत छी समय पर [pause] ई प्रश्नक उत्तर चाही [pause] दवा सेहो [pause] आ कृपा कऽ भीजल पन्ना उठबैत बेर माटि पर घण्टा भरि नहि बैसू [pause] पछिला बेर अहाँक घुटना फुलि गेल छल [pause] हँ हम एतय सँ आदेश दैत छी [pause] नातिन आदेश दऽ सकैत अछि [pause] पँजीमे एकर निषेध लिखल अछि कि नहि

[inaudible] [pause] हम अवकाशक बात पुछने छी [pause] एखन निश्चित नहि [pause] roster बनलाक बाद बुझाएत [pause] जँ दू दिन जोड़ि सकलहुँ तऽ आबि जाएब [pause] मुदा अहाँ मोहन बाबूकेँ एखन नहि कहब [pause] ओ फेर station धरि लोक पठा देताह [pause] हम स्वयं आबि सकैत छी [pause] दिल्लीसँ train चढ़ब एतेक पैघ काज नहि अछि

[pause] आब wardमे घुरैत छी [pause] bell बजल [pause] एखन दूटा injection बाँकी अछि [pause] अहाँ संदेश सुनि केवल एक पाँति भेजि देब [pause] “हम कुशल छी” [pause] एतबे [pause] फेर जँ पोथीक किछु सुखल पन्ना पढ़बाक जोग भेल हो तऽ ओकर photo पठा देब [pause] मुदा flash नहि [pause] कागज पर चमक पड़त

[pause] बाबा [pause] एक बात आरो [pause] ओ तीन नाम जकर बात मोहन बाबू अधबीचमे कहि चुप भऽ गेलाह [pause] ओकरा एखन छोड़ि दिअ [pause] हम घर आबि कऽ सुनब [pause] फोनपर नहि [pause] एतय wardक आवाजक बीच नहि [pause] एहन बात लेल अपन घरक आवाज चाही [pause] एतबे [pause] शुभ राति

अध्याय २८ — देह आ जाति

पँजीमे देहक रंग नहि लिखल जाइत अछि। उँचाइ नहि। हथेलीक कठोरता नहि। प्रसवक दाग नहि। घाव, ज्वर, भूख, पीठक पीड़ा, आँखिक धुँधलापन—एहि सभक लेल पँजीमे पृथक कोष्ठ नहि अछि। मुदा एहि आधार पर ई मानब त्रुटिपूर्ण हएत जे पँजीक देहसँ कोनो सम्बन्ध नहि। पँजी देहक वर्णन नहि करैत अछि; ओ देहसभक बीच समाजक मानल सम्बन्धक सीमा लिखैत अछि।

हमर घरक पुरान पोथीमे “स्पर्श-अधिकार” नामक कोनो शीर्षक नहि अछि। ई शब्द हम बादक विचारमे उपयोग करैत छी। पोथीमे जे अछि से मूल, ग्राम, वंश, विवाहक सम्बन्ध, निषिद्ध निकटता, साक्षी, जन्म आ कखनो-कखनो एहन टिप्पणी जाहिसँ बुझाइत अछि जे कोन सम्बन्ध मान्य मानल गेल आ कोन सम्बन्ध पर आपत्ति कयल गेल। नियम पन्ना पर रहैत अछि; ओकर फल देह पर पड़ैत अछि।

एक पुरुषक नामक आगाँ ओकर पिता लिखल अछि। विवाह भेल तऽ पत्नी-पक्षक मूल-ग्राम जोड़ल अछि। पुत्र जन्मल तऽ नवल पाँति। एहि क्रममे पँजी देहकेँ वंशक मार्ग मानैत अछि। स्त्रीक देह एहि मार्गमे उपस्थित अछि, मुदा ओकर अपन अनुभव प्रायः अनुपस्थित। प्रसवक पीड़ा नहि, रक्त नहि, दूध नहि, ज्वर नहि। केवल जन्म भेल कि नहि, वंश आगाँ बढ़ल कि नहि।

मृत्युक संग सेहो एहनहि अछि। कियो कोना मरल, कतेक दिन रोग रहल, ककर हाथ पकड़ने रहल—ई सभ सामान्यतः पँजीक विषय नहि। मृत्यु वंश-पाँतिक एक सीमा अछि। तिथि भेटल तऽ लिखल जाएत। तिथि नहि भेटल तऽ अनुमानक आधार पृथक लिखबाक चाही। देह समाप्त होइत अछि; पँजीक रुचि ई देखबमे रहैत अछि जे ओकर पछाति सम्बन्धक क्रम कतय जाइत अछि।

जातिक प्रश्न एहि ठाम प्रवेश करैत अछि। पँजीकार विवाहक योग्यता जाँचैत काल केवल दू लोकक इच्छा नहि देखैत छल। ओ मूल, शाखा, पीढ़ीक दूरी, ग्राम, सम्बन्ध आ समाजक स्वीकृत सीमासभ देखैत छल। एहि जाँचक भीतर कतेको बात एहन छल जे देहक व्यवहार धरि पहुँचैत—ककर घर भोजन, ककर जल, केकर संग एक पाँतिमे बैसब, केकर विवाहक निमन्त्रण स्वीकारब। सभ बात पँजीमे लिखल नहि रहैत, मुदा विवाह-अधिकारक निर्णय ओहि व्यापक व्यवस्थासँ पृथक नहि छल।

हमरा बाल्यकालमे किछु वृद्ध लोक “छूत-अछूतक व्यवहार” शब्द कहैत छलाह, किछु लोक ओकर नामो नहि लैत छलाह। व्यवहार नामसँ बेसी दीर्घजीवी होइत अछि। कुआँक घेरा, आँगनक प्रवेश, पात राखबाक ठाम, भोजक पाँति, दुआरक कात देल पानि—ई सभ छोट व्यवस्था छल। पँजी एहि सभक दैनिकी नहि छल। तथापि विवाहक एक पाँति एहि छोट व्यवस्थासभक सामाजिक मान्यता दृढ़ कऽ सकैत छल।

एहि कारण पँजीकेँ केवल स्मृतिक पोथी कहब अधूरा अछि। स्मृति चुनैत अछि। पँजी सेहो चुनैत अछि। ककर नाम वंशक क्रममे प्रवेश पाबत, ककर सम्बन्ध संक्षेपमे लिखल जाएत, ककरा विषयमे टिप्पणी जोड़ल जाएत, आ ककरा कात रिक्ति रहत—ई सभ निर्णय इतिहास बनि सकैत अछि। निर्णय लिखनिहारक हाथ देह नहि छुबैत, मुदा ओकर मसि आगाँ चलि कऽ देहक सम्बन्ध पर प्रभाव दैत अछि।

हम जखन अपन पितामहक पिताक लिखावट जाँचैत छी तखन अक्षर पहिचानबाक लेल दाब, वक्रता, “र”क आकार, मात्रा, शब्दक बीच दूरी देखैत छी। एहि सभमे लेखकक हाथ उपस्थित अछि। हाथ स्वयं पोथीमे लिखल नहि, मुदा हस्तलिपि ओकर देहक चिन्ह अछि। विचित्र बात ई अछि जे पँजी आन लोकक देहकेँ नियमक विषय बनबैत रहल, आ आब ओही पँजी लेखकक हाथक देहगत चिन्ह हमरा साक्ष्य दैत अछि।

भीजल पन्नामे मेटाओल पाँतिक कात खुरचनक दिशा देखाइत अछि। कागजक रेशा एक कात उठल अछि। कतहु मसिक महीन अवशेष। एहि सभकेँ पढ़ैत हम “शुद्ध” अथवा “अशुद्ध” नहि लिखैत छी। हम केवल लिखैत छी—मूल लेख छल; पछाति घर्षण कयल गेल; घर्षण एकहि समयक नहि बुझाइत; नकलसभमे रिक्ति उतरल। दफ्तरी भाषा एतबे कहि सकैत अछि।

मुदा दफ्तरी भाषाक सीमा एतय स्पष्ट अछि। जँ एक पाँति मेटाओल गेल तऽ कागज पर स्थान रिक्त भेल। जे सम्बन्ध ओहि पाँतिक कारण सामाजिक मान्यतासँ बाहर धकेलल गेल, ओकर देह कतय गेल, ई प्रश्नक उत्तर पन्ना नहि दैत अछि। देह भूख अनुभव करैत अछि, गर्भ धारण करैत अछि, श्रम करैत अछि, घामैत अछि, चोट खाइत अछि। पँजी ओहि अनुभवक लेखा नहि रखैत।

अध्याय २५क मौन पन्ना हमरा एहि कारण आवश्यक बुझाइत अछि—यद्यपि हम ओकरा “अध्याय” नहि कहैत, कारण हमर काज पोथीमे अछि। एक स्त्रीक विषयमे कतेक अभिलेख भेटल, ई गनल जा सकैत अछि; ओकर देहक भीतर दिन कोना बीतल, ई पँजीसँ नहि भेटत। अभिलेखक अभावकेँ कल्पनासँ भरब सरल अछि; प्रमाण बिना भरब अनुचित। एहि कारण जतय प्रमाण समाप्त होइत अछि, ओतय हमरा रुकबाक चाही।

जातिक अभिलेख सेहो एहन रोक माँगैत अछि। पुरान पन्ना जे व्यवस्था लिखैत अछि, ओहि व्यवस्था केँ लिखनाइ आ ओकर समर्थन करनाइ एक बात नहि। पँजीकारक काज पुरान लेखकेँ जसक तस पढ़ब, अन्तर देखब, स्रोत बतायब, आ जे नहि अछि से नहि गढ़ब। न्यायाधीश बनब ओकर अधिकार नहि। मुदा जँ पँजीकार जानैत अछि जे एक पाँति जानि-बुझि कऽ मेटाओल गेल आ फेरो ओ रिक्तिकेँ मूल सत्य कहैत अछि, तखन ओ केवल पाठक नहि रहैत।

एहि बिन्दुपर ई हमर अपन कठिनाइ भऽ जाइत अछि। मेटाओल पाँति आन ककरो हाथक नहि, हमर वंशक हाथक अछि। जे नियम हम जीवन भरि आन परिवारक लेल पढ़ैत रहलहुँ, ओही नियमक भीतर हमर परिवार अपन सुविधा लेल काटि-छाँटि कयलक कि नहि—ई प्रश्न आब कागज पर अछि। प्रश्नक उत्तर एखन नहि।

हम एक सूची बनौलहुँ। पहिल—मूल पन्नाक भौतिक अवस्था। दोसर—मसिक कालगत भिन्नता। तेसर—हस्तलिपिक मेल। चारिम—पछिला नकलसभक रिक्ति। पाँचम—मौखिक साक्ष्यसभमे विवाहक उल्लेख। छठम—हरवाहक कथनमे प्रयुक्त “हत्या” शब्द। सातम—अस्थि

भेटबाक ठाम। एहि सात बिन्दुमे एक्कहि बिन्दु पर्याप्त नहि। सभकेँ एक संग रखलाक बादो जे नहि कहल जा सकैत अछि, ओकरा नहि कहब।

पँजीमे “अधिकार” शब्द अनेक अर्थमे अबैत अछि। ककरा कोन सम्बन्धमे विवाहक अधिकार, ककर शाखाक कोन वंशक्रम, ककरा कोन अभिलेख पढ़बाक अनुमति। मुदा देहक एक अधिकार पँजी प्रायः नहि लिखैत—अपन सम्बन्ध चुनबाक अधिकार। ई वाक्य हम पोथीमे नहि लिखलहुँ। दैनिकीमे लिखलहुँ। कारण पँजी ऐतिहासिक अभिलेख अछि; दैनिकी हमर उत्तरदायित्व। दुनूक भेद राखब आवश्यक अछि।

हम पोथी बन्द करैत काल हथेली धोइत छी। ई शुद्धिक विधि नहि। भीजल पन्नाक फफूँद, धूलि आ मसि अँगुरिमे लागैत अछि, तैँ। पानि पहिने कारी होइत अछि, फेर क्रमशः स्वच्छ होइत जाइत अछि। अँगुरिक रेखामे मसिक एक पातर चिन्ह रहि जाइत अछि। ओकरा घसि हटेबाक आवश्यकता नहि बुझाइत अछि।

अभिलेख देहक सभ सत्य नहि लिखैत। मुदा कखनो-कखनो देह अभिलेखक असत्यक चिन्ह बचा लैत अछि—हाथक दबाव, खुरचनक दिशा, हड्डीक स्थान, मौनक अवधि। हमर काज एहि चिन्हसभकेँ एक-दोसराक सोझाँ रखब अछि। निर्णय एखन नहि।

अध्याय २९ — स्वर-सन्देश दुइ

बाबा [pause] ई दोसर संदेश अछि [pause] पहिल बेर कहने रही जे घर आबि कऽ सुनब [pause] मुदा मोहन बाबू काल्हि राति दूटा फोटो पठौलनि [pause] एकटा भीजल पन्नाक [pause] दोसरटा अहाँक दैनिकीमे बनाओल सूचीकेँ दूरसँ खींचल [pause] सूची स्पष्ट नहि छल [pause] मुदा तीन-चारि नाम पढ़ि सकलहुँ [pause] ताहि कारण ई संदेश एखन पठा रहल छी

एखन duty समाप्त भेल अछि [pause] staff roomक खिड़कीसँ भोरक उजास आबि रहल अछि [pause] बाहर सफाइक गाड़ी गेल [pause] corridorमे phenylक गन्ध अछि [pause] राति तीन बेर emergency आयल [pause] एक वृद्ध पुरुष [pause] एक प्रसूता [pause] एक बालक जकर ज्वर उतरि रहल अछि [pause] सभक file पृथक

[pause] सभक घरक लोक पृथक [pause] मुदा राति भरि हम जे पन्ना मोनमे घुमबैत रहलहुँ से अहाँक भीजल पँजीक ओ पन्ना छल

मोहन बाबू पहिने केवल कहलनि जे पुरान पाँतिमे किछु गड़बड़ अछि [pause] हम पुछलहुँ कोन गड़बड़ [pause] ओ कहैत रहलाह अहाँसँ पुछू [pause] फेर फोटो पठा देलनि [pause] फोटोमे श्रीधर मिश्रक नाम पढ़ि सकलहुँ [pause] नीचाँ घिसल कागज देखाइत अछि [pause] आ दोसर फोटोमे अहाँक सूचीमे फुलझरी [pause] जगेसर सदा [pause] हरिनारायण [pause] ई तीन नाम पढ़ि सकलहुँ [pause] शेष धुँधला छल

हम एतय एक बात स्पष्ट कहि दैत छी बाबा [pause] हमरा जाति-विवाहक पुरान नियमक व्याख्यान नहि चाही [pause] अहाँ ओ सभ हमरा बाल्यकालसँ बुझबैत एलहुँ [pause] मूल [pause] ग्राम [pause] पीढ़ी [pause] निषिद्ध सम्बन्ध [pause] हमरा प्रश्न नियमक नहि अछि [pause] हमर प्रश्न परिवारक अछि [pause] कारण जँ हरिनारायण हमर पुरखा छथि आ हुनकर हाथसँ फुलझरीक पाँति मेटाओल गेल [pause] तऽ ई आन ककरो पँजीक त्रुटि नहि रहल

हम अहाँक स्वर सुनि सकैत छी [pause] अहाँ कहब जे प्रमाण बिना निष्कर्ष नहि [pause] ई हम मानैत छी [pause] मुदा प्रश्न पुछबाक लेल निष्कर्ष आवश्यक नहि [pause] अस्पतालमे सेहो हम जाँचक परिणाम आबय सँ पहिने रोगीकेँ प्रश्न पुछैत छी [pause] प्रश्न उत्तर नहि होइत अछि [pause] प्रश्न केवल ओ ठाम देखबैत अछि जतय उत्तर चाही

बाबा [pause] फुलझरी हमर परिवारक के छलीह [pause] श्रीधर मिश्रसँ हुनकर कोन सम्बन्ध छल [pause] जगेसर सदा संग हुनकर सम्बन्धकेँ पँजीमे पहिने कोना लिखल गेल छल [pause] आ हरिनारायण ओ पाँति किएक मेटौलनि [pause] ई चारि प्रश्न अछि [pause] मुदा असलमे एक्कहि प्रश्न [pause] हमर घर अपन पोथीमे अपनहि परिवारक एक स्त्रीकेँ किएक मेटौलक

[pause] जँ अहाँ एखन हत्या विषयमे किछु नहि कहब चाहैत छी तऽ नहि कहू [pause] हम ओ बात बलपूर्वक नहि खींचब [pause] हम अहाँपर दबाव नहि देब [pause] मुदा विवाहक पाँति मेटाओल गेल कि नहि [pause] हरिनारायणक हाथ अछि कि नहि [pause] फुलझरी

हमर कुलक भीतरक छलीह कि नहि [pause] एहि तीन बातमे जतय प्रमाण अछि ओतय चुप्पी किएक

राति एक रोगिणीक बेटी हमरा कहलनि जे ओकर माय अपन रोगक बात घरमे ककरो नहि बतबय चाहैत छथि [pause] हम कहलहुँ ई हुनकर अधिकार अछि [pause] फेर consent form पर हुनकर हस्ताक्षर लेलहुँ [pause] ओहि बेर मोन भेल मौन सेहो दू प्रकारक होइत अछि [pause] एक मौन जकर निर्णय व्यक्ति स्वयं करैत अछि [pause] दोसर मौन जे कियो दोसर ओकरा पर राखि दैत अछि [pause] दुनूक रूप बाहरसँ एक्के सन बुझा सकैत अछि [pause] भीतरक अन्तर पैघ होइत अछि

फुलझरीक विषयमे हम एखन किछु नहि जानैत छी [pause] फोटोमे नाम अछि [pause] मोहन बाबूक अधूरा बात अछि [pause] अहाँक सूची अछि [pause] एतबे [pause] तें हम हुनका विषयमे कथा नहि बना रहल छी [pause] हम केवल ई पुछैत छी जे हमर परिवारक कागजमे हुनकर ठाम छल कि नहि [pause] जँ छल तऽ ओ ठाम के मेटौलक [pause] आ अहाँ ई बात कखन जानलहुँ

[inaudible] [pause] अहाँ हमरा छोट बालिका बुझि उत्तर रोकि नहि सकैत छी बाबा [pause] हम अट्ठाइस वर्षक छी [pause] राति-राति लोकक देहक दायित्व लैत छी [pause] मृत्युक खबरि परिवारकेँ देबाक समय doctorक कात ठाढ़ रहैत छी [pause] रक्त देखैत छी [pause] घाव धोइत छी [pause] कागज भरैत छी [pause] घर घुरि कऽ फोन पर हँसि सकैत छी [pause] तें पुरान परिवारक एक असुविधाजनक पाँति सुनबाक क्षमता हमरा अछि

हम अहाँसँ न्यायालयक बयान नहि माँगैत छी [pause] एक voice message सेहो नहि [pause] अहाँ चाही तऽ कागज पर चारि पाँति लिखि फोटो पठा दिअ [pause] पहिल फुलझरी के [pause] दोसर जगेसर के [pause] तेसर हरिनारायणक सम्बन्ध [pause] चारिम पाँति मेटेबाक प्रमाण [pause] जतेक निश्चित अछि ततेक [pause] जे अनिश्चित अछि ओकर आगाँ अनिश्चित लिखू [pause] ई ढंग तऽ अहाँ स्वयं हमरा सिखौने छी

बाबा [pause] हमरा एक सोझ उत्तर चाही [pause] फुलझरीक पाँति मेटेबाक काज हमर अपन वंशक लोक कयने छलाह कि नहि [pause] केवल हँ अथवा नहि लिखि सकैत छी

[pause] जँ “हँ” लिखब तऽ अगिला प्रश्न हम घर आबि कऽ पुछब [pause] जँ “नहि” लिखब तऽ प्रमाण देखब [pause] मुदा संदेश सुनि चुप नहि रहू [pause] चुप्पी सेहो उत्तर जेकाँ सुनाइत अछि [pause] आ कखनो उत्तरसँ बेसी भारी

[pause] एखन घर जा रहल छी [pause] phone silent पर राखब [pause] सात बजे धरि सुतब [pause] उठि कऽ देखब जे अहाँक एक पाँति आयल कि नहि [pause] दवा समय पर खाउ [pause] घुटना पर तात कपड़ा राखू [pause] भीजल पोथी एकसरि नहि उठाउ [pause] आ हँ [pause] हमरा प्रश्न मेटाउ नहि [pause] शुभ भोर बाबा

अध्याय ३० — हड्डी

जल घटलाक तेसर सप्ताहमे राहतक कच्ची बाटक कात माटि हटबैत दू मजूर एकटा लम्बा हड्डी देखलनि। पहिल दृष्टिमे ओ सभ एकरा मवेशीक मानलनि। माटि आरो हटाओल गेल तऽ एक दोसर टुकड़ा देखायल। काज तत्क्षण रोकल गेल। खुरपी ओतहि रखल रहल। माटिक ढेरीक कात दू बाँस गाड़ि रस्सी बाँधल गेल। खबरि कैम्पक कार्यालय धरि पहुँचल।

हमरा दुपहर पछाति बुलाओल गेल। कारण ई नहि जे हम हड्डी पहचानि सकैत रही। कारण केवल एतबे जे पुरान बसावट आ मुसहर टोलाक ठाम विषयमे हमर लग पन्ना छल। हम १९३४क पछिला हाथसँ बनाओल एक स्थल-रेखा, १९५४क सर्वेक्षणक एक नकल आ अपन दैनिकी लऽ गेलहुँ। तीनू कागजक माप एक नहि छल। तीनूमे उत्तरक दिशा सेहो एक्कहि ढंगसँ चिन्हित नहि छल। मुदा पोखरिक पुरान मेड़, पीपड़िक ठूँठ आ दक्षिणक नीच भूमि तीनू अभिलेखमे मिलैत छल।

थानासँ एक अधिकारी आ दू आरक्षी आयलाह। ओ सभ पहिने ककरो हड्डी छुबय नहि देलनि। ठामक छायाचित्र लेल गेल। बाँसक खूँटी सँ हड्डीक दूरी नापल गेल। पीपड़िक ठूँठ धरि दूरी लिखल गेल। माटिक सतहक ऊँचाइ देखल गेल। जल कतय धरि रहल छल, ई कातक भीत पर बचल कादोक रेखासँ अनुमान कयल गेल। दू स्थानीय लोककेँ साक्षी बनाओल गेल। हुनका सभक नाम आ पिता-नाम पृथक कागज पर लिखल गेल।

माटि धीरे-धीरे हटाओल गेल। पहिल लम्बा टुकड़ाक कात छोट वक्र टुकड़ा भेटल। तकर उत्तर दिस दाँतक एक भाग जकाँ किछु देखायल। अधिकारी ककरो अनुमान लिखय नहि देलनि। “मानव” शब्द सेहो एखन कागज पर नहि लिखल गेल। वस्तुसभकेँ क्रम देल गेल—अस्थि एक, अस्थि दुइ, दन्त-जेकाँ खण्ड, स्थल-माटिक नमुना। जे वस्तु जे ठाम भेटल ओकर दूरी पृथक लिखल गेल।

चिकित्सक साँझक पहिने पहुँचलाह। ओ लम्बा हड्डी हाथमे लऽ तत्काल कोनो व्यक्ति, उमेर वा मृत्यु-कारण नहि कहलनि। केवल एतबे कहलनि जे मानव-अस्थि होयबाक सम्भावना अछि आ विधि-विज्ञानक जाँच आवश्यक अछि। एहि वाक्यक पछाति स्थल पर उपस्थित लोकक स्वर बदलि गेल। जे सभ पहिने झुंड बना कऽ देखैत छलाह, ओ सभ किछु पाछाँ हटि गेलाह। अधिकारी फेर रस्सीक घेरा बढ़ा देलनि।

हम अपन स्थल-रेखा खोललहुँ। मुसहर टोलाक पुरान ऊँच भाग ओहि ठामसँ लगभग बाइस हाथ दक्षिण-पश्चिम पड़ैत छल, जँ १९३४क मेड़केँ आधार मानल जाए। मुदा १९५४क सर्वेक्षणमे ओही भाग “पुरान बसावट” लिखल छल आ सीमा रेखा किछु उत्तर सरकल छल। भूकम्प, कटान आ पछिला बाढ़िक कारण माटि सरकल कि नक्शा बनबैत बेर सीमा सुविधा अनुसार सीधा कयल गेल, ई हम नहि कहि सकलहुँ। हम अधिकारीकेँ केवल दुनू नकल देखौलहुँ।

ओ पुछलनि जे ई ठाम फुलझरी वा जगेसरक कथासँ जुड़ैत अछि कि नहि। हम उत्तर नहि देलहुँ। प्रश्नक उत्तर देब लेल हमर लग जे छल से अभिलेखीय मेल मात्र छल। हरवाहक कथनमे टोलाक दक्षिण धारक उल्लेख छल। पँजीमे मेटाओल पाँति छल। एहि ठाम हड्डी छल। तीनू बात एक संग लिखल जा सकैत अछि; तीनूकेँ एक्कहि निष्कर्ष बनाओल नहि जा सकैत।

अस्थिसभ उठेबासँ पहिने माटिक पातर तह हटाओल गेल। छोट-छोट मूल, काँचक एक टुकड़ा, जंग लागल तार, कोयलाक दाना आ दूटा शंखक खोल सेहो भेटल। एहि सभमे सँ कोन वस्तु ओहि समयक, कोन पछिला वर्षक, कोन जलक संग आनल गेल—ई स्थल पर तय नहि भेल। उपयोगी बुझायल वस्तुसभ पृथक आवरणमे राखल गेल। सभ आवरण पर क्रम, ठाम, तिथि आ उठेबाक समय लिखल गेल। पछाति सभ मुद्राबन्द कयल गेल।

एक हड्डीक सतह पर गाढ़ माटि जमल छल। पानि सँ धोयबाक प्रस्ताव भेल, मुदा चिकित्सक मना कयलनि। सतह पर लागल माटि सेहो जाँचक भाग भऽ सकैत अछि। हड्डी जस अवस्थामे भेटल, ओही रूपमे सुरक्षित राखल गेल। एहि छोट नियमक अर्थ हमरा स्पष्ट छल। भीजल पँजी सुखबैत हम सेहो पहिने धूलि झाड़ि देबाक इच्छा रोकने रही। कखनो-कखनो मैल स्वयं साक्ष्य होइत अछि।

मुद्राबन्द आवरण वाहनमे राखल गेल। अधिकारी स्थल-विवरणक नकल हमरा नहि देलनि; हम माँगलो नहि। हम अपन दैनिकीमे केवल पाँच पाँति लिखलहुँ—जल घटल। पुरान मुसहर टोलाक सीमाक निकट अस्थि भेटल। चिकित्सक मानव-अस्थिक सम्भावना कहलनि। पहिचान अज्ञात। विधि-विज्ञानक परीक्षण शेष। एहि पाँच पाँतिमे “फुलझरी” लिखल नहि। “जगेसर” सेहो नहि।

गाममे साँझ धरि अनेक कथा बनि गेल। कियो कहलक ई २००८क बाढ़िमे मरल लोकक हड्डी अछि। कियो कहलक पुरान श्मशानक अछि। कियो कहलक भूकम्पक समयक। मुसहर टोलाक दू वृद्ध कहैत छलाह जे ओहि ठाम कखनो श्मशान नहि छल। एक लोक प्रश्न कयलक जे जँ श्मशान नहि छल तऽ हड्डी माटिक भीतर कोना आयल। उत्तर ककरो लग नहि छल।

हम राति पुरान नक्शा फेर खोललहुँ। लाल पेन्सिलक एक रेखा १९५४क नकलमे मुसहर टोलाक पुरान सीमाकेँ काटैत गेल छल। ओहि रेखाक अर्थ तटबन्धक प्रस्तावित सहायक रेखा छल कि केवल सर्वेक्षण-सुधार, ई स्पष्ट नहि। नक्शाक कागजक कोना पहिने सँ फाटल छल। फाटल भाग ओहि ठाम नहि छल जतय अस्थि भेटल। एहि कारण कागज हमरा नवल उत्तर नहि देलक।

अनुराधाक स्वर-सन्देश फोनमे पड़ल छल। ओ प्रत्यक्ष प्रश्न पुछने छलीह। हम संदेश फेर सुनलहुँ। उत्तर टाइप करबाक कोष्ठ खोललहुँ। “हँ” लिखि सकैत रही, “नहि” लिखि सकैत रही, अथवा “एखन प्रमाण अपर्याप्त” लिखि सकैत रही। तीनूमे सँ कोनो वाक्य पठाओल नहि। फोन बन्द कऽ राखि देलहुँ।

अगिला भोर हम दैनिकीमे एक पाँति आरो जोड़लहुँ—अस्थिक ठामक पुष्टि पुरान नक्शासँ पूर्ण नहि, आंशिक अछि। एहि पाँतिक नीचे खाली स्थान छोड़लहुँ। कारण प्रयोगशालाक उत्तर एखन आयल नहि छल।

हड्डी अभिलेख नहि अछि। हड्डी पर नाम नहि लिखल रहैत अछि। मुदा जँ ओकर ठाम, माटि, समय आ आसपासक वस्तु सुरक्षित राखल जाए तऽ ओ प्रश्नक आकार बदलि सकैत अछि। हमरा लग एखन नाम नहि, केवल एक ठाम छल। आ ओ ठाम मुसहर टोलाक पुरान सीमासँ बेसी दूर नहि छल।

अध्याय ३१ — मोहनक स्वीकार

अस्थिक स्थल देखलाक दोसर साँझ मोहन घर आयल। ओ सरकारी जीप नहि अनने छल। मोटरसाइकिल ओसारसँ दूर नीमक गाछक कात रोकलक। ओकर हाथमे नीला प्लास्टिकक एक फाइल छल आ कमीजक दहिना बाँहि कोहनी धरि मोड़ल छल। ओ भीतर अबैत पहिने जूता उतारलक, घड़ा सँ पानि लेल, हाथ-मुँह धोलक, फेर बिना किछु पुछने हमर सोझाँ बैसि गेल।

हम पोथी बन्द कयलहुँ। फोन मेज पर उलट राखल छल। अनुराधाक दोसर स्वर-सन्देश ओहि फोनमे छल। हम ओकर उत्तर एखन धरि नहि पठौने रही। मोहन फोन दिस एक बेर देखलक, फेर नीला फाइल खोललक। ऊपरक पन्ना पर जल संसाधन विभागक पुरान छाप छल। कागजक कोना घिसल छल। भीतर मापन-पुस्तिकाक दू छायाप्रति, एक देयकक नकल, आ संवेदकक नामवला एक भुगतान-पत्र छल।

मोहन कहलक, “बाबूजी, हमरा एक बात लिखायब अछि।” ओकर स्वर सामान्यसँ धीम छल। हम दैनिकी खोलि तिथि लिखलहुँ। ओकरा कहलहुँ जे कथन आ प्रमाण पृथक रहत। ओ माथ हिलेलक।

ओ २००७क वर्ष कहलक। बरखा अबयसँ पहिने तटबन्धक एक खण्ड पर रक्षण-काज स्वीकृत भेल छल। प्रस्तावमे माटि भराइ, बालु भरल बोरा, बाँसक घेरा, झाड़ी सफाइ, आ कटानक कात अस्थायी सुरक्षाक सामग्री छल। मोहन ओहि समय स्थानीय उपखण्डमे कनिष्ठ अभियन्ता छल। ओकर काज स्थल पर मात्रा देखब, मापन-पुस्तिकामे अंक लिखब, आ जे सामग्री सचमुच पहुँचल तकर प्रमाण देब छल।

पहिल सप्ताह सामग्री न्यून आयल। मापन-पुस्तिकामे जे संख्या प्रस्तावित छल, स्थल पर ओतबा नहि छल। बालु भरल बोरा दू खेप घट छल। बाँसक बण्डल गिनतीमे घट छल। माटि भराइ एक भागमे निर्धारित उँचाइ धरि नहि पहुँचल छल। मोहन ई अन्तर पहिल दिन लाल पेन्सिलसँ किनारामे लिखने छल। दोसर दिन सहायक अभियन्ता आयलाह। संवेदक सेहो छल। स्थल पर आधा घण्टाक आसपास बैसार भेल। मोहनक अनुसार ओहि बैसारक कोनो पृथक कार्यवृत्त नहि बनल।

मोहन कहलक जे ओकरा कहल गेल—बरखासँ पहिने भुगतान रोकल गेल तऽ शेष सामग्री आबत नहि, पहिने देयक पारित हो, पछाति घाटा भरल जाएत। ओ लाल पेन्सिलक टिप्पणी काटि देलक। अन्तिम मापनमे प्रस्तावित मात्रा लिखल गेल। ओकर हस्ताक्षर नीचाँ अछि। ओ फाइल हमरा दिस बढ़ा देलक।

हम हस्ताक्षर देखलहुँ। अक्षर मोहनक छल। ‘म’क पहिल वक्र, ‘ठ’क ऊपरी रेखा, तिथिक सात अंक लिखबाक ओकर ढंग—ई सभ हम पहिचानैत रही। मुदा हस्ताक्षर पहिचानब आ स्थल पर सामग्रीक वास्तविक मात्रा सिद्ध करब एक बात नहि। हम दैनिकीमे लिखलहुँ—मापन-पुस्तिकाक प्रतिमे मोहनक हस्ताक्षर उपस्थित। मात्राक सत्यापन लेल मूल भण्डार-पुस्तिका, प्राप्ति-पत्र आ स्थल-अभिलेख आवश्यक।

मोहन कहलक, “हम मात्रा नहि देखलहुँ एहन नहि। देखलहुँ। न्यून छल। तइयो सम्पूर्ण लिखलहुँ।”

ओ एतय चुप भेल। बाहर गोठसँ गायक घण्टी बजल। हम किछु नहि कहलहुँ।

किछु बेर पछाति ओ नीला फाइलक पछिला खण्डसँ एक छोट कागज निकाललक। ओ कागज बैंकक जमा-पर्चीक छायाप्रति छल। जमा धनराशि चालीस हजार रुपैया। तिथि रक्षण-काजक अन्तिम देयक पारित भेलाक तीन दिन पछातिक। जमाकर्ताक नाम मोहन मिश्र।

मोहन कहलक जे धन संवेदकक लोक घर पर नहि देने छल। जिला मुख्यालयक एक चाय-दोकानक पछिला कोठरीमे लिफाफा देल गेल। ओ लिफाफा ओ स्वीकार कयलक। धनराशि गनि कऽ ओतहि नहि देखलक। राति आवास पर खोललक। दोसर दिन बैंकमे जमा कयलक।

हम पुछलहुँ, “ककरा कहने?”

ओ कहलक, “ककरो नहि।”

“ककर आदेश पर?”

“कोनो लिखित आदेश नहि।”

“सहायक अभियन्ताकेँ ज्ञात छल?”

मोहन किछु काल चुप रहल। फेर कहलक, “हम प्रमाणसँ नहि कहि सकैत छी।”

हम दैनिकीमे ओहि उत्तरकेँ जकाँ छल तकाँ लिखलहुँ। अनुमान नहि जोड़लहुँ।

ओ कहलक जे धनराशिमे सँ किछु भाग घरक पुरान ऋण चुकतामे गेल, किछु अनुराधाक नर्सिंग प्रवेशक समय शुल्क आ यात्रामे। ओ एहि बात पर अनुराधाक नाम धीरे कहलक। हम ओकरा रोकलहुँ नहि। धन कोन खर्चमे गेल, एहि सँ ओकर स्वीकारक स्वरूप बदलैत नहि। मापन असत्य लिखल गेल छल आ नकद स्वीकार कयल गेल छल। एतबे तथ्य ओ स्वयं कहि रहल छल।

हम पुछलहुँ, “कटानक संग एहि काजक प्रत्यक्ष सम्बन्ध?”

मोहन तत्क्षण उत्तर नहि देलक। ओ मापन-पुस्तिका फेर खोललक। खण्ड-संख्या देखलक। दूरीक अंक देखलक। कहलक जे जे ठामक मापन ओ प्रमाणित कयने छल, ओ कुसहा कटानक मूल बिन्दुसँ पृथक खण्ड छल, मुदा एकहि रक्षण-व्यवस्थाक अन्तर्गत भुगतानक पद्धति छल। ओ नहि

कहि सकैत जे ओकर हस्ताक्षरक कारण कटान भेल। ओ एतबे कहि सकैत जे विभाग जे मात्रा देखब अपेक्षित करैत छल, ओ मात्रा ओ सत्यरूपेँ लिखल नहि।

ई भेद आवश्यक छल। हम लिखलहुँ—अनुचित प्रमाणन स्वीकार। अनुचित धन स्वीकार। कटानक कारण-सम्बन्ध सिद्ध नहि।

मोहनक माथ झुकल छल। ओ कहलक, “अहाँ चाही तऽ ई कागज राखि लिअ।”

हम कहलहुँ, “मूल तोहर लग रहत। हमरा छायाप्रति दे।”

ओ छायाप्रति छोड़ि देलक।

किछु काल बाद ओ अस्थिक विषय पुछलक। हम कहलहुँ जाँचक परिणाम नहि आयल। ओ फुलझरीक नाम नहि लेलक। जगेसरक नाम नहि लेलक। मेटाओल पाँतिक बातो नहि पुछलक। अनुराधाक संदेशक बात सेहो नहि। ओकर स्वीकार रक्षण-काजक फाइल धरि सीमित रहल।

हम ओकरासँ पुछलहुँ जे ई कागज ओ एखन किएक अनलक। मोहन उत्तर देलक जे अस्थि भेटलाक खबरि सुनि ओकरा पुरान विभागीय संचिका याद पड़ल। ओ कहलक, “एक बात भीतर रखने रहब तऽ दोसर बातक विषयमे हम अहाँक सोझाँ कोना बैसब?” हम एहि वाक्यक अर्थ दैनिकीमे नहि खोललहुँ। केवल लिखलहुँ—स्वेच्छासँ प्रस्तुत कथन।

ओ जे स्वीकार कयलक, से अनुराधाक चारि प्रश्नमे सँ कोनो प्रश्नक उत्तर नहि छल। फुलझरी, जगेसर, हरिनारायण आ मेटाओल पाँति—चारू बात संचिकाक बाहर रहल। मोहन एहि राति वएह कागज चुनलक जकर हस्ताक्षर ओकर अपन हाथक छल। कारण हम नहि लिखलहुँ।

हम बुझलहुँ जे लोक प्रायः ओ अपराध पहिने कहैत अछि जकर कागज ओकर हाथमे रहैत अछि। जकर कागज नहि, ओकरा कहबाक ढंग दोसर होइत अछि। ई वाक्य दैनिकीमे नहि लिखलहुँ। दैनिकीमे केवल ओकर कथनक तिथि, उपस्थित कागज, हस्ताक्षर, जमा-पर्ची आ अनुत्तरित प्रश्न लिखलहुँ।

मोहन उठि कऽ बाहर गेल। नीमक गाछक कात मोटरसाइकिल एखन ओतहि छल। ओ तत्क्षण नहि गेल। किछु बेर ओसारक छोर पर ठाढ़ रहल। हम फोन पलटलहुँ। अनुराधाक सन्देश फोनक पटल पर देखाइत छल। उत्तरक कोष्ठ एखनहुँ रिक्त छल।

हम फोन फेर उलट राखि देलहुँ।

अध्याय ३२ — जकर नाम नहि

मोहनक गेलाक पछाति नीला फाइल मेज पर रहि गेल। ओकर छायाप्रति हम दैनिकीमे नहि चिपकौलहुँ। दैनिकी घटनाक तिथि आ कथन लेल छल। एहि फाइलक स्थान दोसर चाही—एहन स्थान जतय प्रमाण, संशय, मौन आ छूटल नाम एक संग रहि सकय, मुदा मूल पँजीक पाँति बनि कऽ झूठ सत्य नहि बनय।

हम पुरान काठक सन्दूक खोललहुँ। सन्दूकक तलमे कपड़ाक दू तहक नीचाँ एक खाली बहि छल। बहिक जिल्द फीका हरियर, कोन सभ घसल, कागज मोट। ई बहि हम दीर्घ काल पहिने कीनने रही; कोनो ग्राहकक वंश लिखबाक लेल नहि। पहिल पृष्ठ पर किछु नहि छल।

हम पहिल पृष्ठक ऊपर केवल तिथि लिखलहुँ। तकर नीचाँ लिखलहुँ—“प्रति-पाँजि।”

“प्रति” शब्द लिखिते हाथ रुकल। ई मूल पँजीक प्रति नहि छल। मूलक नकल नहि। मूलक विरोधमे बनाओल पोथी सेहो नहि। ई ओ लेखसभक स्थान छल जे मूलमे रहबाक चाही छल, मुदा नहि रहल; ओ प्रश्नसभक स्थान जे पँजीक सूत्र नहि सम्हारि सकल; ओ कथनसभक स्थान जे लिखल गेल तऽ साक्ष्य कहल जाएत, नहि लिखल गेल तऽ घरक हवा बनि रहत।

हम पहिल नियम लिखलहुँ—“अनुमानकेँ तथ्य नहि लिखब।” दोसर—“जकर स्रोत ज्ञात, ओकर स्रोत संग लिखब।” तेसर—“जकर नाम मूलमे नहि, ओकर नाम एतय केवल साक्ष्य सहित।” चारिम—“शंका लेल रिक्त स्थान छोड़ब।” पाँचम—“मूल पाँति नहि काटब।”

नियम लिखलाक बाद हम श्रीधरक पृष्ठ खोललहुँ। मेटाओल स्थानक नाप फेर लेलहुँ। कागजक घर्षण, स्याहीक किनार, अगिला पाँतिक दूरी, आ पछिला नकलमे बचल रिक्ति—सभ फेर देखलहुँ। प्रति-पाँजिमे लिखलहुँ—“श्रीधरक उत्तरवर्ती पाँति मूल पत्र पर घर्षणसँ मेटाओल। मेटेबाक हाथक लिखावट हरिनारायणक लेखसँ मेल खाइत। मूल शब्द अपठनीय।”

एतय हम रुकलहुँ। “हरिनारायण मेटेलनि” लिखब सहज छल। प्रमाण ओतबा नहि छल। लिखावट मेल खाइत छल; क्रिया ककर हाथे भेल, एकर प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि। तें वाक्य वएह रहल।

अगिला पृष्ठ पर फुलझरीक नाम लिखबाक बेर आयल। पँजीमे ओकर नाम नहि छल। पुरोहितक कथनमे ओ संकेत छल। भौजीक घरेलू विवरणमे ओकर देहक काज, कपड़ा, थारी, दुआर छल। हरवाहक कथनमे जगेसर सदा आ हत्या शब्द छल। हरिनारायणक पँजी-प्रविष्टिमे रिक्ति छल। चारू स्रोत एकहि बात नहि कहैत छल। तें हम नामक सोझाँ चारि छोट चिन्ह बनौलहुँ आ प्रत्येकक संग स्रोत लिखलहुँ।

“फुलझरी — नाम मौखिक साक्ष्यसभमे। मूल पँजीमे अनुपस्थित।”

तकर नीचे—“जगेसर सदा — हरवाहक कथनमे स्पष्ट। पुरान बसावट-स्मृतिमे संगति। मूल पँजीमे अनुपस्थित।”

हम “विवाह” शब्द लिखबाक लेल कलम उठौलहुँ, फेर राखि देलहुँ। पुरोहित विवाह कहैत छलाह। भौजी घरक भीतरक तैयारी कहैत छलीह। हरवाह सामाजिक निषेधक बात कहैत छल। पँजी विवाहक सूत्र देबाक बदला रिक्ति दैत छल। ई सभ जोड़ि विवाह सिद्ध करब हमरा लेल शीघ्रता होइत। हम लिखलहुँ—“सम्बन्धक स्वरूप विवादित; विवाहक दावा एक स्रोतमे प्रत्यक्ष, दोसर स्रोतसभमे परोक्ष।”

हत्या शब्दक कात हम आरो देर धरि बैसल रहलहुँ। हरवाह “हत्या” कहने छल। अस्थि भेटल छल, मुदा पहिचान नहि। फुलझरीक अन्तिम उपस्थिति पर घरेलू साक्ष्य छल, मुदा मृत्यु-पत्र नहि। हम लिखलहुँ—“हिंसक मृत्युक कथन उपलब्ध; मृतकक पहचान सिद्ध नहि।”

एहि वाक्यक बाद पृष्ठक आधा भाग खाली छोड़लहुँ।

फोन उलटल पड़ल छल। अनुराधाक स्वर-सन्देश एखनहुँ अनुत्तरित। ओकर प्रश्नसभ एहि बहिक भीतर आबि गेल छल, मुदा उत्तरक रूपमे नहि। प्रश्नक रूपमे। हम पहिल बेर बुझलहुँ जे उत्तर देब आ अभिलेख बनायब एक काज नहि। उत्तर मनुष्यकेँ देल जाइत अछि। अभिलेख भविष्यक अनजान पाठकक सोझाँ राखल जाइत अछि।

हम फोन उठौलहुँ। सन्देश खोललहुँ। उत्तरक कोष्ठमे लिखलहुँ—“तोहर प्रश्न पढ़ल अछि।” एतबे। पठेलहुँ नहि। फेर मेटा देलहुँ।

प्रति-पाँजिक तेसर पृष्ठ पर हम अस्थिक विवरण लिखलहुँ। स्थानक दूरी, पुरान नक्शासँ आंशिक मेल, माटिक नमुना, पुलिसक क्रमांक, जाँच लेल पठाओल अस्थि। नामक कोष्ठ खाली। खाली कोष्ठक सोझाँ हम कोनो अनुमान नहि लिखलहुँ।

चारिम पृष्ठ मोहनक नीला फाइल लेल छल। ओकर स्वीकार, मापन-पुस्तिका, चालीस हजार रुपैयाक जमा-पर्ची, तिथि, आ कारण-सम्बन्ध सिद्ध नहि—ई सभ पृथक-पृथक पाँतिमे लिखलहुँ। मोहनक स्वीकारक नीचे फुलझरीक नाम नहि जोड़लहुँ। कुसहा कटानक नीचे हरिनारायणक नाम नहि जोड़लहुँ। जे सम्बन्ध प्रमाणित नहि, ओकरा रेखासँ जोड़ब प्रति-पाँजिक पहिल अपराध होइत।

राति गहिर भेल। घरमे सभ सूति गेल छल। हम बहिक पृष्ठ पलटैत रहलहुँ। पाँचम पृष्ठ पर एक शीर्षक लिखलहुँ—“जकर नाम नहि।”

ओहि शीर्षकक नीचे पहिल पाँति खाली छोड़लहुँ। दोसर पाँतिमे लिखलहुँ—“ओ स्त्री जकर नाम वंश-पाँतिमे नहि।” तेसर पाँतिमे—“ओ पुरुष जकर नाम विवाह-पाँतिमे नहि।” चारिम—“ओ सन्तान अथवा वंश जकर विषयमे साक्ष्य एखन अधूर।”

हम एतय “सन्तान” शब्द लिखलाक बाद दीर्घ काल धरि पृष्ठ देखैत रहलहुँ। ई शब्द स्वयं एक सम्भावना छल। प्रमाण नहि। तें ओकरा काटलहुँ नहि; कोष्ठकमे “सम्भावना” लिखि देलहुँ। प्रति-पाँजिमे काटब सेहो अभिलेखीय क्रिया छल। जे पहिने लिखल गेल, ओकर अस्तित्व लुकाओल नहि जाए।

हम बहिक अन्तिम पृष्ठ पर एक पाँति लिखलहुँ—“ई पोथी मूल पँजीक स्थान नहि लेत।”

तकर नीचाँ—“मूल पँजी जे कहैत अछि, से मूलक साक्ष्य। ई पोथी जे पूछैत अछि, से प्रश्नक साक्ष्य।”

भोरसँ पहिने बहि सन्दूकमे नहि राखलहुँ। ओकरा पोथीसभक संगो नहि राखलहुँ। मेजक नीचाँ पुरान कपड़ाक झोलामे रखलहुँ। झोलाक मुँह गाँठि देलहुँ। ककरो नहि कहलहुँ।

पहिल बेर हमरा लग एहन अभिलेख छल जकर ग्राहक कोनो परिवार नहि, कोनो विवाह नहि, कोनो प्रमाणपत्र नहि। ओकर ग्राहक भविष्य छल—अथवा कदाचित् कोनो एक मनुष्य, जे एक दिन पुछत जे जकर नाम नहि लिखल गेल, ओकरा हम कतय खोजी।

हम दीप मिझौलहुँ। बहि झोलाक भीतर रहल। मूल पँजी सन्दूकमे रहल। दुनू एक घरमे छल, मुदा आब एकहि सत्यक एकमात्र अधिकार कोनो एक पोथीक हाथमे नहि रहल।

अध्याय ३३ — मस्कट

अनुराधाक मस्कट जाएबाक निर्णय एक दिनमे नहि भेल। निर्णयक पहिल चिन्ह पासपोर्ट नहि, अस्पतालक वेतन-पर्ची छल। दिल्लीमे रात्रि-पारी, किराया, भोजन, फोन, घर पठाओल रुपैया आ नर्सिंग ऋणक मासिक किस्त काटलाक बाद जे बचैत छल, ओकरा ओ कागजक कोनामे पेन्सिलसँ लिखैत छलीह। तीन मासक हिसाब एकहि बात कहैत छल—एहि वेतनसँ ऋण शीघ्र नहि उतरय।

ओ अपन सहकर्मी रेशमा सँ मस्कटक नाम सुनलनि। रेशमा केरलक छलीह, दू वर्ष ओमानमे काज कऽ दिल्ली घुरल छलीह, आ ओ कहैत छलीह जे परदेसक वेतन सुनबा योग्य अछि, मुदा कागज पढ़ने बिना जाएब योग्य नहि। अनुराधा पहिल बेर एहि वाक्यकेँ मजाक बुझलनि। दोसर बेर ओ अपन फोनमे एजेन्टक नम्बर लिखि लेलनि। तेसर बेर फोन कयलनि।

एजेन्ट अपन परिचय “विदेशी रोजगार परामर्श” कहि देलक। कार्यालय करोल बागक एक गलीमे छल। सीढ़ीक नीचाँ प्लास्टिकक कुर्सी, भीत पर ओमानक एक रंगीन नक्शा, काँचक भीतर अस्पतालक चित्र, आ मेज पर पासपोर्टक छायाप्रति सभ राखल छल। अनुराधा बैसलाक बाद पहिल प्रश्न वेतनक नहि, शुल्कक कयलनि। उत्तर तीन भागमे आयल—फाइल शुल्क, चिकित्सकीय जाँच, आ सेवा-शुल्क।

ओ तीनू रकम अपन छोट कापीमे लिखलनि। तकर बाद पुछलनि—“अनुबन्ध पहिने देखाएब?” एजेन्ट कहलकि नियुक्ति-पत्र आबि गेलाक बाद। “अस्पतालक नाँव?” ओ पुछलनि। एजेन्ट एक कागज घुमा देलक। अरबी आ अंग्रेजी दुनू छल। अस्पताल निजी छल। शहर—मस्कट। कार्य—स्टाफ नर्स। अवधि—दू वर्ष। निवास—नियोक्ता। भोजन—नहि। यातायात—नियोक्ता। छुट्टी—अनुबन्ध अनुसार।

अनुराधा कागजक छायाप्रति माँगलनि। एजेन्ट पहिने मुँह देखलक, फेर कहलकि ई कार्यालयक प्रति अछि। ओ फोनसँ चित्र लेबाक अनुमति पुछलनि। अनुमति भेटल। चित्र धुँधला छल, मुदा अस्पतालक नाँव, वेतन, अवधि आ हस्ताक्षरक ठाम पढ़ाइत छल। अनुराधा राति पारीमे ब्रेकक समय चित्र बड़ कऽ तीन बेर पढ़लनि।

पासपोर्ट लेल आवेदन ओ पहिनेसँ कयने छलीह। पुलिस सत्यापनक दिन मकान-मालिक घर पर नहि छलाह। फोन, प्रतीक्षा, फेर दोसर दिन। पासपोर्ट भेटल तऽ ओ पहिल पृष्ठ पर अपन नाँव तीन बेर पढ़लनि। पिता केर नाँव, जन्मतिथि, जन्म-ठाम, पता। एक छोट पोथीमे देहक आवागमन योग्य बनबाक सभ प्रमाण समा गेल छल।

एजेन्ट दोसर फोनमे कहलकि चिकित्सकीय जाँच आवश्यक अछि। अनुराधा अस्पतालक नर्स छलीह, मुदा एहि जाँचमे ओ स्वयं रोगी अथवा कर्मी नहि, विदेश जाएब योग्य देह छलीह। रक्त, एक्स-रे, मूत्र, दृष्टि, वजन, रक्तचाप। सभ पर्ची पर क्रमांक। सभ कक्षक बाहर पाँति। एक कक्षमे स्त्रीसभ पृथक बैसल छलीह। ककरो हाथमे सऊदीक कागज, ककरो कुवैतक, ककरो ओमानक।

रक्त लेबाक समय तकनीशियन पुछलक—“पहिल बेर विदेश?” अनुराधा माथ हिलौलनि। ओ फेर किछु नहि पुछलक। शीशी पर नाँव नहि, क्रमांक चिपकल। अनुराधा ओ क्रमांक याद राखलनि। अस्पतालमे ओ रोगी सभक कलाई-पट्टी जाँचैत छलीह; एतय अपन शीशीक अंक देखैत छलीह।

छाती-किरणचित्रक कक्ष बाहर पाँच स्त्री एक संग बैसल छलीह। एक गोरखपुरक, एक कोट्टायमक, एक जालन्धरक, एक दरभंगाक, एक अनुराधा। दरभंगाक स्त्री ओहि बेर मैथिली सुनि चौंकलि। दुनू दू मिनटक भीतर गाम, थाना, रेल-पथ आ नर्सिंग-स्कूलक नाँव जोड़ि लेलनि। ओ स्त्री कतर जाएत छलीह—सलालाह। अनुराधा पुछलनि, “मस्कट सँ कतेक दूर?” ककरो ज्ञात नहि छल।

चिकित्सकीय प्रतिवेदन दू दिन पछाति भेटल। ऊपर अंग्रेजीमे “FIT” छापल छल। अनुराधा कागज कैं मोड़लनि नहि। प्लास्टिक फोल्डरमे राखलनि। एजेन्टक कार्यालयमे जमा करैत समय रसीद माँगलनि। रसीद पर कुल रकमक एक भाग मात्र लिखल छल। ओ पुछलनि—“शेष?” उत्तर आयल—“सेवा-शुल्क पृथक।” अनुराधा कहलनि—“पृथक कागज दिअ।” कागज देल गेल।

ओ रसीद सभक छायाप्रति बनौलनि। एक प्रति दिल्लीक अलमारीमे, एक गाम भेजल लिफाफामे, एक फोनक चित्रमे। दादाकैं ओ एखन एहि विषयमे नहि कहलनि। मोहनकैं कहलनि। मोहन पहिल प्रश्न कयलनि—“एजेन्ट पंजीकृत अछि?” अनुराधा कहलनि जे नम्बर देखल अछि,

मुदा सत्यापन करब बाँकी अछि। मोहन फोन पर चुप रहलाह, फेर कहलनि—“कागज बिना एक रुपैया आरो नहि।”

अनुराधा एहि वाक्य पर हँसलनि नहि। ओकरा स्मरण छल जे कागज मोहनक जीवनमे की अर्थ रखैत अछि। मुदा एहि बेर सलाह उपयोगी छल। ओ मन्त्रालयक वेबसाइट पर भर्ती-अभिकर्ताक विवरण खोजलनि। कार्यालयक नाँवक वर्तनी कागजसँ मिलौलनि। पंजीकरण संख्या मिलल। अवधि देखलनि। पता मिलल। तकर बादे अगिला रकम देलनि।

नियुक्ति-पत्र एक सप्ताह पछाति आयल। एहि बेर कागज अधिक स्वच्छ छल। अस्पतालक नाम, मस्कट, मासिक वेतन, आवास, ड्यूटी-घण्टा, ओवरटाइमक नियम, वार्षिक छुट्टी, यात्रा-व्यय, परिवीक्षा। अनुराधा “परिवीक्षा”क अनुच्छेद पर निशान लगौलनि। रेशमाकेँ देखौलनि। रेशमा दू पाँति घेरि देलक—नियोक्ता अनुबन्ध समाप्त करबाक शर्त, आ पासपोर्टक रख-रखाव विषयक अस्पष्ट वाक्य।

अनुराधा एजेन्टकेँ फोन कयलनि। उत्तर भेटल—“ओतय पहुँचि कऽ HR सँ पुछि लेब।” अनुराधा कहलनि—“एतय लिखल रहत तखन जाएब।” तीन दिन फोन नहि आयल। चारिम दिन संशोधित प्रति आयल। वाक्य बदलल छल—पासपोर्ट कर्मचारीक पास रहत, आवश्यक प्रशासनिक कार्यक समय प्रस्तुत कयल जाएत। ओ कागज फेर पढ़लनि।

टिकट दिल्ली सँ मस्कट छल। तिथि रातिक। प्रस्थानसँ दू सप्ताह पहिने अनुराधा सामानक सूची बनौलनि—दू जोड़ी ड्यूटी-कपड़ा, स्टेथोस्कोप, रक्तचाप-मापक नहि, कारण अस्पताल देत; तीन साड़ी, दू सलवार-कुर्ता, चप्पल, जूता, औषधि, प्रमाणपत्रक मूल आ छायाप्रति, नर्सिंग पंजीकरण, अंक-पत्र, पासपोर्ट चित्र, रसीद, नियुक्ति-पत्र, चिकित्सकीय प्रतिवेदन, सूत-धागाक छोट डिब्बी, एक लोहेक डिब्बीमे घरक माटि नहि—ओ माटि लऽ जाएब नहि चाहैत छलीह।

घरक माटि नहि लऽ जाएबाक निर्णय पर स्वयं ओकर ध्यान गेल। लोक परदेस जाएत समय किछु प्रतीक लैत अछि—एहन कथा ओ सुनने छलीह। ओकरा प्रतीक नहि चाही। ओकरा कागज चाही, जूता चाही, औषधि चाही, आ फोनक चार्जर चाही।

गाम जाएबाक समय तीन दिन छल। दादा ओकर पासपोर्ट देखलनि। पहिल पृष्ठ पढ़लनि। पृष्ठ पलटलनि। किछु कहलनि नहि। अनुराधा स्वयं कहलनि—“मस्कट जा रहल छी।” दादा

पुछलनि—“कतेक दिन?” ओ कहलनि—“अनुबन्ध दू वर्षक।” दादा फेर पासपोर्टक पन्ना देखलनि, मानो समय ओतय लिखल हो।

ओ अनुराधाक पहिल स्वर-सन्देशक प्रश्नसभक उत्तर एखनहुँ नहि देलनि। अनुराधा सेहो ओहि दिन फेर नहि पुछलनि। विदेस जाएबाक कागज मेज पर छल; पुरान पँजी सन्दूकमे। दुनू बीच चारि हाथक दूरी छल।

मोहन स्टेशन धरि छोड़बाक लेल आयलाह। गाड़ीमे ओ एजेन्टक रसीद सभ फेर देखलनि। अनुराधा झुँझलाइत कहलनि—“हम पढ़ि सकैत छी।” मोहन कागज घुमा देलनि। “से तऽ हम जानैत छी।” केवल एतबे कहलनि।

दिल्ली घुरलाक बाद अन्तिम सप्ताह अस्पतालक पारी सभ भारी लगल। ओ रोगी सभक दवा देलनि, चार्ट भरलनि, रक्तचाप लेलनि, नवल नर्सकेँ हस्तान्तरण सूची बुझौलनि। जे काज पाँच वर्ष सँ परिचित छल, आब प्रत्येक वस्तु गणना-जोग बनि गेल—अन्तिम रात्रि-पारी, अन्तिम locker key, अन्तिम staff meal, अन्तिम attendance signature। ओ ककरो सोझाँ “अन्तिम” शब्द नहि कहलनि।

प्रस्थानक दिन विमानतल पर सामानक वजन सीमा सँ दू किलो बेसी छल। ओ एक मोट किताब निकालि मोहनकेँ देलनि। दू साड़ीमेसँ एक निकाललनि। कागजक फोल्डर हाथ-सामानमे रहल। चिकित्सकीय प्रतिवेदन, अनुबन्ध, पासपोर्ट, टिकट—चारू बेराबेरी जाँचलनि।

इमिग्रेशनक खिड़की पर अधिकारी पासपोर्ट देखलक, वीजा देखलक, स्क्रीन देखलक। पुछलक—“Employment?” अनुराधा “Yes” कहलनि। “Nurse?” “Yes.” तकर बाद मोहर पड़ल। ध्वनि छोट छल। ओकर बाद पासपोर्ट फेर ओकर हाथमे।

प्रतीक्षालयमे ओ फोन खोललनि। दादाक नाम ऊपर छल। स्वर-सन्देश बनाबय लगलनि, फेर रोकि देलनि। लिखित सन्देश पठौलनि—“हम भीतर पहुँचि गेलहुँ। विमान समय पर अछि।” भेजलाक बाद दोसर पाँति लिखबाक मन भेल—“हमर प्रश्नसभ एखनहुँ अछि।” ओ नहि लिखलनि।

विमान उठल तऽ दिल्लीक प्रकाश नीचाँ बिन्दु बनल। अनुराधा खिड़कीक काँचमे अपन मुख देखलनि। ओ कोनो नवल जीवनक उद्घाटन खोजि नहि रहल छलीह। ओकर गोदमे फोल्डर छल।

सीट-पॉकेटमे सुरक्षा-पत्र। फोन flight mode मे। जे निर्णय महीना भर कागज, शुल्क, जाँच, हस्ताक्षर आ संशोधनक रूपमे बनैत रहल, ओ आब केवल एक यात्रा छल।

मस्कट पहुँचि कऽ पहिल जे वस्तु ओकर ध्यानमे आयल से गर्मी नहि, विमानतलक प्रकाश छल। उज्जर, स्थिर, बिना छाया। आगमन-पाँति, पासपोर्ट जाँच, सामान-पट्टी, अस्पतालक नाम लिखल छोट पट्टी लऽ ठाढ़ चालक। ओ अपन नाँव देखलनि। चालक ओकर पासपोर्ट नहि माँगलक; केवल नाम मिलौलक।

गाड़ी शहरक बाट पर चलल। बाहर पहाड़क कारी आकार, बाटक पीयर प्रकाश, दूर उज्जर मकान। अनुराधा फोनमे समय देखलनि। दिल्लीक समयसँ अन्तर। ओ समय बदललनि नहि; फोन स्वयं बदलि देलक।

निवासक कोठलीमे दू पलंग छल। दोसर पलंग पर पहिनेसँ एक नर्सक सामान राखल छल—नीला सूटकेस, पानीक बोतल, चार्जर, अरबी-अंग्रेजी शब्दावलीक छोट पोथी। अनुराधा अपन फोल्डर तकियाक नीचाँ नहि, अलमारीक ऊपरी खानेमे राखलनि। पासपोर्ट अपन थैलीमे।

ओ राति स्वर-सन्देश बनौलनि। भेजबाक पहिने सुनलनि। पहिल वाक्य छल—“हम पहुँचि गेलहुँ।” दोसर—“कागज सभ हमर लग अछि।” तेसर वाक्य बनैत-बनैत रुकि गेल—“दादा, ओ प्रश्न...” ओ recording काटि देलनि। नवल सन्देश बनौलनि। केवल दू वाक्य। पठा देलनि।

मस्कटमे ओकर पहिल राति एहि दू वाक्यसँ आरम्भ भेल। परदेसक पहिल अभिलेख पासपोर्टक मोहर नहि छल। ओ आवाज छल जाहिमे जे नहि कहल गेल, से कहल वाक्य जतेक भारी रहल।

अध्याय ३४ — कोसी — ५

हम बहैत छी आ एहि बेर हमर कातक बाट पर पयरक संख्या घटैत अछि आ घरक भीतर बन्द सन्दूक बढ़ैत अछि आ दुआरक कुंजी ककरो चचेरा भाइक लग रहैत अछि ककरो मामाक लग रहैत अछि ककरो पड़ोसीक खूँटी पर लटकैत अछि आ जे घरमे पहिले साँझ पड़िते धुआँ उठैत अछि ओहि घरमे आब महीनामे एक बेर चूल्हि जरैत अछि आ जे आँगनमे बालक सभ माटि पर नाँव लिखैत अछि ओहि आँगनमे घास चढ़ैत अछि आ हम एहि बदलनाइकेँ परदेस नहि कहैत छी कारण हमरा लेल परदेसक कोनो दिशा नहि अछि हम केवल पयरक कमी देखैत छी नावक भार हलुक होइत देखैत छी हाटक दिन कम लोक पार होइत देखैत छी आ पत्रक बदला फोनक छोट यन्त्र हाथमे चमकैत देखैत छी आ किछु घरक छत पर नवल टीन चढ़ैत देखैत छी किछु भीत पर रंग चढ़ैत देखैत छी किछु कोठलीमे लोहारक नवल सन्दूक अबैत देखैत छी आ हम बुझैत छी जे रुपैया एतय ककरो जेब सँ ककरो जेब धरि मात्र नहि अबैत अछि से दूर देशक श्रम सँ चलि बैंकक अङ्क बनैत अछि फेर हाटक बोरा बनैत अछि औषधिक पुड़िया बनैत अछि विद्यालयक शुल्क बनैत अछि छतक टीन बनैत अछि मोटर पम्प बनैत अछि विवाहक खर्च बनैत अछि आ कखनो खाली घरक भीतर राखल एहन वस्तु बनैत अछि जेकर उपयोग करनिहार स्वयं ओहि घरमे नहि रहैत अछि हम रुपैयाक तार नहि देखैत छी मुदा ओकर भार धरती पर देखैत छी जखन कच्चा भीतक बदला ईंटक भीत उठैत अछि जखन बाँसक खपच्चीक बदला लोहारक खिड़की लगैत अछि जखन पुरान माटिक घैलक कात प्लास्टिकक ड्रम ठाढ़ होइत अछि जखन बैलगाड़ीक बाट पर मोटरसाइकिलक चक्का गड़ैत अछि मुदा एहि सभक बीच हम ईहो देखैत छी जे घरक भीत जतेक दृढ़ होइत अछि घरक भीतरक आवाज ओतेक घटैत अछि आ ककरो माय अपन बेटाक स्वर फोनमे सुनैत छथि आ ककरो पिता महिनाक अन्तमे बैंकक पर्ची देखैत छथि आ ककरो स्त्री राति देर धरि दूर देशक समयक हिसाब करैत छथि आ ककरो बालक अपन बाबूक मुख पर्दा पर देखैत अछि आ स्पर्श नहि पबैत अछि आ हम स्पर्शक अभावक लेखा नहि रखैत छी हम केवल घाट पर ठाढ़ देहक संख्या गनैत छी जखन बिहानक नाव पहिने भरि जाइत अछि तखन हम नावक तल्ला पर भार बुझैत छी जखन नाव आधा भरैत अछि तखन हम ओहि हलुकपनकेँ बुझैत छी आ ई हलुकपन वर्ष दर वर्ष बढ़ैत अछि आ गामक भीतर बूढ़ देह आ स्त्रीक काज बढ़ैत अछि खेतक मेड़ पर जे पयर पहिले दू जोड़ी चलैत अछि ओतय आब एक जोड़ी चलैत अछि धान कटबाक समय बाहरसँ मजूर अबैत अछि घरक छत मरम्मति लेल मिस्त्री दोसर गामसँ अबैत अछि विवाहमे बेटा विमानसँ अबैत अछि मृत्यु पर ककरो टिकट नहि भेटैत अछि तखन ओकर स्वर फोनमे अबैत

अछि आ हम जलक भीतर एहि स्वरकेँ नहि सुनैत छी मुदा घाट पर राखल फोनक प्रकाश देखैत छी आ ओकर सोझाँ झुकल मुख देखैत छी जखन दूर देशक दिन एतय राति अछि तखन घरक लोक जागैत छथि आ जखन एतय दिन अछि तखन ओतय काजक पारी चलैत अछि आ समय एकहि घड़ीमे दू भाग होइत अछि जेना नक्शा नदीकेँ दू कात बाँटैत अछि मुदा जलक भीतर ई बाँट नहि टिकैत अछि हम एकहि तापमे बहैत छी एकहि बालु ढोइत छी एकहि माटि काटैत छी आ मनुष्य अपन समयकेँ देशक घड़ीसँ बाँटैत अछि आ अपन देहकेँ रोजगारक अनुबन्धसँ बाँटैत अछि आ घरक स्मृतिकेँ फोनक सन्देशमे राखैत अछि आ जे लोक मस्कट जाइत छथि ओ अपन संग कपड़ा कागज औषधि जूता आ चार्जर लैत छथि मुदा घरक सम्पूर्ण गन्ध संग नहि लऽ जा सकैत छथि आ जे लोक दिल्ली जाइत छथि ओ रेलक डिब्बामे चढ़ैत छथि आ जे लोक पंजाब जाइत छथि ओ बोरा आ कम्बल लैत छथि आ जे लोक काठमाण्डू दिस जाइत छथि ओ सीमा पार करैत छथि आ हम सभ दिशाक नाम नहि रखैत छी हम केवल देखैत छी जे गामक भीतर जे देह सभ रहैत अछि से कम होइत अछि आ गामक बाहर जे कमाइ होइत अछि से भीतर वस्तु बनि घुरैत अछि मुदा लोक स्वयं वस्तु जकाँ घुरि नहि पबैत छथि कखनो दू वर्ष पछाति कखनो पाँच वर्ष पछाति कखनो केवल विवाहमे कखनो केवल मृत्यु पर आ कखनो कखनो कखनो नहि आ तखन घरक कुंजी ककरो दोसर लग रहैत अछि आ भीतक रंग धूपमे फिक्का होइत अछि आ बन्द कोठलीमे कपड़ाक गन्ध बदलैत अछि आ पँजीमे वंशक पाँति चलैत रहैत अछि मुदा पाँतिक लोक भिन्न भिन्न देशक समयमे जीबैत छथि आ विवाहक प्रश्न फोन पर पुछल जाइत अछि आ मूल ग्रामक नाम पासपोर्टक स्थायी पता बनैत अछि आ स्थायी पता वाला घर वर्षक बेसी दिन रिक्त रहैत अछि आ हम स्थायी शब्द नहि बुझैत छी कारण हमर कात धरती स्वयं सरकैत अछि बालु चढ़ैत अछि कात कटैत अछि पुरान धार भरैत अछि नवल धार खुलैत अछि मुदा मनुष्य स्थायी पता लिखैत अछि कारण कागज ओकरा एक ठाम माँगैत अछि आ देह ओकरा दोसर ठाम लऽ जाइत अछि आ एहि दू ठामक बीच रुपैया चलैत अछि सन्देश चलैत अछि आदेश चलैत अछि चिन्ता चलैत अछि आ कखनो मौन चलैत अछि आ हम एहि मौनकेँ तखन देखैत छी जखन घाट पर बूढ़ पिता फोनक पर्दा पर अङ्गुली फेरैत छथि मुदा ककरो नाँव दबाबय सँ पहिने फोन फेर जेबमे राखि दैत छथि आ जखन कोनो स्त्री दूर देशक अस्पतालक रातिक पारी पछाति अपन घरक स्वर सुनबाक लेल यन्त्र खोलैत छथि मुदा केवल दू वाक्य पठबैत छथि आ तेसर वाक्य रोकि दैत छथि आ हम बहैत छी आ एहि रोकल वाक्यक अर्थ नहि पूछैत छी कारण हमरा लेल शब्दक आगाँ जल अछि माटि अछि ढलान अछि आ खाली होइत आँगन अछि जाहिमे बरखा पड़ैत

अछि आ जे घरक लोक दूर अछि से बरखा स्वयं देखैत नहि अछि मुदा ओकर पठाओल रुपैयासँ लगाओल टीन पर बरखाक आवाज बजैत अछि आ घरक भीतर जे लोक बचल छथि से आवाज सुनैत छथि आ हम ओहि आवाजक नीचाँ अपन बहाव निरन्तर रखैत छी आ हमरा कात सँ नाव जाइत अछि आ नावमे सीट रिक्त रहैत अछि आ ककरो हाथमे फोन चमकैत अछि आ ककरो जेबमे बैंकक पर्ची मुड़ल रहैत अछि आ ककरो मुख पर दूर देशक समय बसल रहैत अछि आ गाम अपन लोककेँ एकहि बेर खोइत नहि अछि गाम धीरे धीरे दिन गनैत अछि कुंजी गनैत अछि बन्द दुआर गनैत अछि फोनक प्रतीक्षा गनैत अछि आ हम एहि गणनासँ बाहर बहैत छी मुदा हमरा कातक घाट एहि सभक चिन्ह राखैत अछि

अध्याय ३५ — हम सभ

हम सभक कोनो एक प्रस्थान-दिन नहि अछि। हमर सभक गाम एकहि दिन खाली नहि भेल। पहिने दू-चारि युवक गेल, फेर एक घरक दू भाइ, फेर पड़ोसी टोलाक पाँच जन, फेर ओहि पाँचमे सँ दू जन दोसर पाँच जनकेँ बुलौलक। ककरो हाथमे रेलक टिकट छल, ककरो हाथमे केवल कागजक छोट पर्ची जाहिपर शहरक नाम आ एक फोन-संख्या लिखल छल। ककरो लग ठेकेदारक परिचय छल, ककरो लग बहनोइक वचन, ककरो लग केवल ई खबरि जे फलाँ शहरमे दिन भरि काज कयला पर एतयक दू दिनक मजूरी भेटैत अछि।

हम सभ जे गेलहुँ, पहिल बेर अपन गामकेँ नक्शा पर नहि, दूरीमे बुझलहुँ। रेल चलैत रहल, स्टेशनक नाम बदलैत रहल, खिड़की बाहरक माटिक रंग बदलैत रहल। हमर बोरा, कम्बल, गमछा, सूखा चूड़ा, सत्तू, नून-मरिच, एक जोड़ी कपड़ा, कागजक लिफाफा आ घरसँ देल छोट पुड़िया हमर संग रहल। जखन स्टेशन पर उतरैत रही तखन बुझाइत छल जे हमर नाँव एतय ककरो परिचित नहि, मुदा हमर हाथक काजक मूल्य अछि।

हम सभ पंजाबक खेतमे धान रोपलहुँ, गेहूँ काटलहुँ, मोटरक पानीक धार बीच घुँट्ठा धरि माटिमे ठाढ़ रहलहुँ। हमरा सभमे सँ किछु जन दिल्लीक निर्माण-स्थल पर ईंट ढोएलहुँ, लोहारक सरिया उठेलहुँ, अधबनल भवनक कोठलीमे राति बितौलहुँ। किछु जन सूरतक करघाक घरमे धागाक धूरि साँसक भीतर लेलहुँ। किछु जन होटलक भानसघरमे थारी धोएलहुँ। किछु जन पहरा देलहुँ। किछु जन अस्पताल, घर-सेवा, दुकान, गोदाम, कारखाना आ दफ्तरक छोट-छोट काजमे लगलहुँ। हमर सभक रोजगार पृथक छल, मुदा पठाओल रुपैयाक बाट प्रायः एकहि छल—घरक खाता।

हम सभ जे बचलहुँ, हमहूँ प्रवासक भीतर रहलहुँ। गाममे रहि गेल स्त्री, बूढ़, बालक आ अशक्त देह सभकेँ केवल “घरमे रहनिहार” कहब अधूरा अछि। खेतक निराइ, रोपनी, पशुक चारा, विद्यालयक शुल्क, औषधि, बैंक, डाकघर, राशन, विवाह, श्राद्ध, छतक मरम्मति, नलकूपक बिगाड़—ई सभ काज ओहि हाथसभ पर आयल जे पहिने एहि सभक आधा भार उठबैत छल। जे बाहर गेल, ओकर अनुपस्थिति सेहो एकटा काज बनल; ओकर फोनक प्रतीक्षा, रुपैया आयल कि नहि, कखन घुरत, कतेक दिन रहत, फेर कखन जाएत—ई सभ गणना घरक दिनचर्यामे जुड़ल।

हम सभ पहिने पत्र लिखलहुँ। पीयर लिफाफा, नीला अन्तर्देशीय पत्र, कखनो पोस्टकार्ड। लिखैत रही—हम कुशल छी, अहाँ सभ कुशल रहू, रुपैया भेजलहुँ, खेतक हाल लिखू, गाय बियायल कि

नहि, छतक पानि रोकल कि नहि। जे बात लिखबाक छल, ओकरा लेल स्थान कम छल; जे बात नहि लिखबाक छल, ओकर स्थान असीम। बादमे फोन आयल। पहिने पीसीओ पर पाँति, फेर छोट मोबाइल, फेर स्क्रीन। आवाज शीघ्र पहुँचय लगल, मुदा बातक संख्या नहि बढ़ल।

हम सभक घरमे कखनहुँ एहन साँझ आयल जखन तीन देशक समय एकहि दुआर पर जमा छल। गाममे भोजनक बेला, दिल्लीमे पारी बदलबाक समय, खाड़ी देशमे काजक बीच छोट विश्राम। फोन बजल तऽ घरक सभ लोक एक ठाम जुटल, मुदा बोलल केवल दू जन। “खेनाइ भेल?” “हँ।” “औषधि लेलहुँ?” “हँ।” “रुपैया पहुँचल?” “हँ।” तेसर प्रश्न ककरो कण्ठ धरि आबि कऽ रुकि गेल।

हम सभक प्रवास केवल रुपैयाक कथा नहि अछि। रुपैया निश्चित रूपेँ आयल। माटिक भीत ईंटक भेल, खपरैलक बदला टीन चढ़ल, ककरो घरमे पम्प लगल, ककरो बेटीक पढ़ाइ चलल, ककरो रोगक उपचार भेल, ककरो ऋण उतरि गेल। मुदा रुपैयाक संग समय नहि आयल। जे पाँच वर्ष बाहर रहल, ओकर पाँच वर्षक साँझ घर नहि घुरल। जे बालक पहिल बेर चलब सिखलक, ओकर पहिल पयर देखनिहार देह दूर शहरमे रहल। जे बूढ़क कान कम सुनय लगल, ओकर बेटाक आवाज फोनमे आरो क्षीण भेल।

हम सभ जे शहरमे रहलहुँ, शहरकेँ अपन नहि कहलहुँ, मुदा गाममे घुरि कऽ सेहो पहिल सन नहि रहलहुँ। हमर बोलिमे किछु बाहरी शब्द घुसबाक चेष्टा कयलक, कपड़ाक ढंग बदलल, भोजनक समय बदलल, निद्राक घड़ी बदलल। हम ओ शब्दसभकेँ गामक बोलीमे मिलाबय चाहलहुँ, किछु मिलल, किछु बाहर रहि गेल। हम जे शहरक काजक गति सीखलहुँ से खेतक ऋतु संग मेल नहि खाइत छल। शहर कहैत छल समय रुपैया अछि; गाम कहैत छल समय वर्षा, रोपनी, कटनी, पर्व, विवाह, मृत्यु आ प्रतीक्षा अछि।

हम सभ घुरैत रही तखन उपहार लबैत रही। ककरो लेल कपड़ा, ककरो लेल घड़ी, बालक लेल प्लास्टिकक खेलौना, घर लेल स्टीलक डब्बा, सुगन्धित तेल, चप्पल, टॉर्च, छोट रेडियो, पछाति मोबाइल। उपहारक सूची सँ घर बुझैत छल जे बाहरक संसार कतेक दूर अछि आ कतेक कात। मुदा जे देह उपहार लबैत छल, ओ प्रायः दू सप्ताह बाद फेर चलि जाइत छल। वस्तु रहि जाइत छल। दुआर फेर कम बजैत छल।

हम सभक विवाहो प्रवासक हिसाब सँ तय होय लगल। छुट्टी कखन भेटत, टिकट कतेक महँग अछि, काजक ठाम सँ कतेक दिनक अनुमति मिलत, एहि पर तिथि निर्भर भेल। कखनो दूल्हा विवाहसँ दू दिन पहिने पहुँचल, कखनो विवाहक चारि दिन बाद चलि गेल। नव दम्पतीक पहिल महीना फोनक पर्दा पर बीतल। ससुरार, नैहर, रोजगारक शहर आ गाम—चारि ठामक बीच एक नवल गृहस्थी बनल जेकरा एकहि छत नहि छल।

हम सभ अपन स्थायी पता प्रपत्रमे गाम लिखैत रही। तहिया कागज कहैत छल हम एतयक छी। हमर देह कहैत छल हम दोसर ठाम काज करैत छी। बैंकक खाता कहैत छल धन एतय अबैत अछि। फोन कहैत छल आवाज ओतय अछि। मतदाता सूची, राशन-पत्र, विद्यालयक प्रमाणपत्र, भूमि-अभिलेख—सभ हमरा गाममे बाँधैत रहल; रोजगारक अनुबन्ध हमरा बाहर राखैत रहल। एकहि लोकक दू-तीन ठाम छल, मुदा कोनो ठाम सम्पूर्ण नहि।

हम सभमे सँ किछु जन शहरमे कोठली साझी कयलहुँ। आठ जन लेल चारि पलंग, दू जन रातिक पारी, दू जन दिनक पारी, तें एकहि बिछाओन पर देह बेराबेरी बदलैत रहल। देबाल पर गामक तसवीर नहि, कैलेंडर छल। एक कोनमे चूल्हि, दोसर कोनमे बाल्टी, ऊपर रस्सी पर कपड़ा। भोजन सरल—भात, दालि, आलू, कखनो अचार। वेतन आयलाक दिन पहिने घरक रुपैया पृथक, पछाति किराया, भोजन, यात्रा, फोन। अपन लेल जे शेष रहल, ओकरा हम कमाइ नहि, खर्च कहैत रही।

हम सभमे सँ किछु जन अभिकर्ताक ऋण लऽ बाहर देश गेलहुँ। पासपोर्ट, चिकित्सकीय जाँच, वीजा, टिकट, सेवा-शुल्क—प्रस्थानसँ पहिने कमाइ ऋण बनि गेल। पहिल महीनाक वेतन घर नहि पहुँचल; ऋणक खाता घटल। घरमे लोक प्रतीक्षा कयलक। हम फोन पर कहलहुँ—अगिला मास पठाएब। अगिला मास किछु पठाओलहुँ। ऋण उतरला पर पहिल बेर जे रुपैया गाम पहुँचल, ओकर आधा पुरान उधारमे गेल। हम फेर कहलहुँ—अगिला मास। प्रवासक अनेक वर्ष “अगिला मास”क वचन पर चलल।

हम सभक गाममे ताला बढ़ल। पहिने ताला केवल सन्दूक पर छल, पछाति कोठली पर, फेर मुख्य दुआर पर। कुंजी पड़ोसी, चचेरा भाइ, बहिन, बूढ़ माय वा खेत देखनिहार ककरो लग रहल। वर्षमे दू बेर दुआर खुलल, झाड़ू देल गेल, खिड़की खोलल गेल, गद्दा धूपमे राखल गेल। फेर ताला। ई

घर निर्जन नहि छल; ओकर मालिक छल, पता छल, कर देल जाइत छल, भीतर बर्तन छल, मुदा नितक श्वास नहि छल।

हम सभक खेत सेहो बदलल। जे बाहर गेल ओकर खेत बटाइ पर देल गेल, ककरो खेत पट्टे पर, ककरो खेत पड़ल। कृषि-काज लेल मजूर दोसर गामसँ आयल। एक समय जे परिवार अपन खेतमे अपन हाथ लगबैत छल, से बैंकसँ आयल रुपैयासँ मजूरी देलक। खेत परिवारक पेटक आधार रहि कऽ धीरे-धीरे सम्पत्ति, सुरक्षा, विवाहक प्रतिष्ठा आ घुरबाक सम्भावना बनल। हम बाहर रही, मुदा खेत बेचबाक निर्णय पर घरक सभ स्वर एकाएक भारी भऽ जाइत छल।

हम सभ गामक पर्व फोनक माध्यमसँ देखलहुँ। पूजा, अरिपन, सामा-चकेबा, विवाहक गीत, छठिक घाट, मृत्युक बादक कर्म—ककरो फोन उठल, ककरो क्यामेरा घुमल, हम स्क्रीन पर देखलहुँ। दृश्य पहुँचल, गन्ध नहि। गीत पहुँचल, आँगनक माटि पयरमे नहि लगल। हम स्क्रीनक एहि कमीकेँ स्वीकार करैत गेलहुँ, कारण अनुपस्थित रहबाक दोसर उपाय नहि छल।

हम सभक बालक सभक सम्बन्ध गामसँ एकसमान नहि रहल। किछु गाममे पलल, किछु शहरमे, किछु नैहरमे, किछु दादा-दादीक संग। ककरो पिता वर्षमे एक बेर आयल, ककरो माय दू वर्ष पर। बालक फोनक आवाज सँ पहिचान बनौलक, पछाति देह घुरल तऽ पहिल दू दिन संकोच रहल। तेसर दिन खेलौना माँगल। पाँचम दिन गोदमे बैसल। सातम दिन प्रस्थानक टिकट आँगनमे फेर उपस्थित भेल।

हम सभ वृद्ध लोकक उमेर फोनक पारी सँ नापलहुँ। “आब सुनाइ कम दैत अछि।” “आब घुट्ठा दुखैत अछि।” “आब आँखिक दवाई नित चाही।” ई वाक्य दूर शहरमे पहुँचल। हम छुट्टी माँगलहुँ; कखनो भेटल, कखनो नहि। बीमारी समय-सारिणी नहि मानैत अछि। मृत्यु तऽ कतोक बेर टिकटसँ पहिने आबि गेल। तखन हम फोनक पार मौन रहलहुँ, रुपैया पठौलहुँ, सहकर्मी सँ पारी बदललहुँ, पछाति काज पर गेलहुँ। शोकक दिन वेतन-पर्चीमे पृथक कोष्ठ नहि पबैत अछि।

हम सभ जे गाममे बचल रही, हमरा लेल सेहो बाहर गेल लोक स्थिर चित्र नहि छल। ओ फोन पर कहैत छल—एतय सभ ठीक अछि। हम बुझैत रही जे सभ ठीक नहि होयत। हम पूछैत नहि रही, कारण पूछला पर उत्तर देबाक भार बढ़त। ओ पूछैत—घरमे सभ कुशल? हम कहैत—कुशल। खेतमे पानी चढ़ल हो, छत टपकि रहल हो, औषधि उधारमे लेल गेल हो, तइयो पहिल उत्तर “कुशल” रहैत। दू कातक लोक एक-दोसराकेँ चिन्ता सँ बचाबय लेल आधा सत्य कहैत रहल।

हम सभक सामूहिक कथा एही आधा सत्यसभ सँ बनल। कोनो एक जन नायक नहि, कोनो एक जन पीड़ित नहि। हम सभ कखनो प्रवासी छी, कखनो प्रवासीक प्रतीक्षा करनिहार, कखनो धन पठेनिहार, कखनो धन लेनिहार, कखनो बन्द घरक कुंजी रखनिहार, कखनो खेत देखनिहार, कखनो स्टेशन छोड़य जाएनिहार, कखनो स्टेशन पर घुरि आबि रहल देहकेँ पहचाननिहार। हमर भूमिका वर्षक संग बदलैत रहल।

हम सभक गामक बोलीमे बाहरक शहर सभ धीरे-धीरे दिशा बनि गेल। “ओ दिल्लीमे अछि”, “ओ पंजाबमे अछि”, “ओ सूरतमे अछि”, “ओ खाड़ी दिस अछि”—ई वाक्य परिचयक भाग बनल। पहिले परिचयमे मूल, गाम, पिता, कुल, टोला पुछल जाइत छल; आब रोजगारक ठाम सेहो जुड़ल। विवाहक बातमे प्रश्न उठल—कतेक वेतन, कतेक छुट्टी, परिवार संग राखत कि एकसरि रहत, अनुबन्ध कतेक वर्षक। वंशक पुरान लेखा रोजगारक नवल लेखा संग बैसय लगल।

हम सभ पहिने सोचैत रही कमाइ करि घुरि आएब। “दू वर्ष”, “तीन वर्ष”, “ऋण उतरि जाए”, “छत बनि जाए”, “बहिनक विवाह भऽ जाए”, “बालक पढ़ि जाए”—घुरबाक शर्त सभ बदलैत रहल। एक शर्त सधल तऽ दोसर ठाढ़ भेल। गाम घुरबाक निर्णय भविष्यक एक पाँति बनल जे लिखल रहल, मुदा तिथि रिक्त रहल।

हम सभमे सँ किछु जन अन्ततः घुरलहुँ। घुरि कऽ देखलहुँ जे हमर कोठलीमे आब आन सामान अछि, खेतक मेड़ बदलल, पुरान मित्र बाहर, बालक जवान, बूढ़क चाल धीम। हम अपनहि घरमे वस्तु सभक ठाम पुछलहुँ। जे लोक गाममे रहि गेल छल, ओ हमरा बाट बतौलक। हम बाहर रहि कऽ रुपैया पठबैत रही; ओ भीतर रहि कऽ घरक स्मृति बचौलक। दुनू काज बिना एक-दोसरक अपूर्ण छल।

हम सभमे सँ किछु जन घुरि नहि सकलहुँ। रोजगार दोसर देशमे स्थायी भेल, बालक ओतहि विद्यालय गेल, घर केवल वर्षक किछु दिनक ठाम रहल। तइयो प्रपत्रमे स्थायी पता गामे रहल। मृत्युक बाद देह घुरत कि नहि, ई प्रश्न कतोक घरमे पहिने सँ पुछल गेल। प्रवास जीवनक प्रश्न सँ मृत्यु-व्यवस्थाक प्रश्न बनल।

हम सभ एहि कथा केँ दुःखक एकहि रंगमे नहि कहैत छी। बाहर जाएब सँ किछु देह बचल, किछु घर उठल, किछु पढ़ाइ सम्भव भेल, किछु स्त्री पहिल बेर अपन नामक बैंक खाता चलौलनि, किछु परिवार पुरान ऋणसँ मुक्त भेल। बाहर जाएब सँ किछु विवाह टूटल, किछु बालक दूरीमे पलल,

किछु बूढ़ एकसरि भेल, किछु खेत छूटल, किछु घर बन्द भेल। लाभ आ क्षति एकहि पर्ची पर नहि लिखल जाइत अछि, तेँ दुनूकेँ पृथक गनब कठिन अछि।

हम सभक संख्या सरकारी सूचीमे प्रवासी श्रमिक, सेवा-कर्मी, निर्माण-मजूर, नर्स, चालक, पहरादार, घरेलू सहायक, कारखाना-कर्मी, विद्यार्थी, आश्रित—अनेक कोष्ठमे बँटल। गामक भाषामे हम केवल “बाहर गेल” लोक रही। एहि एक वाक्यमे दूरी, पेशा, वेतन, देश, जोखिम, अकेलापन आ आशा सभ समा गेल।

हम सभ जखन घुरैत रही तखन नदी पार करैत रही, तटबन्ध पार करैत रही, स्टेशन पार करैत रही, सीमा पार करैत रही, विमानतल पार करैत रही। सभ पारक कागज पृथक। मुदा घर पहुँचि कऽ दुआरक भीतर जे पहिल काज करैत रही से प्रायः एकहि—जूता उतारब, पयर धोएब, भीतरक लोककेँ देखब, चुप रहब। एतबे क्षणमे शहरक वेतन, टिकट, अनुबन्ध, पहचान-पत्र, बैंकक पर्ची सभ बाहर रहि जाइत छल।

हम सभ फेर चलि जाइत रही। दुआर बन्द होइत छल। कुंजी फेर ककरो लग रहैत छल। बैंकमे रुपैया फेर आबैत छल। फोन फेर बजैत छल। खेतमे ऋतु बदलैत छल। बालकक लम्बाइ बढ़ैत छल। बूढ़क चाल धीम होइत छल। घरक रंग उड़ैत छल। गामक जनसंख्या कागज पर रहैत छल, देहमे घटैत छल।

हम सभ एही बीच अपन गामक कथा छी। जे गेल, जे रहि गेल, जे घुरल, जे फेर गेल, जे प्रतीक्षा कयलक, जे धन पठौलक, जे कुंजी राखलक, जे फोन उठौलक, जे आधा सत्य कहलक—सभ मिलि कऽ “हम सभ” छी। हमर कोनो एक मुख नहि, कोनो एक आवाज नहि, कोनो एक प्रस्थान नहि। हमर कथा पाँजिक एक पाँतिमे नहि समाइत अछि, कारण पाँजि वंश लिखैत अछि, मुदा दूरीक वर्ष नहि; विवाह लिखैत अछि, मुदा अनुपस्थित देहक राति नहि; जन्म लिखैत अछि, मुदा जे पिता स्क्रीन पर पहिल बेर बालककेँ देखलक ओकर प्रतीक्षा नहि। हम सभ ओहि रिक्त स्थानमे छी जाहि ठाम गाम रहैत अछि आ ओकर लोक दूर-दूर काज करैत अछि।

अध्याय ३६ — गाम जे खाली भेल

सन् २०१६ क जेठ मासमे पूर्वी टोलक एक बन्द घरक कुंजी हमरा देल गेल। कुंजी पीतल रंगक छल, दाँत पर जंग छल, छल्लामे लाल सूत बान्हल छल। कुंजी देनिहार चचेरा भाइ कहलनि जे घरक मालिक सभ बाहर छथि; एक बेटा सूरत, दोसर दिल्ली, बेटी नेपाल दिस ससुरार, घरक वृद्ध स्त्री दू वर्ष पहिने मरि गेल छथि। पँजीक पुरान प्रति वा विवाह-संबंधी कोनो कागज भीतर होयबाक सम्भावना छल। हमरा केवल कागज खोजबाक काज देल गेल।

मुख्य दुआर पर लोहारक ताला। ताला पर धूलिक एक परत। दुआरक नीचा सँ दूटा सुखल पात भीतर घुसल। चौखट पर माकड़क जाल। कड़ीक कात पुरान गोबर-लेपक भूरा चिन्ह। ओसारामे बाँसक एक पीढ़ी, एक पयर खसल। माटिक घैल, मुख पर उलटल स्टीलक थारी। टीनक कनस्तर, ढक्कन पृथक। एक जोड़ी रबरक चप्पल, दाहिना पाँतिका पट्टा टूटल। नारियल तेलक खाली शीशी। मटिया तेलक पुरान डिब्बा। दूटा सूखल झाड़ू। लोहारक हुकमे झूलैत जंग लगल लालटेन। भित्ति पर कैलेंडर—सन् २०११—फागुनक पन्ना खुलल। घड़ी बन्द, काँटा सात बजि अठारह मिनट पर।

भानसघरमे तीन पीतलक थारी, दू कटोरा, एक काँसक लोटा, एक एल्युमिनियमक देगची, ढक्कन नहि। माटिक चूल्हि, राखि जमल। राखिमे लकड़ीक दू अधजरल टुकड़ी। मसाला पीसबाक सिलौट, बट्टा ओकर कात। नूनक पुरान डिब्बामे केवल कड़ा भेल सफेद पपड़ी। धानक मापवला पितराइन, किनार झरि रहल। बाँसक सूप, एक छोर मुस खा लेने। लोहारक चिमटा। पिठार रखबाक माटिक भाँड़, भीतर सुखल कीड़ा। दही जमाबयवला छोट हाँड़ी उलटल। भीत पर धुआँक कारी तह ओहि ऊँचाइ धरि जतय पहिले चूल्हिक आगि पहुँचैत होयत।

पहिल कोठलीमे एक सन्दूक छल। सन्दूक पर नील रंगक पुरान पुताइ, बीचमे सफेद रंगसँ लिखल दुई अक्षर एखन आधा बचल। भीतर पाँच साड़ी, सभ तह कयल; एक हरियर किनारीवला, एक गेरुआ, एक नील, दू उज्जर। कपड़ाक बीच नीमक सुखल पात। एक पुरुषक धोती, दू गमछा, एक ऊनी चादर, एक बालकक स्वेटर जाहिक बाँह छोट। कागजक लिफाफामे चारि तसवीर—एक विवाहक, एक विद्यालयक समूह, एक जवान पुरुष विमानतल-जेकाँ ठाम पर, एक वृद्ध स्त्री ओसारामे बैसल। तसवीरक पाछाँ ककरो नाम नहि। एक प्लास्टिकक थैलीमे राखल सिंदूरक डिबिया, काँचक तीन चूड़ी, चाँदी रंगक एक पायल, जोड़ीदार नहि।

सन्दूकक तल्लामे कागज छल। विद्युत् बिल तीन वर्षक। बैंकक जमा-पर्ची। एक जीवन-बिमा रसीद। विद्यालयक शुल्क-पुस्तिका। भूमि-राजस्वक पुरान रसीद। राशन-पत्रक छायाप्रति। मस्कटसँ पठाओल धनक दू पर्ची। दिल्लीक एक अस्पतालक औषधि-पर्चा। डाकघरक बचत-पुस्तिका। एक लिफाफा जाहिपर पता लिखल छल मुदा टिकट नहि लगल। भीतर पत्रक आरम्भ मात्र—“माय, हम कुशल छी”—तकर बाद पन्ना रिक्त। एहि कागजसभमे पँजीक प्रति नहि छल।

दोसर कोठलीक कुलुप भीतरसँ नहि लागल छल। एहि कोठलीमे पलंग पर गद्दा मोड़ल। गद्दाक ऊपर मसहरीक बाँस चारिटा एक संग राखल। तकियाक खोल पीयर पड़ल। पलंगक नीचा एक जोड़ी चमड़ाक जूता, आकार पैघ; एक बालकक प्लास्टिकक गेंद, हवा निकलल; टूटा हारमोनियमक फूँकनी; लोहारक छोट पेटी जाहिमे पेंच खोलबाक औजार, हथौड़ी, कील आ तारक टुकड़ा। कोनाठाम प्लास्टिकक ड्रम, भीतर सुखल माटि। खिड़कीक चौखट पर कबूतरक बीट। भीतक चूनाक पुताइ पपड़ी बनि झरल।

ओसाराक दोसर छोर पर टँगल एक थैलीमे कुंजीसभ छल। छः कुंजी। कोन कुंजी कोन ताला खोलैत छल, ई ककरो लिखल नहि। एक कुंजी सँ पिछला कोठरी खुलल। ओतय कृषि-सामान छल—हँसुआ दूटा, एक कुदारी, एक पुरान फाल, रस्सीक गठरी, धानक बोरा खाली, खादक छपल बोरा पुनः उपयोगमे, बाँसक डलिया, सरिसब तेलक टीन, कीटनाशकक खाली डिब्बा, बीजक दू पुरान थैली। भीत पर कोयलासँ तीन अंक लिखल—१२, ७, ४। अंकक अर्थ ज्ञात नहि।

आँगनमे तुलसीक चौरा सूखल नहि छल। कियो नियमित पानि दैत नहि छल, तइयो बरखाक पानि आ माटिक नमी सँ दू पात हरियर छल। चौरा कात टूटल घण्टी, लोहारक छोट त्रिशूल, अगरबत्तीक राखि। आँगनक उत्तर कोनमे पम्पक हत्था जंग लागल, मुदा दबेलापर दू बेर हवा निकलल, तेसर बेर मटमैला पानि। नाली घाससँ भरल। गोहालमे बाँसक खूँटा, रस्सीक छोट टुकड़ा, गोबरक पुरान कठोर तह, एक नाँद फाटल। पशु नहि।

घरक वस्तुसभ एकहि समयक नहि छल। पीतलक थारी वृद्ध पीढ़ीक। प्लास्टिकक ड्रम पछिला। विमानतलक तसवीर आर पछिला। बैंकक पर्ची ओकरो पछिला। मोबाइलक खाली डिब्बा सभसँ नवल। घर बन्द भेल तखन वस्तु सभ एक संग रुकल नहि; लोक बेराबेरी घुरैत रहल होयत, किछु

आनल होयत, किछु लऽ गेल होयत, किछु छोड़ि गेल होयत। घरक रिक्तता एक दिनक घटना नहि छल।

कागज खोजैत हम तेसर बेर सन्दूकक तल्ला उठेलहुँ। लकड़ीक पातरा नीचा कपड़ाक एक पोटरी भेटल। पोटरीमे पुरान विवाह-पत्र, दू जन्मपत्री, एक पीयर पड़ल वंश-सूची आ छोट नोटबुक छल। वंश-सूची पँजी नहि छल; घरक ककरो लोक अपन उपयोग लेल नकल कयने छल। नाम सभमे किछु वर्तनी-पार्थक्य छल। दू विवाहक तिथि पँजीक तिथिसँ एक दिनक अन्तर पर। एक स्त्रीक नामक आगाँ नैहर-ग्राम लिखल छल, जे मुख्य पँजीमे नहि छल। हम ओ पन्ना पृथक कयलहुँ, प्रतिलिपि लेल चिन्ह लगेलहुँ, मुदा मूल ओही पोटरीमे फेर राखि देलहुँ।

नोटबुक घरक खर्चक छल। चाउर, नून, तेल, साबुन, औषधि, विद्यालय शुल्क, डीजल, बीज, मजदूरी, मोबाइल रिचार्ज, रेल-टिकट। किछु पन्नापर केवल रकम। किछु पन्नापर नामक आरम्भिक अक्षर। तीन मास धरि नियमित लेख, तकर बाद अन्तर, फेर दू पन्ना, फेर दीर्घ रिक्ति। अन्तिम लिखल पाँति—“कुंजी छोटक लग।” छोट के छल, ई नहि लिखल। जे चचेरा भाइ हमरा कुंजी देने छल, सम्भवतः वएह, मुदा अनुमानकेँ तथ्य नहि लिखल जा सकैत अछि।

हम घरक भीतर लगभग डेढ़ घण्टा रहलहुँ। एहि अवधिमे कोनो लोक नहि आयल। बाहर बाट पर दू बेर साइकिल गेल, एक बेर बकरीक घण्टी सुनायल, एक बेर दूरसँ मोटरक आवाज। घर भीतर घड़ी सात बजि अठारह मिनट पर स्थिर रहल। धूलि ओहिना। तसवीर ओहिना। पत्रक रिक्त आधा पन्ना ओहिना।

मड़इक ऊपर बाँसक मचान छल। सीढ़ीक दू डाँड़ ढीला। मचान पर पाँच वस्तु स्पष्ट देखायल—एक पुरान चरखा, कपासक धूरि लागल; एक लोहारक पेटी, कुलुप बिनु; दूटा माटिक सुराही, मुख कपड़ासँ बाँधल; एक बाँसक डालामे सुखल मखानाक खोल; एक टीनक बक्सा जाहिपर लाल रंगक अक्षर धुँधला। टीनक बक्सा खोललापर भीतर विद्यालयक प्रमाणपत्र, मतदाता-पत्रक पुरान प्रति, एक सेवा-पुस्तिकाक छायाप्रति, दू पोस्टकार्ड, नेपालक एक विवाह-निमन्त्रण, आ तीन रेल-टिकट भेटल। टिकटसभक तिथि पृथक-पृथक वर्षक छल। गन्तव्य दिल्ली, लुधियाना, सूरत। टिकट पर लिखल नाँव घरक वंश-सूचीक नाँवसँ मिलैत छल। एहि मिलानक उपयोग वंश प्रमाणित करबाक लेल नहि, केवल घरक लोकक बाहर जाएबाक समय बुझबाक लेल हो सकैत छल।

पोस्टकार्डक लिखावट फिक्का छल। पहिलमे फसलक हाल पुछल गेल छल। दोसरमे रेलक आगमनक तिथि। तेसरमे केवल एतबे—“छुट्टी भेटल तऽ अगहनमे आएब।” पाछाँ डाक-मोहर पढ़ल जा सकैत छल, वर्ष स्पष्ट नहि। कार्डसभक कोनो पाँतिमे घर बेचबाक, छोड़बाक, वा स्थायी रूपेँ बाहर बसबाक घोषणा नहि छल। कागज लोकक अभिप्राय लिखैत छल; घरक अवस्था ओहि अभिप्रायसँ पृथक दिशा देखबैत छल।

भीतक अनेक छोट चिन्ह सेहो बचल छल। एक कोनमे बालकक लम्बाइ नापबाक पाँच क्षैतिज रेखा, काजर वा कोयलासँ। रेखाक कात वर्ष लिखल—२००१, २००२, २००३, तकर बाद कोनो वर्ष नहि। दक्षिण भीत पर कीलक चारि निशान, मुदा तसवीर एकोटा नहि। दुआरक भीतर पेंसिलसँ लिखल दू फोन-संख्या, एक अंक घिसल। भानसघरक कड़ी पर धागाक पुरान गुच्छा। ओसाराक खम्भामे पीयर रंगक अंश, सम्भवतः विवाह वा पर्वक समयक। एतय “सम्भवतः” लिखब आवश्यक छल; रंगक कारण स्वयं रंग नहि कहैत अछि।

घरक पिछला भागमे छोट बारी छल। कटहरक गाछ जीवित, फल कम। एक अमरूदक गाछ सुखल। बाँसक झाड़ि घन। माटिक क्यारीक आकार एखनहुँ बुझाइत छल, मुदा तरकारी नहि। एक पुरान सिंचाइ पाइप घासक बीच पड़ल। पाइपक एक छोर पम्पक कात, दोसर छोर क्यारी तक पहुँचबाक पहिने फाटल। बारीक सीमा पर काँटेदार तार नवल छल। बादमे ज्ञात भेल जे पड़ोसी खेतवला अपन पशु रोकबाक लेल लगौने छल। घर बन्द भेलाक बाद घरक सीमा दूसर लोकक व्यवहारसँ बचल रहल।

दुआर बन्द करबाक पहिने हम एक बेर वस्तुसभक क्रम देखलहुँ। जकर उपयोग नित्य होइत छल से धूलिमे छल। जकर उपयोग वर्षमे एक बेर होइत छल से सेहो धूलिमे छल। जे वस्तु परदेससँ आनल गेल होयत—विदेशी साबुनक खाली डिब्बा, चमकीला थर्मस, प्लास्टिकक छोट घड़ी—से नवल देखाइत छल, मुदा उपयोगक चिन्ह कम। जे वस्तु गाममे बनल—पीढ़ी, सूप, डलिया, हँसुआ—से पुरान छल, मुदा हाथक घिसाइ स्पष्ट। घरक खालीपन वस्तुक संख्यासँ नहि, उपयोगक अभावसँ बुझाइत छल।

कागज भेटलाक बाद हमर काज समाप्त छल। हम वंश-सूचीक प्रतिलिपि लेल छायाचित्र लेलहुँ, विवाह-पत्रक तिथि लिखलहुँ, नोटबुकक अन्तिम पाँति नहि उतारलहुँ कारण ओ पँजी-संबंधी प्रमाण नहि छल। पोटरी फेर बान्हलहुँ। सन्दूकक तह ओही क्रममे राखलहुँ। थारी उलटि कऽ

घैलक मुख पर राखलहुँ। दुआर बन्द कयलहुँ। ताला लगेलहुँ। कुंजी चचेरा भाइक हाथमे फेर देलहुँ।

दू सप्ताह पछाति बाहर बसल परिवारक फोन आयल। ओकरा वंश-सूचीक प्रतिलिपि चाही छल। घरक स्थितिक विषयमे कियो नहि पुछलक। हम सेहो नहि कहलहुँ जे घड़ी कतय रुकल अछि, चूड़ी तीनटा मात्र अछि, पायल एकटा अछि, पत्र आधा लिखल अछि, वा तुलसीक चौरा पर दू पात हरियर अछि। ई सभ पँजीक विषय नहि छल।

मुदा प्रति-पाँजिमे हम एक पाँति लिखलहुँ—“पूर्वी टोलक बन्द घर; परिवार बाहर; घरक निजी वंश-सूचीमे एक स्त्रीक नैहर-ग्राम उपलब्ध, मुख्य पँजीमे अनुपस्थित; मूल कागज घरमे पुनः सुरक्षित।” तकर नीचा स्रोत लिखलहुँ। तिथि लिखलहुँ। कुंजी ककर लग छल से नहि लिखलहुँ, कारण ई वंशक प्रमाण नहि।

पछिला वर्ष ओहि घरक छत पर नवल टीन चढ़ल देखलहुँ। दुआर एखनहुँ अधिकांश दिन बन्द रहैत छल। ताला बदलल छल। घड़ी भीतर छल कि नहि, हमरा ज्ञात नहि। वंश-सूची भीतर छल कि संग लऽ गेल, ईहो ज्ञात नहि। केवल एतबे लिखल जा सकैत अछि जे एक समय ओतय घर छल, पछाति घरमे वस्तु बचल, लोक बाहर रहल, आ कुंजी ककरो दोसरक हाथमे रहल।

अध्याय ३७ — स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच

स्वर-सन्देश तीन · मस्कट · तीन मास पछाति

[voice-note प्रतिलेख]

बाबा [pause] पहिल पूर्ण मासक वेतन आबि गेल [pause] बैंकक सन्देश राति पारीक बीच आयल तऽ हम पहिले खोललहुँ नहि [pause] ward घुरि कऽ देखलाक बाद staff roomमे बैसि देखलहुँ [pause] कागजमे जे सकल वेतन लिखल छल तकरासँ हाथमे आयल रकम न्यून अछि [pause] निवासक किछु शुल्क नहि काटल गेल मुदा बीमा आ दूटा प्रशासनिक मद काटल अछि [pause] HR सँ पुछलहुँ तऽ कहलनि अनुबन्धक परिशिष्टमे अछि [pause] परिशिष्ट हमरा प्रतिमे छल [pause] हम पढ़ने रही मुदा ओहि पाँतिक अर्थ एखन बुझलहुँ

पहिल काज हम ऋणक किस्त पृथक कयलहुँ [pause] दोसर काज घर भेजबाक रकम लिखलहुँ [pause] तेसर काज अपन मासिक व्ययक सीमा बनौलहुँ [pause] भोजन अस्पतालक पारी पर निर्भर रहैत अछि [pause] कोठली चारि स्त्री संग साझा अछि [pause] बसक भाड़ा अस्पताल दैत अछि [pause] फोन आ कपड़ा अपन [pause] तें दिल्लीक तुलनामे बचत अधिक अछि मुदा सुनल वेतन आ हाथमे भेटल वेतन एक बात नहि [pause] ई बात एजेन्ट कहने नहि छल

आइ बैंक सँ रुपैया पठेलहुँ [pause] पहिले प्रपत्र भरलहुँ [pause] खाता-संख्या दू बेर मिलौलहुँ [pause] नामक वर्तनी फेर देखलहुँ [pause] शुल्क पृथक छल [pause] विनिमय दर ओहि घड़ी जे छल से रसीद पर अछि [pause] हम रसीदक छायाचित्र मोहन बाबूकेँ पठा देने छी [pause] हुनका कहलहुँ बाबा केँ केवल एतबे कहब जे रुपैया पठाओल गेल अछि [pause] रकम नहि कहब [pause] अहाँ रकमक विषयमे प्रश्न करब तऽ हम कहि देब [pause] मुदा पहिने ई बुझू जे ई कोनो उपहार नहि [pause] हमर श्रमक वेतन अछि

बैंकक रसीद हाथमे लेलाक बाद हम तीन बेर राशि मिलौलहुँ [pause] पठाओल रकम [pause] शुल्क [pause] घरक खातामे पहुँचबाक अनुमानित रकम [pause] कर्मचारी कहलनि दर दिन-दिन बदलैत अछि [pause] हम कहलहुँ रसीद पर जे अंक अछि से हमरा लेल

आइक सत्य अछि [pause] काल्हिक दर दोसर हो तऽ ओ काल्हिक बात [pause] ई वाक्य कहैत हमरा अपनहि हँसी आयल [pause] एतय रहि कऽ कागजक भाषा हमरा भीतर घुसि रहल अछि

बाबा [pause] पछिला प्रश्नक उत्तर एखनहुँ नहि आयल [pause] हम ओकरा फेर नहि दोहरा रहल छी [pause] केवल एतबे कहि रहल छी जे मौनक सेहो आकार होइत अछि [pause] अस्पतालमे जँ chartमे खाली कोष्ठ देखैत छी तऽ बुझैत छी किछु लिखल नहि गेल [pause] मुदा घरक मौनमे कोन बात लिखल नहि गेल आ कोन बात जानि-बुझि कऽ रोकल गेल ई बुझब कठिन अछि [pause] अहाँ कुशल छी तऽ एक पाँति पठा दिअ [pause] “हम कुशल छी” [pause] एतबे

स्वर-सन्देश चारि · चारि मास पछाति

[voice-note प्रतिलेख]

बाबा [pause] एहि बेर राति नहि दिनक पारी अछि [pause] झरोखाक बाहर धूप एतेक प्रखर अछि जे झाँप आधा खींचल अछि [pause] एतय ऋतु बदलबाक संकेत देह पहिने दैत अछि [pause] घाम बढ़ैत अछि तऽ अस्पतालक भीतर वातानुकूलन आरो ठंढा लगैत अछि [pause] बाहर सँ भीतर आ भीतर सँ बाहर जाइत देहकेँ दू ऋतु एक दिनमे सहय पड़ैत अछि

एहि चारि मासमे दू बेर ओवरटाइम भेटल [pause] एक बेर छुट्टीक दिन सेहो आयलहुँ [pause] वेतन बढ़ल नहि मुदा कुल जमा अधिक भेल [pause] घर दोसर बेर रुपैया पठेलहुँ [pause] एहि बेर एजेन्टक ऋणक अन्तिम भाग उतरि गेल [pause] मोहन बाबू कहलनि घरक छप्परक एक भाग सुधरल [pause] अहाँक औषधिक व्यय सेहो ओहि खातासँ भेल [pause] ई सुनि हमरा नीक लगल [pause] मुदा ई बात सुनि हमरा एतयो बुझायल जे बैंकक अंक गाम पहुँचि कऽ देगची छप्पर औषधि विद्यालय शुल्क आ बीज बनि जाइत अछि [pause] एकहि रकमक रूप ठाम बदलैत बदलैत बदलि जाइत अछि

हम एखन रुपैया पठेबाक रसीदसभ एक फोल्डरमे राखैत छी [pause] मास तिथि रकम शुल्क विनिमय दर [pause] सभ लिखल अछि [pause] दिल्लीमे एहन अनुशासन नहि छल [pause] एतय कागज बिना किछु मानल नहि जाइत [pause] तेँ हम अपन कागज राखैत

छी [pause] passportक प्रति [pause] contractक प्रति [pause] duty roster [pause] वेतन-पर्ची [pause] bank receipt [pause] medical insurance [pause] ई सभ देखैत कखनो-कखनो अहाँक पोथी याद अबैत अछि [pause] भिन्न काज [pause] मुदा दुनूमे जे नहि लिखल से पछाति कठिनाइ दैत अछि

कोठलीमे हमर संग तीन स्त्री रहैत छथि [pause] सभक घर पठेबाक दिन पृथक अछि [pause] कियो मासक आरम्भमे पठबैत छथि [pause] कियो ओवरटाइम आयलाक बाद [pause] कियो दू मास जोड़ि कऽ [pause] एक राति सभ अपन-अपन फोनमे bank message देखैत रही [pause] कोनो उत्सव नहि छल [pause] केवल अंक छल [pause] मुदा ओहि अंकक पाछाँ ककरो नैहरक छत ककरो भाइकेँ पढ़ाइ ककरो पिताक औषधि ककरो ऋण छल [pause] तखन बुझल जे रुपैया घर जाएत काल केवल मुद्रा नहि रहैत अछि

हम अहाँक उत्तरक प्रतीक्षा करब छोड़ल नहि अछि [pause] मुदा प्रश्न भेजब घटा देने छी [pause] पहिने हम सोचैत रही जे फोनक दूरी अछि [pause] फेर सोचलहुँ उमेरक कारण थाकि जाइत होयब [pause] फेर मोहन बाबू कहलनि अहाँ सभ दिन पोथी देखैत छी [pause] तखन बुझलहुँ थकान मात्र कारण नहि [pause] आब हम अनुमान नहि करब [pause] अहाँ जखन कहब तखन सुनब [pause] नहि कहब तऽ जे कागज बचल अछि ओहि सँ कखनो पढ़ब

स्वर-सन्देश पाँच · छह मास पछाति

[voice-note प्रतिलेख]

बाबा [pause] एहि बेर सन्देश छोट राखब [pause] वेतन आयल [pause] रुपैया पठाओल गेल [pause] रसीद मोहन बाबू लग अछि [pause] अपन खाते किछु राखलहुँ [pause] शेष घर गेल

एतय नवल किछु नहि [pause] ओहि अस्पतालक बाट [pause] ओहि लिफ्ट [pause] ओहि औषधिक गन्ध [pause] ओहि कोठली [pause] राति जखन घुरैत छी तखन फोनक

screen पर गामक समय देखैत छी [pause] समयक अन्तर केवल घड़ीमे अछि [pause] मौनक अन्तर घड़ीमे नहि नापल जाइत

एहि मास अस्पतालमे दू नवल नर्स आयल छथि [pause] एकर पासपोर्ट पर जन्म-ठाम छोट नगरक नाम अछि [pause] दोसरक कागजमे जिला लिखल अछि [pause] दुनू एतय एकहि पारीमे काज करैत छथि [pause] नामक पाछाँक ठाम पृथक होइत अछि मुदा रातिक पारीमे सभकेँ एकहि घण्टी सुनाइत अछि [pause] कखनो सोचैत छी घर सेहो एहन होइत तऽ कतेक बात सहज होइत [pause] फेर बुझैत छी घर अस्पताल नहि अछि [pause] ओतय पुरान सम्बन्धक नियम अधिक दीर्घ आयु पबैत अछि

मोहन बाबू कहलनि अहाँ कुशल छी [pause] हम मानि लेलहुँ [pause] पहिने जकाँ “एक पाँति पठा दिअ” सेहो नहि कहब [pause] हमरा पुरान प्रश्न याद अछि [pause] अहाँकेँ सेहो होयत [pause] एहि बेर उत्तर नहि माँगैत छी [pause] जखन कहबाक हो तखन कहब [pause] एखन हम केवल ई सन्देश छोड़ि रहल छी जे हम कुशल छी [pause] काज करैत छी [pause] रुपैया पठबैत छी [pause] आ सुनबाक लेल ठाम एखनहुँ राखने छी

अध्याय ३८ — पँजीकारक ग्राहक

हमर कोठलीमे ग्राहकक प्रश्न धीरे-धीरे बदलल। पहिने लोक मूल पुछैत छल, ग्राम पुछैत छल, पितामहक नाम मिलबैत छल, विवाह-अधिकारक पाँति देखैत छल। आब अनेक ग्राहक मोबाइल हाथमे लेने अबैत छल आ बैसिते पुछैत—“पृष्ठक छायाचित्र लऽ सकैत छी?” ककरो पुछबाक क्रममे मूल दोसर, मोबाइल पहिल भऽ गेल छल।

पोथी आ काठक सन्दूक पहिने हमर काजक मुख्य वस्तु छल। पछाति चौकक छायाप्रति-दुकान सेहो पँजी-काजक एक अनौपचारिक पड़ाव बनि गेल। ग्राहक पृष्ठ-संख्या लिखबैत, पन्ना सावधानीसँ खोलैत, तकर बाद छायाप्रति लेल चौक जाइत। फेर मोबाइलक कैमरा आयल। चौक धरि जेबाक आवश्यकता घटल, मुदा पृष्ठ पर झुकैत हाथ, चमकैत पर्दा आ फेर-फेर छायाचित्र लेबाक आग्रह बढ़ल। पुरान कागजक कोर एतेक सुविधा लेल बनल नहि छल।

एक पन्ना छल जकर दहिना कोर २००८क जलसँ पहिनहिसँ कमजोर छल। हम ओकरा दू कागजक बीच राखि देखबैत रही। एक युवक छायाचित्र लैत काल मोबाइल नीचाँ अनबाक लेल पन्ना ऊपरसँ दबा देलक। हम ओकर हाथ हटौलहुँ। कोर सँ धूसर रेशा झड़ल। युवक कहलक—“बाबा, स्पष्ट नहि आबि रहल अछि।” हम कहलियैक—“कागज स्पष्ट राखब पहिने अछि; छायाचित्र पछाति।” ओ मोबाइलक उजास बढ़ा देलक। कागजक उजास नहि बढ़ल।

विवाह-वेबसाइट लेल आयल पहिल ग्राहक हमरा स्मरण अछि। एक युवक अपन पिता संग आयल। पिता पँजी चिन्हैत छलाह; पुत्र वेबसाइटक परिचय-पृष्ठ चिन्हैत छल। पिता मूल देखबाक बात कयलनि। पुत्र मोबाइल पर चारि कोष्ठ देखौलक—कुल, मूल, गोत्र, ग्राम। ओ पुछलक—“एहि चारूमे ई पाँति कोन ठाम जाएत?”

हम कहलियैक—“जे शब्द जकर अछि, तकरहि ठाम।”

ओ फेर पुछलक—“छोट कऽ?”

हम कहलियैक—“पाँतिक आकार वेबसाइटक कोष्ठ देखि कऽ नहि बनल छल।”

पिता पुत्रक मोबाइल देखलनि, फेर पोथी। पुत्र पोथी देखलक, फेर मोबाइल। एहि बेर कियो हँसल नहि। हमरा भीतर हँसीक कारण छल, मुदा ओ हँसी सुखद नहि छल। सात पीढ़ी एक चारि-कोष्ठक प्रपत्रमे प्रवेश माँगि रहल छल।

तकर पछाति विवाह-मिलानक ग्राहक बढ़लाह। ककरो पाँच पीढ़ी चाही, ककरो सात। कियो केवल एतबा जे दोसर परिवारक देल मूल यथार्थ अछि कि नहि। एक परिवार तीन बेर आयल। पहिल बेर मूल। दोसर बेर मातृक ग्राम। तेसर बेर प्रश्न—“एहि शाखाक गाम कखनो बदलल?” उत्तर एक पोथीमे नहि छल। हमरा तीन पोथी खोलय पड़ल—एकमे मूल, दोसरमे विवाह, तेसरमे गाम-परिवर्तनक संकेत। लगभग तीन घण्टा लगल। अन्तमे युवक पुछलक—“एक छायाचित्रमे आबि जाएत?”

हम कहलियैक—“नहि।”

“तीन छायाचित्र?”

“तीन पोथी।”

ओ तीन छायाचित्र लऽ गेल। हमरा तीन घण्टा लगल; ओकर मोबाइलमे तीन मिनट। शुल्क तीन घण्टाक नहि, तीन छायाप्रतिक तुल्य देल गेल। हम राशि दैनिकीमे लिखलहुँ। टिप्पणी नहि कयलहुँ।

दोसरा प्रकारक ग्राहक जाति-प्रमाणपत्रक काजसँ अबैत छल। एहिमे पँजीसँ बेसी सरकारी प्रपत्रक आशा रहैत छल। कियो मानैत छल जे पाँजिक छायाप्रति लगेलाक बाद प्रखण्ड कार्यालय प्रमाणपत्र देत। हम कहैत रही—“सरकारी कार्यालयक अपन जाँच, अपन अभिलेख, अपन नियम अछि; पँजी सरकारी प्रमाणपत्र नहि।” तखन प्रश्न अबैत—“तँ एकर उपयोग की?”

हम उत्तर दैत रही—“वंश-अभिलेख।”

अनेक ग्राहक एहि उत्तरसँ सन्तुष्ट नहि होइत छलाह। हुनका अभिलेखक परिचय नहि, ओकर उपयोग चाही छल। सरकारी कोष्ठमे जँ “सहायक कागज” लिखल रहैत, तखन सभ पुरान कागज सहायक होयबाक आशा करैत छल। पुरान कागज स्वयं एहन कोनो आश्वासन नहि दैत अछि।

एक वृद्ध आयलाह। सरकारी कागजमे हुनकर पिताक नामक वर्तनी एक प्रकारक, पँजीमे दोसर। ओ चाहैत छलाह जे हम पँजीक एक मात्रा बदलि दी। हम मना कयलहुँ। ओ कहलनि—“एक मात्रा मात्र।” हम कहलियनि—“एक मात्रा बदललासँ लिखल बात दोसर भऽ जाएत।” ओ रूष्ट भेलाह। किछु देर चुप बैसलाह। फेर दुनू वर्तनी अपन आवेदनमे लिखि लेलनि आ पँजीक छायाप्रति लऽ गेलाह। जाते काल दक्षिणा राखि गेलाह। विरोध आ दक्षिणा एकहि थारीमे रहि सकैत अछि; एहि विषयमे पँजीक कोनो नियम नहि।

एक दिन दू भाय संग आयल। दुनूकेँ एकहि पिताक नाम चाही छल। पहिल भाय अपन पुत्रक विवाह-मिलान लेल। दोसर जाति-प्रमाणपत्रक आवेदन लेल। पहिल पुछलक—“मातामहीक ग्राम जोड़ू?” दोसर तुरन्त कहलक—“एतेक लिखलासँ प्रपत्र भरि जाएत।” हम दुनूकेँ कहलियनि—“प्रपत्रक ठाम कम अछि, पँजिक पाँति ओकर कारणसँ कम नहि होयत।” पहिल भाय हँसल। दोसर नहि हँसल। दुनू एकहि पिताक पुत्र छलाह; प्रपत्र हुनका पृथक मनःस्थिति देलक।

मोबाइलक संग एक नवल आग्रह आयल—छवि स्वच्छ चाही। अक्षर धुँधला हो तऽ ग्राहक कहैत, “दोसर बेर लिअ।” कियो पृष्ठ झरोखाक प्रकाश लग लए जेबाक आग्रह करैत। कियो मोबाइलक पर्दा पर अँगुरी फेरि कागजकेँ उज्जर देखबैत। हम बेराबेरी कहैत रही—“पर्दा उज्जर भेल अछि, कागज नहि।” कियो बूझैत, कियो फेर एक छायाचित्र लैत।

छायाप्रतिक दुकानवला कखनो-कखनो पृष्ठ अधिक गाढ़ कऽ दैत। तखन अक्षर स्पष्ट देखाइत, मुदा कागजक दाग सेहो अक्षर जकाँ कारी भऽ जाइत। एक ग्राहक ओहि दाग पर अँगुरी रखि पुछलक—“ई नामक अंश अछि?” हम मूल देखलहुँ। कहलियैक—“नहि, ई जलक दाग।” ओ छायाप्रति पर पेन्सिलसँ छोट गोल घेरा बना देलक आ लिखलक—“दाग।” हमरा ई सावधानी पसिन्न पड़ल। कम सँ कम दाग नाम नहि बनल।

एक स्त्री अपन पुत्रीक विवाह लेल अकेली आयलीह। हाथमे वेबसाइटसँ निकालल परिचय-पृष्ठ, एक कापी, एक नील कलम। ओ मोबाइलसँ छायाचित्र नहि लेलनि। नामसभ हाथे उतारैत गेलीह। एक स्त्रीक नाम पढ़ि पुछलनि—“ई कनियाँक नाम अछि?” हम मूल पाँति फेर देखलहुँ, तिथि मिलौलहुँ, सम्बन्धक शब्द पढ़लहुँ, तखन कहलियनि—“हँ, एतय नाम लिखल अछि।” ओ नाम धीरे-धीरे उतारलनि। अगिला पाँतिमे स्त्रीक नाम नहि छल। ओ किछु नहि पुछलनि। हम सेहो

किछु नहि जोड़लहुँ। जे अनुपस्थित अछि, ओकर कारण ग्राहकक अनुमान पर नहि छोड़बाक अछि; मुदा बिना साक्ष्य हम कारण लिखि सेहो नहि सकैत छी।

किछु ग्राहक पँजीसँ प्रमाण नहि, प्रतिष्ठा चाहैत छल। विवाह-पत्रक पाछाँ “पुरान वंश”क दू पाँति। कुटुम्बी-समारोहक पुस्तिकामे पूर्वजक सूची। वेबसाइटक परिचयमे “वंश-परम्परा”क छोट विवरण। एहन ग्राहक कहैत—“संक्षेपमे दिअ।” हम पुछैत—“कतेक?” उत्तर होइत—“दू पाँति।” दू सय वर्षक अभिलेखक दू पाँति बनब हमरा अधिकारक भीतर नहि छल। हम नाम आ स्रोत देब सकैत रही; प्रशस्ति नहि।

एक युवक कहल जे ओकरा पाँच पीढ़ी मात्र चाही, कारण वेबसाइटमे ओतबे ठाम अछि। हम पाँच नाम लिखि देलहुँ। ओ पुछलक—“छठम?” हम कहलियैक—“अछि।” ओ कहलक—“एखन नहि चाही।” छठम नाम पोथीमे रहल। तखन हमरा बुझायल जे मेटेबाक लेल खुरचनाइ अनिवार्य नहि। कोष्ठ छोट हो तऽ जे समाइत नहि, से पाठकक दृष्टिसँ बाहर रहि सकैत अछि। एहि बातक टिप्पणी हम ग्राहकक कागज पर नहि, अपन दैनिकीमे लिखलहुँ।

शुल्क सेहो बदलल। पहिने कियो धान, कियो वस्त्र, कियो नगद दक्षिणा दैत छल। पछाति नगद सामान्य भेल। फेर एक युवक पुछलक—“मोबाइल सँ भेजि दी?” हम प्रश्न दोहरौलहुँ, किएक तँ हमरा बुझायल जे ओ रुपैया मोबाइलक संग कतहु पठेबाक बात कहि रहल अछि। मोहन पछाति बुझौलक—रुपैया स्वयं मोबाइलक भीतर नहि जाइत, खाताक लेख बदलैत अछि। हमरा ई व्यवस्था पँजी-काजसँ पूर्ण अपरिचित नहि लगल। व्यक्ति कतहु रहैत अछि, मुदा कागज पर ओकर सम्बन्धक लेख बदललासँ अधिकार बदलि सकैत अछि। ई तुलना हम मोहन लगो नहि कहलहुँ।

डिजिटल भुगतानक पहिल दिन हम दैनिकीमे राशि लिखि देलहुँ, मुदा “प्राप्त” लिखबाक पहिने मोहनसँ पूछलहुँ जे स्क्रीन पर अंक आबि गेलाक अर्थ की। ओ कहलक जे खाता जाँचू। हम खाता जाँचलहुँ। तकर बादे “प्राप्त” लिखलहुँ। ग्राहक कहलक—“बाबा, screenshot राखि लिअ।” हम कहलियैक—“रसीद पठाउ।” ओ रसीद पठौलक। “screenshot” शब्द दैनिकीमे नहि आयल; रसीद आयल।

एहि वर्षसभमे पँजीक देह सेहो बदलि रहल छल। किछु पन्नाक कोर भुरभुरा। किछुमे २००८क जलक दाग गाढ़। किछु स्याही पीयर पृष्ठ पर धूसर। ग्राहकक संख्या बढ़ल तऽ पन्ना खोलबाक बेर

बढ़ल। हम पतला कागजक पट्टी बीचमे रखबाक नियम कयलहुँ, कमजोर पृष्ठक छायाचित्र एक बेर नीक सँ लऽ राखलहुँ, आ ग्राहककेँ मूल पृष्ठ फेर-फेर नहि खोलबाक आग्रह कयलहुँ। लोक कहैत—“मोबाइलमे अछि तऽ मूल किएक?” आ दोसर दिन कोनो आन ग्राहक कहैत—“मोबाइलक छवि नहि, मूल देखाएब।” अभिलेख दू विपरीत माँगक बीच रहैत अछि।

हम पाँच नियम अपन कापीमे लिखलहुँ। मूल पृष्ठ पर आधुनिक वर्तनी नहि जोड़ब। ग्राहक चाहत तऽ वर्तमान वर्तनी पृथक कागज पर लिखब। छायाचित्र लेबाक समय पृष्ठ पर हाथ नहि दबेब। अपूर्ण पाँति पूर्ण कहि नहि देब। विवाह-मिलान वा प्रमाणपत्रमे उपयोग ग्राहकक; पँजी जे लिखल अछि, केवल से देखायत।

ई नियम भीत पर नहि टाँगल। भीत पर टाँगल कागज लोक सामान्यतः तखन पढ़ैत अछि जखन ओकर काज अटकैत अछि। हमरा लग अबैत ग्राहक पहिने मोबाइल देखैत, तकर बाद हमरा, अन्तमे पोथी। नियम कापीमे सुरक्षित रहल।

एक दिन पाँच ग्राहक लगातार आयल। पहिल—विवाह-वेबसाइट। दोसर—जाति-प्रमाणपत्र। तेसर—विदेश बसल पुत्र लेल वंशक छायाप्रति। चारिम—भूमि-विवादमे पुरखाक सम्बन्ध बुझबाक लेल। पाँचम—विद्यालयक वंश-वृक्ष बनबयवला नातिक गृह-काज। पाँचम ग्राहक सभसँ कम समय बैसल, मुदा ओकर प्रश्न सभसँ पुरान छल—“परदादासँ ऊपर के?” हम पाँच नाम लिखि देलहुँ। ओ कागज मोड़ि जेबमे रखलक; मोबाइल निकाललक नहि।

साँझमे दिनक लेखा लिखलहुँ—पाँच ग्राहक; तीन छायाप्रति; सात मोबाइल-छायाचित्र; एक वर्तनी-विवाद; एक सरकारी प्रपत्र; एक विद्यालयक वंश-वृक्ष; शुल्क एतेक; डिजिटल भुगतान एक। एहि सूचीक नीचाँ टिप्पणी लेल ठाम छल। हम पहिने खाली छोड़लहुँ।

राति प्रति-पाँजि निकाललहुँ। मूल पँजीसँ पृथक। ग्राहकक नाम नहि लिखलहुँ; एहि विषयमे हुनकर नाम आवश्यक नहि छल। लिखलहुँ—“समकालीन उपयोग: विवाह-मिलान, जाति-प्रमाणपत्रक सहायक कागज, विद्यालयक वंश-वृक्ष, प्रवासी परिवारक प्रति। स्रोत: दिनांकित ग्राहक-अनुरोध आ प्रत्यक्ष अवलोकन। मूल पाँति अपरिवर्तित राखब।” तकर नीचाँ एक पाँति खाली छोड़लहुँ।

खाली पाँतिक बाद लिखलहुँ—“अभिलेखक क्षरण दू प्रकारक: कागजक कोर झड़ैत अछि; अर्थक कोर उपयोगकर्ता काटैत अछि। दोसर कथन अनुमानात्मक।” “अनुमानात्मक” शब्द लिखि हम रुकलहुँ। प्रति-पाँजिक पहिल नियम ओतय लागू छल। वाक्य काटलहुँ नहि। ओकर आगाँ प्रश्नचिह्न लगा देलहुँ।

पोथी बन्द कयलाक समय मोबाइल पर नवल सन्देश छल। संख्या अपरिचित। लिखल छल—“बाबा, वंशावली PDF मे भेटत?”

हम उत्तर नहि देलहुँ। पहिने मोहनसँ बुझबाक छल जे PDF कागज अछि, छायाप्रति अछि, कि एहन कोनो तेसर वस्तु जाहिमे कागजक देह नहि रहैत अछि मुदा लोक ओकरा कागज जकाँ माँगैत अछि।

अध्याय ३९ — कोसी — ६

हम बहैत छी आ कागज हमरा कात दीर्घ काल धरि टिकैत नहि अछि मुदा मनुष्य कागजक भीतर अपन दीर्घ काल राखय चाहैत अछि आ जखन पन्नाक कोर भुरभुरा होइत अछि तखन ओ ओकर छवि बना लैत अछि आ जखन छवि धुँधली होइत अछि तखन ओकरा फेर उज्जर करैत अछि आ जखन अक्षर एक पाँतिमे बेसी भऽ जाइत अछि तखन ओकरा छोट कोष्ठमे राखैत अछि आ जखन कोष्ठ भरि जाइत अछि तखन किछु नाम छोड़ि दैत अछि आ हमरा ई सभ परिवर्तन जलक परिवर्तनसँ पृथक नहि लगैत अछि कारण हम सेहो एक कातक माटि काटैत छी दोसर कात बालू छोड़ैत छी पुरान धारक रेखा मेटबैत छी नव धारक कात बनबैत छी मुदा मनुष्य हमरा सँ एक बातमे पृथक अछि ओ जे छोड़ैत अछि तकर कारण लिखय चाहैत अछि आ जे लिखैत अछि तकर प्रमाण चाहैत अछि आ प्रमाणक फेर प्रति चाहैत अछि आ प्रतिक फेर अंक चाहैत अछि आ अंकक पाछाँ मुहर चाहैत अछि आ मुहरक पाछाँ कार्यालय चाहैत अछि आ कार्यालयक पाछाँ एहन कियो लोक चाहैत अछि जे कहि सकय जे ई पाँति यथार्थ अछि मुदा नदीक कात यथार्थक कोनो मुहर नहि होइत अछि केवल भीजल माटि होइत अछि जाहि पर पयर पड़ैत अछि आ पयर उठलाक पछाति चिन्ह किछु काल रहैत अछि फेर दोसर पयर अबैत अछि फेर जल चढ़ैत अछि फेर चिन्ह घुलैत अछि आ मनुष्य एहि घुलनाइ सँ बचबाक लेल नाम लिखैत अछि पिता लिखैत अछि पितामह लिखैत अछि ग्राम लिखैत अछि मूल लिखैत अछि विवाह लिखैत अछि तिथि लिखैत अछि अधिकार लिखैत अछि आ जखन लिखल पन्ना पुरान होइत अछि तखन मोबाइलक पर्दा पर ओकर छवि राखैत अछि आ पर्दा पर अँगुरी फेरि अक्षर पैघ करैत अछि मुदा अक्षर पैघ भेलासँ पुरान पन्ना नवल नहि होइत अछि आ धुँधल पाँति उज्जर भेलासँ अनुपस्थित नाम उपस्थित नहि होइत अछि आ छोट कोष्ठमे पाँच पीढ़ी समा गेलासँ छठम पीढ़ी मेटैत नहि अछि से केवल पर्दाक बाहर रहैत अछि आ बाहर रहनाइ आ नहिए रहनाइ एक बात नहि अछि ई अन्तर मनुष्य कखनो बुझैत अछि कखनो अपन सुविधा लेल नहि बुझैत अछि आ हम एहि सुविधा कैँ जानैत छी कारण हमरा कात सेहो लोक ऊँच माटि पर घर बनबैत अछि आ नीच माटि पर खेत छोड़ैत अछि आ एक वर्षक जल देखिकऽ अगिला वर्षक भरोसा करैत अछि आ पछिला कटानक ठाम सँ कनी दूर नेब राखैत अछि आ कहैत अछि एतय सुरक्षित अछि मुदा माटिक नीचाँ पुरान बालू एखनहुँ अछि आ हमरा बाटक स्मृति कागज पर नहि माटिमे रहैत अछि फेर कागज सेहो चलय लगैत अछि छायाप्रति बनि जेबमे जाइत अछि मोबाइलक छवि बनि दूर नगर पहुँचैत अछि संगणकक संचिकामे रहैत अछि आ कियो ओकरा खोलि पूछैत अछि जे एहि चारि कोष्ठमे हमर पुरखा कोन

ठाम जाएत आ हमरा लग चारि कोष्ठ नहि अछि हमरा लग अनेक धार अछि जाहिमे किछु एक वर्ष चलैत अछि किछु दस वर्ष किछु अनेक पीढ़ी धरि आ किछु बरखाक एक रातिमे फेर खुलि जाइत अछि आ तें दुनूक बीच घर्षण होइत अछि मुदा घर्षणसँ कागजक कोर झड़ैत अछि आ अर्थक कोर सेहो झड़ि सकैत अछि जखन मूल पाँति लंबा अछि आ प्रपत्र छोट अछि तखन लोक काटैत अछि जखन नामक वर्तनी दू रूपमे अछि तखन लोक एकटा चुनैत अछि जखन ग्रामक नाम बदलल अछि तखन लोक नवल नाम भरैत अछि जखन पुरान सम्बन्ध वर्तमान कोष्ठमे नहि समाइत अछि तखन खाली छोड़ैत अछि आ खाली कोष्ठ देखिकऽ पछिला पाठक मानि सकैत अछि जे किछु छलहि नहि मुदा रिक्ति सदिखन अभाव नहि होइत अछि कखनो ओ अपूर्ण जाँच अछि कखनो असुविधाजनक विस्तार अछि कखनो अनपढ़ल अक्षर अछि कखनो जानि बुझि कऽ छोड़ल नाम अछि आ कखनो केवल एतेक जे कागजक कोर ओहि ठाम सँ टूटि गेल अछि हम ई सभ कारणक न्याय नहि करैत छी हम केवल देखैत छी जे कागज माटि जकाँ क्षरैत अछि आ मनुष्य क्षरण रोकबाक लेल प्रति बनबैत अछि मुदा प्रति बनैत काल चयन करैत अछि आ चयनक भीतर फेर नवल क्षरण जन्म लैत अछि एक ठाम जल अक्षर बहा लैत अछि दोसर ठाम छोट कोष्ठ अक्षर बाहर राखैत अछि तेसर ठाम गाढ़ छायाप्रति दागकेँ अक्षर जकाँ देखबैत अछि चारिम ठाम चमकैत पर्दा धुँधल पाँतिकेँ स्पष्ट मानबाक भ्रम दैत अछि आ एहि सभक बीच कियो पेन्सिलसँ दागक कात दाग लिखि दैत अछि आ एक छोट शब्द अनेक भ्रम रोकि दैत अछि मनुष्यक बचाव सभ काल पैघ व्यवस्था नहि होइत अछि कखनो एक सावधान शब्द पर्याप्त होइत अछि कखनो स्रोतक तिथि पर्याप्त होइत अछि कखनो प्रश्नचिह्न पर्याप्त होइत अछि कखनो मूल पाँति नहि काटनाइ पर्याप्त होइत अछि आ कखनो एतेक स्वीकार पर्याप्त होइत अछि जे ज्ञात नहि अछि हम बहैत छी आ हमरा कात अनेक गामक नाम दू देशक कागजमे पृथक ढङ्गे लिखल अछि कुटुम्बक एक शाखा एहि पार अछि दोसर शाखा ओहि पार अछि विवाहक पुरान पथ कखनो घाटसँ जाइत अछि कखनो बाटसँ कखनो सीमा चौकीक कागज बीचमे अबैत अछि आ लोक अपन वंशक सूत्र सँ दूर नगरक कुटुम्ब खोजैत अछि मुदा हमरा लेल उत्तर आ दक्षिणक जल अन्ततः ढलान खोजैत अछि हम सीमा पार करबाक अनुमति नहि माँगैत छी मुदा मनुष्यक नाम माँगैत अछि आ नामक संग प्रमाणपत्र चलैत अछि आ प्रमाणपत्रक संग छायाप्रति आ छायाप्रतिक संग मोबाइल आ मोबाइलक भीतर फेर एहन संचिका जाहिमे कागजक गन्ध नहि अछि स्याहीक मोटाइ नहि अछि जलक दागक खुरदरापन नहि अछि केवल अक्षर अछि आ अक्षरक प्रतिरूप अछि मुदा जखन मूल पन्ना बन्द सन्दूकमे रहैत अछि तखन ओहि प्रतिरूपक यथार्थता ककरो सावधानी पर निर्भर रहैत

अछि आ जँ सावधानी घटैत अछि तखन नदीक जल बिना सेहो पाँति बदलि सकैत अछि एहि कारण एक बूढ़ हाथ पृथक पोथीमे स्रोत लिखैत अछि कथन आ अनुमानक बीच अन्तर राखैत अछि रिक्त ठाम रिक्ते छोड़ैत अछि मूल पाँति नहि काटैत अछि आ हमरा कात जल चढ़ैत घटैत रहैत अछि बालू उठैत खसैत रहैत अछि नावक पयर बदलैत रहैत अछि घरक ताला बदलैत रहैत अछि मोबाइलक रूप बदलैत रहैत अछि प्रपत्रक कोष्ठ बदलैत रहैत अछि मुदा नामक भार लोक एखनहुँ अपन संग लऽ चलैत अछि आ जखन दूर ठाम सँ कियो पूछैत अछि जे हमर पाँति एखनहुँ पोथीमे अछि कि नहि तखन ओ प्रश्न केवल कागजक नहि रहैत अछि ओ ठामक प्रश्न बनैत अछि सम्बन्धक प्रश्न बनैत अछि स्मृतिक प्रश्न बनैत अछि आ हम एहि प्रश्नक उत्तर नहि दैत छी हम केवल पुरान कछेर छूबैत आगाँ बहैत छी जतय एक शाखाक नाम दोसर देशक अभिलेखमे दोसर वर्तनीसँ लिखल अछि आ कियो ओहि वर्तनीकेँ मिलाबय लेल फेर एक पन्ना खोलैत अछि

अध्याय ४० — काठमाण्डू आ मधेस

सन् २०१५ क आश्विनक अन्तिम सप्ताहमे काठमाण्डूसँ एक लिफाफा आयल। डाकक मोहर धुँधला छल, मुदा भीतर राखल कागजसभ नव छापल छल। पहिल पन्ना नेपाली नागरिकता प्रमाणपत्रक छायाप्रति, दोसर एक जन्म-दर्ताक छायाप्रति, तेसर हाथे बनाओल वंश-रेखा, चारिम एक पुरान विवाह-निमन्त्रणक नकल। सभसँ ऊपर छोट कागज पर मैथिलीमे लिखल छल—“रामानुग्रह बाबू, ई शाखा पँजीमे कतय जुड़ैत अछि, कृपा कऽ देखू। कानूनक बात नहि, वंशक बात चाही।”

लिफाफा पठेनिहार श्यामानन्द झाक विवाहक कन्यापक्षक घरसँ छल। ओहि विवाहक प्रसंग हमरा स्मरण छल, कारण बरियात भीमनगर लग रोकल गेल छल आ विवाहक पेटीसभक सूची हमरा हाथे बनल छल। पँजी-पत्रमे देशक लेल कोनो कोष्ठ नहि छल, मुदा सीमा-कागजमे भारतीय आ नेपाली पूछल गेल छल। ओहि दिन कन्याक मामाक नाम प्राप्त करनिहारक रूपमे लिखल गेल छल। कागज एखनहुँ हमर पुरान बहिमे दबा कऽ राखल छल।

हम पहिने पँजी खोललहुँ। तकर बाद विवाहक प्रविष्टि। तकर बाद सीमा पर बनल वस्तु-सूची। एहि क्रमकेँ उलटब उचित नहि बुझलहुँ, कारण नवल प्रश्नक उत्तर लेल पुरान स्रोतक क्रम पहिने स्पष्ट रहबाक चाही। विवाहक पाँतिमे कन्याक ग्राम सप्तरीक छल। वस्तु-सूचीमे कन्याक मामाक नाम, पिताक नाम, गाम आ जिला लिखल छल। नवल हाथे बनाओल वंश-रेखामे वएह नाम दू पीढ़ी ऊपर छल। वर्तनीमे एक मात्रा अन्तर।

हम लिफाफाक कागज पृथक-पृथक रखलहुँ। नागरिकता प्रमाणपत्र पर नाम नेपाली अक्षररूपमे छल, मुदा पढ़ब कठिन नहि। जन्म-दर्तामे मायक नाम छल। पिताक नाम भारत दिसक एक गामक। वंश-रेखामे माय दिसक शाखा विस्तारसँ लिखल, पितृपक्ष केवल तीन नाम। एहि असमानताक कारण कागज नहि कहैत छल।

दू दिन पछाति एक युवक आयल। ओ स्वयं काठमाण्डूमे रहैत छल, ओकर माय सप्तरीमे। लिफाफा ओकरे घरसँ पठाओल गेल छल। ओ हमरा प्रणाम कऽ पुछलक—“कागज भेटल?”

हम कहलियैक—“भेटल। पँजीक संग मिलान चलि रहल अछि।”

ओ बैसल। हाथमे मोबाइल, झोलामे कागज, आ एक मोड़ल समाचार-पन्ना छल। पहिने मोबाइल नहि खोललक। समाचार-पन्ना खोलि मेज पर रखलक। पहिल पन्नाक ऊपर २० सितम्बर २०१५क संविधान-प्रकाशन विषयक समाचार छल। दोसर काटल समाचार-अंशमे जनकपुर, जलेश्वर, राजविराज आ वीरगञ्जक विरोधक उल्लेख। तेसर काटल समाचार-अंशमे सीमा पर मालवाहक गाड़ी अटकबाक समाचार। एक कागज “नाकाबन्दी” लिखैत छल, दोसर “सीमा-अवरोध”। हम दुनू शब्द पढ़लहुँ। ककर शब्द अधिक यथार्थ, ई हम नहि लिखलहुँ।

युवक कहलक—“काठमाण्डूमे लोक एक बात कहैत अछि, मधेसमे घर फोन करू तऽ दोसर बात सुनाइत अछि।”

हम पुछलियैक—“अहाँक वंशक प्रश्न कोन अछि?”

ओ किछु क्षण चुप रहल। तकर बाद झोलासँ जन्म-दर्ताक मूल नकल निकाललक। “ई हमर बहिनक बेटी अछि। बहिन नेपाली नागरिक। ओकर पति भारतक। आब घरमे सभ कागज फेर देखल जा रहल अछि। कियो कहैत अछि माय दिसक वंश स्पष्ट राखू। कियो कहैत अछि पिताक कागज जोड़ू। हम कानून बुझय नहि आयल छी। हमरा केवल ई देखय चाही जे हमर नानीक पितृघरक पाँति अहाँक पोथीमे अछि कि नहि।”

हम कहलियैक—“पँजी नागरिकता निर्धारित नहि करत। जतेक वंश-संबंध लिखल अछि, ततेक कहि सकैत अछि।”

ओ ओहि क्षण कहलक—“एतबे चाही।”

एहन उत्तर ग्राहक प्रायः पहिने नहि दैत छल। अधिकांश लोक पुरान कागजसँ नवल अधिकारक सम्पूर्ण उत्तर चाहैत छल। एहि युवकक माँग सीमित छल। सीमा स्पष्ट हो तऽ अभिलेखक काज सरल होइत अछि।

हम विवाहक प्रविष्टि ओकर सोझाँ राखलहुँ। पन्ना कमजोर छल, तेँ पारदर्शी पत्रक नीचा सँ देखाओल। कन्याक नाम, पिता, ग्राम, मूल, विवाहक तिथि। युवक नाम पढ़लक। फेर अपन कागजक वंश-रेखा पर अँगुरी रखलक। दू पीढ़ीक अन्तर पार कऽ एक नाम मिलल। तेसर नामक वर्तनी भिन्न। हम दोसर पोथी खोललहुँ। ओतय विवाह-संबंधी पत्रक नकल छल। वर्तनी नवल कागजक निकट छल।

युवक पुछलक—“तँ दुनू एके लोक?”

हम कहलियैक—“स्रोत दूटा अछि। पिता आ ग्राम मेल खाइत अछि। वर्तनी भिन्न अछि। ‘एके लोक’ लिखबाक पहिने तिथि सेहो मिलत।”

तिथि मिलल। हम कापीमे तीन स्रोत लिखलहुँ। पँजी। विवाह-पत्रक नकल। सीमा-सूची। तकर पछाति नवल नागरिकता प्रमाणपत्रक छायाप्रति। चारू कागज एक परिवारक चारि भिन्न प्रयोजनक छल। पँजी विवाह-योग्यता लेल। विवाह-पत्र सम्बन्ध लेल। सीमा-सूची वस्तु पार करयबाक लेल। नागरिकता प्रमाणपत्र राज्यीय परिचय लेल।

युवक हमरा पुरान सीमा-सूची देखिते ठमकि गेल। ओ पुछलक—“ई की?”

हम कहलियैक—“अहाँक नानीक विवाहक समयक वस्तु-सूची।”

ओ पढ़य लगल—धोती, साड़ी, चादर, थारी, लोटा, मखान, सुपारी, रेडियो, सिलाइ-मशीन। प्राप्त करनिहारक नाम पर ओकर अँगुरी रुकल। “ई हमर परनाना।”

हम कहलियैक—“ओहि समय कागजमे कन्याक मामा।”

ओ हँसल नहि। मोबाइल निकालि छायाचित्र लेबाक पुछलक। हम मूल पन्ना नहि देलहुँ; पहिने सँ कयल प्रतिलिपि ओकरा देलहुँ। ओ कहल—“काठमाण्डूमे ई देखौलौं तऽ कियो विश्वास नहि करत जे विवाहक वस्तुक सूची वंश जोड़त।”

हम कहलियैक—“सूची वंश नहि जोड़ैत अछि। सूचीमे लिखल लोकक परिचय दोसर स्रोतसँ मेल खाइत अछि। अन्तर बुझू।”

ओ माथ हिलेलक।

ओहि समय मोहन कोठलीमे आयल। युवकक समाचार-पन्ना पर नजरि पड़ल। ओ जनकपुरक नाम पढ़ि पुछलक—“घरमे सभ कुशल?”

युवक कहलक—“एखन कुशल। बाट सभ काल खुलल नहि। पेट्रोलक कठिनाइ अछि। काठमाण्डूमे गैसक सिलिण्डर लेल पाँति। घर दिस बन्दक कारण सवारी अनिश्चित। फोन चलैत अछि, तेँ समाचार पहिने पहुँचैत अछि, लोक पछाति।”

मोहन केवल “हँ” कहलक। ओ विभागक किछु कागज लेबाक आयल छल, लऽ कऽ चलि गेल। हमरा ध्यान युवकक अन्तिम वाक्य पर रहल—समाचार पहिने, लोक पछाति। पँजीमे सदा लोक पहिने होइत छल, समाचार पछाति।

युवक झोलासँ एक छोट पर्ची निकाललक। काठमाण्डूक एक खाद्य-सामग्रीक दोकानक रसीद। चाउर, नून, तेल, मोमबत्ती। तल्ला पर रसोई गैसक नाम काटल। ओकरा ई रसीद हमरा देखेबाक आवश्यकता नहि छल। ओ स्वयं कहलक—“माय कहैत छथि, कागज सभ लऽ जाउ, तखन दादा बुझताह जे ओतय केवल राजनीति नहि, घरक भानस सेहो अछि।”

हम रसीद देखलहुँ, मुदा प्रतिलिपि नहि लेलहुँ। भानसक कागज वंशक स्रोत नहि छल। तइयो ओकर सूची हमरा १९६६क अकालक पर्ची स्मरण करौलक—चाउर, नून, तेल। समय पृथक, कारण पृथक, वस्तु किछु समान। ई स्मरण हम दैनिकीमे नहि लिखलहुँ। तुलना आकर्षक होइत अछि, मुदा आकर्षण प्रमाण नहि।

हम युवकसँ ओकर नानीक नाम फेर पुछलहुँ। ओ उच्चारण कयलक। पँजीमे नामक रूप थोड़ा पृथक। ओ कहलक—“घरमे सभ हुनका दोसर छोट नामसँ बजबैत छल।”

हम कहलियैक—“छोट नामक स्रोत?”

ओ हँसल। “घर।”

“लिखित?”

“पुरान पत्र होयत। खोजब।”

हम छोट नाम नहि जोड़लहुँ। प्रति-पाँजिक नियम चौठम—शंका लेल रिक्त स्थान। मूल पाँति काटबाक प्रश्ने नहि।

दोपहर धरि मिलान समाप्त भेल। हम एक पृष्ठक वंश-संबंधी प्रतिलिपि बनौलहुँ। ऊपर लिखलहुँ—“ई वंश-अभिलेखक प्रतिलिपि मात्र अछि; नागरिकता वा आन राज्यीय अधिकारक प्रमाण नहि।” तकर नीचाँ स्रोत बेराबेरी: पुरान पँजीक पृष्ठ, विवाह-पत्रक नकल, सीमा-सूची, पठाओल पारिवारिक वंश-रेखा। नवल नागरिकता प्रमाणपत्रकेँ केवल समकालीन परिचयक सहायक कागज रूपमे लिखलहुँ, पँजिक स्रोत रूपमे नहि।

युवक पढ़लक। “मधेस लिखब?”

हम पुछलियैक—“कतय?”

“ग्रामक पाछाँ। आब हम सभ मधेस कहैत छी।”

हम कहलियैक—“पुरान स्रोतमे सप्तरीक ग्राम अछि। नवल कागजमे जे प्रशासनिक ठाम लिखल अछि, ओ पृथक लिखि सकैत छी। ‘मधेस’ क्षेत्रक परिचय रूपमे अहाँक कथन होयत, स्रोत सहित।”

ओ किछु सोचलक। “रहय दिअ। एखन ग्राम लिखू।”

हम ग्रामे लिखलहुँ।

ओ चलि गेलाक बाद समाचारक तीन काटल अंश मेज पर छुटि गेल। हम ओकरा फोन कयलहुँ। ओ कहल—“अहाँ राखू। हमरा मोबाइलमे छवि अछि।”

हम तीनू काटल समाचार-अंश रखलहुँ। पहिल—संविधान जारी। दोसर—मधेसक विरोध। तेसर—सीमा पर आवश्यक वस्तुक आवागमन बाधित। एकहि मासक तीन कागज। पहिल कागज राज्यक नव संरचना घोषित करैत छल। दोसर कागज लोकक असहमति लिखैत छल। तेसर कागज चाउर, तेल, गैस, औषधि आ पेट्रोलक अभावक समाचार दैत छल। ई तीनूकेँ एकहि वाक्यमे समेटब हमर काज नहि छल।

किछु सप्ताह पछाति सप्तरीसँ फोन आयल। वृद्ध स्त्रीक आवाज। ओ युवकक नानीक बहिन छलीह। ओ पुछलनि—“हमर बाबूक नाम भेटल?”

हम कहलियनि—“भेटल।”

“हमर मायक नाम?”

हम पन्ना देखलहुँ। हुनकर मायक नाम विवाह-पत्रक नकलमे छल, मुख्य पँजीक पाँतिमे नहि। हम कहलियनि—“एक स्रोतमे अछि। मुख्य पँजीमे नहि।”

ओ चुप रहलीह। फेर पुछलनि—“तँ लिखल जाएत?”

हम कहलियनि—“मूल पँजीमे नवल बात जोड़ब नहि। प्रति-पाँजिमे स्रोत सहित लिखल जा सकैत अछि।”

ओ कहलनि—“लिखि दिअ। आब नेना सभ नाम खोजैत अछि।”

हम “हँ” कहलहुँ, मुदा फोन राखिते नहि लिखलहुँ। पहिने स्रोत फेर देखलहुँ। विवाह-पत्रक कागज पीयर पड़ल, कोर टूटल। नाम स्पष्ट। तिथि स्पष्ट। सम्बन्ध स्पष्ट। तकर बाद प्रति-पाँजि खोललहुँ। लिखलहुँ—“सप्तरी शाखा; स्त्रीक नाम मुख्य पँजीमे अनुपस्थित; विवाह-पत्रक नकलमे उपलब्ध; स्रोत संलग्न।” अनुमान नहि। कारण नहि।

ओहि दिनक दैनिकीमे राजनीतिक टिप्पणी शून्य अछि। केवल पाँच लेख अछि—काठमाण्डूसँ आयल युवक; चारि स्रोत मिलान; एक वर्तनी-पार्थक्य; वंश-संबंधी प्रतिलिपि देल; सप्तरीसँ फोन। समाचारक काटल अंशक उल्लेख पृथक—“२०१५ संविधान आ मधेसक विरोध विषयक तीन समाचार-अंश सुरक्षित।”

राति पुरान सीमा-सूची फेर हाथमे आयल। कागज पर ओहि समयक स्याही एखनहुँ बचल छल। “प्रयोजन—विवाह।” “प्राप्त करनिहार—” तकर पाछाँ नाम। लगभग आधा शताब्दी पछाति ओही नाम ओही परिवारक नवल नागरिकता-कागज धरि मिलानक आधार बनल। मुदा हम “आधार” शब्दो दैनिकीमे नहि लिखलहुँ। दैनिकीमे लिखलहुँ—“नाम चारि स्रोतमे मेल खाइत अछि।” एतबे पर्याप्त छल।

समाचारक काटल अंश, नवल प्रतिलिपि आ पुरान सीमा-सूची एकहि फाइलमे नहि राखलहुँ। पुरान कागज कमजोर छल। ओकर दुनू दिस अम्लरहित पतला पत्र रखलहुँ। नवल कागज पृथक आवरणमे। ऊपर पेंसिलसँ लिखलहुँ—“नेपाल शाखा—सप्तरी—काठमाण्डू पत्राचार—२०१५।”

फाइल बन्द करैत हमरा ओहि पुरान विवाहक पाँति याद आयल—देशक लेल कोनो कोष्ठ नहि छल। सन् २०१५क कागजसभमे देश, नागरिकता, सीमा, प्रदेश, आन्दोलन, परिचय—अनेक कोष्ठ छल। पुरान पँजी तकर उत्तर नहि दैत छल। ओ केवल नाम, ग्राम, मूल, विवाह आ सम्बन्धक पुरान क्रम दैत छल।

हम प्रति-पाँजिमे अन्तिम लेख कयलहुँ—“राज्यीय कागज आ वंश-अभिलेख परस्पर सहायक भऽ सकैत अछि; एक दोसरक स्थान नहि लैत अछि।” तकर आगाँ स्रोत लिखलहुँ—“प्रत्यक्ष कागज-मिलान, २०१५।”

तकर नीचाँ किछु नहि लिखलहुँ।

अध्याय ४१ — घुरब

मार्च २०२० क तेसर सप्ताहमे अनुराधाक अस्पतालक पारी-सूची पर पहिल परिवर्तन लाल स्याहीसँ आयल। छुट्टीक आगाँ लिखल गेल—स्थगित। तकर दू दिन पछाति कर्मचारी-निवासक सूचना-पट्ट पर एक कागज चिपकल—अनावश्यक यात्रा रोकू। तकर बाद विमानक उड़ान घटल। फेर एक राति दिल्लीसँ मोहनक सन्देश आयल जे भारतमे एकैसाथ बन्द लागू होय जा रहल अछि। अनुराधा सन्देश पढ़ि फोन राखि देलनि। ओकर अगिला पारी राति दस बजे सँ छल। वार्डमे प्रवेशसँ पहिने तापमान लिखल गेल, मास्क देल गेल, आ पारी-पत्र पर हस्ताक्षर कराओल गेल।

ओ अप्रैलमे घर अयबाक छुट्टी पहिने सँ माँगने छलीह। टिकट नहि कीनने छलीह, कारण तिथि अस्पतालक स्वीकृतिसँ जुड़ल छल। आब स्वीकृति निरर्थक भेल। दिल्लीक पुरान अलमारीमे राखल ओकर किछु कपड़ा ओतहि रहल। गाममे दादाक प्रश्नसभ ओतहि रहल। मस्कटमे ओकर पासपोर्ट, निवास-पत्र, नर्सिंग पंजीकरण, अनुबन्धक प्रति आ वेतनक रसीद एक प्लास्टिक फोल्डरमे रहल। बाहरी बाट खाली होइत गेल, मुदा अस्पतालक गलियारा खाली नहि भेल।

रातिक पारीक बीच कर्मचारी-कक्षमे फोन खोलिते ओ भारतक बाट पर चलैत लोकक छायाचित्र देखैत छलीह। झोरा माथ पर, नेना काखिमे, पानीक बोतल हाथमे, रेल बन्द, सवारी बन्द। ओ किछु छायाचित्र खोलैत छलीह, किछु नहि। फोनक पर्दा पर पयरक दूरी नापल नहि जा सकैत छल। ओकरा अपन घर धरि दूरी किलोमीटरमे ज्ञात छल; एहि समय ओ दूरी विमानक सूची, राज्यक अनुमति, विमानतल-जाँच, क्वारन्टीन आ स्थानीय सवारीमे बाँटल गेल छल।

अस्पतालमे सहकर्मी पुछैत छलीह—“घर कखन?” अनुराधा उत्तर दैत छलीह—“उड़ान खुलत तखन।” एहि छोट उत्तरमे कोनो आश्वासन नहि छल।

मईक आरम्भमे भारतीय दूतावासक वेबसाइट पर निबन्धन प्रपत्र खुलल। ओ पारी समाप्त भेलाक पछाति मोबाइल पर भरलनि। नाम। पासपोर्ट-संख्या। वीजा-स्थिति। ओमानक पता। भारतमे राज्य। जिला। थाना। फोन। आपत्-सम्पर्क। घुरबाक कारण। ओ “पारिवारिक कारण” लिखलनि, फेर मेटा कऽ “अप्रैलसँ स्वीकृत छुट्टी लंबित” लिखलनि। कारणक कोष्ठ छोट छल। ओकर कारण कोष्ठसँ पैघ नहि छल; केवल स्पष्ट नहि छल। घर जाएब इच्छा छल, मुदा अस्पताल छोड़ि भागब नहि। अनुबन्ध समाप्त नहि भेल छल, मुदा छुट्टी अटकल छल। दादा वृद्ध छलाह, मुदा

बीमार घोषित नहि। ओ अन्तमे लिखलनि—“अप्रैलसँ घरक छुट्टी लंबित; निर्धारित नियम अनुसार यात्रा लेल प्रस्तुत।”

जमा दबेलाक बाद पर्दा पर निबन्धन-संख्या आयल। अनुराधा ओकर छायाचित्र लेलनि, फेर कापीमे अंक लिखलनि। कागजक प्रति नहि छल, तें अंक हाथे लिखब ओकरा आवश्यक लगल।

दू सप्ताह धरि कोनो उत्तर नहि। एहि बीच वार्डक पारी-सूची फेर बदलल। दू नर्स क्वारन्टीनमे गेलीह। एकर प्रतिवेदन नकारात्मक आयल, दोसरक जाँच फेर कयल गेल। अनुराधा अपन झोरामे दू अतिरिक्त मास्क राखय लगलीह। खाना खएबाक समय सेहो सीट निश्चित कयल गेल। कर्मचारी-सवारीमे सीट बेराबेरी खाली छोड़ल जाइत छल।

तकर बाद एक ई-मेल आयल। विषयमे घुरबाक विशेष उड़ान। मस्कट सँ गया। सूचीमे नाम। उपस्थितिक समय। सामानक सीमा। स्वघोषणा-पत्र। मास्क। विमानतल पर समयसँ पहिने पहुँचबाक निर्देश। अनुराधा ई-मेल तीन बेर पढ़लनि। पहिल बेर तिथि। दोसर बेर उड़ान-संख्या। तेसर बेर शुल्क आ क्वारन्टीन विषयक पाँति।

ओ एचआर लग गेलीह। छुट्टीक पुरान आवेदन निकालल गेल। पर्यवेक्षक कहलक—“अहाँ गेलहुँ तऽ घुरबाक तिथि अनिश्चित रहत।” अनुराधा कहलनि—“अनिश्चित एतयो अछि।” पर्यवेक्षक किछु क्षण चुप रहल। कागज पर हस्ताक्षर कयलक।

ओकरा अस्पतालक हस्तान्तरण-प्रपत्र भरबाक छल। लॉकरक चाबी। वर्दीक लेखा। कर्मचारी-पहिचानपत्र अस्थायी रूपेँ जमा। वेतनक शेष। निवासक खाट। सभक आगाँ छोट चौकोर कोष्ठ। पाँच वर्ष पहिने दिल्ली छोड़ैत समय जे वस्तु ओकरा “अन्तिम” लगैत छल, एहि बेर कोनो वस्तु अन्तिम नहि लगल। मस्कट लौटब कि नहि, एहि प्रश्नक उत्तर कोनो कागज नहि दैत छल।

सामान पहिल बेरसँ कम छल। दू साड़ी। तीन जोड़ी कपड़ा। नर्सिंग प्रमाणपत्रक मूल नहि, प्रमाणित प्रतिलिपि। पासपोर्ट। निवास-पत्र। अनुबन्ध। वेतन-पर्चीसभ। बैंक रसीद। ताप-रक्षक बोतल। चार्जर। बिस्कुटक दू पैकेट। पानीक खाली बोतल, जे विमानतल भीतर भरत। मास्क। सैनिटाइजर। एक जोड़ी चप्पल। एक जोड़ी जूता। ओ एहि बेर माटि लऽ जेबाक प्रश्न सोचलहुँओ नहि।

प्रस्थानक दिन अस्पतालक सवारी ओकरा विमानतल छोड़लक। द्वार पर उतरतहि झोराक मूठ सैनिटाइजरसँ भीजल। प्रवेश-द्वार पर तापमान लेल गेल। पासपोर्ट देखल गेल। निबन्धन-सूचीमे नाम काटल गेल। एक घोषणा-प्रपत्र देल गेल। पछिला चौदह दिनक लक्षण। सम्पर्क। यात्रा। भारतक पता। क्वारन्टीन स्वीकार करबाक वचन। अनुराधा प्रपत्र भरैत-भरैत एक पाँति पर रुकलनि—गन्तव्य-पता। ओ गामक नाम लिखलनि। डाकघर। जिला। बिहार। पिन-कोड।

काउण्टरक कर्मचारी कहलक—“भारतक फोन-संख्या?”

अनुराधा भारतीय सिमक संख्या लिखलनि, जे महीना सँ बन्द छल। तकर नीचाँ मोहनक संख्या।

“एप?”

ओ फोन देखौलनि। भारतीय एप उतारबाक करबाक चेष्टा पहिने कयने छलीह; विदेशी संख्या पर सत्यापन अटकैत छल। कर्मचारी दोसर मेजक दिशा देखौलक। दोसर मेज पर फेर पासपोर्ट। फेर प्रपत्र। फेर प्रश्न। अन्तमे एक छोट चिन्ह बोर्डिंग पास पर लगल। अनुराधा अपन पाँति घुरि पकड़लनि।

ओहि पाँतिमे ओकर सोझाँ एक स्त्री सलालाहसँ आयल छलीह, पाछाँ दू पुरुष सोहारक कारखानासँ। कियो पहिने सँ एक-दोसरकेँ नहि चिन्हैत छल। सभक हाथमे समान प्रकारक पारदर्शी फोल्डर। पासपोर्टक रंग एक। भीतरक कागज पृथक।

विमानमे भोजनक पैकेट सीट पर पहिनहि राखल छल। पानीक बोतल। मास्क खोलबाक समय न्यून। घोषणा बेराबेरी हाथ स्वच्छ राखबाक। अनुराधा खिड़की दिस नहि देखलनि। ओ मार्ग-मानचित्र देखैत रहलनि। मस्कट। समुद्र। भारत। गया। बीचक आकाशमे कोनो जाँच-चौकी नहि छल।

गया उतरिते क्रम फेर शुरू भेल। सीट अनुसार उठब। ताप-जाँच। स्वघोषणा-पत्रक दोसर प्रति। आव्रजन। सामान। राज्यक काउण्टर। जिला। नाम। मोबाइल। गाम। पासपोर्ट-संख्या। उड़ान-संख्या। “विदेशसँ आयल” लिखल एक पर्ची।

एक कर्मी ओकर नाँवक वर्तनी गलत लिखलक। अनुराधा तुरन्त रोकलनि।

“‘धा’ अछि, ‘दा’ नहि।”

कर्मी पन्ना घुमेलक। “एतबा सँ की होयत?”

अनुराधा मास्कक भीतर सँ कहलनि—“आगाँ कियो एहि पन्नासँ हमरा खोजत तऽ होयत।”

कर्मी अक्षर सुधारि देलक।

विमानतल बाहर जिलाक नाम लिखल सवारी-गाड़ी सभ ठाढ़ छल। ओकरा तखन सीधे घर नहि जाएबाक छल। बोधगयाक संस्थागत क्वारन्टीन लेल समूह बनाओल गेल। अनुराधा अपन सूटकेस सवारीक पेटीमे राखलनि। एक कागज पर क्रमांक भेटल। कक्षक क्रमांक पछाति। भोजनक समय पृथक। तापमान दू बेर।

क्वारन्टीन भवन होटल छल कि छात्रावास, ई वर्गीकरण ओकरा रुचिक विषय नहि रहल। ओकर कक्षमे दू खाट छल, मुदा दोसर खाट खाली राखल गेल। चादर मुड़ल। प्लास्टिकक बाल्टी। मग। साबुन। पानीक दू बोतल। दरबज्जाक बाहर भोजनक पैकेट राखल जाइत। बिहान तापमान। साँझ तापमान। नाम। हस्ताक्षर।

पहिल दिन ओ सुतलीह। दोसर दिन कपड़ा धोएलनि। तेसर दिन फोन पर अस्पतालक सन्देश आयल—“पहुँचलहुँ?” ओ “हँ” लिखलनि। घर फोन नहि कयलनि। मोहनकेँ केवल स्थान भेजलनि। मोहनक उत्तर आयल—“बाबूजी पुछैत छथि।” अनुराधा लिखलनि—“कहू कागज अनुसार एखन घर नहि जा सकैत छी।”

चारिम दिन रामानुग्रहक छुटल फोन छल। अनुराधा घुरि फोन कयलनि।

“पहुँचलहुँ?”

“भारत पहुँचि गेलहुँ। घर एखन नहि।”

“कतय?”

“क्वारन्टीनमे।”

“कतेक दिन?”

“जे कागजमे अछि, पहिले सात दिन एतय। तकर बाद घरमे पृथक रहब।”

रामानुग्रह किछु क्षण चुप रहलाह। फेर पुछलनि—“कागज देल अछि?”

अनुराधा हँसलनि नहि। “हँ, बाबा। कागज देल अछि।”

ओहि राति ओ कापी खोललनि। क्वारन्टीनक नियम पर ओकर आपत्ति नहि छल; नर्स होइत संक्रमणक अनुशासन ओकर परिचित छल। मुदा एके पता चारि प्रपत्रमे लिखनाइ, एके पासपोर्ट-संख्या पाँच मेज पर पढ़नाइ, आ तकर बाद फोन पर फेर वर्तनी कहल—एहि सभक लेखा ओ पृथक कयलनि। ओ अपन कापीमे लिखलनि—“नाम ५ बेर। पता ४ बेर। पासपोर्ट ५ बेर। तापमान ६ बेर।” तकर नीचाँ—“ई शिकायत क्वारन्टीनक नहि; पुनर्लेखनक अछि।”

सातम दिन नमूना लेल गेल। प्रतिवेदन नकारात्मक आयलाक बाद छुट्टी-पर्ची भेटल। पर्ची पर निर्देश—घर पहुँचि कऽ निर्धारित अवधि पृथक रहब, लक्षण हो तऽ सूचना देब। अनुराधा पर्चीक छायाचित्र मोहनकेँ पठौलनि। मूल फोल्डरमे राखलनि।

भवनक बाहर जिला-वार सवारी फेर बनल। ओहि दिन धूप कठोर छल। सूटकेसक चक्का धूल पकड़लक। एक गाड़ी गया सँ उत्तर दिस चलल। भीतर प्रवासी लोक छल—कियो खाड़ी देशसँ, कियो दिल्लीसँ रेल द्वारा, कियो गुजरातसँ विशेष रेल द्वारा जिला केन्द्र पहुँचने। सभक हाथमे कागजक रंग पृथक। ककरो गुलाबी पर्ची। ककरो उज्जर पास। ककरो रेल टिकट। अनुराधाक पासपोर्ट नीला।

बाटमे एक ढाबा बन्द। दोसर पर केवल पानी। पुलिस जाँच-चौकी पर सवारी रोकल गेल। सूची देखल गेल। यात्रिक गिनल गेल। चालकक कागज पर मुहर। अनुराधा खिड़कीसँ बाहर पाँति-पाँति चलैत लोक देखलनि। ककरो झोरा काँध पर, ककरो साइकिल पर बिछौना बन्हल, ककरो पयरमे रबरक चप्पल घिसल। ओ फोन नहि निकाललनि। छायाचित्र लेनाइ ओकरा अनुचित लगल।

जिला केन्द्र पहुँचैत साँझ भेल। एतय फेर नाम। प्रखण्ड। पंचायत। गाम। “विदेश”क आगाँ चिह्न। “जाँच”—नकारात्मक। “घरक क्वारन्टीन”—हँ। कर्मचारी पुछलक—“घर सँ कियो लऽ जाएत?”

अनुराधा कहलनि—“मोहन बाबू बाटमे छथि।”

फोन कयल गेल। मोहनक सवारी एक जाँच-चौकीक ओहि पार रोकल छल। अनुमति-पत्रमे केवल प्रखण्ड धरि प्रवेश लिखल। जिला केन्द्रक भीतर आन गाड़ी छोड़ल नहि जा रहल छल। अनुराधा काउण्टर पर ई बात कहलनि। उत्तर—“एतयसँ पंचायतक सवारी जाएत।”

पंचायतक सवारी आधा घण्टा पछाति आयल। आठ लोक। सामान। चालक। एक सहायक। अनुराधा बैसलनि। दू गाम पछाति सवारीक मार्ग दोसर दिशा मुड़यवला छल। ओकर गाम धरि सात किलोमीटर शेष। सहायक कहलक जे दोसर सवारी पीछे अछि। दोसर सवारी कतेक पीछे, से ओकरा ज्ञात नहि।

अनुराधा बाटक कात सूटकेस उतारलनि।

“रुकू, आबि जाएत,” सहायक कहलक।

ओ पुछलनि—“कतेक बेरमे?”

“कहि नहि सकैत छी।”

ओ फोन देखलनि। मोहन जाँच-चौकी सँ चारि किलोमीटर दूर। बीचक कच्चा बाट पर गाड़ी आनब मना। अनुराधा सूटकेसक मूठ उठौलनि। चक्का माटि पर अटकल। ओ खींचलनि। फेर चललीह।

पहिल आध किलोमीटरमे सूटकेसक एक चक्का ढीला भेल। ओ रुकि झोराक पट्टा कसलीह। जूता भीतर गर्म। मास्क भीजल। बाटक कात चापाकल छल, मुदा ओकर मूठ पर लाल कपड़ा बन्हल—“बाहरक लोक उपयोग नहि करू।” ओ पानीक बोतल खोललनि। आध पीएलनि। आध बचौलनि।

मोहन फोन पर कहैत रहलाह—“ओतहि ठाढ़ रहू, हम किछु करैत छी।”

अनुराधा कहलनि—“किछु करबाक दूरी आब चारि किलोमीटर अछि। हम चलैत छी।”

“बोझ?”

“एक सूटकेस अछि, कोसी नहि।”

मोहन चुप भऽ गेलाह। अनुराधाकेँ अपन उत्तर कठोर लगल, मुदा ओ आपस नहि लेलनि।

बाट पर दू युवक विपरीत दिशासँ साइकिल पर आयल। एक पुछलक—“दीदी, क्वारन्टीन सँ?” अनुराधा छुट्टी-पर्ची देखौलनि। ओ सभ दूरी राखि बाट छोड़ि देलक। कियो व्यंग्य नहि। कियो निकट नहि आयल। युवकमे सँ एक कहलक—“आगाँ पुल पर बाँस अछि, दहिना कात सँ पयरक बाट खुलल।” अनुराधा “धन्यवाद” कहलनि।

पुल पर सचमुच बाँस छल। मोटर-सवारी रोकबाक लेल। दहिना सँ दू पयर चौड़ा स्थान। सूटकेस उठेबाक पड़ल। ओ दाँत भींचि उठौलनि। पुल पार कऽ फेर रखलनि। हाथक अँगुरी लाल भेल। रोष एहि बेर ककरो एक लोक पर नहि छल। ओकरा लगल सम्पूर्ण यात्रा कियो एक बेर आरम्भसँ अन्त धरि कागज पर नहि देखलक। मस्कटक प्रपत्र गया धरि छल। गयाक पर्ची जिला धरि। जिलाक सूची प्रखण्ड धरि। प्रखण्डक व्यवस्था पंचायतक मोड़ धरि। तकर बाद सात किलोमीटरक उत्तर ओकर पयर दैत छल।

ओ रुकि कऽ कापी नहि निकाललनि। ई लेखा पछाति लिखल जाएत।

दू किलोमीटर पछाति मोहन बाटक ओहि पार देखायलाह। हुनका हाथमे मास्क, पानी आ एक पुरान साइकिल छल। जाँच-चौकीक पहरेदार साइकिल लऽ जाएबाक अनुमति देने छल। मोहन निकट अयबाक प्रयास कयलनि। अनुराधा हाथ उठा रोकलनि।

“दूरी।”

मोहन ठमकलाह।

“पानी राखू।”

ओ बोतल बाट पर रखलनि आ चारि डेग पाछाँ गेलाह। अनुराधा उठा लेलनि।

“सूटकेस हम—”

“नहि। अहाँ छूब नहि।”

मोहनक आँखि ऊपर मास्क छल। किछु कहब चाहैत छलाह, मुदा नहि कहलनि। ओ साइकिल घुमाकऽ दूरी पर चलय लगलाह। अनुराधा पाछाँ सूटकेस खींचैत। जहाँ चक्का अटकैत ओ उठा लैत।

गामक पहिल घर पर दू लोक दरबज्जा भीतरसँ देखलनि। कियो बाहर नहि आयल। पंचायत पहिने सूचना देने छल जे विदेशसँ एक स्त्री घुरि रहल छथि आ घरमे पृथक रहताह। “विदेश” शब्द नामसँ पहिने पहुँचि गेल छल। अनुराधाकेँ एहि पर हँसी नहि आयल।

घरक फाटक पर रामानुग्रह ठाढ़ छलाह। हुनका नाक-मुँह पर सफेद कपड़ा। हाथमे कोनो पोथी नहि। अनुराधा फाटकसँ पाँच हाथ दूर रुकलीह। सूटकेस सीधा कयलनि।

रामानुग्रह कहलनि—“आबि गेलहुँ।”

अनुराधा कहलनि—“हँ।”

एतबे।

मोहन भीतरसँ पूर्वक कोठलीक दरबज्जा खोलि देने छलाह। ओही कोठलीमे अनुराधा सात दिन पृथक रहत। खाट पर नव चादर। कोनामे बाल्टी। लोटा। साबुन। पानी। थारी। मोबाइल चार्जर लेल लम्बा तार। खिड़की बाहर अँगना।

अनुराधा भीतर जाएबासँ पहिने फोल्डर निकाललनि। छुट्टी-पर्ची, क्वारन्टीन-निर्देश, पासपोर्ट, बोर्डिंग पास, मस्कटक निबन्धन-संख्याक कापी, गयाक पर्ची। रामानुग्रह दूरसँ देखैत रहलाह। हुनकर नजरि कागज पर अधिक काल टिकली।

अनुराधा कहलनि—“छूअ नहि। सात दिन पछाति देखब।”

रामानुग्रह माथ हिलौलनि।

ओ कोठलीमे गेलीह। सूटकेस दरबज्जाक भीतर राखलनि। जूता बाहर छोड़लनि। हाथ धोएलनि। मुख धोएलनि। कपड़ा पृथक बाल्टीमे राखलनि। तकर बाद खाट पर नहि बैसलीह। पहिने फोन चार्जर लगौलनि। बैटरी छओ प्रतिशत छल।

मोहन दरबज्जासँ दूरी पर पुछलनि—“थाकि गेलहुँ?”

अनुराधा ओकरा देखलनि। “मस्कट सँ गया विमानमे अएलहुँ। गया सँ जिला-सवारीमे। जिला सँ प्रखण्ड दोसर सवारीमे। प्रखण्ड सँ पंचायत तेसर सवारीमे। सात किलोमीटरमे व्यवस्था समाप्त। चारि किलोमीटर पैदल चललहुँ। थकानक लेखा चाही कि रोषक?”

मोहन उत्तर नहि देलनि।

अनुराधा खिड़कीक जालीसँ बाहर रामानुग्रहकेँ देखलनि। ओ फाटक लग राखल सूटकेसक चक्काक माटि देखैत छलाह। शायद ओकरा भीतर आनबाक विचार छल। अनुराधा ऊँच स्वरमे कहलनि—“बाबा, ओतहि रहय दिअ। पहिने धूप लगय दिअ।”

रामानुग्रह फेर माथ हिलौलनि।

साँझ धरि घरमे तीन लोक तीन ठाम रहल। रामानुग्रह पश्चिमक कोठलीमे। मोहन बरामदामे। अनुराधा पूर्वक कोठलीमे। बीचक अँगनामे ओकर सूटकेस धूप खाइत रहल।

राति भोजनक थारी दरबज्जासँ दू हाथ दूर रखल गेल। अनुराधा भीतरसँ उठा लेलनि। भात। दालि। आलूक तरकारी। नींबू। ओ पहिल ग्रास खएबाक पहिने किछु क्षण थारी देखलनि। मस्कटक कर्मचारी-भोजन, विमानक पैकेट, क्वारन्टीनक डिब्बा, बाटक बिस्कुट—सभक पछाति घरक भात छल। ओ एहि पर किछु नहि कहलनि।

भोजन पछाति ओ अपन कापी खोललनि। यात्रा लेखा लिखलनि—मस्कट विमानतल: चारि मेज। गया: पाँच मेज। क्वारन्टीन: सात दिन। जिला: तीन पंजी। स्थानीय सवारी: तीन खण्ड। पैदल: चारि किलोमीटर।

तकर नीचाँ एक पाँति लिखलनि—“घुरब एक क्रिया नहि, अनेक अनुमतिक बीच बचल बाट अछि।”

ओ पाँति पढ़ि ओकरा बेसी साहित्यिक लगल। काटि देलनि। नवल पाँति लिखलनि—“घर पहुँचल समय ५:४० साँझ। छुट्टी-पर्ची सुरक्षित।”

कापी बन्द कयलनि।

अध्याय ४२ — तीन पीढ़ी एक कोठली

आठम दिन बिहान सात बजि बारह मिनट पर प्रखण्ड स्वास्थ्य-कक्ष सँ फोन आयल। फोन अनुराधाक मोबाइल पर छल, मुदा ओ स्पीकर नहि खोललनि। हम अँगनामे तुलसीक गमला लग ठाढ़ छलहुँ। मोहन बरामदामे समाचार-पत्रक पुरान पन्ना मोड़ि रहल छलाह। पूर्वक कोठलीक भीतर सँ अनुराधाक उत्तर सुनाइत छल—“ज्वर नहि। खाँसी नहि। साँसक कठिनाइ नहि। हँ, तापमान नापने छी।”

फोनक अन्तमे हुनका कहल गेल जे घरक पृथक्करणक सात दिन समाप्त भेल, तथापि भीड़ सँ बचू, मुखावरण राखू, आ कोनो लक्षण हो तँ तुरन्त सूचना दिअ। अनुराधा “ठीक अछि” कहलनि। पाँच मिनट पछाति दरबज्जा खोललनि। सात दिनमे ओ दरबज्जा अनेक बेर खुलल छल—थारी भीतर लेबाक लेल, बाल्टी बाहर रखबाक लेल, कूड़ा देबाक लेल—मुदा एहि बेर ओ स्वयं बाहर अयलीह।

हमरा लग ई घटना लेल कोनो संस्कार निर्धारित नहि अछि। न आरती, न अक्षत, न पाँजिक पाँति। अनुराधा पहिने अपन चप्पल बाहर रखलनि, फेर भीतर घुरि हाथ धोएलनि, फेर बाहर अयलीह। मोहन उठलाह। हुनकर पहिल प्रवृत्ति आगाँ बढ़बाक छल; अनुराधा हाथ उठा देलनि।

“एखनहुँ दूरी।”

मोहन ठमकि गेलाह। “सात दिन समाप्त।”

“सात दिन समाप्त भेल अछि, समझ नहि।”

हम एहि वाक्यक अर्थ पुछलहुँ नहि। घरमे आठम दिन आरम्भ भेल।

हमर घरमे तीन मुख्य कोठली, एक बरामदा, एक रसोई, एक स्नानघर, एक पाखाना आ अँगना अछि। एहि वास्तु-विवरणक महत्त्व हमरा पहिने एतेक नहि बुझाइत छल। तीन पीढ़ी एक छत तर रहबाक पहिल प्रश्न वंश नहि, स्नानघर छल।

अनुराधा एक कागज पर तीन नाम लिखलनि—रामानुग्रह, मोहन, अनुराधा। नामक आगाँ समय। पाँच सँ छओ। छओ सँ सात। सातक पछाति। कागज स्नानघरक किवाड़ पर चिपका देलनि।

हम पुछलियनि—“तिथि?”

ओ हमरा देखलनि। “की?”

“लेखक तिथि नहि अछि।”

ओ पेन लऽ कऽ ऊपर तिथि लिखि देलनि। “आब अभिलेख पूर्ण?”

“स्रोत नहि।”

ओ हँसलीह। “स्रोत हम छी।”

“तँ हस्ताक्षर करू।”

मोहन बरामदासँ कहलाह—“बाबूजी, स्नानघर लेल साक्षी सेहो चाही?”

हम उत्तर देलियनि—“विवाद भेल तँ चाही।”

अनुराधा पहिल बेर घर अएलाक पछाति जोर सँ हँसलीह। हँसी छोट छल, मुदा पूर्वक कोठलीक बन्द दरबज्जाक सात दिन सँ पृथक।

नियमक दोसर कागज रसोईक कात लगल। एकहि तौलिया नहि। गिलास पृथक। मोबाइल रसोईक चौकी पर नहि। बाहर सँ आयल थैला पहिने अँगनामे। दूधक पैकेट धोएब। सब्जी पानीसँ धोएब, साबुनसँ नहि। मोहन “साबुनसँ नहि”क नीचाँ दू बेर रेखा खींचलनि।

अनुराधा कहलनि—“अहाँ पछिला बेर बैंगन पर साबुन लगा देने रही।”

मोहन प्रतिवाद कयलनि—“एक बेर।”

“एक बैंगन नहि, चारि।”

हम एहि विवादक संख्या निश्चित नहि कयलहुँ। बैंगन सभ खाइ लेल गेल छल; प्रमाण नष्ट भऽ चुकल छल।

तीन स्टीलक गिलासक मूठमे अनुराधा तीन रंगक सूत बान्हि देलनि। हमर गिलासमे उज्जर, मोहनकमे नील, अपनमे लाल। हम पुछलियनि जे नाम लिखि देब सरल नहि छल? ओ कहलनि—“धोइत-धोइत स्याही मेटायत।”

हम कहलियनि—“तखन सूत सेहो पुरान होयत।”

“पुरान भेल तँ बदलि देब।”

“वंशक नियम नहि अछि।”

“गिलास अछि, बाबा।”

हम मानि लेलहुँ। वस्तुक प्रकृति अनुसार नियम होयबाक चाही। पाँजि आ गिलास एक पद्धतिसँ नहि चलैत।

नास्तामे चूड़ा-दही छल। हम अपन पुरान पीतल कटोरी निकाललहुँ। अनुराधा ओकरा हमरा हाथसँ नहि लेलनि। दूरसँ कहलीह—“ओकर उपयोग केवल अहाँ करू।”

“ई पहिनहिसँ हमर अछि।”

“तँ एहि घरमे पहिल नियम-अनुकूल वस्तु यएह भेल।”

हम ओकर बात बुझलहुँ, मुदा उत्तर मैथिलीमे देलहुँ—“पीतल कटोरी अनेक शासन देखलक अछि।”

मोहन फेर हँसलाह। अनुराधा कहलनि—“शासन नहि, धोअन देखलक अछि।”

भोजनक स्थान सेहो बदलल। पहिने बरामदामे दू पीढ़ीक स्थान छल—हम चौकी पर, मोहन पीढ़ा पर। अनुराधाक लेल तेसर पीढ़ा निकालल गेल। ओ तीनू कैं त्रिकोण जकाँ राखि देलनि, मुदा त्रिकोण शब्द ओ नहि कहलनि। ओ केवल कहलीह—“एतेक दूरी राखू।”

पहिल भोजनमे हमर आवाज सामान्यसँ ऊँच छल। दूरी बढ़ला पर लोक धीमे नहि बाजैत। मोहन दालि माँगलनि। कटोरी हाथसँ हाथ नहि गेल। अनुराधा एक अतिरिक्त करछुल बीचमे रखलनि। मोहन स्वयं लेलनि।

“घरमे एतेक करछुल छल?” मोहन पुछलनि।

“छल,” हम कहलियनि, “काज नहि पड़ैत छल।”

अनुराधा कहलनि—“लोक रहत तँ वस्तुक काज पड़त।”

वाक्य सामान्य छल। तथापि तीनू किछु क्षण चुप रहलहुँ। गामक खाली घर, चाबी, बन्द आलमारी, परदेस गेल लोक—ई सभ शब्द बिना कहलहुँ उपस्थित छल।

दुपहरिया धरि घरमे स्थान-विभाजनक दोसर चरण आरम्भ भेल। मोहन बरामदाक मेज पर जल संसाधन विभागक पुरान कागज पसारने छलाह। अनुराधा ओहि मेजक एक कोना लैपटॉप रखबाक लेल माँगलनि।

मोहन कहलाह—“ई फाइलसभ क्रममे अछि।”

“क्रम कतय? सभ एक दोसर पर।”

“हमरा ज्ञात अछि कोन कतय अछि।”

“तँ अहाँक क्रम अदृश्य अछि।”

हम एहि संवादमे हस्तक्षेप नहि कयलहुँ। अदृश्य क्रमक विषयमे हमर व्यवसाय मोहनक पक्षमे साक्ष्य दैत अछि, मुदा घरक मेज पँजी नहि छल।

अन्तमे अनुराधा लैपटॉप खिड़कीक चौकी पर रखलनि। तखन विद्युत्-बिन्दुक प्रश्न उठल। घरमे ओहि कात एकहि बिन्दु छल। मोहनक मोबाइल पहिने सँ लगल। अनुराधाक लैपटॉपक बैटरी अठारह प्रतिशत। हमर छोट फोनक बैटरीक चिह्न आधा।

तीन पीढ़ीक पहिल पैघ घरेलू विवाद सम्पत्ति पर नहि, विद्युत्-बिन्दु पर भेल।

मोहन कहलाह—“हमर फोन दस मिनट।”

अनुराधा कहलनि—“दस मिनट अहाँक घड़ीमे कतेक?”

“दस मिनट।”

“कुसहाक दस मिनट कि घरक दस मिनट?”

मोहनक हाथ चार्जर पर रुकल। हुनकर मुखक भाव बदलल, मुदा अनुराधा तुरन्त झोरा खोलि एक्सटेन्शन तार निकाललनि। “ठीक अछि। एहि लेल लड़ाइ नहि।”

ओ तार लगौलनि। तीन बिन्दु भेल। मोहन अपन फोन नहि हटौलनि। अनुराधा लैपटॉप लगा देलनि। तेसर बिन्दु खाली रहल। हम अपन छोट फोन लगा देलहुँ।

“बाबा!” अनुराधा कहलनि।

“की?”

“अहाँक बैटरी आधा छल।”

“खाली स्थान उपयोगमे आबि गेल।”

ओ माथ पकड़ि बैसलीह। मोहनक हँसी एहि बेर बरामदा पार कऽ अँगना धरि गेल।

दुपहरिया एक ग्राहकक फोन आयल। आवाजसँ ओहि लोककेँ पहचानलहुँ जे तीन मास पहिने पुत्रक विवाह लेल वंश-पाँति पूछने छल। आब ओ पुछलक—“पण्डितजी, लॉकडाउनमे वेबसाइट पर भेटल लड़िका भेटल अछि, पाँजि मिलत?”

हम कहलियैक—“घर अयबाक व्यवस्था एखन नहि।”

“मोबाइल पर देखू ने।”

“नाम, ग्राम, मूल लिखि पठाउ।”

“जाति प्रमाणपत्र सेहो पठाबी?”

“जँ वंश-जाँचक स्रोतमे उपयोगी भेल तँ देखब। प्रमाणपत्र पाँजिक स्थान नहि लैत अछि।”

अनुराधा खिड़कीक चौकीसँ सुनि रहल छलीह। फोन रखलाक पछाति ओ पुछलनि—“एखनहुँ विवाह?”

“विवाहक आवश्यकता पर शासनक प्रतिबन्ध नहि अछि,” हम कहलियनि।

“भीड़ पर अछि।”

“एहि लेल लोक पहिने वंश मिला रहल अछि।”

ओ कहलीह—“महामारीमे सेहो मिलान बन्द नहि।”

हम कहलियनि—“वंशक ग्राहक रोग-सूचना देखिकऽ समाप्त नहि होइत।”

ओ किछु कहबाक बाद रुकलीह। शायद जाति-प्रमाणपत्र विषयक किछु पुछय चाहैत छलीह। फेर लैपटॉपक पर्दा दिस घुरि गेलीह। प्रश्न स्थगित रहल।

साँझसँ पहिने अनुराधा पश्चिमक कोठलीक आलमारी देखलनि। ओहि कोठलीमे हमर पाँजिसभ, दैनिकी, खाली कागज, पुरान लिफाफा, सूत, लाल कपड़ा, मोहर आ प्रति-पाँजिक कापी राखल छल। ओ दरबज्जा पर ठाढ़ भऽ कहलीह—“बाबा, एहि कोठलीमे धूर बेसी अछि।”

हम कहलियनि—“कागजक कोठली अछि।”

“कागज धूर पैदा करैत अछि?”

“कागज धूर राखैत अछि।”

“काल्हि स्वच्छ करब।”

हम तुरन्त कहलियनि—“नहि, हम करब।”

ओ हमरा देखलनि। “किएक?”

“क्रम बिगड़त।”

“हम किछु छूब नहि। केवल धूर।”

“धूर सेहो क्रममे अछि।”

ई उत्तर सुनि ओ चुप्पे हमरा देखैत रहलीह, फेर कहलीह—“ठीक अछि। अपन ऐतिहासिक धूर स्वयं राखू।”

ओ गेलाक पछाति हम आलमारी खोललहुँ। प्रति-पाँजिक कापी पाछाँक तहमे छल। हम ओकरा निकालि स्थान बदललहुँ नहि। केवल ऊपरक दू लिफाफा सीधा कयलहुँ। जकरा लुकायब हो ओकरा बेराबेरी छुअब उचित नहि। छुअल वस्तु पर ध्यान जाइत अछि।

मोहन साँझमे अपन पुरान फाइल समेटैत छलाह। एक फाइलक मुखपृष्ठ पर ठेका-सामग्री प्रमाणनक वर्ष छल। ओ कागज हमरा पहिनहिसँ ज्ञात छल। अनुराधा ओतय अयलीह तँ मोहन फाइल उलटि देलनि। ई क्रिया हम देखलहुँ। अनुराधा देखलीह कि नहि, कहि नहि सकैत छी। हम कोनो टिप्पणी नहि कयलहुँ।

रसोईमे रातिक भोजन बनैत समय तेसर विवाद नून पर भेल। अनुराधा कहलनि जे बाबा कम नून खाउ। हम पुछलियनि—“ककर लिखित निर्देश?”

ओ मोबाइल खोललनि। “डॉक्टरक पुरान प्रिस्क्रिप्शन अछि।”

“तिथि?”

“दुइ वर्ष पहिने।”

“नवल जाँच?”

“नहि।”

“तँ पुरान निर्देश वर्तमान निर्णयक एक स्रोत मात्र भेल।”

ओ करछुल रखि हमरा देखलनि। “अहाँ बीमारीकेँ सेहो पँजी बना देब।”

हम कहलियनि—“नहि। पँजीमे नूनक परिमाणक कोष्ठ नहि अछि।”

मोहन बीचमे कहलाह—“एहि तर्कसँ नून बढ़त कि घटत?”

अनुराधा नूनक डिब्बा उठाकऽ ऊपरक आलमारीमे राखि देलनि। “निर्णय स्थगित।”

राति भोजनक पछाति बिजली गेल। अँगनामे अन्हार खसल। मोहन मोबाइलक टॉर्च खोललनि। अनुराधा अपन फोनक टॉर्च खोललनि। हम अपन छोट फोन हाथमे लेने रहलहुँ; ओकर टॉर्च

खोलबाक बटन हम प्रायः बिसरि जाइत छी। अनुराधा हमर फोन लऽ कऽ बटन दबौलनि। तीन छोट उजास भेल।

“आब तीन पीढ़ी एकहि काज करैत अछि,” ओ कहलीह।

“अन्हार देखैत?” मोहन पुछलनि।

“नहि, बैटरी समाप्त करैत।”

बिजली पन्द्रह मिनट पछाति आयल। तीनू फोन फेर एक्सटेन्शन तार दिस गेल। अनुराधा एहि बेर हमर फोन नहि लगय देलनि। “अहाँक बैटरी एखन पर्याप्त अछि।”

हम प्रतिवाद नहि कयलहुँ। घरमे शासनक एक नवल स्तर स्थापित भऽ गेल छल।

सूतबाक पहिने ओ अपन मसहरी निकाललनि। मस्कटसँ नहि, घरक पुरान सन्दूकसँ। कपड़ा धूपमे सुखाओल गेल छल। मोहन रस्सी बाँधि देलनि। अनुराधा कहलनि—“ई गाँठ ढीला अछि।”

मोहन कहलाह—“इन्जीनियर छी।”

“तँ गाँठ किएक ढीला?”

“इन्जीनियर रस्सीक ठेकेदार नहि होइत अछि।”

हम कहलियनि—“ई कथन लिखल जा सकैत अछि।”

दुनू एक संग हमरा देखलनि।

“नहि लिखू,” दुनू कहलनि।

चारि दशकमे पहिल बेर हमर घरक एकहि रातिक लेखामे तीन पीढ़ीक भोजन, स्नान, औषधि, मोबाइल, कागज आ सूबाक व्यवस्था एक संग आयल। एहि संगहि तीन पृथक मौन सेहो छल। मोहन अपन फाइल विषयक किछु नहि कहलनि। अनुराधा परिवार विषयक अपन पुरान प्रश्न फेर नहि दोहरौलनि। हम प्रति-पाँजि विषयक किछु नहि कहलहुँ।

एक छत मौनकेँ समाप्त नहि करैत अछि। केवल ओकर दूरी घटबैत अछि।

राति दस बजि पैंतीस मिनट पर हम दैनिकी खोललहुँ। दूधक लेखा, ग्राहकक फोन, बिजली जाएबाक समय लिखलहुँ। तकर बाद एक नवल पाँति जोड़लहुँ—“घरमे उपस्थित: रामानुग्रह, मोहन, अनुराधा।”

तकर नीचाँ लिखलहुँ—“भोजन एकहि रसोईसँ। स्नानघरक क्रम लिखित। विद्युत्-बिन्दु पर असहमति समाप्त।”

हम “तीन पीढ़ी” लिखबाक विचार कयलहुँ, मुदा नहि लिखलहुँ। नाम पर्याप्त छल।

दैनिकी बन्द कयलहुँ। बाहर बरामदामे तीन जोड़ी चप्पल छल। भीतर तीन मोबाइल पृथक-पृथक ठाम राखल छल। स्नानघरक किवाड़ पर अनुराधाक कागज एखनहुँ चिपकल छल, ऊपर तिथि आ नीचाँ ओकर हस्ताक्षर सहित।

अध्याय ४३ — कोसी — ७

हम बहैत छी आ एहि बेर बाटसभ विरल अछि आ रेलक पटरिया पर दिनक दीर्घ उजास खाली पड़ल अछि आ हाटक चौकमे धूर उठैत नहि अछि आ विद्यालयक फाटक बन्द अछि आ कारखानाक धुआँ अनेक ठाम रुकल अछि आ मनुष्य अपन घरक भीतर संख्या गनैत अछि दिन गनैत अछि दूरी गनैत अछि ताप गनैत अछि साँस गनैत अछि आ हम संख्या नहि गनैत छी हम केवल जलक चढ़ाव उतराव बुझैत छी हम पहाड़सँ आयल धारक भार बुझैत छी हम उपधाराक संगम बुझैत छी हम बालूक नवल तह बुझैत छी आ जे समय मनुष्य अपन देहकेँ एक कोठलीसँ दोसर कोठली धरि सीमित करैत अछि ओहि समय हम पुरान कछेर छुबैत छी नवल कात काटैत छी आ तटबन्धक भीतर सँ बाहरक खेतक गन्ध लैत छी आ बाहर सँ भीतरक माटि बहबैत छी आ हमरा लेल बन्दक कोनो आदेश नहि अछि मुदा एहि स्वतंत्रतामे सुख नहि अछि कारण हम जखन बहैत छी तखन हमरा संग माटि चलैत अछि घास चलैत अछि सूखल डाँठ चलैत अछि प्लास्टिकक थैली चलैत अछि औषधिक खाली पट्टी चलैत अछि टूटल चप्पल चलैत अछि चुल्हिक राख चलैत अछि आ कखनो एहन कागजक टुकड़ा चलैत अछि जाहिपर नामक आध अक्षर बचल अछि आ मनुष्यक घर भीतर नाम सभ सुरक्षित रहय लेल आलमारी बनैत अछि पेटार बनैत अछि मोबाइलक स्मृति बनैत अछि कागजक लिफाफा बनैत अछि मुदा हमरा कात नामक आध अक्षर सेहो भारक एक हलुक कण मात्र अछि आ जखन जल घटैत अछि तखन ओ कण बालूक ऊपर अटकैत अछि आ कियो ओकरा उठबैत अछि आ कियो पयरक नीचाँ कुचलि दैत अछि आ कियो देखैत सेहो नहि अछि आ एहि समय घर भीतर तीन पीढ़ी एकहि छत तर रहैत अछि तखन तीनू अपन अपन वस्तु पृथक राखैत अछि एकर औषधि ओतय दोसरक मोबाइल एतय तेसरक कागज भीतरक पेटारमे आ एक स्नानघरक किवाड़ पर समय लिखल जाइत अछि आ हम समयक किवाड़ नहि देखैत छी हम भोरक शीतलता बुझैत छी दुपहरक ताप बुझैत छी साँझक हावा बुझैत छी रातिक घटैत आवाज बुझैत छी आ जखन बाट पर बस नहि चलैत अछि तखन दूरक पयरक आवाज बेसी स्पष्ट सुनाइत अछि आ जखन रेल बन्द होइत अछि तखन पटरिक कात घास फेर माथ उठबैत अछि आ जखन लोक गाम दिस घुरैत अछि तखन बोरा पीठ पर चढ़ैत अछि बालक गोदमे चढ़ैत अछि पानीक बोतल हाथमे रहैत अछि टिकट कखनो रहैत अछि कखनो नहि रहैत अछि आ नामक सूची अनेक चौकी पर बनैत अछि एकहि नाम बेराबेरी लिखल जाइत अछि एकहि उमेर पृथक अंकमे पहुँचैत अछि एकहि गामक वर्तनी दू रूप लैत अछि आ शरीरक ताप एक पन्नासँ दोसर पन्ना धरि चलैत अछि आ हम एहि लिखल सभकेँ दूरसँ नहि पढ़ैत छी मुदा कागज

जखन भीजैत अछि तखन कालिक गन्ध जलमे मिलैत अछि आ हमरा बुझाइत अछि जे मनुष्य संकटमे सभसँ पहिने अपन देहक संग कागज बचबैत अछि आ कखनो कागज देहसँ पहिने पहुँचैत अछि आ कखनो देह पहुँचैत अछि कागज पाछाँ रहि जाइत अछि आ कखनो दुनू एकहि वाहनमे रहैत अछि मुदा उतरबाक ठाम पृथक होइत अछि आ हमरा कात एहन पृथकता पुरान अछि एक धारक जल दोसर धारमे मिलैत अछि एक खेतक माटि दोसर खेतक कात जमैत अछि एक गामक बाँस दोसर गामक बालूमे अटकैत अछि आ लोक फेर सीमा बनबैत अछि घरक सीमा टोलक सीमा जिलाक सीमा देशक सीमा रोगक सीमा स्पर्शक सीमा आ सभ सीमाक भीतर एक छोट रिक्ति छोड़ैत अछि जतय शंका रहैत अछि आ शंका पर कियो मुहर नहि लगा सकैत अछि आ एहि रिक्तिमे हम पुरान वर्षसभक आवाज नहि सुनैत छी मुदा पुरान जलक पथ माटिक नीचाँ रहैत अछि आ जखन बेसी वर्षा अबैत अछि तखन ओ पथ फेर सहज होइत अछि आ मनुष्य आश्चर्य करैत अछि जे जल एतय किएक आयल मुदा माटि आश्चर्य नहि करैत अछि कारण माटि पुरान दबाव रखैत अछि बालू पुरान ढलान रखैत अछि नीचाँक गह्वर पुरान जलक स्मृति रखैत अछि आ मनुष्य सेहो किछु एहन रखैत अछि जे ओ कहैत नहि अछि पिता अपन बेटासँ नहि कहैत अछि बेटा अपन बेटी सँ नहि कहैत अछि बेटी अपन प्रश्न फेर स्थगित करैत अछि आ एकहि छत तर मौनक दूरी घटैत अछि मुदा मौन समाप्त नहि होइत अछि आ हमरा कात सेहो एहन नीरव भाग अछि जतय ऊपर जल बहैत देखाइत अछि मुदा नीचाँ भारी बालू धीरे धीरे सरकैत अछि आ बाहरी आँखिक लेल किछु नहि बदलैत अछि मुदा भीतर भारक स्थान बदलैत रहैत अछि आ एक दिन ओही बदलल भारक कारण कात धँसैत अछि आ लोक तखन कारण खोजैत अछि आ पुरान कागज खोलैत अछि आ पुरान पाँति पढ़ैत अछि आ किछु पाँति स्पष्ट भेटैत अछि किछु मेटाओल किछु भीजल किछु अधूरा आ किछु एहन जाहि ठाम लिखनिहार रिक्त छोड़ने अछि आ हम रिक्ति नहि भरैत छी हम ओकरा पार करैत छी हम बहैत छी आ एहि बहबामे जे पाथर ठाढ़ अछि ओकर कात सँ जाइत छी जे बाँस झुकल अछि ओकर जड़ धोइत छी जे नाव बाँधल अछि ओकर रस्सी तानैत छी आ जे घरक दुआर बन्द अछि ओकर नीचाँक माटि भीजबैत छी आ भीतर तीन लोक अपन अपन साँसक लय सुनैत अछि आ घरक देबाल पर पुरान घड़ी चलैत अछि आ रसोईक बासनक आवाज दिनक भाग चिन्हैत अछि आ किवाड़ पर चिपकल कागजक कोर धीरे धीरे मुड़ैत अछि आ ओहि छोट घरमे दिनक क्रम लिखल रहैत अछि जखन बाहरक विस्तृत भूमि पर कोनो लिखित क्रम हमरा रोकैत नहि अछि आ बाहर हम अपन लयमे चलैत छी आ दुनू लय एक दोसरकेँ आदेश नहि दैत अछि मुदा दुनू एकहि समयमे रहैत अछि आ समयक एहि एक साथ रहबामे पुरान

पाँति आ नवल हस्ताक्षर एकहि घरमे रहैत अछि आ एखन एक दोसर सँ पृथक अछि मुदा दूरी एतेक कम भऽ गेल अछि जे एक दिन कियो कागज उठाओत एक पन्ना उलटत एक लिखावट दोसर लिखावटकेँ छुबत आ तखन सेहो हम बहैत रहब

अध्याय ४४ — प्रति-पाँजि

कोसीक पानी ओहि सप्ताह घटल छल। घरक भीतर मुदा वस्तुसभक स्थान एखनहुँ बदलैत रहैत छल। अनुराधा अपन मस्कटक बैग पूर्वक कोठलीसँ निकालि बरामदामे रखलनि, मोहन पुरान अखबार बान्हि रहल छलाह, आ हम मेज पर दू ग्राहकक वंश-पत्र पृथक कऽ रहल छलहुँ। मेजक नीचाँ पुरान कपड़ाक झोला छल। ओहि झोलाक विषयमे घरक ककरो सँ किछु कहने नहि रही।

अनुराधा विद्युत्-विस्तारक तार खोजैत छलीह। हुनकर मोबाइलक चार्जरक तार छोट पड़ैत छल। ओ मेजक नीचाँ हाथ देलनि, पहिने धूलि लागल एक डिब्बा निकाललनि, तकर पाछाँ झोला।

“दादा, एहि मे की अछि?”

हम उत्तर देबासँ पहिने झोलाक गाँठ हुनकर हाथमे आबि गेल। गाँठ कठोर नहि छल। ओ खोललनि। फीका हरियर जिल्द बाहर देखायल।

हम कहलियनि—“ओ पोथी हमरा दिअ।”

ओ पोथी उठा लेलनि, मुदा देबाक पहिने पहिल पृष्ठ खोलि देलनि।

ऊपर तिथि छल। तकर नीचाँ हमर लिखावटमे दू शब्द—“प्रति-पाँजि।”

अनुराधा शब्द दू बेर पढ़लनि। पहिल बेर अपने लेल, दोसर बेर हमरा सुनयबाक लेल।

“प्रति-पाँजि।”

हम हाथ बढ़ेलहुँ। ओ पोथी हमरा देलनि। पोथीक भार परिचित छल। जिल्दक बाम कोनमे जे घिसाइ छल, से अँगुरीसँ चिन्हलहुँ। पृष्ठ खोललहुँ। अक्षर देखायल, मुदा अक्षरक भीतरक भेद नहि। हम पोथीकेँ आँखिक लग अनलहुँ। फेर दूर कयलहुँ। खिड़की दिस घुमेलहुँ। उजास पर्याप्त छल।

अनुराधा किछु नहि कहलनि।

हम दोसर पृष्ठ पलटलहुँ। पाँति सभ हमरा अपन लिखावट जकाँ देखाइत छल, मुदा पढ़ाइत नहि छल। कतेको वर्ष हम आन लोकक पुरखा ओहि अक्षरसभसँ चिन्हने रही। आब अपन हाथक अक्षरक नाम अनुराधाक मुँहसँ सुनबाक छल।

हम पोथी ओकरा देलियनि।

“पढ़ि दिअ।”

ओ बैसलनि। मोहन अखबारक डोरी बान्हब छोड़ि बरामदाक खम्भा लग ठाढ़ भऽ गेलाह। हम हुनका बाहर जाएबाक नहि कहलियनि। अनुराधा पहिल पृष्ठ फेर खोललनि।

“पहिल नियम—अनुमानकेँ तथ्य नहि लिखब।”

ओ रुकलनि।

“दोसर—जकर स्रोत ज्ञात, ओकर स्रोत संग लिखब।”

हम माथ हिलयबाक बदला अँगुरीसँ मेज पर एक बेर ठोकलहुँ।

“तेसर—जकर नाम मूलमे नहि, ओकर नाम एतय केवल साक्ष्य सहित। चारिम—शंका लेल रिक्त स्थान छोड़ब। पाँचम—मूल पाँति नहि काटब।”

ओ पृष्ठ पलटलनि।

“श्रीधरक उत्तरवर्ती पाँति मूल पत्र पर घर्षणसँ मेटाओल। मेटेबाक हाथक लिखावट हरिनारायणक लेखसँ मेल खाइत। मूल शब्द अपठनीय।”

अनुराधा एहि पाँतिक पछाति हमरा देखलनि।

हम कहलियनि—“आगाँ।”

ओ पढ़लनि—“फुलझरी—नाम मौखिक साक्ष्यसभमे। मूल पँजीमे अनुपस्थित।”

मोहनक हाथमे डोरी एखनहुँ छल। ओ खम्भा लगसँ हटला नहि।

“जगेसर सदा—हरवाहक कथनमे स्पष्ट। पुरान बसावट-स्मृतिमे संगति। मूल पँजीमे अनुपस्थित।”

अनुराधा पृष्ठक एक ठाम अँगुरी रोकलनि।

“एतय लिखल अछि—सम्बन्धक स्वरूप विवादित; विवाहक दावा एक स्रोतमे प्रत्यक्ष, दोसर स्रोतसभमे परोक्ष।”

“हँ।”

“ई अहाँ लिखने छी?”

हम कहलियनि—“लिखावट हमर अछि।”

“हम पूछलहुँ, बात अहाँक अछि?”

“जतय स्रोत लिखल अछि, ओतय स्रोतक बात अछि। जकर स्रोत नहि, ओकरा हमर बात नहि मानू।”

ओ फेर पृष्ठ देखलनि। हुनकर मुख पर क्रोध छल कि थकान, हम निश्चित नहि कहि सकलहुँ। निश्चित नहि हो तँ लिखबाक नहि—ई नियम पोथीमे छल; मनुष्यक मुख पर सेहो लागू कयल जा सकैत अछि, मुदा हम दैनिकीमे ई वाक्य नहि लिखलहुँ।

अनुराधा पढ़लनि—“हिंसक मृत्युक कथन उपलब्ध; मृतकक पहचान सिद्ध नहि।”

एहि बेर घरमे कोनो आवाज नहि छल। रसोईमे रखल ढक्कन हलुक हवा सँ एक बेर खनकल। बाहर कियो साइकिल लऽ कऽ गेल। घंटी एक बेर बाजल।

ओ तेसर पृष्ठ खोललनि। अस्थिक स्थान, माटिक नमुना, पुलिसक क्रमांक, जाँच लेल पठाओल अस्थि। नामक कोष्ठ खाली।

“नाम किएक नहि?”

“नामक प्रमाण नहि।”

“अहाँकेँ शंका अछि?”

“शंका लेल रिक्त स्थान छोड़ल अछि।”

“रिक्त स्थानक भीतर शंका पढ़ल जा सकैत अछि?”

“नहि। रिक्त स्थान केवल रिक्त स्थान अछि।”

अनुराधा एहि उत्तर पर हँसलीह नहि। मोहन सेहो नहि।

चारिम पृष्ठ पर मोहनक नीला फाइल आयल। अनुराधा पढ़लनि—मापन-पुस्तिका, चालीस हजार रुपैया, जमा-पर्ची, कारण-सम्बन्ध सिद्ध नहि। ओ एक बेर अपन पिता दिस देखलनि। मोहन कहलाह—“ई हम कहने रही।”

अनुराधा केवल “हँ” कहलनि आ आगाँ बढ़लीह।

पाँचम पृष्ठ पर शीर्षक छल—“जकर नाम नहि।”

पहिल पाँति खाली।

दोसर पाँति—“ओ स्त्री जकर नाम वंश-पाँतिमे नहि।”

तेसर—“ओ पुरुष जकर नाम विवाह-पाँतिमे नहि।”

चारिम—“ओ सन्तान अथवा वंश जकर विषयमे साक्ष्य एखन अधूर।”

अनुराधा “सन्तान” शब्द पर रुकलनि। तकर कात कोष्ठकमे हमर छोट अक्षर छल—“सम्भावना।”

“ई सम्भावना ककर?”

हम पोथी दिस देखलहुँ। अक्षरक आकार देखाइत छल; शब्द नहि।

“जे लिखल अछि, ओ पढ़ू।”

“हम पढ़ि रहल छी।”

“तँ सम्भावना एखन सम्भावनहि अछि।”

ओ पोथी बन्द नहि कयलनि। अन्तिम पृष्ठ धरि गेलनि।

“ई पोथी मूल पँजीक स्थान नहि लेत।”

तकर नीचाँ ओ पढ़लनि—“मूल पँजी जे कहैत अछि, से मूलक साक्ष्य। ई पोथी जे पूछैत अछि, से प्रश्नक साक्ष्य।”

हम हाथ बढ़ेलहुँ। एहि बेर ओ पोथी हमरा नहि देलनि। ओ हमर सोझाँ मेज पर राखि देलनि, खुलल पृष्ठ ऊपर।

“दादा, ई पाँति अहाँ स्वयं पढ़ि सकैत छी?”

प्रश्न सरल छल।

हम चश्मा उतारि कपड़ासँ पोंछलहुँ। फेर पहिरलहुँ। पृष्ठकेँ उजास दिस कयलहुँ। “मूल” शब्दक पहिल अक्षर अनुमानसँ चिन्हलहुँ। अगिला अक्षर धुँधला छल। हम मेजक दराजसँ गोल आतस-काँच निकाललहुँ। एहि काँचसँ हम अनेक वर्ष धुँधल स्याही पढ़ने रही। काँच अक्षर पैघ कयलक, स्पष्ट नहि।

हम पृष्ठ अनुराधा दिस घुमा देलहुँ।

“फेर पढ़ि दिअ।”

ओ पढ़लनि। धीरे नहि, नाटकीय ढङ्गे नहि। जेना अस्पतालमे औषधिक नाम पढ़ैत होथि, जेना फोन पर कोनो संख्या दोहरबैत होथि।

“मूल पँजी जे कहैत अछि, से मूलक साक्ष्य। ई पोथी जे पूछैत अछि, से प्रश्नक साक्ष्य।”

हम सुनलहुँ।

मोहन बरामदासँ भीतर अयलाह। ओ कुर्सी नहि खींचलनि। मेजक कात ठाढ़ रहलाह।

अनुराधा पहिल पृष्ठ पर घुरलीह। पाँच नियम फेर देखलनि। तकर बाद पोथी बन्द कयलनि।

“एकरा फेर झोलामे राखब?”

हम उत्तर देबामे किछु बेर लेलहुँ।

“नहि।”

“कतय?”

हम मूल पँजीक सन्दूक दिस देखलहुँ। फेर मेज दिस।

“एतय।”

ओ प्रति-पाँजि मेजक दहिना कोन पर राखि देलनि, दैनिकीसँ पृथक, मूल पँजीसँ पृथक।

साँझमे हम दैनिकी खोललहुँ। तिथि लिखलहुँ। तकर नीचाँ—“प्रति-पाँजि अनुराधाक हाथ पड़ल।”

किछु बेर पछाति एक दोसर पाँति जोड़लहुँ—“ओ हमरा पढ़ि सुनौलनि।”

तेसर पाँति लिखबाक लेल कलम उठौलहुँ। अपन लिखल अक्षर देखलहुँ। लिखिते अक्षर देखाइत छल; कलम हटिते ओकर किनार धुँधला पड़ैत छल।

हम तेसर पाँति नहि लिखलहुँ।

मेजक दहिना कोन पर हरियर पोथी खुलल नहि छल, मुदा आब गाँठल झोलाक भीतर सेहो नहि छल।

अध्याय ४५ — जे बाँचल

प्रति-पाँजि मेज पर आब खुलल रहय लगल। अनुराधा ओकरा फेर झोलामे नहि रखलनि। दोसर दिन भोरमे ओ पाँचम पृष्ठ खोलि “सन्तान अथवा वंश”क पाँति पर अँगुरी रखलनि।

“दादा, एहि सम्भावनाक स्रोत कतय अछि?”

हम कहलियनि—“एखन स्रोत अधूर अछि।”

“अधूर कतय धरि?”

हम उत्तर नहि देलहुँ। पुरान पेटारसँ १९३४क बाढ़ि-पछातिक तीन कागज निकाललहुँ—घर-क्षतिक सूची, अन्न-सहायताक बहि, आ नव बासक ग्राम-बैसार पन्ना। दक्षिणक मुसहर टोल बाढ़िमे पुरान ठामसँ उजड़ल छल। एक वर्ष पछिलाक बहिमे ओहि टोलक सात परिवार पृथक-पृथक गामक नामक नीचाँ भेटैत छल। एहि सातमे एक नामक आगाँ लिखल छल—“दलित सदा परिवारक शेष लोक।” ‘शेष लोक’ कतेक, नाम की, से नहि छल।

जगेसरक बाबूक नाम बुधन सदाक कथनमे दलित सदा छल। नामक मेल प्रमाण नहि। तें हम ओहि पाँतिक कात वर्ष पहिने प्रश्नचिह्न नहि, केवल बुधन सदाक कथनक सन्दर्भ लिखने रही।

अनुराधा कागज देखलनि।

“एहि परिवारक आगाँ कोन गाम लिखल अछि?”

हम नाम पढ़बाक चेष्टा कयलहुँ। पहिल अक्षर देखायल, आगाँ धुँधला। कागज ओकरा देलियनि। ओ पढ़लनि। गाम एतयसँ पूब-दक्खिन दिस छल। नाम हमरा परिचित छल।

मोबाइलक नक्शामे ओ दूरी देखलनि।

“एगारह किलोमीटर।”

हम कहलियनि—“बाटक दूरी?”

“हँ। सीधा रेखा कम होयत।”

दूरीक ई भेद दैनिकीमे लिखबाक आवश्यकता नहि छल। हमरा काज ठाम धरि पहुँचब छल।

तीन दिन पछाति मोहन एक छोट भाड़ाक सवारी मँगौलनि। हम, अनुराधा आ मोहन गेलहुँ। मुख्य बाट छोड़लाक पछाति कच्चा बाट छल। अन्तिम दू सय हाथ सवारी नहि गेल। हम उतरि कऽ पैदल चललहुँ। टोलक आरम्भ चापाकलसँ भेल। चापाकलक कात तीन पीतल-रंगक प्लास्टिक बाल्टी, एक लोहेक बाल्टी, दू जोड़ी चप्पल, साबुनक आध टुकड़ी आ भीजल माटि छल।

हम ककरो घरक विषयमे पहिने नहि पुछलहुँ। दलित सदाक नाम पुछलहुँ। पहिल युवक नाम नहि चिन्हलक। एक वृद्ध कहलाह—“पुरान नाम अछि। अहाँ ककरा खोजैत छी?”

हम बुधन सदाक नाम कहलहुँ। ओ चिन्हलनि नहि। जगेसर सदाक नाम पर हुनकर आँखि कने रुकल।

“हमर बाबा कहैत छलाह। ओ नाम पुरान कथा मे अबैत छल।”

हम कथा नहि पुछलहुँ। कहलियनि—“ओहि परिवारक वंश एतय अछि?”

वृद्ध एक घर दिस अँगुरी देखौलनि। माटिक भीत पर नवल टीनक छाजन छल। दुआरक कात साइकिल, भीतर सिलाइ-मशीनक आवाज।

घर भीतरसँ एक स्त्री बाहर अयलीह। उमेर चालीस-पैंतालीसक बीच। हुनकर हाथमे अधसिलल नीला कपड़ा छल। वृद्ध कहलाह—“लक्ष्मी, ई लोक पुरान नाम पुछय आयल छथि।”

लक्ष्मी सदा पहिने हमरा, फेर अनुराधाकेँ देखलनि। मोहन पाछाँ ठाढ़ रहलाह।

“कोन नाम?”

“फुलझरी।”

सिलाइ-मशीनक पाँव-चक्का भीतर धीरे-धीरे घुमैत रुकि गेल। लक्ष्मी सदा उत्तर देबासँ पहिने कपड़ा मोड़लनि।

“हमर परदादीक माय।”

अनुराधा हमरा देखलनि। हम लक्ष्मी सदाकेँ कहलियनि—“नामक सम्पूर्ण क्रम कहि सकैत छी?”

ओ घरक भीतर गेलीह आ एक टीनक डिब्बा अनलीह। डिब्बामे बैंकक पुरान पासबुक, विद्यालयक दू प्रमाणपत्र, भूमि-विहीन परिवारक बास-पर्चाक छायाप्रति, विवाहक निमन्त्रण-पत्र, औषधिक पर्ची आ लाल कपड़ामे बान्हल तीन कागज छल। ओ लाल कपड़ा खोललनि।

पहिल कागज विवाहक निजी लिखित विवरण छल। कागजक कोर कटल, बीचमे तहक निशान। तिथि पचासक दशकक। वरक नाम, कन्याक नाम—सुगनी। कन्याक मायक नाम—फुलझरी। मायक ग्रामक ठाम हमर गामक पुरान नाम लिखल छल, ओहि वर्तनीमे जे पुरान लगान-पत्रमे भेटैत अछि। पिताक नामक ठाम मसि फैलल छल। दू अक्षर पढ़ाइत, शेष नहि।

हम पुछलियनि—“ई कागज ककर लिखल?”

लक्ष्मी कहलनि—“हमरा ज्ञात नहि। दादी रखैत छलीह। माय कहैत छलीह जे विवाहक समयक अछि।”

“दादी सुगनी?”

“हँ।”

दोसर कागज पर सुगनीक नाम, ओकर पुत्र बिन्देश्वरक नाम आ घरक पुरान ठाम छल। तेसर कागज पछिलाक छल—बिन्देश्वरक मृत्यु-पछातिक परिवारक लिखित विवरण। ओहि पन्नामे लक्ष्मी आ हुनकर दू भायक नाम छल।

कागज तीनू एकहि प्रकारक प्रमाण नहि छल। पहिल निजी विवाह-विवरण, दोसर ग्रामक हाथे लिखल परिवार-सूची, तेसर पछिलाक घरक कागज। मुदा सुगनी सँ बिन्देश्वर, बिन्देश्वर सँ लक्ष्मी धरि नामक क्रम टूटैत नहि छल। पहिल कागज सुगनीक मायक नाम फुलझरी कहैत छल।

हम पुछलियनि—“अहाँक घरमे फुलझरीक विषयमे की कहल जाइत अछि?”

लक्ष्मी उत्तर तुरन्त नहि देलनि। एक खाट बाहर खींचि रखलनि। हम बैसलहुँ। अनुराधा खाट पर नहि, कातक प्लास्टिक कुर्सी पर बैसलीह। मोहन ठाढ़ रहलाह।

“तीन बात सुनने छी,” लक्ष्मी कहलनि। “एक, ओ उत्तरक पैघ घरसँ आयल छलीह। दोसर, हुनकर अपन घरक लोक हुनका फेर स्वीकार नहि केलक। तेसर, ओ सुगनीकेँ छोड़ि किछु वर्ष पछाति कतहु चलि गेलीह कि मरि गेलीह—एहि पर घरमे एक बात नहि कहल जाइत।”

हम पुछलियनि—“जगेसर?”

“नाम सुनने छी। सम्बन्ध की, एहि परो लोक पृथक-पृथक कहैत छल।”

“कियो कहैत छल जे सुगनी हुनकर बेटी छलीह?”

लक्ष्मी कने देर हमरा देखलनि।

“कियो कहैत छल। कियो कहैत छल नहि। हमरा लग जतेक कागज अछि, ओ देखू। जे नहि अछि, से हम किएक बनाबी?”

ई उत्तर प्रति-पाँजिक पहिल नियमसँ मेल खाइत छल। हम ओकरा एहि कारण प्रशंसा नहि कयलहुँ। केवल कागज फेर देखलहुँ।

अनुराधा पुछलनि—“फुलझरी नाम घरमे एखन के कहैत छथि?”

लक्ष्मी कहलनि—“माय जीवित छलीह तखन कहैत छलीह। एखन हम कहैत छी जखन कियो पुछैत अछि। अधिकतर कियो पुछैत नहि।”

टोलक वृद्ध, जे हमरा घर धरि अनने छलाह, एखन दुआरक कात बैसि गेल छलाह। ओ कहलाह—“हमर माय सुगनीकेँ चिन्हैत छलीह। कहैत छलीह जे ओकर माय ब्राह्मण घरक छलीह। नाम फुलझरी। मुदा हम अपन आँखिसँ फुलझरीकेँ नहि देखने छी।”

हम हुनकर कथनक स्रोत पुछलहुँ। ओ अपन मायक नाम कहलनि। तिथि नहि। हम नोटबुकमे लिखलहुँ—“द्वितीय श्रेणीक मौखिक साक्ष्य; प्रत्यक्ष नहि।”

लक्ष्मी हमर लिखनाइ देखैत छलीह।

“अहाँ पँजीकार छी?”

“छी।”

“तँ हमरा सभक नाम ओहि पँजीमे छल?”

“नहि।”

“फुलझरीक?”

हम उत्तर देबासँ पहिने कागज समेटलहुँ।

“मुख्य पाँतिमे नहि।”

ओ हँसलीह नहि। हुनकर मुख पर क्रोधो स्पष्ट नहि छल। ओ केवल पुछलनि—“एतेक वर्ष पछाति अहाँ किएक खोजैत छी?”

हम कहलियनि—“मेटाओल पाँति भेटलाक पछाति जाँच आरम्भ भेल।”

“आब लिखलासँ की होयत?”

हम कहलियनि—“कागजमे जे अनुपस्थित छल, ओकर एक हिस्सा उपस्थित होयत।”

“हमरा की भेटत?”

“किछु नहि।”

उत्तर देलाक पछाति हम ओकरा फेर बदललहुँ नहि।

लक्ष्मी लाल कपड़ा फेर बान्हि देलनि। पहिल कागजक छायाचित्र लेबाक अनुमति पुछलहुँ। ओ कहलीह—“लिअ। मुदा मूल एतहि रहत।”

“मूल एतहि रहत,” हम दोहरौलहुँ।

अनुराधा मोबाइलसँ छायाचित्र लेलनि। पहिने सम्पूर्ण पन्ना, तकर बाद नामक भाग। कागज पर हाथ नहि दबौलनि। अध्याय अड़तीसमे जे नियम ग्राहक लेल बनौने रही, एतय हमर नातिन हमरा सँ बेसी ठीक सँ पालन कयलनि। ई बात हम ओकरा नहि कहलियनि।

लक्ष्मी पुछलनि—“अहाँ फुलझरीक घरक लोक छी?”

हम कहलियनि—“हम ओहि परिवारक वंशमे छी जाहि परिवारक पँजिसँ हुनकर नाम मेटाओल गेल।”

एहि वाक्यक पछाति दुआर पर मौन रहल। कियो क्षमा नहि माँगलक। कियो क्षमा नहि देलक। चापाकल पर बाल्टी बदलल। भीतर सिलाइ-मशीन फेर चलय लगल।

लक्ष्मी अन्तमे कहलनि—“तँ लिखू। मुदा हमर घरक कागज हमरा देब।”

“एतय सँ कोनो मूल कागज नहि जाएत।”

ओ लाल कपड़ाक गट्ठर टीनक डिब्बामे रखलनि। डिब्बा खाटक नीचाँ गेल।

घुरैत काल अनुराधा पुछलनि—“एहि भेटक नाम की लिखब?”

हम कहलियनि—“साक्ष्य-संग्रह।”

“एतबे?”

“एतबे।”

घर पहुँचि हम प्रति-पाँजि खोललहुँ। पाँचम पृष्ठक “सन्तान अथवा वंश”क पाँतिक नीचाँ नवल लेख जोड़लहुँ—“जीवित शाखाक साक्ष्य उपलब्ध। स्थल—एगारह किलोमीटर पूब-दक्खिनक मुसहर टोल। स्रोत एक—सुगनीक विवाहक निजी विवरण; माता फुलझरी। स्रोत दुइ—सुगनी सँ बिन्देश्वर, बिन्देश्वर सँ लक्ष्मी धरि परिवारक लिखित क्रम। स्रोत तीन—टोलक मौखिक स्मृति; प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि। जगेसरक पितृत्व एखन असिद्ध।”

“सम्भावना” शब्द काटलहुँ नहि। ओकर कात नवल तिथि लिखलहुँ। तकर आगाँ—“वंश-शाखा प्रमाणित; पितृत्वक प्रश्न पृथक।”

अनुराधा पढ़लनि।

“आब?”

हम मूल पँजीक सन्दूक खोललहुँ। खुरचल पाँति वाला पृष्ठ निकाललहुँ। मेज पर प्रति-पाँजि दहिना, मूल पँजी बामा। बीचमे लक्ष्मी देल कागजक छायाचित्रक छापल प्रति रखल गेल।

हम कलम निकाललहुँ, मुदा पृष्ठ पर नहि रखलहुँ।

नाम लिखबाक काज अगिला दिन लेल छोड़लहुँ।

अध्याय ४६ — नाम लिखब

श्रीधर मिश्र। पिता — वाचस्पति। पितामह — रघुपति।

कन्या — फुलझरी।

फुलझरी — जगेसर सदा संग गृहस्थ-सम्बन्धक कथन। कुल-अनुमति नहि। विवाह-विधि विवादित।

सुगनी — माता फुलझरी। पिता — अपठित; जगेसर सदाक पितृत्व असिद्ध।

सुगनीक पुत्र — बिन्देश्वर।

बिन्देश्वरक कन्या — लक्ष्मी।

जीवित वंश-शाखा — एगारह किलोमीटर पूब-दक्खिनक मुसहर टोल।

फुलझरीक नाम मुख्य वंश-पाँतिमे पुनः प्रविष्ट।

अध्याय ४७ — मृत्यु आ पोथी

२०२४ क वर्षामे हमर दैनिकी फेर छोट होमय लागल। पहिने एक दिनमे दस-पन्द्रह पाँति लिखैत रही; आब दू-तीन पाँति पर्याप्त होइत छल। आँखि थाकैत छल। आतस-काँच मेज पर स्थिर वस्तु भऽ गेल छल। अनुराधा जखन घरमे रहैत छलीह, ओ कागज पढ़ि सुनबैत छलीह। हम शब्द सुनि कऽ पृष्ठक क्रम चिन्हैत रही। जे अक्षर जीवन भरि अपन हाथसँ लिखल, से सुनबाक लेल दोसरक आवाज चाही—एहि बातक कोनो टिप्पणी दैनिकीमे नहि कयलहुँ।

फुलझरीक नाम पुनः लिखल पृष्ठ हम सन्दूकक ऊपरक तहमे रखने रही। प्रति-पाँजि ओकर नीचाँ। लक्ष्मी देल कागजक छापल प्रति पृथक लिफाफामे। लिफाफाक ऊपर लिखल छल—“स्रोत; मूल नहि।” जगेसर सदाक पितृत्वक प्रश्न जेना छल, तहिना रहल। ओकर आगाँ नवल मसि नहि चढ़ल।

भादवक एक सोमक दैनिकीमे लिखल अछि—“पाँजि देखबाक ग्राहक दू। दक्षिणा एक। एक ग्राहक मोबाइलमे पृष्ठक छायाचित्र लेलक। मूल पृष्ठ हाथमे नहि देल।” दोसर पाँति—“पूर्वक सन्दूकक कुंजी अनुराधाकेँ देखाओल।” तेसर—“कुंजीक दोसर प्रति नहि।”

अनुराधा पुछने छलीह—“हमरा किएक?”

हम कहलियनि—“ठाम ज्ञात रहय।”

“राखब सेहो हमरा?”

“एखन नहि कहल।”

ओ कुंजीक आकार देखलनि। पीतल, दाँत चारि, माथमे गोल छेद। फेर मेज पर रखि देलनि।

ओहि सप्ताह मोहन हमरा लेल नवल ऐनक अनलाह। ऐनकक खोल पर दोकानदारक नाम छापल छल। ऐनक लगेलाक पछाति अक्षर कनेक पैघ भेल, मुदा भेद सभ नहि घुरल। हम मूल पँजिक एक पृष्ठ खोलि तीन पाँति पढ़बाक प्रयत्न कयलहुँ। पहिल नाम पढ़ल गेल। दोसरमे अनुराधाक सहायता लेनी। तेसर पाँति छोड़ि देलहुँ। दैनिकीमे लिखलहुँ—“पठन आ लेखन एक गति सँ क्षीण

नहि होइत।” ई वाक्य तथ्य छल कि आत्मकथन, निश्चित नहि; तें ओकर आगाँ प्रश्नचिह्न लगा देने रही।

मृत्युक एक दिन पहिने घरमे कोनो ग्राहक नहि आयल। बरखा छल। मोहन छप्परक नालीक पात हटबैत रहलाह। अनुराधा उत्तर कोठलीमे पुरान कपड़ाक गट्ठर खोलि रहल छलीह। हम दैनिकीमे पाँच वस्तु लिखलहुँ—आतस-काँच, कारी कलम, औषधिक दू खाली पट्टी, पीतल कुंजी, फुलझरीक पुनर्लिखित पृष्ठ। तकर नीचाँ लिखलहुँ—“कुंजी अनुराधा लग देल।”

ओ पाँति हमर दैनिकीमे अन्तिम पूर्ण पाँति अछि। तकर नीचाँ आध पाँति अछि—“पछिला बरखा...” शब्द दू स्पष्ट, तकर बाद कलमक महीन रेखा नीचाँ झुकल अछि। एकरा अर्थ देबाक कोनो कारण नहि।

अगिला भोर मोहन चा लऽ कऽ कोठलीमे गेलाह। कप मेज पर राखल गेल। रामानुग्रह मिश्र ओहि समय उत्तर नहि देलनि। गामक चिकित्सक बजाओल गेलाह। पछाति बनल मृत्यु-प्रमाणपत्रमे नाम, उमेर, ग्राम, मृत्यु-दिन आ समय लिखल गेल। कारणक कोष्ठमे चिकित्सकीय शब्द छल। पँजीकार शब्द कतहु नहि छल।

दाहक दिन उत्तर कोठली बन्द रहल। सन्दूक सेहो। दुआरक बाहरी कड़ीमे ताला नहि लगाओल गेल, कारण घरमे लोक रहैत छल। सन्दूकक कुंजी अनुराधाक सुतरीक छोट थैलीमे छल। ई वएह कुंजी छल जकर दाँत ओ सोमक दिन देखलनि।

तेसर दिन लोक घटल। पीतल लोटा, कुश, कपड़ा, पत्तल, बचल चाउर, औषधिक पट्टी, ऐनकक खोल—वस्तु सभ अपन-अपन ठाम पहुँचय लागल। मेज पर दैनिकी, आतस-काँच आ कारी कलम एखनहुँ रहि गेल। अनुराधा दैनिकी बन्द कयलनि। आध पाँति पर कोनो शब्द नहि जोड़लनि।

साँझमे दू पँजीकार आ तीन कुटुम्बी आयलाह। प्रश्न मृत्यु विषयक कम, पोथी विषयक बेसी छल। पहिल प्रश्न—“सन्दूकमे कतेक गट्ठर अछि?” दोसर—“ग्राहक आब कतय जाएत?” तेसर—“पाँजि ककरा देल जाए?”

मोहन कहलनि—“पहिने सूची बनत।”

एक पँजीकार पुछलनि—“कुंजी ककर लग अछि?”

अनुराधा कहलनि—“हमरा लग।”

कोठलीमे किछु क्षण मौन रहल।

एक कुटुम्बी कहलाह—“अहाँ तँ एहि विधिक शिक्षा नहि लेने छी।”

अनुराधा कहलनि—“नहि।”

दोसर कहलाह—“परम्परामे ई काज पुरुष करैत आएल छथि।”

अनुराधा हुनका देखलनि। “हम पुरुष नहि छी।”

पहिल पँजीकार कने आगाँ झुकलाह—“हमर कहबाक आशय—पोथी चलब आवश्यक अछि।”

“चलत कि राखल जाएत, से सूची बनलाक पछाति बुझब,” अनुराधा कहलनि। “हम पँजीकार बनय चाहैत सेहो नहि छी।”

तीन वाक्य एकहि ठाम रहि गेल—विधिक शिक्षा नहि; पुरुष नहि; इच्छुक नहि। ओकर बादो कुंजी हुनकरे लग छल।

अगिला भोर सन्दूक खोलल गेल। अनुराधा, मोहन आ दुनू पँजीकार उपस्थित छलाह। पहिने वस्तु गिनल गेल, न निर्णय। लाल कपड़ामे बान्हल गट्ठर, पीयर कपड़ाक गट्ठर, ताड़पत्रक पेटी, विवाह-विवादक पृथक पत्र, पुरान दैनिकी, पछिला वर्षसभक ग्राहक-पत्र, प्रति-पाँजि, फुलझरीक पुनर्लिखित पृष्ठ। अनुराधा एक-एक वस्तु पढ़ि सुनबैत गेलीह; मोहन सूचीमे संख्या लिखैत गेलाह। पँजीकारसभ पृष्ठ नहि पलटलनि जखन धरि सूचीमे ओकर क्रम नहि लिखल गेल।

प्रति-पाँजि पर पहुँचलाक बाद एक पँजीकार पुछलनि—“ई मुख्य पँजिक भाग अछि?”

अनुराधा जिल्द खोललनि। पहिल नियम पढ़लनि—“अनुमानकेँ तथ्य नहि लिखब।” तकर बाद अन्तिम पाँति पढ़लनि—“ई पोथी मूल पँजीक स्थान नहि लेत।”

“तँ पृथक राखू,” ओ कहलाह।

अनुराधा ओकरा मूलक बगलमे राखलनि, ऊपर नहि।

फुलझरीक नवल पाँति वाला पृष्ठ पर कियो दीर्घ चर्चा नहि केलक। एक पँजीकार मसिक नवलपन देखलनि, तिथि देखलनि, स्रोतक लिफाफा देखलनि। ओ कहलाह—“ई रामानुग्रह बाबूक अन्तिम सुधार?”

मोहन कहलनि—“हँ।”

अनुराधा कहलनि—“सुधारक स्रोत एहि लिफाफामे अछि।”

ओतबे।

सूचीक अन्तिम पाँतिमे लिखल गेल—“कुल अभिलेखीय सामग्री अस्थायी संरक्षणार्थ अनुराधा मिश्रक सँभारमे; स्वामित्व अथवा पँजीकार-अधिकारक निर्णय नहि।” एहि वाक्य पर सभ उपस्थित लोक हस्ताक्षर नहि कयलनि। दुनू पँजीकार साक्षी रूपमे हस्ताक्षर कयलनि। मोहन हस्ताक्षर कयलनि। अनुराधा अन्तमे कयलनि। जे कुटुम्बी सहमत नहि छलाह, हुनकर नाम उपस्थितिमे लिखल गेल, हस्ताक्षरक कोष्ठ रिक्त रहल।

अनुराधा सूचीक एक छायाप्रति सभकेँ देलनि। मूल सूची सन्दूकमे नहि राखलनि। ओकरा दैनिकी संग पृथक फाइलमे रखलनि। मृत्यु-प्रमाणपत्र सेहो ओही फाइलमे गेल। एकहि फाइलमे मृत्यु आ पोथीक अस्थायी सँभारक कागज पड़ल रहल।

ओहि साँझ पहिल ग्राहक आयल। ओकर पुत्रक विवाहक बात छल। दुआर पर चप्पल खोलि भीतर आयलाक पछाति ओ रामानुग्रह मिश्रक विषयमे पुछलक। मोहन उत्तर देलनि। ग्राहक किछु बेर चुप रहल, फेर पुछलक—“पाँजि देखब आब?”

अनुराधा उत्तर नहि देलनि। दुनू पँजीकारमे सँ जे लगक गामक छलाह, हुनकर नाम मोहन कागज पर लिखि देलनि। ग्राहक कागज मोड़ि जेबमे रखलक। सन्दूक नहि खोलल गेल।

राति अनुराधा उत्तर कोठलीक मेज स्वच्छ कयलनि। आतस-काँच ऐनकक खोलक कात रखलनि। कारी कलम दैनिकीक ऊपर नहि, बगलमे। औषधिक खाली पट्टी फेकि देलनि। पीतल कुंजी अपन सुतरीक थैलीमे रखलनि।

सन्दूक बन्द रहल। भीतर मूल पँजि छल, प्रति-पाँजि छल, आ ओ पृष्ठ छल जाहिमे फुलझरीक नाम फेर लिखल गेल छल। घरमे पँजीकार नहि रहल। पोथी एखनहुँ रहल।

अध्याय ४८ — कोसी — ८

हम बहैत छी आ एहि बेर घरक उत्तर कोठलीक सन्दूक बन्द अछि आ पीतल कुंजी कपड़ाक छोट थैलीमे अछि आ जे हाथ अनेक वर्ष धरि नाम लिखैत अछि से आब नहि उठैत अछि मुदा कागज एखनहुँ सूखल रहैत अछि आ मसि एखनहुँ अक्षरक भीतर जमल अछि आ हम घरक देबाल नहि देखैत छी हम देबालक नीचाँक माटि बुझैत छी हम ओहि माटिक भीतर पुरान बालूक तह बुझैत छी हम ओहि तहक ढलान बुझैत छी जतय जल एक बेर गेलाक पछाति अपन चलनक सूक्ष्म चिन्ह छोड़ैत अछि आ लोक ओहि चिन्ह पर घर बनबैत अछि खेत जोतैत अछि बाँस रोपैत अछि बाट बनबैत अछि नाम लिखैत अछि आ समय बीतला पर मानि लैत अछि जे पुरान पथ समाप्त भऽ गेल अछि मुदा माटि भीतरसँ समाप्त नहि होइत अछि बालू अपन दाना बदलैत अछि गादक ऊपर नवल गाद चढ़ैत अछि जड़ पुरान तह धरि उतरैत अछि कूपक जल ऋतुक संग ऊपर नीचाँ जाइत अछि आ हम एतेक भर बुझैत छी जे जे पथ एक बेर नीच भेल से फेर कखनो जल लेल सहज भऽ सकैत अछि आ १९३४ मे धरती हिलैत अछि देबाल खसैत अछि कूप टेढ़ होइत अछि माटि फाटैत अछि आ हमरा कातक धार अपन पुरान सुविधा खोजैत अछि आ जे टोल जलक कात अछि ओकर खपरैल बाँस चूल्हि पीढ़ी पातिल धानक बोरा आ नामहीन कागज एकहि प्रवाहमे पृथक भार बनैत अछि आ कियो ओहि वर्षक घटना लिखैत अछि कियो मौखिक कथन रखैत अछि कियो पाँतिमे नाम छोड़ैत अछि कियो पाँति काटैत अछि मुदा हम काटल आ लिखल बीच भेद नहि करैत छी हम केवल कातक ऊँच नीच बुझैत छी आ समय माटिक ऊपर नवल तह राखैत जाइत अछि आ २००८ मे पूर्वी तटबन्धक एक भाग पर दबाव बढ़ैत अछि जल नवल बाट नहि आविष्कार करैत अछि जल ओहि ढलानक सहारा लैत अछि जे भूमि पहिनहिसँ दैत अछि आ जे धार मनुष्यक नक्शामे पुरान कहल जाइत अछि से माटिक भीतर एखनहुँ सम्भावित रहैत अछि आ कुसहा दिसक टूटनक पछाति जल खेत आ गामक बीचसँ चलैत अछि आ अनेक लोक एकरा असामान्य दिशा कहैत अछि मुदा बालूक तह एकरा अपरिचित नहि मानैत अछि आ १९३४ क पथ आ २००८ क पथ एकहि रेखा नहि अछि मुदा दुनूक नीचाँ ओही पुरान नीचाइ ओही गादक ढलान ओही बहावक आग्रह अनेक ठाम एक दोसरकेँ छुबैत अछि आ मानचित्र पर जे दू वर्ष पृथक अंक अछि माटिक भीतर ओ दूटा जलचिह्न परत दर परत एक दोसरक ऊपर रहैत अछि आ हम वर्ष नहि गनैत छी हम ऊँचाइ गनैत नहि छी मुदा दबावक अन्तर बुझैत छी हम वर्षाक जलक भार बुझैत छी हम हिमालयसँ उतरैत कणक गति बुझैत छी हम बान्हक माटिक भीतर रिसैत सूक्ष्म जल बुझैत छी हम कातक बाँसक जड़ खुलैत देखैत छी हम नावक रस्सी तानैत छी हम घासक मूल धोइत छी आ

जखन मनुष्य पुरान पोथी खोलैत अछि तखन ओकरा एक नाम भेटैत अछि एक रिक्ति भेटैत अछि एक खुरचल पाँति भेटैत अछि आ जखन ओ पोथी बन्द करैत अछि तखन सेहो माटिक भीतर हमरा लेल कोनो पृष्ठ बन्द नहि होइत अछि आ एक घरमे मूल पँजि प्रति पाँजि दैनिकी मृत्यु प्रमाणपत्र आ स्रोतक लिफाफा एकहि सन्दूकक कात रहैत अछि आ एक नाम जे कखनो मेटाओल गेल अछि फेर मसिमे आबैत अछि मुदा मसि जल नहि रोकैत अछि आ नाम जलक दिशा नहि बदलैत अछि आ सामाजिक स्वीकृति बालूक ढलान नहि बदलैत अछि आ एहि कारण जे सुधार कागज पर पूर्ण भऽ सकैत अछि से भूमि पर कोनो अन्तिम आदेश नहि बनैत अछि आ जे समाज एक पाँति काटि दैत अछि ओ नदीक पुरान पथ नहि काटि सकैत अछि आ जे समाज एक नाम फेर लिखैत अछि ओ पुरान हिंसाकेँ मेटा नहि सकैत अछि आ हम एहि बातक न्याय नहि करैत छी हम केवल बहैत छी आ हमरा भीतर जे किछु पड़ैत अछि से किछु दूर धरि चलैत अछि किछु तुरन्त डूबैत अछि किछु बालूमे अटकैत अछि किछु अगिला बरखा धरि रहैत अछि आ किछु फेर ऊपर अबैत अछि आ एक हड्डीक कण माटिसँ ऊपर आबि सकैत अछि एक सिक्का चमकि सकैत अछि एक कागजक आध अक्षर भीजि सकैत अछि एक लकड़ी दूरक कछेर पर अटकैत अछि मुदा एहि सभ वस्तुक अर्थ हमरा भीतर नहि बनैत अछि अर्थ किनार पर बनैत अछि जखन हाथ ओकरा उठबैत अछि आँखि ओकरा पढ़ैत अछि आ मुँह ओकर विषयमे कथन करैत अछि आ आब ओ हाथ जे दीर्घ काल धरि पाँजि खोलैत छल स्थिर अछि आ दोसर हाथ कुंजी रखैत अछि मुदा हम हाथक उत्तराधिकार नहि गनैत छी हम जलक उत्तराधिकार देखैत छी जे एक उपधारासँ दोसर उपधारामे जाइत अछि जे एक ऋतुसँ दोसर ऋतुमे घटैत बढ़ैत अछि जे एक वर्षक गाद दोसर वर्षक खेतमे छोड़ैत अछि जे एक कछेर काटि दोसर कछेर बनबैत अछि आ एहि उत्तराधिकारमे योग्य अयोग्य पुरुष स्त्री ग्राहक पँजीकार साक्षी अपराधी पीड़ित एहन कोनो कोष्ठ नहि अछि केवल ढलान अछि अवरोध अछि भार अछि वेग अछि आ समय अछि आ समयो हमर लेल घड़ीक अंक नहि अछि से वर्षाक गन्धमे अछि ग्रीष्मक फाटल माटिमे अछि जाड़क कम जलमे अछि शिशिरक कुहासामे अछि आ जे दिन लोक कहैत अछि नदी फेर धार बदलि रहल अछि ओ दिन हम अपन भीतर कोनो नवल निर्णय नहि करैत छी हम दबावक कात जाइत छी नीचाइ दिस मुड़ैत छी बालू उठबैत छी गाद छोड़ैत छी पुरान कछेर छुबैत छी आ जखन पुरान पथक एक भाग फेर भीजैत अछि तखन १९३४ क भीजल चिन्ह २००८ क गादक नीचाँ सँ पूर्ण रूपेँ बाहर नहि अबैत अछि मुदा दुनू एकहि माटिक भीतर रहैत अछि आ एकर ऊपर २०२४ क घास उगैत अछि नवल पयर चलैत अछि नवल घरक खूँटी गड़ैत अछि नवल कागज पर नवल तिथि लिखल जाइत

अछि आ सन्दूकमे पुरान पृष्ठ अपन क्रममे रहैत अछि आ कियो ओकरा फेर पढ़ैत अछि कि नहि से हमरा ज्ञात नहि आ कियो नामक आगाँ नवल नाम जोड़ैत अछि कि नहि से हमरा ज्ञात नहि आ कियो पाँजि कैं केवल विवाह लेल राखैत अछि कि अभिलेख लेल कि कोनो अलमारीक भीतर बन्द करि दैत अछि से हमरा ज्ञात नहि मुदा हमरा ज्ञात रहबाक आवश्यकता सेहो नहि अछि कारण वर्षा फेर अबैत अछि पहाड़सँ जल उतरैत अछि उपधारा भरैत अछि तट पर दबाव बदलैत अछि नावक पेट जल छुबैत अछि कछेरक माटि ढीली होइत अछि बालू सरकैत अछि एक पुरान गह्वर भरैत अछि दोसर खुलैत अछि आ हम एकहि समय पुरान आ नवल पथक कात बहैत छी आ जे रेखा मानचित्र पर स्थिर देखाइत अछि ओकर नीचाँ माटि चलैत अछि आ जे नाम पाँजिमे स्थिर देखाइत अछि ओकर बाहर जीवन चलैत अछि आ जे जीवन समाप्त बुझायल अछि ओकर किछु चिह्न कागजमे रहैत अछि आ जे कागज बचल अछि ओकर कोर एक दिन फेर भुरभुरा होइत अछि आ हम एहि सभक बाहर नहि भीतर नहि केवल कात कात सँ बहैत छी आ अन्तमे जतेक नाम जतेक पाँति जतेक रिक्ति जतेक बान्ह जतेक घर जतेक सन्दूक जतेक नक्शा जतेक वर्ष अपन अपन ठाम रहैत अछि ओकर नीचाँ ऊपर बीचमे निरन्तर चलैत रहैत अछि जल

जल-पाँजि

१८ अगस्त २००८। कोसीक कुसहा बान्ह टूटल।
एक पाँजीकार अपन दैनिकीमे हर मिनटक हिसाब
लिखैत रहल छथि—फोन, चुप्पी, अफवाह,
आ बढ़ैत जल। पाँजिमे तिथि रहैत अछि,
अर्थ नहि; मुदा एहि बेर जल स्वयं
एक नव पाँजि लिखि रहल अछि।

'जल-पाँजि'—समय, स्मृति आ अभिलेखनक बीचक दूरीक एक मार्मिक मैथिली उपन्यास।

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर
© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६ — सर्वाधिकार सुरक्षित
मुद्रित आकार : ६ × ९ इंच
प्रकाशक : विदेह

www.videha.co.in videha-ejournal.github.io

ISSN 2229-547X